Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

यात्रा का अन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167970

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा का अन्त

(उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा का अंत

Central Library
167970
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

081
167970

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110 026

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUP-y

© प्रकाशकाधीन 1978

9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चेम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5

मूल्य : 40.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
18/28, पंजाबी बाग (पूर्वी)
नई दिल्ली–110 026
फोन : 5102133

संस्करण : 2000

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110 032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

'यौवन शैतान का प्रतीक है।' एक वृद्ध रघुनाथ सहाय अपने पोते राधाकृष्ण को समझा रहा था। उसने आगे कहा, 'संस्कृत में एक शब्द है प्रवृत्ति। इसका अर्थ है कर्म करने की रुचि। रुचि भले कर्म करने की भी हो सकती है और बुरे कर्म की भी हो सकती है। परन्तु यौवन काल में यह प्रायः बुरे कर्मों की ओर होती है। यही मनुष्य में शैतान का प्रतीक होती है।'

'परन्तु बाबा! ऐसा मुझ में नहीं है।'

'है तो, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि तुम में परमात्मा, शैतान से प्रबल सिद्ध हो रहा है।'

'तो परमात्मा और शैतान ये दोनों मुझ में हैं?' राधाकृष्ण ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'और ये दोनों मुझमें बैठे झगड़ रहे हैं?'

'हाँ। मैंने बताया है न कि कर्म करने की अभिरुचि जब बुरी दिशा में होती है तो मनुष्य में बैठे शैतान के कारण होती है। भले कर्मों में अभिरुचि परमात्मा की प्रेरणा से होती है। तुम जो आज यह समस्या लेकर आये हो और मुझसे राय ले रहे हो, यह परमात्मा-तत्त्व की प्रेरणा से है। यह तुम्हारी बुद्धि में उपस्थित परमात्मा-तत्त्व के प्रबल हो जाने के कारण है।'

'आप वृद्धजन,' रघुनाथ सहाय के पोते ने बाबा से बहस करने की आदत से विवश हो कह दिया, 'कहावतों में बातें करते हैं और पिछले दो सौ वर्ष में विज्ञान ने इतनी द्रुतगति से उन्नति की है कि आपकी सब धारणायें मिथ्या सिद्ध हो गई हैं।"

'और इतना कुछ कहते हुए तुम मेरी बात को सिद्ध ही कर रहे हो। तुम जो कुछ कह रहे हो वह केवल बात के तत्त्व को न समझने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण ही कह रहे हो।

'बड़े विज्ञान के विद्वान् बन कर आये हो न ? भला बताओ, संसार में दो ही प्रकार की शक्ति नहीं हैं क्या, जिन्हें धन और ऋण अर्थात् 'पौज़िटिव' और 'नैगेटिव' कहते हो। बताओ, कोई तीसरी प्रकार की शक्ति है जो आज के वैज्ञानिकों ने पता की है ? जिसे तुम ऋण-शक्ति कहते हो उसे ही मैं शैतानी ताकत कह रहा हूँ और जिसे तुम धन शक्ति कहते हो, उसे मैं परमात्मा की शक्ति कहता हूँ।'

'परन्तु बाबा ! ये तो स्वयं निर्जीव हैं। इनको चालू करने के लिए स्विच-ऑन करना पड़ता है। और अपने में न तो कोई स्विच दिखाई देता है और न ही शरीर में 'जैनरेटर,' अर्थात् विद्युत-उत्पादन यंत्र दिखाई देता है ?'

'बस यही तुम मूर्खता की बात कह रहे हो। अच्छा बताओ, तुम अब कहाँ से आये हो ?'

'प्रेम के साथ 'वेंगर' में चाय लेकर।'

'वेंगर कहाँ है ?'

'कनाट प्लेस में है।'

'यहाँ से कितनी दूर है ?'

'कम से कम चार किलोमीटर का अन्तर है।'

'और इतनी दूर तुम बिना यत्न किये आ गये हो ? यह यत्न किसी शक्ति से हुआ है अथवा बिना किसी शक्ति से ? जब शक्ति से हुआ है तो इस शक्ति को उत्पन्न और चालू करने के लिये किसी ने स्विच ऑन भी किया होगा। अन्यथा वहाँ वेंगर में ही बैठे क्यों नहीं रह गये ?'

इस विश्लेषण पर राधाकृष्ण अपने बाबा का मुख देखता रह गया।

राधाकृष्ण मौलाना अब्दुल कलाम आजाद मेडिकल कालिज की फाईनल ईअर का विद्यार्थी था। मिराण्डा कालिज की एक बी० ए० की लड़की से 'वेंगर' में चाय ले कर घर आया तो उसने माँ से कहा था, 'माँ, तुम्हारे लिये प्रेम का एक संदेश है।'

उसकी माँ, बाबा के कमरे में उसके लिये चाय लेकर आई थी। बाबा, पोते के मुख पर घबराहट के लक्षण देख ध्यान-पूर्वक उसकी बात सुनने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधाकृष्ण ने कहा, 'आज चार बजे के लगभग प्रेम का टेलीफोन आया था कि मुझसे अति आवश्यक कार्य है, वेंगर में आ जाओ।

"मैंने तुरन्त अपना स्कूटर पकड़ा और वेंगर पर जा पहुँचा। वह सीढ़ियों के नीचे प्रतीक्षा कर रही थी। हम दोनों ऊपर रैस्टोराँ में गये तो उसने कहा, "मैं आज आपकी माता जी के घर पर रात रहने आ रही हूँ।"

'मैं समझा नहीं।' मैंने पूछा, "बात क्या है ? क्या प्रिंसिपल से झगड़ पड़ी हो ?"

'उसका कहना था कि प्रिंसिपल बहुत ही भली स्त्री है। मेरे साथ सहानुभूति का व्यवहार रखती है। उसको मैंने पूरी बात कही तो वह बोली, "कि अपनी मौसी से कहूँ कि स्वयं लेने आ जाये, वह स्वीकृति दे देगी।"

राधाकृष्ण ने आगे बताया, 'इसी कारण वह मुझे कह गयी है कि मैं अपनी माँ को अपनी मोटर गाड़ी में भेज दूँ। वैसे वह टैलीफोन कर देती, परन्तु उसने मेरे द्वारा ही संदेश भेजना उचित समझा है।'

लक्ष्मी ने पूछा, 'परन्तु बात क्या है ?'

'बात यह है कि प्रेम की एक सखी ने उसे बताया है कि नगर के कुछ गुंडे लोग उसका अपहरण करने वाले हैं। वे गुण्डे कौन हैं ? यह उसकी सखी ने नहीं बताया। इतना कहा है कि पुलिस में रिपोर्ट करने से काम नहीं चलेगा। प्रिंसिपल से भी कहोगी तो हो-हल्ला होने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं होगा। चुपचाप उनके आने से पहले ही लापता हो जाओ।'

राधाकृष्ण की बात सुन उसकी माँ ने कह दिया, 'बहुत विचित्र है ! इस आपात्-स्थिति में भी इस प्रकार की गुँडागर्दी हो रही है। फिर सामान्य स्थिति में तो जो कुछ भी हो जाये कम है। खैर, मैं वहाँ पाँच बजे से पहले पहुँच जाऊँगी।'

'परन्तु माँ ! आपात्-स्थिति भी तो किसी मनुष्य की ही लगाई हुई है। और लगाने वाला ही यदि कोई बुरा काम करने पर तुल जाये तो कौन रोक सकता है ?

'प्रेम की सखी ने कुछ ऐसा ही संकेत दिया है। आज जिसके तेज के सम्मुख पूर्ण भारत थर-थर काँप रहा है, वह या उसके साथी ही तो यह कर रहे प्रतीत होते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा ने अपनी पतोहू को कह दिया, 'यहाँ से कालिज की प्रिंसिपल को पहले टेलीफोन कर दो। मगर देखो, कुछ बहाना करना पड़ेगा ? क्या कहोगी ?'

'कहूँगी कि मेरा जन्म-दिन है और रात उसके उपलक्ष्य में घर के प्राणियों को डिनर पार्टी दी जा रही है।'

'और प्रेम तुम्हारे घर की प्राणी है ही ?'

'हाँ, मेरी सखी श्रीमती कपूर की लड़की जो है। इससे कुछ अधिक विचार करने तथा बात बनाने की आवश्यकता नहीं। हाँ, जन्मदिन और डिनर पार्टी का बहाना बनाना पड़ेगा।'

बाबा मुस्कराया और उक्त कथन कहने लगा था।

राधाकृष्ण की माता लक्ष्मी वहाँ से उठ मिराण्डा कालिज के प्रिंसिपल को टेलीफोन करने चली गयी थी। टेलीफोन राधाकृष्ण के पिता के स्टडीरूम में लगा था और बाबा कोठी के ड्राइंगरूम में बैठा चाय ले रहा था।

यह शैतान और परमात्मा की बात बाबा ने आरम्भ कर दी थी। जब बाबा ने बताया कि संसार में दो प्रकार की शक्तियाँ ही तो हैं तो पोता गम्भीर विचार में मग्न हो गया और विचार करने लगा। 'नैगेटिव' तथा 'पौज़िटिव' को ही उसका बाबा शैतान और परमात्मा-तत्त्व कह रहा था।

वह विचार कर रहा था कि यह तो नाम भेद है। तत्त्व की बात यह है कि शक्ति के दो रूप ही हैं। और फिर वह कह रहा था कि किसी ने उसके भीतर में 'स्विच-ऑन' किया है, जो वह बाबा से यह कहने चला आया है।

'तो इस शक्ति के अतिरिक्त और कोई भी है जो मेरे शरीर में बैठा हुआ 'स्विच ऑन' और 'ऑफ' कर रहा है ?' राधाकृष्ण ने बाबा से बात आरम्भ कर दी।

वह समझा था कि वह उसका मन है। मन अर्थात् 'माइण्ड'। मन, वह ह्यूमन फिज़िऑलोजी में पढ़ कर यह समझा था कि बहुत छोटे-छोटे 'इलैक्ट्रोनिक सैल्स' से भरा पड़ा है। जैसे कम्प्यूटर में होता है। कम्प्यूटर में एक 'टेप' पर लगे लौह के अति सूक्ष्म कण होते हैं। परन्तु वह जानता था कि 'कम्प्यूटर' तो बटन दबाने से चलता है। बिना बटन दबाये नहीं चलता। अर्थात् उसका भी 'स्विच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रॉन' करना पड़ता है।

अब उसने पूछ लिया, 'बाबा ! यह मुझ में स्विच किसने ग्रॉन किया है ?'

"तुम्हारे जीवात्मा ने। और जानते हो यह स्विच बोर्ड कहाँ लगा हुआ है ?"

'कहाँ लगा है ?'

'तुम्हारे सिर की खोपड़ी में। इस स्विच बोर्ड को सामान्य भाषा में बुद्धि कहते हैं। उसमें दो स्विच लगे हैं। एक धन विद्युत को 'ग्रॉन' करता है और दूसरा ऋण विद्युत को ग्रॉन।'

राधाकृष्ण विचार कर रहा था कि वह अनिश्चित मन था कि माँ से यह सब बात कहे अथवा अपने किसी मित्र से कह कर प्रेम को किसी अज्ञात स्थान पर पहुँचा दे। परन्तु उसकी बुद्धि ने विचार किया और वह अपने घर माँ को बताने चल पड़ा था।

यह तुलना यहाँ तक तो ठीक थी परन्तु यह धन और ऋण की बात उसे समझ में नहीं आयी थी। इस कारण वह बोला, 'बाबा ! तुमने साइंस पढ़ी है ?'

'हाँ, मैंने बी० एस-सी० करने के उपरान्त वकालत की थी और वकालत के उपरान्त बैरिस्टर बनने चला गया था।'

'विद्युत ऋण से धन की ओर बहती है। दोनों तारों में एकदम प्रवाह चलता है। वहाँ 'नैगेटिव' और 'पौज़िटिव' में अन्तर नहीं रहता। तो क्या मनुष्य शरीर में भी नेकी और बुराई एक हो जाती है ?'

'तुम समझे नहीं। हमारी कोठी में विद्युत दो 'फेज़' की लगी है। जानते हो, इसका क्या मतलब है ?

'पोल से तीन तारें कोठी में आ रही हैं। एक धन विद्युत के लिये और एक ऋण विद्युत के लिये और तीसरी 'अर्थ' है। यह न्यूट्रल अर्थात् डैड होती है। 'अर्थ' का सम्बन्ध धन और ऋण दोनों से है। यही बात शरीर में है। शैतान तत्त्व और परमात्मा-तत्व। तुम्हारे जीवात्मा ने परमात्मा-तत्व का स्विच ग्रॉन किया है और तुम अपनी माँ के पास आ पहुँचे हो।

'कहीं दूसरा स्विच ग्रॉन होता तो यह तुम्हारी बुद्धि कुछ अन्य शरारत करने का विचार करने लगती।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या करने लगती ?'

'यह तो वह तत्त्व ही बता सकता है, मैं कैसे बता सकता हूँ।'

'तो यह शरीर हमारी कोठी की भाँति दो फंज करैण्ट से संयुक्त है ?'

'हाँ, और इस शरीर रूपी कोठी में मालिक है तुम्हारा जीवात्मा। इस कोठी का स्विच बोर्ड है तुम्हारी बुद्धि।'

'और जो प्रेम का अपहरण करने की योजना चलाने वाले हैं, उनकी कौन से फेज की करैण्ट ऑन हो रही है ?'

'वह बताया तो है कि वह नैगेटिव है। मानव शरीर में उसे शैतानी और हमारी संस्कृत भाषा में आसुरी प्रवृत्ति कहते हैं।

'देखो, भगवत् गीता में कहा है कि कर्म की दो ही विधाएँ, अभिप्राय यह कि दिशाएँ हैं, दैवी तथा आसुरी। तुम में दैवी प्रवृत्ति कार्य कर रही है।'

राधाकृष्ण विचार कर रहा था कि उसके बाबा ने अध्यात्म का, वैज्ञानिक शब्दों में वर्णन किया है।

एकाएक बाबा ने कह दिया, 'मैं तुम्हारे कार्य को परमात्मा-तत्त्व द्वारा प्रेरित इस कारण कहता हूँ कि तुम अपनी माता से कहने चले आये हो। मतलब यह कि तुम प्रेम के प्रति किसी प्रकार के कुटिल व्यवहार की इच्छा नहीं करते।'

'तो मैं कुछ बुरा विचार भी कर सकता था ?'

'क्यों नहीं ? यौवन तो तुम में भी है। तुम भी वही कुछ विचार कर सकते थे जो प्रेम के अपहरण करने वाले कर रहे हैं ? तुम्हारा माँ पास आकर सब बताना दैवी प्रवृत्ति के लक्षण हैं।'

'पर बाबा, यह सब क्यों है ? मुझे प्रेम ने बताया था कि उसकी सखी ने केवल यह बताया है कि देश में एक महान् शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है और वही इस प्रकार के कार्य करा रही है। प्रेम का विचार था कि अवश्य यह उस चौकड़ी में से किसी के दिमाग की उपज है जो इस समय भारत में राज्य कर रही है।'

'प्रेम का विचार ठीक प्रतीत होता है। मैं तुम्हें अपना एक संस्मरण सुनाता हूँ। वह इस बात से घना सम्बन्ध रखता है।'

राधाकृष्ण की माँ कपड़े बदलने अपने बेडरूम में चली गयी थी। वह आयी और बाबा से बोली, 'पिता जी ! आप राधा के पित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयें तो कहना कि मैं प्रेम को कालिज से लाने गयी हूँ और गाड़ी ले गयी हूँ।'

फिर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये वह ड्राइंगरूम से निकल गयी।

: २ :

रघुनाथ सहाय ने अपना एक संस्मरण सुनाना आरम्भ कर दिया। उसने कहा 'सन् १९३४-३५ की बात है। देश का एक महान् नेता पंजाब और नार्थ-वैस्ट फ्रण्टियर प्राँत के दौरे पर आया हुआ था। वह लाहौर से लायलपुर पहुँचा। वहाँ उसका दो दिन का कार्य-क्रम था। वहाँ से वह रावलपिण्डी और फिर पेशावर तथा पठानों के क्षेत्रों में जाने वाला था।

'समाचार पत्रों में नेता के लायलपुर में भव्य स्वागत तथा एक लाख व्यक्तियों की सभा में भाषण के समाचार छपे थे और रावल-पिण्डी में उसके स्वागत की तैयारियों के समाचर थे। पेशावर में और पठानों के देश में भी उसके स्वागत की तैयारियाँ हो रही थीं।

'जब हम समाचार पत्रों में यह उत्साहवर्धक समाचार पढ़ रहे थे तो बार-कौंसिल में चर्चा गरम हो गयी कि वह नेता लायलपुर से ही वापिस लौट आया है। उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया था और उसने अपना 'टूअर कैंसिल' कर दिया है।

'मैंने अपने एक मित्र मिस्टर मनचन्दा से राय की और हम दोनों बार-कौंसिल से ही उस नेता का स्वास्थ्य समाचार लेने चल पड़े। पता किया और हम दीवान चमनलाल की कोठी पर जा पहुँचे। वहाँ पंजाब के मुख्य कांग्रेसी पहले ही पहुँचे हुए थे और दो-दो, तीन-तीन की टोलियों में कोठी के लान में खड़े कानाफूसी कर रहे थे।

'हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि नेता जी को ज्वरादि किसी प्रकार की भयंकर बीमारी का प्रकोप है। इससे मैं मनचन्दा साहब को लेकर एक टोली में जा पहुँचा। वहाँ मेरे एक घनिष्ट मित्र श्री गोविन्दराम खन्ना खड़े थे। वह एक लाला दूनीचन्द बैरिस्टर से बात कर रहे थे।

'मैंने वहाँ उनके समीप पहुँचते ही पूछा, "खन्ना साहब, कैसी तबीयत है···जी की ?"

'मैंने उनसे उस नेता का नाम लेकर पूछा था, परन्तु यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे सामने नहीं ले रहा, क्योंकि मुझे किसी की निन्दा-प्रशंसा से कुछ भी सरोकार नहीं। मैं तो सोशल साइंसिज़ का विद्यार्थी होने से अपने ज्ञानवर्धन की बात बता रहा हूँ।

'मेरा प्रश्न सुनते ही गोविन्दराम लाला दूनीचन्द को छोड़ कर हमें कुछ दूर ले आये। लाला दूनीचन्द से कुछ दूर जा कर गोविन्द राम ने कहा, "···जी सब प्रकार से स्वस्थ हैं परन्तु उनका मानसिक सन्तुलन टूट गया है।"

"क्या हुआ है? लायलपुर का समाचार, जो 'ट्रिब्यून' पत्र में छपा है, उससे तो मन की स्थिति 'फर्स्ट क्लास' होनी चाहिये?"

'गोविन्दराम ने बताया, "चमनलाल और गावा साहब बात कर रहे थे कि उस छोकड़ी ने बहुत जोर की चपत मुख पर मारी है। उसका निशान अभी भी···के मुख पर बना है।"

'गोविन्द राम जी बता रहे थे, "मैंने पूछा, किसकी छोकड़ी थी वह?"

"उत्तर में गावा साहब ने हँसते हुए कहा, 'आज से बीस सदी पुराने विचारों को रखने वाली कौम यानि किसी हिन्दू की लड़की थी।'

'और यह श्रीमान् जी उसकी लड़की से कहाँ टकरा गये थे?'

'यह उनके घर में ठहरे हुए थे। रात खाने के उपरान्त वह लड़की अपनी बहन के साथ श्रीमान् की सुख-सुविधा के विषय में पूछने उनके कमरे में आई तो इन्होंने इसका गलत अर्थ समझ बड़ी की तरह हाथ बढ़ा दिया। बस चट से बहुत जोर की एक चपत इनके मुख पर लगी तो यह तिलमिला उठे। एक पंजाबी के मजबूत हाथ की चपत के निशान अभी तक मुख पर बने हुए हैं।'

"बस सुबह श्रीमान् जी आगे का दौरा रद्द कर वापस लाहौर आ गये हैं। लाला दूनीचन्द जी ने उन्हें सुझाव दिया था कि एक दिन आराम करा वह पुनः जा सकते हैं। उनके दौरे का कार्यक्रम पुनः बनाया जा सकता है। परन्तु इन महापुरुष के दिल को जबरदस्त चोट लगी है। वह इलाहाबाद लौटने का कार्यक्रम बना चुके हैं।"

'गोविन्दराम जी ने आगे कहा, "मैंने अभी यह बात लाला दूनीचन्द जी से तसदीक करायी है। लाला जी का कहना है कि ऐसी बातें किसी से कहनी नहीं चाहिये। इससे नेता की बदनामी होती है और फिर जनता में मान भी कम हो जाता है। परन्तु मेरा लाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूनीचन्द से मतभेद है। मैं ऐसे नेता को नेता न रखने में देश का भला समझता हूँ।"

रघुनाथ सहाय ने पोते को यह घटना सुनाते हुए कहा, 'उन दिनों मैं गोविन्दराम की राय के खिलाफ था। मेरा कहना था, "खन्ना जी। अमृत की भाँति शुद्ध पवित्र किसको मानोगे?"

"खन्ना का कहना था, "ये नेता लोग पूर्ण रूप में छलना हैं। इनसे देश के कल्याण की आशा नहीं।"

'पीछे स्वराज्य मिलने पर मैं तुम्हारी दादी और पिता के साथ दिल्ली सिविल लाईन्स पर, एक भाग गये मुसलमान की कोठी में रहता था। इसी नेता की एक अन्य बात सुनने में आयी। महात्मा जी के प्राइवेट सैक्रेटरी मेरे जान-पहचान के हैं। वह मेरे घर आये हुए थे। मैं पंजाब जिले के एक उर्दू समाचार पत्र में छपी एक खबर के विषय में उनसे पूछने लगा। खबर इस प्रकार थी कि मुल्तान में सन् १९४७ के फरवरी मास में राजनीतिक सम्मेलन हुआ था। पंजाब के सब बड़े-बड़े नेता वहाँ एकत्रित थे।

'पंजाब के एक विख्यात नेता वहाँ के सम्मेलन के प्रधान थे। सम्मेलन समाप्त कर प्रधान साहब अपने निवास स्थान पर लौट रहे थे। एक लड़की, जो एक स्वयंसेविका के रूप में सम्मेलन में काम कर रही थी, वह भी घर को लौट रही थी। वह उसी सज्जन की लड़की थी जिनके घर में सम्मेलन के प्रधान ठहरे हुए थे।

'प्रधान ने लड़की को देख, पहचाना और पूछा, "घर जा रही हो?"

"जी।"

"हम भी तो वहीं जा रहे हैं। आओ, गाड़ी में आ जाओ।"

'वह मोटरगाड़ी में बैठी तो ड्राइवर को नेता ने इशारा कर दिया और गाड़ी लड़की के पिता के घर को जाती-जाती लाहौर की सड़क की तरफ भाग खड़ी हुई। एक अन्य कांग्रेसी नेता उस गाड़ी में बैठे हुए थे।

'रात वे वीराने में किसी डाक-बंगला पर ठहरे और दोनों ने लड़की से बदफेली की। प्रातः लड़की को लेकर वे लाहौर को चल दिये। वहाँ लड़की को दो रात भर रखा गया और फिर उसे दिल्ली पहुँचा दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यहाँ अन्तरिम सरकार बन चुकी थी और पंजाब कांग्रेस के प्रधान विधानसभा के सदस्य थे। लड़की ने अपने पिता को दिल्ली बुला लिया और सब कहानी सुनायी। पिता लड़की को लेकर महात्मा गांधी के पास जा पहुँचे, जो उन दिनों हरिजन कालौनी में ठहरे हुए थे।

'महात्मा जी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान को लिखा कि इस प्रकार के व्यक्ति को काँग्रेस से निकाल देना चाहिये। प्रधान महात्मा जी के अनन्य भक्त थे। उन्होंने हुक्म जारी कर दिया कि उन्हें पंजाब कांग्रेस के प्रधान पद से पृथक् कर दिया गया है।

'पंजाब के प्रधान साहब ने तत्कालीन अन्तरिम सरकार के प्रधान-मंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू से शिकायत की। पण्डित जी उसी समय महात्मा जी के दरबार में उपस्थित हुए और पंजाब कांग्रेस के प्रधान के विरुद्ध दी गई आज्ञा को रद्द कराने के लिये महात्मा जी से पत्र ले उन्हें कांग्रेस के प्रधान के पास भेज दिया।

'कांग्रेस के प्रधान को विस्मय तो हुआ परन्तु गाँधी जी के वफा-दार भक्त होने के नाते पंजाब के प्रधान के विरुद्ध आज्ञा वापसी ले ली।

'अब बताओ राधा कृष्ण,' बाबा ने पोते को बताया, 'है न कोई गलत 'फेज' की बिजली की लहर भेजने वाले इन नेताओं के मस्तिष्क में।"

'तो महात्मा जी के दिमाग में भी शैतान का वास था?' राधाकृष्ण ने पूछ लिया।

'हाँ, मेरे विचार में तो यही आ रहा है। यदि आज महात्मा जी जीवित होते तो निश्चय ही इस आपात्-स्थिति को आशीर्वाद देते। मैं यह इस कारण कह रहा हूँ क्योंकि उनके परम शिष्य विनोबा जी ने इस आपात्-स्थिति को 'अनुशासन पर्व' कह कर आशीर्वाद दिया है।"

'तो इन सबके दिमाग में 'नेगेटिव करैण्ट' चल रही है?'

'मैं यही समझा हूँ। वर्तमान प्रधानमंत्री के बाबा इलाहाबाद के एक प्रख्यात वासनारत वकील थे। इलाहाबाद और लखनऊ में पण्डित मोतीलाल के औरतों और लड़कियों के पीछे भागने की कहा-नियाँ विख्यात थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सन् १९१८ में महात्मा गाँधी जी पण्डित मोतीलाल से मिले। वह उस समय ५७ वर्ष की वयस् के वृद्ध थे। वह महात्मा जी के शिष्य बन गये और राजनीति क्षेत्र में आगे कदम रखने लगे।

'परन्तु उनके मस्तिष्क में वही आसुरी करैण्ट चल रही थी और अपना जीवन सुधारने के स्थान वह महात्मा जी के जीवन को भी आसुरी मार्ग पर ले भागे।'

इस बात को राधाकृष्ण समझा नहीं। वह बाबा का मुख देखने लगा। रघुनाथ सहाय ने समझाया, 'करैण्ट रिवर्स कर देने से दिमाग की मशीन उल्टी चलने लगती है। महात्मा जी आसुरी विचारों वाले कांग्रेस के प्रधान पण्डित मोतीलाल के प्रभाव में आये तो उनकी गाड़ी भी उल्टी दिशा में चलने लगी।

'बात यह है कि वासनाभिभूत किसी लड़की के पीछे भागने में और मिथ्या स्वार्थ के प्रलोभन में उल्टे मार्ग पर चल पड़ने में सैद्धान्तिक रूप में कोई अन्तर नहीं होता। वही बात इस समय हो रही है। राजनीतिक दृष्टि से उल्टे गीयर पर गति और चारित्रिक दृष्टि से उल्टी गीयर पर कार्य, एक ही दिशा के कार्य हैं। जिस उल्टे 'गीयर' पर चल रही बुद्धि ने देश की राजनीति को उल्टे मार्ग पर चला रखा है, उस उल्टे गीयर पर चलती हुई बुद्धि ने मिराण्डा कालिज के बाहर किसी का अपहरण करने के लिये षड्यन्त्र रचा है।

'देखें, तुम्हारी माता जी उस उल्टे मार्ग पर आती हुई गाड़ी के पहुँचने से पहले प्रेम को ले आती हैं अथवा प्रेम गाड़ी के नीचे कुचल दी जाती है।'

: ३ :

बाबा की बातें इसी प्रकार हुआ करती थीं। वह सिद्धान्त और कार्य में सम्बन्ध जोड़ता रहता था। आज भी उसने जीवात्मा, बुद्धि और शरीर का सम्बन्ध बताने का यत्न किया था। राधाकृष्ण अभी बाबा के पास ही बैठा था कि राधाकृष्ण के पिता सोमदेव ऐडवोकेट सुप्रीम कोर्ट अपनी छोटी फियेट गाड़ी में कोठी पर आ पहुँचा।

पृथ्वी राज रोड पर एक बड़ी-सी कोठी में यह परिवार रहता था। १९४७ में देश-विभाजन के समय रघुनाथ सहाय और उसका लड़का सोमदेव लाहौर से दिल्ली आ गये थे। उन दिनों रघुनाथ सहाय लाहौर हाई कोर्ट में प्रैक्टिस करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मेहरचन्द महाजन 'बाउण्डरी कमीशन' की सहायता के लिये पंजाब के हिन्दुओं की ओर से काम कर रहे थे। उन दिनों श्री मेहरचन्द पंजाब हाई कोर्ट में न्यायाधीश थे और उनकी ख्याति पंजाब में बहुत ऊंची थी।

रघुनाथ सहाय पंजाब हाईकोर्ट की बार-कौंसिल के एक प्रमुख वकील होने के नाते महाजन से भी बहुत मेल-जोल रखता था।

यह जुलाई मास १९४७ की पन्द्रह अथवा सोलह तारीख थी कि रघुनाथ सहाय महाजन जी से मिलने उनकी कोठी में जा पहुँचा। वह पंजाब-विभाजन के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करना चाहता था। उन दिनों भी रघुनाथ सहाय धार्मिक तथा आध्यात्मिक विचारों में रुचि रखता माना जाता था।

महाजन जी ने अपनी कोठी के ड्राइंगरूम में प्रवेश करते ही रघुनाथ सहाय को ड्राइंगरूम में प्रतीक्षा करते देख पूछ लिया, 'रघुनाथ सहाय जी, नमस्ते। कैसे इतनी सुबह-सुबह दर्शन देने आये हैं?'

'आपसे एक विषय में राय करना चाहता हूँ।'

रघुनाथ सहाय भी अपने स्थान से उठ महाजन जी से हाथ मिलाते हुए अपने वहाँ आने का प्रयोजन बताने लगा।

महाजन जी ने वकील साहब को बैठा कर स्वयं उनके समीप बैठते हुए कहा, 'हाँ, फरमाईये। क्या जानना चाहते हैं?'

'कल बार-कौंसिल में यह अफवाह गरम थी कि रावी के उत्तर तक का क्षेत्र ही पाकिस्तान में रहेगा। इसका अभिप्राय: यह है कि लाहौर भारत में जायेगा। मैं आपसे यह जानने आया हूँ कि कमीशन की राय क्या बन रही प्रतीत होती है?'

'आप किसलिये पूछ रहे हैं?'

'इस कारण कि आज से दो वर्ष पूर्व मेरी जायदाद लगभग चालीस-पचास लाख रुपये की थी और फिर मैं, मेरी पत्नी और दो बच्चे हैं। इनकी कीमत तो मैं जायदाद से भी अधिक लगाता हूँ। यह सब मैं यहाँ से निकालने के लिये यत्न करूं अथवा न?'

महाजन ने कुछ देर आँखें मूंद विचार किया और कहा, 'यदि कमीशन ने न्याय किया तो लाहौर भारत में आयेगा परन्तु एक अंग्रेज अपने हृदय में राजनीतिक सफलता को ही न्याय समझता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज की राजनीति इसमें ही है कि पाकिस्तान बड़ा से बड़ा हो। इस कारण कमीशन का निर्णय लाहौर के विषय में पाकिस्तान के पक्ष में जायेगा।'

'और महात्मा गाँधी इसमें हमारी कुछ भी सहायता नहीं करेंगे क्या ?'

'महात्मा जी बहुत बड़ी शक्ति हैं, परन्तु उनकी राजनीति यह है कि भारत से पाकिस्तान दुर्बल न हो। कम से कम बराबर शक्ति का स्वामी अवश्य हो ?'

'यह क्यों ?'

'यह इस कारण कि महात्मा जी की दृष्टि में मुसलमान एक बहादुर कौम है। संख्या में कम है और आर्थिक दृष्टि से भी दुर्बल है। इस कारण उनकी और उनके देश की रक्षा करनी चाहिये।

'देश-विभाजन के निर्णय से पहले महात्मा जी चाहते थे कि भारत में मुसलमान की स्थिति अधिमान की हो और हिन्दू बड़ा भाई होने के कारण छोटे भाई की रक्षा करे।'

रघुनाथ सहाय ने हैरान हो पूछ लिया, 'वह कलकत्ता और नोआखली की घटनाओं के उपरान्त भी ऐसा ही विचार रखते हैं क्या ?'

'मैं इस विषय पर बात करने के लिये उनसे मिला था। मेरे एक प्रश्न के उत्तर में गांधी जी बोले, "हिन्दुओं के पाप कर्मों का फल ही उनको मिला है।"

'मैंने पूछा, "किस पाप कर्म का ?"

'उनका कहना था, "मुसलमानों से छुआछूत का। रघुनाथ सहाय, तुम तो जानते हो कि मैं आर्य समाजी हूँ। मैं मुसलमानों से छूआछात को किसी अन्य बात का परिणाम मानता था। मैंने बताया कि मुसलमानों से छुआछूत मुसलमानों की मज़हबी दीवानगी के कारण हैं।

"और छोटी जात वालों से ?" महात्मा जी ने पूछ लिया।

'इस विषय में मैंने उन्हें इतिहास में वर्णित तथ्य की बात बता दी। मेरा कहना था कि महाराज अशोक के काल में बौद्ध प्रायः छोटी जाति के लोग थे और राजनीतिक कारणों से वे ब्राह्मणों और उच्च वर्ण वालों को गालियाँ देते थे। यह अशोकवर्द्धन की राजनीति के समर्थन के लिये था। अशोक ने अपने साम्राज्य को विस्तार देने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति क्रूर कर्म किये थे और देश का पूर्ण ब्राह्मण समाज उसका विरोध करने लगा था। कदाचित् अशोक की गति वही होती जो महाराज वेन अथवा महाराज पुरुरूवा की कभी हुई थी। परन्तु बौद्ध धर्म, इसकी डूबती नौका की सहायता के लिये आगे आया।

'बौद्ध धर्मानुयायी अधिकतर छोटी जाति के लोग थे। बौद्ध भिक्षुओं ने राजनीतिक कारणों से ब्राह्मणों को गालियाँ देनी आरम्भ कीं। ब्राह्मणों के साथ-साथ, बिना पढ़े, वेद की भी निन्दा करनी आरम्भ की। इस पर ब्राह्मणों के मन में प्रतिक्रिया यह हुई की नीच जाति के लोग सदा दास प्रवृत्ति के होते हैं, इनको अधीन रखने में ही लाभ है।

'महात्मा जी ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि ब्राह्मण अपने धर्म से पतित हो चुके थे। इस कारण उनकी निन्दा हो रही थी।"

"और वेद में जो ज्ञान की बात लिखी गयी है, वह गलत हो गयी, जो वेद की निन्दा की जाने लगी थी ?" मेरा प्रश्न था।

'महात्मा जी ने प्राचीन भारत के विषय में जो कुछ पढ़ा और जाना है, वह अंग्रेज लेखकों के वचनों से जाना है। इस कारण बोल उठे, "ठीक है, मेरे पास समय नहीं है।"

"तो ऐसा करिये, एक विद्वान का नाम मैं आपको बताता हूँ। आप कभी-कभी-उनसे कुछ जानने का यत्न किया करिये।' मैंने कहा।

"मेरे पास समय नहीं है।"

"महात्मा जी ! परन्तु आप सर्वथा मिथ्या बात का प्रचार करने लिये तो समय निकाल रहे हैं।"

'महात्मा जी ने बात बदल दी और कहा, "कुछ और जानना चाहते हो ? सुरहवर्दी साहब मिलने आ रहे हैं।"

'इस पर मैंने बात समाप्त करने से पूर्व कह दिया, "ठीक है, मैं आपसे यह कहने आया था कि आप बंगाल के विषय में किसी प्रकार का समझौता मुसलमानों से मत करियेगा।"

"मैं समझता हूँ कि समझौता होगा तो ठीक ही है। परन्तु बंगाली नेताओं से राय कर लूंगा। शरत् बाबू को भी बुलाया है।"

"और डाक्टर श्यामा प्रसाद जी को क्यों नहीं ?"

"वह हिन्दू महासभा के नेता हैं।"

"और सुरहवर्दी साहब किसके नेता हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस पर गाँधी जी को क्रोध चढ़ आया। परन्तु अपने ऊपर संयम रख उन्होंने मुझे विदा करने के लिये हाथ जोड़ दिये और कहा, "आपके दृष्टिकोण और मेरे दृष्टिकोण में बहुत फरक है। इस कारण बहस से कुछ फायदा नहीं होगा।'

'मैं महात्मा जी की कुटिया से निकल आया।

'रघुनाथ सहाय जी ! महात्मा जी और दूसरे कांग्रेसी एक सफर पर चल रहे हैं। उस सफर की एक मंजिल तो वे पार कर चुके हैं। वह मंजिल देश-विभाजन की है अर्थात् पाकिस्तान बनने की है। अगली मंजिल है भारत को पूरा नहीं तो अधिकांश पाकिस्तान बना दिया जाये। वह इस प्रकार कि पश्चिमी पाकिस्तान रावी से इस पार आ जाये और पूर्वी पाकिस्तान पूर्ण बंगाल का स्वामी हो जाये।'

'तो इतने बड़े नेता को यह सरल सी बात भी समझ में क्यों नहीं आयी ?'

महाजन ने कहा, 'यह तो मैं जानता नहीं कि इन लोगों ने आँखें मूँदी हुई हैं अथवा इनकी आँखों पर पट्टी बंधी है। परन्तु यह सफर तो १९१४ से आरम्भ हुआ था। उस वर्ष कांग्रेस ने एक कमेटी बनायी थी जिसमें कुछ अन्य बातों के साथ-साथ यह भी विचार करना था कि मुसलमानों को राष्ट्रीय आन्दोलन में कैसे सम्मिलित किया जाये। हमारे महात्मा जी के पीर मुर्शिद पण्डित मोतीलाल उस कमेटी के सर्वे-सर्वा थे।

'कमेटी में एक के विरुद्ध तीन की सम्मति से यह निश्चय किया गया कि मुसलमानों की पृथक् मतदाता सूची होगी और उनको अपनी जनसंख्या से अधिक प्रतिनिधित्व मिलेगा।

'पाकिस्तान का बीज एक ब्रिटिश वाइसराय ने १९०६ में बोया था और १९१६ में कांग्रेस ने पहली बार इस उगते हुए पौधे को सींचा था। और अब इन कांग्रेसियों के मस्तिष्क में यह समाया हुआ है कि पाकिस्तान को भी भारत के समान शक्तिशाली होना चाहिये।'

रघुनाथ सहाय, महाजन साहब से विदा माँगकर चलने लगा तो महाजन ने पूछ लिया, 'रघुनाथ सहाय ! बहुत धन एकत्रित कर रखा है ?'

'कुछ तो बाप-दादाओं से विरासत में मिला है और कुछ स्वयं अर्जन किया है। आप लोगों की कृपा रही है जो मुकद्दमों में प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मेरी युक्तियाँ स्वीकार कर सदा फ़ैसला मेरे हक़ में देते रहे हैं।

'मुझे इस चीफ कोर्ट और पीछे हाई कोर्ट में प्रैक्टिस करते हुए बीस वर्ष हो चुके हैं और इस पूर्ण काल में केवल एक मुकद्दमा हारा हूँ। वह भी मैं चीफ-जस्टिस के पक्षपात के कारण मानता हूँ।'

'कितने बच्चे हैं ?' महाजन ने बात बदल पूछ लिया।

'दो हैं, एक लड़की है और एक लड़का है। लड़का बड़ा है, डी० ए० वी० कालिज में पढ़ता है और लड़की आर्य कन्या महाविद्यालय में एम० ए० में पढ़ती है।'

महाजन जी ने अपनी सम्मति दे दी, 'जो कुछ बच सकता है बचा लो। लाहौर पाकिस्तान में जायेगा और तब इस जायदाद का एक पैसा भी नहीं मिलेगा।'

रघुनाथ सहाय महाजन के लिये मन में आदर रखता था। इस कारण घर आते ही वह जायदाद को दिल्ली के किसी मुसलमान से अदला-बदली करने का यत्न करने लगा। चालीस-पचास लाख की सम्पत्ति के प्रतिकार में लगभग पाँच लाख की कीमत की सम्पत्ति नई दिल्ली में मिली। कुछ बैंक-बैलेंस था। रघुनाथ सहाय ने वह दिल्ली बैंकों में ट्रांस्फर कराया और अगस्त की पहली तारीख को हवाई जहाज में सवार हो दिल्ली आ पहुँचा।

तब से वह दिल्ली में था। पृथ्वीराज रोड वाली कोठी का प्लाट तो पीछे लिया था। तब भारत का सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में स्थापित हो चुका था।

जब रघुनाथ सहाय दिल्ली में आया तो उसने लड़के सोमदेव को दिल्ली विश्वविद्यालय में भरती कर दिया और लड़की को रामजस लड़कियों के कालिज में।

इस बात को अब अठाईस वर्ष व्यतीत हो चुके थे। लड़की सुमंगला का विवाह बम्बई में एक पंजाबी वकील के लड़के से हो गया था और उसकी चार सन्तान थीं। लड़के सोमदेव के भी दो सन्तान थीं। लड़की थी प्रतिभा और लड़का था राधाकृष्ण।

रघुनाथ सहाय अब घर पर बैठ अपने बचपन की बातों को स्मरण कर पोते और पतोहू को सुनाया करता था और उसका लड़का सोम सर्वोच्च न्यायालय में प्रैक्टिस करता था।

जिस दिन ऊपर लिखी बात हो रही थी, सोमदेव बार कौंसिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Ro 89.9145
GUR-Y
167970
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विशेष बैठक में भाग लेने के कारण कोर्ट से देरी से लौटा था।

बार-कौंसिल ने इस मीटिंग में यह निश्चय किया था कि इमर्जेंसी अनावश्यक और अवैधानिक है। इस प्रस्ताव का विरोध भी हुआ था, परन्तु प्रस्ताव विशाल बहुमत से पारित हो गया और इस प्रस्ताव की प्रतिलिपियाँ प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और प्रैस को भेज दी गई थीं।

जब सोमदेव घर आया तो रघुनाथ सहाय अभी भी पोते को देश की गाड़ी 'रिवर्स गीयर' पर चल रही समझा रहा था।

सोमदेव को देख रघुनाथ सहाय ने पूछ लिया, 'सोम! आज बहुत देर नहीं हो गयी क्या ?"

'पिताजी ! बार कौंसिल की मीटिंग थी और उसमें, मैं प्रमुख वक्ता था, जिससे मेरा वहाँ रहना परमावश्यक था।'

'क्या कहा है तुमने व्याख्यान में ?'

'यही कि भारत सरकार ने और राष्ट्रपति ने अपनी बुद्धि का प्रयोग इमर्जेंसी लगने से पहले नहीं किया। देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हुई थी जिससे देश के किसी भाग को देश से अलग होने का भय हो।

'यहाँ केवल सत्ताधारी दल को शासन जाने का भय था। इसके लिये संविधान में इमर्जेंसी की स्वीकृति नहीं है।

'प्रस्ताव बीस इक्कीस के विरोध में एक सौ बीस मतों से पारित हो गया है और आज राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री को भेज दिया गया है।'

रघुनाथ सहाय का कहना था, 'बार कौंसिल के प्रधान और मंत्री भी वहाँ थे क्या ?'

'हाँ।'

इस पर राधाकृष्ण ने पूछ लिया, 'परन्तु यह वर्जित नहीं है क्या ?'

'क्या वर्जित है ?'

'इमर्जेंसी के सम्बन्ध में विचार प्रकट करना ?'

'नहीं, वर्जित नहीं। वर्जित है इस विचार का प्रसार करना। वह हम नहीं करेंगे। सरकारी समाचार ऐजन्सी को हमने प्रस्ताव भेजा है। वह चाहे इसका प्रसार करे, चाहे न करे।'

'नहीं होगा।' रघुनाथ सहाय का कहना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय सेवक सोमदेव के लिये चाय बनाकर ले आया। इस पर सोमदेव ने लड़के से पूछ लिया, 'तुम्हारी माँ किधर है ?'

इस पर रघुनाथ सहाय हँस पड़ा और राधाकृष्ण से बताई बात कहने लगा। सोमदेव ने कहा, 'यह ठीक नहीं हो रहा।'

इस पर रघुनाथ सहाय ने पूछ लिया, 'तुम्हारे बार-कौंसिल में व्याख्यान झाड़ने से भी खराब हो रहा है क्या ?'

'मैं इमर्जेंसी के नियम भंग करने की बात नहीं कर रहा। मैं समाज के नियम भंग करने की बात कह रहा हूँ। विवाह से पहले बहू का ससुराल में आ कर रहना, समाज में शोभा नहीं पायेगा।'

'परन्तु सोम ! लड़की के मन में इस स्थान की सुरक्षा में आना अधिक युक्तियुक्त है। मैं उसकी सूझ-बूझ की सराहना करता हूँ।'

सोमदेव ने कहा, 'पुलिस में रिपोर्ट तो लिखानी ही चाहिये।'

'क्या लाभ होगा ?' रघुनाथ सहाय का प्रश्न था।

सोमदेव समझ गया कि बाबा जब भी किसी घटना के विषय में सुनते हैं तो कानून की दृष्टि में देखना चाहते हैं। उनके प्रश्न ने उसको स्मरण करा दिया कि आज भारत में सामान्य कानून स्थगित हो चुका है। जो कुछ है, वह भी छलना मात्र रह गया है। यह स्मरण कर उसने चाय पीनी आरम्भ कर दी।

अभी चाय समाप्त नहीं हुई थी कि लक्ष्मी प्रेम को लेकर आ पहुँची। लक्ष्मी ने आते ही अपने और लड़की के लिये चाय मँगवा ली।

'सुनाओ प्रेम ! छुट्टी लेने में कठिनाई तो नहीं हुई ?'

'कठिनाई तो नहीं हुई, परन्तु कालिज में गड़बड़ मच रही है।'

'क्या ?' सोमदेव ने प्रश्नभरी दृष्टि में प्रेम की ओर देखते हुए पूछ लिया।

उत्तर लक्ष्मी ने दिया, 'मैं कालिज में सीधी प्रिंसिपल के बंगले में पहुँची थी। उस भली औरत ने मुझे देखते ही कहा, "बहनजी। आपने ठीक ही किया है।

"मैंने प्रेम को बुला कर उससे आपके घर जाने की इच्छा के विषय में पूछा था। मुझे प्रेम की माँ ने बता रखा है कि इसका आपसे क्या सम्बन्ध होने वाला है। जब प्रेम से मैंने पूछा, 'जानती हो तुम्हारा भविष्य में इस घर से क्या सम्बन्ध होने वाला है ?'

"तो प्रेम ने कहा, 'मैं जानती हूँ परन्तु परिस्थिति ऐसी उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गयी है कि मैं उस घर में पनाह लेना अधिक उचित समझती हूँ।'

'प्रिंसिपल ने पुलिस में यह रिपोर्ट की है कि आज सायं साढ़े पाँच बजे से नगर के कुछ गुण्डे लड़के बोर्डिंग हाउस के चारों ओर चक्कर काटते प्रतीत हो रहे हैं। पुलिस क्या करेगी, यह तो विदित नहीं, परन्तु पुलिस की जाँच-पड़ताल से प्रेम को बाहर रखने के लिये मैं इसे लेकर घर आ गयी हूँ।'

'सुनाओ प्रेम।' सोमदेव ने पूछ लिया, 'तुम्हें यहाँ तो भय प्रतीत नहीं हो रहा?'

'नहीं पिता जी! यहाँ तो सब कुछ सुखद् ही अनुभव होता है।'

सेवक अब इन दोनों के लिये भी चाय इत्यादि ले आया।

सोमदेव चाय समाप्त कर चुका था। वह उठा और अपने स्टडी रूम में चला गया। वहाँ उसका मुंशी रामसहाय अगले दिन उपस्थित होने वाले मुक़द्दमे की फाइलें देख रहा था। वकील साहब को आया देख उसने कहा, 'मिस्टर आनन्द अय्यर कह रहे थे कि आपके व्याख्यान की अक्षरश: रिपोर्ट सी० बी० आई० वालों के पास चली गयी है।

'कुछ लोग टेप-रिकार्डर लिये सभा में बैठे थे। अय्यर का कहना है कि वे मुखबिर थे। अय्यर को भय है कि आप आज रात 'मिसा' में पकड़ लिये जायेंगे।'

सोमदेव मुस्कराता हुआ अपने मुंशी के मुख पर देख रहा था। जब वह अपनी सूचना बता चुका तो सोमदेव ने कहा, 'जीवन में यदि इसका अनुभव प्राप्त करना है तो वह भी हो जाये। ऐसे अनुभव के लिये भी तो अवसर बार-बार नहीं आते।'

मुंशी ने बात बदल वह फाइल सामने रख दी जो स्वयं देख रहा था।

: ४ :

रात भोजन करते हुए रघुनाथ सहाय के मस्तिष्क की एक अन्य तार हिल उठी। उसने प्रेम को सम्बोधित करते हुए कहा, 'मैं विलायत से बैरिस्टर बन लौटा तो मेरी सगाई गुजरांवाला के एक रईस की लड़की से हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं तो लंदन की क्लबों और डांस-हालों में डुबकियाँ लेता हुआ आया था और जब मेरी माँ ने बताया कि मेरी सगाई उसने स्वीकार कर ली है तो मैंने विस्मय में माँ से पूछा, "माँ, किससे ?"

'वह कहने लगी, "गुजरांवाला के फग्गूमल की लड़की सरस्वती से।"

'मैंने कह दिया, "माँ, मैं तो उसे जानता नहीं ?"

"जानने के लिये सारी उमर पड़ी है। जल्दी किस बात की है ?"

"पर माँ, मैं तो अपनी पसन्द की लड़की से विवाह करूँगा ?"

"तो कोई विलायत में पसन्द कर आये हो ?" माँ ने पूछ लिया।

"नहीं माँ, वहाँ कोई पसन्द नहीं आयी ?"

'माँ ने मुस्कराते हुए कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि उस देश में लड़कियाँ नहीं रहतीं ? रहती होतीं तो तुम्हें पसन्द आ जातीं ?'

"माँ, लड़कियाँ तो वहाँ बहुत हैं। मेरे देखते-देखते बम्बई के दो विद्यार्थियों ने शादी रजिस्टर करवाई थी। परन्तु मैं उनको रिजैक्ट कर चुका था।"

"नहीं।" माँ ने कहा, "वे लड़कियाँ नहीं हो सकतीं ? होतीं तो मेरे लड़के को पसन्द आ जातीं।'

"देखो रघुनाथ", माँ ने आज्ञा जारी कर दी, "मैंने तुम्हारे लिये एक सुन्दर लड़की ढूँढी है। तुम उसे न पसन्द तो कर सकते ही नहीं। मैं समझती हूँ कि वह मेरे पोते-पोतियों की लहर-बहर लगा देगी।"

'माँ के सामने मैं कुछ नहीं कह सका परन्तु मैं चिन्तित था कि न जाने माँ ने किस 'नजर पट्टू' को गले में बाँधने का प्रबन्ध कर दिया है।

'मैं कुछ कहता भी तो सामने पिता जी बैठे थे। वह ऐसी डाँट बताया करते थे कि ज़ुबान को ताला लग जाया करता था। इस कारण पिता जी के डर के मारे चुप रहा।

'इस घटना को आज चव्वन वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। आधी सदी व्यतीत हो गयी है।'

प्रेम ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'बाबा ! लड़की देखने के बाद पसन्द आयी थी क्या ?'

इस पर रघुनाथ सहाय हंस पड़ा और बोला, 'जब मुझे पत्नी से प्रथम भेंट के लिये माँ ने सोने के कमरे में भेजा तो मुझे एक सोने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अंगूठी बड़े से नीलम के नग वाली देकर कहा, "देखो रघु ! उसे हाथ में यह पहिनाओगे तो वह मुख दिखायेगी।"

'मैं यह सुन भौचक्क रह गया। अपने को हिन्दुस्तान में पैदा होने पर मैं शोक अनुभव करते हुए कमरे में गया। द्वार भीतर से बन्द कर अपनी होने वाली पत्नी के सामने आ खड़ा हुआ। उसने लम्बा घूंघट निकाला हुआ था। मैं उसके पास पलंग पर बैठा तो वह खिसक कर कुछ दूर हट गयी। मैंने उसका हाथ पकड़ना चाहा तो उसने दोनों हाथ अपनी चुनरी के भीतर छुपा लिये।

'मैंने जेब से माँ की दी हुई अंगूठी निकाल पहिनाने के लिये हाथ बढ़ाया तो उसने मुख मोड़ लिया।

'अवसर देख मैंने उसका दाहिना हाथ पकड़ लिया। वह उसने अपना घूंघट कुछ और लम्बा करने लिये चुनरी से बाहर निकाला था।

'मैंने हाथ जोर से पकड़ा तो वह थर-थर काँप रही थी। मैंने वह अंगूठी उसकी उंगली पर चढ़ाई और उसका काँपता हुआ हाथ पकड़ पूछ लिया, "क्या हुआ है तुम्हें, काँप क्यों रही हो ?"

'अब उसने कहा, "तनिक पीछे हट कर बैठिये।"

'मुझे बहुत निराशा हुई। मैंने कहा, "पर माँ तो कहती थी कि अंगूठी पहिनाने पर तुम दर्शन दोगी ?"

"वह तो है ही, परन्तु जरा पीछे हट जाइये। मुझे भय लग रहा है।"

'मैं पीछे हट गया और उसने थोड़ा सा घूंघट ऊपर उठाया।

'मैंने कहा, "कुछ दिखाई नहीं दिया, अभी भी चाँद-सा मुख बादलों में छुपा है।"

'इस पर उसने घूंघट थोड़ा और ऊँचा कर कहा, "बस, आज इतना ही ठीक है, शेष कल।"

'मैंने अवसर देख उसकी ओढ़नी सिर पर से उठा दी।

'उसने कस कर आँखें मूंद लीं। परिणाम यह हुआ कि मुझे उसकी रूप-राशि देखने का अच्छा अवसर मिल गया। मैंने देखा और पसन्द कर लिया। वह अति सुन्दर थी, भोली-भाली सूरत थी। वैसे भूषण पहने थी और माँग में सिन्दूर भी पड़ा था। मैं मन्त्रमुग्ध उसकी ओर देखता रह गया।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर राधाकृष्ण ने पूछा, 'दादी का रूप देख उसे आपने पसन्द किया था अथवा पीछे का व्यवहार देखकर प्रसन्न हो गये थे ?'

'पसन्द अपनी-अपनी है। परन्तु मैं उस समय की बात स्मरण करता हूँ तो अपनी माँ की सूझ-बूझ पर अति प्रसन्न होता हूँ। उसने अपने बैरिस्टर पुत्र की पसन्द की ही पत्नी ढूँढी थी।

'मैंने माँ से पूछा, "माँ, तुम को मैंने कभी भी तो नहीं बताया था कि मुझे किस प्रकार की पत्नी पसन्द है, परन्तु माँ, तुमने तो बहुत मजेदार बीवी ढूँढ दी है।"

'माँ ने समझा कि मैं मजाक कर रहा हूँ। इस पर परेशानी अनुभव करते हुए उसने पूछा, "क्यों ? क्या दोष है जो तुमने इसमें देखा है ?" वह काल था जब हम रसोई में भोजन दो-दो, तीन-तीन व्यक्ति बैठ किया करते थे। माँ और कभी दादी चूल्हे पर रोटियाँ सेंकती जाती थी और खिलाती जाती थी। मैं पिता जी के साथ बैठा भोजन कर रहा था। पत्नी वहाँ नहीं थी। वह अपनी ननद और अन्य सम्बन्धियों के साथ बैठकघर में बैठी थी।

'मेरे कथन और उस पर माँ के प्रश्न पर पिता जी प्रश्नभरी दृष्टि में मेरे मुख पर देखने लगे और खाते-खाते रुक गये।

'मैंने कहा, "माँ, दोष नहीं, गुण पूछो।"

"अच्छा गुण ही बता दो।" माँ ने कुछ उद्विग्न हो पूछ लिया।

'इस पर पिता जी ने कुछ क्रोध में कहा, "देखो रघुनाथ ! वकालत का अभ्यास माँ और पत्नी के विषय पर करना ठीक नहीं। घर को अपनी बैरिस्टरी के दायरे से बाहर रखो।"

'मैं चुप कर गया। परन्तु इसका अर्थ मैं समझा कि माँ ने पत्नी के सौन्दर्य को देख कर उसका निर्वाचन नहीं किया था वरन् उसके कुछ दूसरे गुणों को देख कर किया था। माँ ने पिता जी की डाँट के उपरान्त मुझे चुप हो गये देखा तो मेरी साँत्वना के लिये कह दिया, "देखो रघुनाथ ! मैंने अंग्रेजी गोरी लड़कियों को देखा नहीं। इस पर भी उनके विषय में सुना है और मैं समझती हूँ कि सरस्वती किसी के भी मुकाबिले में उन्नीस नहीं उतरेगी। परन्तु मैंने उसके दूसरों गुणों के कारण तुम्हारे लिए उसका चयन किया है और उन कारणों का ज्ञान तुम्हें पहली रात में नहीं हो सकता। उसमें कुछ वर्ष लगेंगे। तब ही मेरे इस प्रयास का अनुमान लगा सकोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं माँ के मुख पर देख कर मुस्करा रहा था कि पिता जी ने अभी भी कुछ रोष में कह दिया, "भोजन करो। कुछ अन्य लोग हमारे उठने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

'अतः मैं चुपचाप भोजन करने लगा। अब तो राधाकृष्ण ने प्रेम का निर्वाचन किया है। हमसे पूछे बिना और अब यह प्रत्येक गुण-दोष के लिये अपने मन से ही बात कर सकता है और हमें, न मुझे, न इसके माता-पिता को, इसकी किसी टीका-टिप्पणी के सुनने का अवसर है।'

'परन्तु पिता जी ?' प्रेम ने कह दिया, 'आप टीका-टिप्पणी तो कर सकते हैं। यहाँ इनकी माता जी मेरे मौसी भी तो हैं। हमारे विवाह के निश्चय से बहुत पहले से मैं देखी-भाली थी। वह मुझे 'रिजैक्ट' भी कर सकती थीं। तब भी वह मेरी मौसी ही रहतीं।'

लक्ष्मी प्रेम की सगी मौसी नहीं थी। वह उसकी एक सहेली की लड़की थी और अपने पति के साथ चण्डीगढ़ में रहती थी। प्रेम कालिज में पढ़ती हुई लक्ष्मी और उसके घर के प्राणियों से मिलने आया करती थी।

प्रेम अब बी० ए० के अन्तिम वर्ष में थी। इस वर्ष शुरु के दिनों में प्रेम और राधाकृष्ण में विवाह की बात हो गयी थी। उन्होंने राधाकृष्ण की माँ को अपना निर्णय बता कर उसका आशीर्वाद माँगा था। लक्ष्मी का कहना था, 'मैं इसकी आशा करती थी। तुम्हारे इस निर्णय का मैं स्वागत करती हूँ।'

'इस पर भी आर्शीवाद तो विवाह के उपरान्त दूँगी। न जाने तुम अंग्रेजी पढ़े-लिखे वर्तमान युग के लोग अपने निर्णय पर स्थिर भी रह सकोगे अथवा नहीं ?'

प्रेम ने कहा, 'इतना भी ठीक है, शेष हम आपका और पिता जी का आर्शीवाद प्राप्त करने का यत्न करेंगे।'

आज इस बात को छः मास व्यतीत हो चुके थे।

आज राज्य का कोई उच्चाधिकारी उसका अपहरण करने के लिये तैयार है तो यह अवश्य उसके शारीरिक आकर्षण के कारण ही था। इससे प्रेम अपने आकर्षण पर गौरव भी अनुभव करती थी और भय भी।

जब रघुनाथ सहाय ने अपने विवाह की घटना बताई तो प्रेम ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछ लिया, 'परन्तु बाबा ! आपके अपने विवाह की घटना स्मरण करने में कुछ कारण तो होगा। क्या आप मेरी तुलना इनकी दादी से कर रहे हैं ?'

'इसका मुझे अधिकार नहीं है। यह राधाकृष्ण ही कर सकता है। और यह तुम्हारी तुलना अपनी दादी से नहीं कर सकता, क्योंकि इसने उसे देखा नहीं। वह इसके इस संसार में आने से पहले ही जा चुकी थी।

'परन्तु प्रेम ! मैं तुम्हारी और राधा की दादी की तुलना नहीं कर रहा। मैं तो उस काल की वर्तमान काल से तुलना कर रहा हूँ। मैं कह रहा था कि इन पचास-पचपन वर्षों में हम कहाँ से चल कर कहाँ पहुँच गये हैं।

'तब मैंने अपनी पत्नी को पहली बार शयनागार में जा कर ही देखा था और अब तुम विवाह से कई मास पूर्व यहाँ मेज पर आमने सामने बैठे हुए भोजन कर रहे हो। मैं इस बदलती परिस्थिति का ही वर्णन कर रहा था।

'उस दिन राधा कह रहा था कि प्रेम की नाक जरूरत से कुछ अधिक तीखी है। आंखें इतनी मोटी-मोटी हैं कि कहीं चश्मा लगवाना पड़ा तो स्पेशल साईज के ग्लासिज़ फैक्टरी से मंगवाने पड़ेंगे। मैं तो इस बदल रहे जमाने की बात कह रहा हूँ।

'हम सब लोग विचारों से और व्यवहार से एक यात्रा पर चल रहे हैं और कहाँ से कहाँ पहुंच गये हैं, मैं काल की इस गति पर विचार कर रहा था।'

'पर बाबा !' अब बातों का सूत्र राधाकृष्ण ने हाथ में लेते हुए पूछा, 'इस यात्रा का अंत कहाँ होगा ?'

'मैं तो समझता हूँ कि यह अनन्त की ओर है और इसका अंत नहीं है।'

'मैं यह समझता हूँ,' अब सोमदेव ने अपने मन की बात कह दी। वह अभी बाबा के मन की बातें रसपूर्वक सुन रहा था। उसने कहा, 'इस जगत् में सबकुछ दायरों में घूम रहा है। पृथिवी, चन्द्र, सूर्य और तारे इत्यादि सब एक केन्द्र के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं। इसी प्रकार हम भी एक चक्कर में घूम रहे हैं। हम किसी केन्द्र के साथ एक मजबूत डोर से बंधे हुए हैं और उसको तोड़ कर हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा नहीं सकते। आज के युवा कुछ दूर तक जा रहे हैं, परन्तु उस डोर से खिचे हुए ये शीघ्र ही दूसरी ओर घूम जायेंगे। संसार की गति का अंत नहीं है।'

'तब भी अंत होगा।' रघुनाथ सहाय ने कह दिया, 'जिस भी दिशा में यह प्रवहन हो रहा है उससे उल्टी तरफ होने वाला है। वह ऐसे ही है जैसे कोई मनुष्य मरता है और फिर जन्म लेता है। जन्म लेकर नया जीवन आरम्भ हुआ और पुराना जीवन समाप्त हो गया माना जाता है, इसी को अंत कहते हैं।

'भले ही यह कहानी बार-बार दुहरायी जाये, परन्तु इसका आरम्भ और अंत है। नये जन्म में नयी बात आरम्भ होती है।'

'हाँ, उस दृष्टि से कुछ नया बनने वाला होता है।' सोमदेव ने पिता की युक्ति को स्वीकार करते हुए कह दिया।

'परन्तु पिता जी!' राधाकृष्ण ने कहा, 'बार-बार जन्म लेने से क्या आत्मा बदल जाता है?'

'नहीं।' रघुनाथ सहाय ने कहा, 'आत्मा तो अमर है, यह अमृत कहाता है। परन्तु शरीर बदल जाता है। यही बात संसार में होगी। हमारे समाज का शरीर बदलेगा, आत्मा नहीं बदलेगी।'

'मनुष्य शरीर से ही पहिचाना जाता है, आत्मा तो पहिचानी नहीं जाती। इसी प्रकार एक समाज पहिचानी जाती है इसके रीति-रिवाज से। इसकी आत्मा है उन रीति-रिवाजों के पीछे विचार। वे नहीं बदलेंगे। क्योंकि समाज के रीति-रिवाज बदल रहे हैं, इसी से कह रहा हूँ कि हम बदल रहे हैं।'

इस समय राधाकृष्ण ने पूछ लिया, 'बाबा, यह परिवर्तन बाल्य-काल से यौवन की ओर है अथवा यौवन से वृद्धावस्था की ओर?'

'मैं समझता हूँ यौवन की ओर है। यौवन पागलपन है और इसी ओर हम भाग रहे हैं। जिस कारण आज प्रेम को यहाँ आ कर छुपना पड़ा है, वह पागलपन ही तो है।'

भोजन समाप्त हो गया और सब अपने-अपने काम में लग गये।

सोमदेव अपने स्टडी रूम में चला गया। प्रेम, राधाकृष्ण की माँ के साथ उसके कमरे में चली गयी और राधाकृष्ण ने अपनी पढ़ाई की पुस्तकें निकालीं और उसमें से स्मरणीय अंश अपनी नोट बुक पर लिखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

लक्ष्मी के कमरे में पहुँच प्रेम ने कहा, 'मैं तो यहाँ बाबा की बातें सुनने आती हूँ। आज उन्होंने कहा है कि भारत की समाज यौवन की ओर जा रही है और यह पागलपन है।'

'परन्तु तुम पागलपन की ओर जा रही हो क्या ?'

'मुझे तो अपने में कुछ भी पागलपन दिखाई नहीं देता। परन्तु यह भी सत्य है कि जो अपहरण करने वाले थे, वे पागल से कुछ कम नहीं हैं।'

'वह कौन थी जिसने तुम्हें बताया है कि यह घटना होने वाली है ?'

'हम तीन सखियों में परस्पर घनी मित्रता है। मैं, निर्मला और साधना। सप्ताह में हम एक आध बार प्रिंसिपल से स्वीकृति ले सिनेमा देखने जाया करती हैं। आज, हमारा विचार था रीगल में ब्रह्मचारी पिक्चर देखने का।

'मध्याह्न के अवकाश के समय निर्मला आयी तो कहने लगी, "मुझे साधना की बातों से कुछ ऐसा समझ में आया है कि तुम्हारे पीछे राज्य का कोई बड़ा व्यक्ति लगा हुआ है।"

'मैंने पूछा, "पीछे लगने से क्या मिलेगा उसे ?"

'वह मुस्करा कर बोली, "टैम्परेरी पत्नी। वह तुम्हारा अपहरण करने वाला है।"

'इस पर मुझे भय लग गया, "और कौन है वह मूर्ख ?" मैंने पूछा।

'यह तो उसने बताया नहीं। परन्तु वह कह रही थी कि प्रेम भी इस प्रगतिशील संसार में स्नातक पद पा जायेगी।'

'तो साधना ने यह पद पाया हुआ है ?' लक्ष्मी ने पूछा।

'साधना कालिज से बाहर के कुछ युवकों से सम्बन्ध रखती है और वह कभी-कभी अपने कारनामे बताया करती है।'

'तो तुम उसके साथ किसलिये घूमती तथा सिनेमा इत्यादि में जाती हो ?' लक्ष्मी ने पूछ लिया।

'केवल इसलिये कि श्रेणी की अन्य लड़कियाँ प्रायः बदसूरत और मोटी बुद्धि की हैं। वह श्रेणी में सबसे शोख और एक श्रेष्ठ वक्ता है। कालिज की डिबेटिंग क्लब में प्रायः पुरस्कार पाती है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु चरित्र की हीन लड़की से तुम्हारा मेल-जाल ठीक नहीं ।'

'माताजी ! चरित्र के अर्थ हमारे शब्द कोश में वह नहीं जो कदाचित् आपके शब्दकोश में हैं ।'

'तुम्हारे शब्दकोश में चरित्र के अर्थ क्या हैं ?'

'स्वेच्छा से किया प्रत्येक कार्य चरित्र का प्रतीक होता है । जहाँ कोई कार्य विवशता में किया जाये, वह चरित्रहीनता है ।'

'स्वेच्छा से चाहे विष ले लिया जाये ?'

'जी । आज की पीढ़ी के युवक और युवतियाँ यही समझती हैं ।'

'मैं समझती हूँ कि यह मिथ्या धारणा है । हमारे शास्त्र में लिखा है कि धर्म जिसे सदाचार भी कहते हैं, वह है जो वेद में वर्णित है । अथवा जो वेद के जानने वाले विद्वानों का आचरण हो, जो साधु लोगों का आचरण हो अथवा जो आत्म-संतोष का कारण हो ।'

'बस माता जी ! यही तो मैं कह रही हूँ कि जो अपने मन को भावे, वही चरित्र है ।'

लक्ष्मी समझ गयी कि प्रेम उससे बहस में जीत रही है । इस पर भी वह जानती थी कि अपने मन की बात जो अपने ही को हानि पहुँचाने वाली वाली हो, यह अज्ञानता के वश की जाने वाली बात है । इस कारण उसने अपने विचारों को सुव्यवस्थित कर कहा, 'तो तुम्हारी सहेली को संतोष हो गया है कि उसका इस प्रकार युवकों से सम्बन्ध उचित है ?'

'माता जी ! उसे अवश्य इससे संतोष प्राप्त होता होगा । तभी तो वह कभी-कभी इस कार्य के लिये जाती है ?'

'और तुम्हें कभी इस प्रकार का संतोष प्राप्त करने का अवसर मिला है अथवा नहीं ?' लक्ष्मी ने गम्भीर हो पूछ लिया ।

'एक बार अवसर मिला है । मुझे उससे संतोष अनुभव हुआ था और उसको बार-बार करने के लिये लालायित रहती हूँ ।'

'किससे ?'

'कालिज के बाहर रैस्टोरां से चाट खाने का ।' प्रेम ने मुस्करा कर उत्तर दिया ।

अब लक्ष्मी ने भी मुस्कराकर पूछा, 'और इस चाट खाने से तुम्हें कभी पेट में वायु नहीं बनी ?''

'माता जी ! मैं अपने पेट की सीमा जानती हूँ और मैं इस बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ध्यान रखती हूँ कि उस सीमा को पार न करूँ।'

'परन्तु वह कर्म, जो तुम्हारी सखी साधना करती है, उसमें सीमा नहीं रह सकेगी। दोनों प्रकार के कर्मों में अन्तर है।' लक्ष्मी ने बात पूर्व विषय पर लाते हुए कह दिया।

प्रेम समझती तो थी। परन्तु जो कुछ समझती थी, वह कह नहीं सकती थी। इस कारण वह लक्ष्मी का मुख देखती रह गयी।

लक्ष्मी ने ही बात की, 'यह इस कारण कि इस कार्य में स्त्री, पुरुष के अधीन हो जाती है। वह अधीनता जी भर जाने पर भी छूट नहीं सकती, जब तक पुरुष का जी न भर जाये।

'तब यह कर्म संतोषजनक नहीं रहेगा और सदाचार नहीं रहेगा। और फिर जानती हो इस कर्म का परिणाम सन्तान भी हो सकती है। वह भी असंतोष का कारण हो जायेगी।'

'पर माता जी! मैं इसकी लालसा नहीं रखती। इसी कारण ही तो मैं भागकर यहाँ आ गयी हूँ।'

लक्ष्मी ने बात बदल दी, 'मैं विस्मय करती हूँ कि वह कौन राज्य का बड़ा व्यक्ति हो सकता है जिससे, तुम्हारी सहेली ने तुम्हें डरा कर यहाँ भगा दिया है।'

'निर्मला ने बताया नहीं। कदाचित् वह स्वयं भी जानती नहीं। साधना अवश्य जानती होगी। परन्तु रहस्य पता चलने के उपरान्त मुझे उससे बात करने का साहस नहीं हुआ।'

'मेरी सम्मति है कि तुम्हें अब साधना से मेल-जोल सर्वथा बंद कर देना चाहिये।'

'परन्तु प्रिंसिपल ने पुलिस में रिपोर्ट की है और इस रिपोर्ट का क्या परिणाम होता है, अभी तो यह देखना है?'

लक्ष्मी ने बातों का विषय बदल प्रेम की पढ़ाई पर पूछना आरम्भ कर दिया।

प्रेम रात लक्ष्मी के कमरे में ही सोयी। लक्ष्मी अगले दिन प्रातः अपने स्वभावानुसार पति के कमरे में गयी तो प्रेम के विषय में बात-चीत होने लगी। जब उसने सब बात बतायी तो सोमदेव का कहना था, 'मैं समझता हूँ कि इस लड़की से राधा का रिश्ता टूट जाना चाहिये अन्यथा इनका विवाह एक दो दिन में हो जाना चाहिये।'

'मैं भी इसी परिणाम पर पहुँची हूँ। परन्तु यह बात सुमित्रा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तो पूछनी होगी ।'

'तुम प्रेम की माता जी को टेलीफोन तो कर ही दो कि वह अविलम्ब यहाँ चली आये । सम्भव हो तो मधुसूदन जी को भी साथ लेती आवे ।'

दम्पति वहाँ से निकल स्टडी रूम में चले आये और वहाँ से चण्डीगढ़ मधुसूदन के घर का नम्बर घुमाने लगे ।

उस समय प्रातः चार बजे का समय था । घर के अन्य सब प्राणी सोये हुए थे । यहाँ दिल्ली में भी और चण्डीगढ़ में भी ।

चण्डीगढ़ में टेलीफोन मधुसूदन ने सुना । वह हड़बड़ाता हुआ अपने सोने के कमरे से उठकर ड्राइंगरूम में आया और टेलीफोन सुनने लगा ।

इधर से सोमदेव बोल रहा था । इसने अपना नाम बताया और फिर टेलीफोन करने का उद्देश्य इस प्रकार बता दिया, 'प्रेम कल सायंकाल से हमारे घर में है । इस कारण प्रेम की माता जी और यदि हो सके तो आप स्वयं भी शीघ्रातिशीघ्र यहाँ चले आइये । वह एक समस्या लेकर आयी है और उसके विषय में आपसे राय करनी आवश्यक हो गयी है ।'

मधुसूदन ने एक क्षण विचार कर कहा, 'एक अत्यावश्यक मुकद्दमे की आज यहाँ हाईकोर्ट में पेशी है । इस कारण यदि केवल प्रेम की माता से काम चल सके तो वह आ जाती है । यदि फिर भी मेरी आवश्यकता हुई तो तीन बजे यहाँ पुनः टेलीफोन कर दीजियेगा । मैं सायंकाल तक वहाँ पहुँच जाऊँगा ।'

'ठीक है बहन जी को भेज दें ।'

'प्रेम कहाँ है ?'

'सो रही है ।'

'यदि दो शब्दों में कुछ बता दें तो चिन्ता कम हो जायेगी ।'

'प्रेम के कालिज में कल एक घटना घटी है । उसके विषय में ही विचार करना है । आप बहन सुमित्रा को भेज दें । तब विचार कर आपको बुलाने की बात हो जायेगी ।'

प्रेम को इस विषय में कुछ नहीं बताया गया । वह अपने नियम से साढ़े छः बजे उठी और उसे बेड-टी मिल गयी । उसी समय राधाकृष्ण अपने हाथ में चाय का प्याला लिये हुए नाईट गाऊन में अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता जी के कमरे में आ गया।

लक्ष्मी स्नानादि से अवकाश पा गीता की पुस्तक निकाल कर नियमित अध्ययन में लगी थी। प्रेम अपने पलंग पर बैठी हुई चाय के प्याले में से चुस्कियाँ ले रही थी।

'प्रेम जी नमस्ते।' राधाकृष्ण ने कहते हुए एक स्टूल प्रेम के पलंग के समीप खिसका उस पर बैठते हुए कहा।

प्रेम ने मुस्कराकर प्याले से अधर ऊपर उठाते हुए कहा, 'रात कैसी रही?'

'रात भर तुम्हारे स्वप्न लेता रहा हूँ।'

'और यह कि मैं कहीं फाँसी चढ़ाई जा रही हूँ या नहीं?'

'फाँसी तो नहीं परन्तु कुछ ऐसी ही बात थी। स्वप्न में तुम किसी घोर मुसीबत में फँसी हुई छटपटा रही दिखाई दी थीं।'

'और मैं रात भर आपकी संगत में होने के स्वप्न लेती रही हूँ।'

राधाकृष्ण हँस पड़ा। इनकी बातों और हँसी के शब्द से लक्ष्मी का ध्यान भंग हुआ तो उसने अपनी पुस्तक बंद कर दी। पुस्तक को मेज पर सामने रैक में रख वह उठी और पुत्र के समीप एक कुर्सी पर आ बैठी। बैठते ही उसने कहा, 'मैंने चण्डीगढ़ टेलीफोन कर दिया है।'

इस पर प्रेम ने परेशानी प्रकट करते हुए पूछ लिया, 'क्या टेलीफोन किया है, मौसी?''

'बहन सुमित्रा पहली बस से आ रही हैं।'

'किसलिये?'

'अपनी लड़की की सुध लेने के लिये।'

'क्यों, मुझे क्या है? मैं मरने वाली नहीं हूँ।'

राधाकृष्ण जानता था कि उसकी माता जी कोई कार्य अविचारित नहीं करतीं। इस कारण उसने पूछ लिया, 'माता जी! इनकी माता जी को कष्ट देने की क्या आवश्यकता थी? क्या हम यहाँ उचित कार्यवाही नहीं कर सकते थे?

'मैं समझता हूँ कि आपको कालिज के प्रिंसिपल को टेलीफोन कर पता करना चाहिये कि वहाँ किसी प्रकार की घटना हुई है क्या?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वहाँ आठ बजे करूँगी । परन्तु इसकी माता जी को प्रातः चार बजे ही टेलीफ़ोन किया था । मैं तो चाहती थी कि इसके पिता भी आ जाते तो निर्णयात्मक बात हो जाती ।'

'क्या निर्णय करना चाहती हैं आप ?' राधाकृष्ण ने पूछ लिया।

'यह तुम्हारे पिता तुम्हें बतायेंगे । पहले बहन सुमित्रा को आने दो । मैंने तुम्हारे पिताजी की राय से ही टेलीफोन किया है ।'

'तो आप रात भर मेरे विरुद्ध किसी प्रकार की साज़िश करते रहे हैं ?'

'साज़िश तो नहीं और न ही रात भर लगी है इस विचार में । रात मैं यहाँ तुम्हारे समीप ही सोयी थी और पाँच घण्टे गहरी नींद लेकर उठी थी । इस कारण दस बजे की सोयी हुई मैं प्रातः तीन बजे उठ पड़ती हूँ । उस समय मैं यहाँ अपने कमरे में ही एक प्याला कॉफी का बना कर ले लेती हूँ । तदनन्तर शौचादि से निवृत्त हो मैं राधा के पिता को जगाने जाती हूँ ।

'आज वह रात भर प्रेम की समस्या पर विचार करते हुए सोये नहीं ?'

'क्या चिन्ता करते रहे हैं पिताजी, मेरे विषय में ?' प्रेम ने पूछ लिया ।

'यही कि तुम्हारा इस कालिज में पढ़ना कहाँ तक तुम्हारे और राधे के हित में है ।'

'परन्तु मुझ से पूछ भी तो लिया होता ?'

'वह तो तुम्हारी माता जी पूछेंगी । जो कुछ राधा के पिताजी ने विचार किया है, वह अंतिम विचार तो है नहीं । इस कारण तुम दोनों के बताने के योग्य नहीं था ।'

राधाकृष्ण कुछ-कुछ समझ गया था । इस कारण उसने कहा, 'माताजी ! प्रेम के विषय में किसी भी निर्णय का मुझ से भी सम्बन्ध होगा । इस कारण उसमें सब बड़े लोग मनमानी नहीं कर सकेंगे ।'

'पर यह तुमने किस प्रकार समझ लिया है कि तुम्हारे विषय में तुमसे पूछे बिना निश्चय हो जायेगा ?

'आजकल तुम युवकों के मन में क्रान्ति भर रही है और तुम उसी दृष्टि से सब बात पर विचार करते हो । तुम्हारे पिता मुझ से अधिक जानते हैं और तुम से वही बात करेंगे ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो मैंने आपके घर पनाह लेकर भूल की है ?' प्रेम ने पूछा ।

'तुमने भूल की है अथवा बुद्धिमता की है, यह तो तुम्हारी माता जी तुम्हें बतायेंगी । हम कुछ कहेंगे और तुम अपने वर्तमान 'मूड' में समझ नहीं सकोगी ।'

बात राधाकृष्ण ने समाप्त कर दी, 'माता जी ! आज आठ बजे हस्पताल में मेरी ड्यूटी है । मैं तैयार होकर यहाँ से साढ़े सात बजे जाना चाहता हूँ ।'

'ठीक है, प्रेम ! उठो । स्नानादि से अवकाश पा जाओ । राधा के साथ ही अल्पाहार हो जायेगा ।'

: ६ :

सोमदेव अभी कचहरी जाने की तैयारी कर ही रहा था कि लक्ष्मी ने प्रेम के कालिज के प्रिंसिपल को टेलीफोन कर दिया । वहाँ से सूचना मिली, 'मैं आपसे टेलीफोन पर बात नहीं कर सकती । आप मुझे कालिज में मिलिये ।'

अतः लक्ष्मी और प्रेम कालिज में प्रिंसिपल से मिलने चल पड़ीं । राधा को कह दिया गया कि चण्डीगढ़ से पहली बस दिल्ली बारह बजे पहुंचती है । हम वहाँ प्रेम की माता जी को लेने जा रही हैं । तुम्हें अवकाश मिले तो वहीं आ जाना ।

राधाकृष्ण ने कहा, 'वैसे तो मैं ग्यारह बजे छुट्टी पा जाऊँगा । तीन घंटे की ड्यूटी है कालिज आज दो बजे से है । इस कारण मैं बस स्टैण्ड पर पहुँचने का यत्न करूँगा ।'

प्रेम परेशान थी । वह कालिज गयी तो अपनी श्रेणी में जा वैठी । लक्ष्मी प्रिंसिपल के कमरे में चली गयी ।

एक घण्टा भर प्रिंसिपल से बात कर वह विज़िटर्स रूम में जा बैठी और प्रेम के अवकाश पाने की प्रतीक्षा करने लगी । साढ़े ग्यारह बजे प्रेम दो पीरियड पढ़ाई कर आई तो लक्ष्मी उसे घर की मोटर गाड़ी में लेकर बस स्टैण्ड पर जा पहुंची ।

राधाकृष्ण वहाँ पहले ही पहुँचा हुआ था । वहाँ प्रेम की माता जी आई तो उनको लेकर लक्ष्मी और प्रेम मोटर गाड़ी में पृथ्वीराज रोड पर आ पहुँची । राधाकृष्ण अपने स्कूटर पर आ रहा था ।

मार्ग में मोटर में किसी प्रकार की बात नहीं हुई, परन्तु कोठी पर पहुँचते ही लक्ष्मी और सुमित्रा एक कमरे में चली गयीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ बैठ लक्ष्मी ने पहले दिन राधाकृष्ण द्वारा प्रेम के यहाँ रात कोठी पर रहने के लिये कहने से लेकर सब बात जो उसे पता चली थी, बता दी। उसने कहा, 'मैं दस बजे प्रिंसिपल से मिलने गयी थी और उसने बताया है कि उसने कल तीन बजे के लगभग पुलिस को सूचना टेलीफोन द्वारा कर दी थी। इस पर आधे घंटे में पुलिस का एक व्यक्ति प्रिंसिपल से मिलने आया। उसने रिपोर्ट लिखकर यह कहा है कि हम कालिज के बाहर सुरक्षा का प्रबन्ध कर देंगे।

'ये लड़कियाँ कालिज से पाँच बजे जाने वाली थीं। साढ़े चार बजे साधना, प्रेम को ढूँढती हुई प्रिंसिपल के क्वार्टर में आयी। किसी लड़की ने उसे बताया था कि उसने प्रेम को प्रिंसिपल के क्वार्टर में जाते देखा है। वह समझी कि वह वहाँ होगी। वह उसे साथ ले चलने के लिये आयी थी।

'जब प्रिंसिपल ने बताया कि प्रेम अपने नई दिल्ली में रहने वाले सम्बन्धियों के घर गयी है, उसकी मौसी उसे लेने आयी थी, तो वह निर्मला के साथ टैक्सी में रीगल को चल पड़ी।

'प्रिंसिपल ने सुप्रिटेण्डेण्ट को उन पर दृष्टि रखने के लिये कहा हुआ था।

'आधा घंटा उपरान्त पुलिस की देख-देख में दोनों लड़कियाँ आ गयीं। हुआ यह कि वे अभी कालिज से कुछ ही दूर गयी थीं कि उनकी टैक्सी एक बिगड़े हुए ट्रक के मार्ग में खड़े होने के कारण खड़ी हो गई। उसी समय टैक्सी में तीन व्यक्ति आ बैठ गये।

'टैक्सी में आकर बैठने वाले साधना से पूछगीछ ही कर रहे थे कि तीसरी लड़की क्यों नहीं आयी कि पीछे और आगे से पुलिस ने दो जीपों में आकर टैक्सी को घेर लिया। वे तीनों व्यक्ति भागने लगे तो पुलिस वालों ने पिस्तौल निकाल लिये।

'इस प्रकार वे टैक्सी सहित सब को पकड़ कर थाने में ले गये। इसके उपरान्त एक कारखानेदार के लड़के ने थानेदार को पृथक् में ले जाकर कुछ कहा और उस समय थानेदार ने अपने अधिकारियों से टेलीफोन पर बात की तो पता चला कि उन तीनों में एक, दिल्ली के एक वरिष्ठ राजनीतिक अधिकारी का लड़का है। केस उस कारखाने-दार के लड़के के खिलाफ दर्ज कर उसे जाती-मुचलके पर छोड़ दिया गया। साधना ने बयान लिखा दिया है कि वे दोनों लड़कियां अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा से उन शरीफज़ादों के साथ जा रही थीं।

'प्रिंसिपल ने यह सूचना दी है कि दोनों लड़कियों पर तीन प्राध्यापकों की एक जाँच-समिति बैठा दी गयी है और दोनों लड़कियों को होस्टल में अपने-अपने कमरे में रोका गया है तथा उनके गार्जियनों को सूचित किया जा रहा है। प्रेम के विपरीत जाँच नहीं हो रही। कारण यह कि जब पुलिस वालों ने दूसरी लड़कियों को पकड़ा था, वह इनके साथ नहीं थी। इस पर भी प्रेम के बयान जाँच समिति के सम्मुख होंगे।

'मैंने प्रिंसिपल से पूछा था कि किस वरिष्ठ राजनीतिक अधिकारी का लड़का उन गुण्डों में था? इस पर प्रिंसिपल ने बताया कि पुलिस वालों ने नाम नहीं बताया। उस व्यक्ति का नाम-धाम पुलिस में है जिसने पूर्ण अपराध अपने सिर पर ले लिया है। परन्तु मैं समझती हूँ कि उसके विपरीत मुकद्दमा नहीं किया जा रहा। ऐसा ही आज प्रातः टेलीफोन से पुलिस वालों से पता चला है।

'पुलिस वालों का विचार मामला रफा-दफा कर देने का है। प्रिंसिपल ने कालिज के प्राध्यापकों की समिति, जो जाँच के लिये नियुक्त की है, को कहा है कि वह इन लड़कियों को कालिज से निकाल दे, जिससे दूसरी लड़कियों में यह बीमारी न फैल सके।

'यह सूचना प्राप्त कर मैं वहाँ से प्रेम को लेकर आपको 'रिसीव' करने बस-स्टैण्ड पर जा पहुँची थी।'

प्रेम की माता सुमित्रा ने कहा, 'हमने तो लड़की को आपके हवाले कर रखा है। इससे हमें अब बुलाने में कोई प्रयोजन नहीं।'

'तो बहन जी,' लक्ष्मी ने कहा, 'मैंने आपको बुलाया है राधाकृष्ण के पिता जी के कहने पर। वह चाहते हैं कि प्रेम को कालिज से उठा लिया जाये और उसका विवाह कल कर दिया जाये।'

'यह तो भारी बदनामी का कारण होगा?'

'जो कुछ भी हो। मैंने राधा के पिता की इच्छा बतायी है। यदि आप स्वीकार करें तो हम यह प्रस्ताव राधाकृष्ण और प्रेम के सम्मुख रखेंगे। मैं समझती हूँ कि दोनों को स्वीकार कर लेना चाहिये।

'राधाकृष्ण के पिता जी इस कालिज में और इस होस्टल में प्रेम का पढ़ना और रहना स्वीकार नहीं करते।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस अवस्था में मुझे प्रेम से तथा प्रेम के पिता जी से राय करनी होगी। जहाँ तक प्रेम के चरित्र का प्रश्न है, मैं समझती हूँ कि उसमें अभी किसी प्रकार का दोष दिखाई नहीं दिया। उसकी संगत भी उन लड़कियों से अज्ञानता के कारण ही प्रतीत होती है।

'हम घर वालों को भी यही समझ में आया है। मैं चाहती हूँ कि आप पहले बताइये। पीछे ही प्रेम इत्यादि से इस विवाह की चर्चा करेंगे।'

मध्याह्न के भोजन के समय से पूर्व ही सुमित्रा की अपनी लड़की से बातचीत हो गयी। प्रेम को वह एक पृथक् कमरे में लेकर बैठ गयी और पूछने लगी, 'बताओ, तुम इन बदमाश लड़कियों की संगत में किसलिये घूमती थीं?'

प्रेम ने कहा, 'माँ, मैं साधना के विषय में तो जानती थी। मुझे यह भी ज्ञात है कि वह रात सोने से पहले थोड़ी मद्य का सेवन भी करती है परन्तु निर्मला के विषय में यह मेरा विचार है कि उसका कल पहला ही अवसर था। इस पर भी उसने मुझे सावधान किया था। इससे मुझे यह समझ में आया है कि कल भी वह स्वेच्छा से नहीं जा रही थी। वह किस कारण साधना के साथ सिनेमा देखने गयी थी, मैं जानती नहीं। परन्तु मुझे सावधान करते समय यही समझ में आया था कि वह भी नहीं जायेगी।

'कल के उपरान्त मैं उससे नहीं मिल सकी। आज वह अपने कमरे में बंद है, मैं उससे नहीं मिल सकी।'

'तुम्हारी इस कुसंगति की यह प्रतिक्रिया हुई है कि तुम्हारी सास तुम्हारा आज ही विवाह माँगने लगी है।'

'और मेरी पढ़ाई?'

'उसका कहना है कि कालिज की पढ़ाई से अच्छी शिक्षा तो वह तुम्हें घर पर ही दे सकेगी। साथ ही राधाकृष्ण की पत्नी ने कहीं सेवा-कार्य तो करना नहीं। इस कारण विश्वविद्यालय के बी० ए० के दो अक्षर साथ लगें अथवा न लगें, कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा।'

'और माँ, तुम क्या कहती हो?'

'मैंने अभी तक इस प्रस्ताव का उत्तर नहीं दिया। मैं तीन बजे के उपरान्त तुम्हारे पिता को टेलीफोन करूँगी और आशा करती हूँ कि वह रात खाने के समय यहाँ आ जायेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं तो तुम से पूछ रही हूँ। इस कालिज दुर्घटना के उपरान्त क्या समझती हो ?'

'मैं तो चाहती हूँ कि यदि विवाह हो जाये तो ठीक है।'

उधर बाबा-पोता में भी बात हो रही थी। रघुनाथ सहाय ने राधाकृष्ण को अपने कमरे में ले जा कर पूछा था, 'प्रेम की माँ किसलिये आयी है ?'

'मेरी माता जी ने टेलीफोन कर बुलाया है।'

'किसलिये ?'

'यह मुझे नहीं बताया।'

'मैं समझ गया हूँ।' रघुनाथ सहाय की आँखों में चमक दौड़ गयी। उसने कहा, 'तुम्हारी नाक में नकेल डालने का प्रस्ताव है। कल की घटना के उपरान्त प्रेम की माँ मान जायेगी और तुम ऊपर की मंजिल पर अपनी पत्नी के साथ रहने लगोगे।'

'और बाबा! तुम यह ठीक समझते हो क्या ? मैं डाक्टर बनने वाला हूँ। कालिज की पढ़ाई के उपरान्त छः मास तक हस्पताल की ट्रेनिंग अभी होनी है। इस प्रकार मैं प्राईवेट प्रैक्टिस भी तो अभी डेढ़ वर्ष तक नहीं कर सकूँगा।'

'और,' बाबा ने व्यंग के भाव में कहा, 'बीवी के आ जाने पर डेढ़ के स्थान दो अथवा अढ़ाई वर्ष लग सकते हैं और इतनी देर तक तुम्हारे पिता तुम्हारा खर्चा नहीं दे सकेंगे। यही कहना चाहते हो न ?'

'यह तो पिता जी ही बता सकते हैं।'

'मैं यह कह रहा हूँ,' रघुनाथ सहाय ने मुस्कराते हुए कहा, 'कि तब तक तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का खर्चा मैं दूँगा।'

'सत्य, बाबा! यह चार पाँच सौ रुपया महीने का होगा ?'

'मेरा इतने से दिवाला नहीं पिटेगा।'

'बाबा, कितना कुछ जमा कर रखा है ?'

'जितना है सब तुम्हारे लड़के के नाम करने के लिये रखा हुआ है। विवाह के उपरान्त मैं तुम्हें जो कुछ दूँगा, वह तो उसके ब्याज में से ही दूँगा। मूल तो बैंक के फिक्सड डिपाज़िट खाते में जमा है।'

'पर बाबा! तुम्हें मेरे विवाह से क्या मिलेगा ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अपना पर-पोता। जानते हो हम हिन्दू इसको बहुत ही शुभ मानते हैं। पर-पितामह बनने से यह माना जाता है कि व्यक्ति के लिये स्वर्ग लोक का द्वार खुल जाता है।'

राधाकृष्ण हंस पड़ा, 'वह किस जगह है? अमरीका ने यान वृहस्पति तक की जाँच-पड़ताल के लिये भेजा है। उसने अभी तक किसी स्वर्ग लोक के पाये जाने की सूचना नहीं भेजी।'

'यह इसलिये कि उस यान में स्वर्ग देखने की सामर्थ्य नहीं है।'

'और बाबा! वह सामर्थ्य तुम में है?'

'मैं समझता हूँ कि है। वह स्वर्ग का द्वार मुझे तुम्हारी माँ की बात से दिखाई देने लगा है।'

राधाकृष्ण खिलखिलाकर हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'बाबा! मैं विवाह की बात तो पसन्द करता हूँ, परन्तु मैं आपके लिये स्वर्ग का द्वार अभी नहीं खोलना चाहता। इस कारण बाबा, तुम्हारे ग्रेट-ग्राण्ड-सन का निर्माण नहीं करूँगा। मैं आपको अभी इस कोठी में से जाने देना नहीं चाहता।'

'यह तुम मुझ से अन्याय करोगे। मैंने तो तुम्हारा कभी भी बुरा नहीं विचार किया।'

इस समय सेवक बाबा-पोता को भोजन के लिये कहने आया। जब ये डाइनिंग रूम में आये तो सोमदेव भी कोर्ट से लौट आया था।

'तो तुम आ गये हो?' रघुनाथ सहाय ने सोमदेव से पूछा।

'हाँ, पिता जी! प्रेम की माता जी आई हुई हैं न? उनसे कुछ बात करना चाहता था।'

'तो कोई बात हुई है?'

'हाँ, बहन सुमित्रा कहती हैं कि प्रेम के पिता जी आज सायंकाल आयेंगे, तब बात होगी।'

'तो राधे! तुम्हारी बारात के बाजे बजने लगे हैं।'

बाबा की बात सुन सब हंसने लगे।

: ७ :

देश में आपात्-स्थिति लगे चार मास हो चुके थे। पहले दिन बार-कौंसिल की बैठक में सोमदेव के व्याख्यान की सर्वोच्च न्यायालय में चोटी से पाँव तक सब कर्मचारियों में चर्चा थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील तो कानाफूसी करते थे और सोमदेव के समीप आ जाने पर चुप कर जाते थे। बार-कौंसिल के एक वरिष्ठ सदस्य ने सोमदेव को अपने चैम्बर में बुला कर कहा, 'सोम जी! आपके व्याख्यान के विषय में चीफ-जस्टिस ने मुझे बुला कर अपनी सम्मति बतायी है।'

'क्या बताई है?' सोमदेव का प्रश्न था।

'वह कह रहे थे कि तुमने आज के कानून से अपराध किया है।'

'श्रीमान्! किस कानून को मैंने भंग किया है?' सोमदेव ने पूछा।

'सभा में भाषण दिया है। मैंने चीफ-जस्टिस साहब को कह दिया कि सभा करना तो जुर्म है परन्तु सभा में भाषण देना नहीं। मैं समझता हूँ कि यह किसी आर्डिनेंस में नहीं है।'

"तो सभा करना और भाषण करना एक ही बात नहीं है?" चीफ-जस्टिस का प्रश्न था।

'मैंने कहा, "श्रीमान्, नहीं। यह इस कारण कि सभा तो बार के सेक्रेटरी ने बुलायी है और यह दोष उसका है। परन्तु व्याख्यान देने में कोई दोष नहीं। इससे दोनों कार्यों को करने वाले भिन्न-भिन्न होने से अपराध भिन्न-भिन्न हैं। एक अपराध है, दूसरा नहीं।"

'इस पर चीफ-जस्टिस साहब ने पूछा, "तो व्याख्यान देना, सभा करना नहीं?"

"देख लीजिये, दो भिन्न-भिन्न कर्म हैं। उनके कर्मफल भिन्न-भिन्न हैं। एक तो अपराध है। दूसरा कार्य अपराधों में नहीं है। व्याख्यान देने पर केस करेंगे तो किस आर्डिनेंस के अधीन करेंगे?"

"जब संविधान की धारा १९ स्थगित कर दी गयी है तो व्याख्यान देना अपराध हो गया है।"

"यह ठीक है परन्तु जब अपराध हो गया तो किस क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की धारा के अधीन व्याख्याता के वारण्ट निकालेंगे।"

"इमरजेंसी में 'मीसा' है।"

"परन्तु उसके अधीन वारण्ट जारी करने का आपको अधिकार नहीं है।"

"हाँ, वह तो पुलिस ही करेगी। परन्तु यहाँ सब न्यायाधीश विचार कर रहे हैं कि इससे सुप्रीम कोर्ट बदनाम हो जायेगी। मुझ से पूछा गया है कि मैंने बार-कौंसिल की मीटिंग होने क्यों दी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप पर मीसा लगना चाहिये क्या ? यह तो भूमण्डल के सब सभ्य देशों में एक अद्वितीय मामला बन जायेगा।"

"रजिस्ट्रार बेचारा पकड़ा जायेगा। वही इस बिल्डिग का संरक्षक है।"

'परन्तु श्रीमान् ! बिल्डिग को कोई हानि पहुँची है क्या ?'

"उस बिल्डिग में एक अवैधानिक कार्यवाही हुई है।"

'तो सोम जी ! मैं चीफ साहब को यह कह आया हूँ यदि कुछ औफेंस हुआ है, वह तो हो गया। उसमें कौन दोषी है और कौन नहीं, यह तो आज आप भी पूछ नहीं सकते। इस कारण मैं कहता हूँ कि आप चिन्ता मत करिये। आपके अधिकार में तो कुछ रहा नहीं।

'इतना कह मैं वहाँ से चला आया हूँ। मैं समझता हूँ कि आज रात आप पकड़ लिये जाएँगे।'

'ठीक है। परन्तु मैं इसमें क्या कर सकता हूँ। उस व्याख्यान की उत्तेजना देने वाला सरकारी व्यवहार है। वास्तव में दोष तो वहाँ है। परन्तु 'समरथ को न दोष गोसाईं' वाली बात है। इस कारण असमर्थ को दंड भोगना पड़ेगा।'

'दोष तो संविधान बनाने वाले का है ?'

'हाँ, संविधान में इण्टर्नल डिस्टरबैंस 'आन्तरिक गड़बड़ भी इमरजेंसी का कारण बना दिया है।'

'इस पर भी जैसा मैंने कल बताया था, 'इण्टर्नल डिस्टरबैंस' से देश और देश के किसी भाग के विनष्ट होने का भय है, यह तो दिखाई नहीं देता ?'

'वास्तव में', बार के उस वरिष्ठ सदस्य ने कहा, 'दोष है महात्मा गांधी का, जिसने एक ऐसे परिवार के घटक की देश में गुड्डी चढ़ा दी थी, जो सर्वमान्य चरित्र से हीन, उजड्ड और दुर्बल बुद्धि रखने वाला था।'

'तो यह परिवार ही ऐसा था ?'

'हाँ। इस परिवार की चार पीढ़ियों का ज्ञान तो उपलब्ध है। पण्डित मोतीलाल नेहरू के विषय में उनका अपना लड़का जवाहर लाल नेहरू ही कहता है कि वह अपने स्कूल के दिनों में 'लीडर आफ द रौडीज़' था। मोतीलाल नेहरू के चरित्र के विषय में लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा इलाहाबाद में अभी भी साक्षी जीवित हैं। जवाहरलाल नेहरू अपने विषय में स्वयं ही लिखता है कि 'इम्मौरल' कुछ वस्तु नहीं है। पुरुष-स्त्री का 'आऊट आफ बैडलाक' सम्बन्ध 'एमोरल होता है, जो न तो 'मौरल' है और न 'इम्मौरल'।*

'पण्डित नेहरू के विषय में यह विख्यात है कि उनका तीन मूर्ति निवास कोई साधु का घर नहीं था। न ही खेल-तमाशे वहाँ वर्जित थे। तीन मूर्ति पर होली सदा एक अनीश्वरवादियों का त्योहार रहा है जिसमें पुरुष स्त्री जंगली हो जाया करते थे।

'तीन मूर्ति के विषय में एक जानकार ने एक वृत्तान्त सुनाया था। एक बार नये वर्ष-दिन के उत्सव पर लगभग तीस मेहमान एकत्रित थे। इनमें स्त्री-पुरुष दोनों थे। एक मेहमान तो बहुत सुन्दर फूलों का गजरा बाँधे आयी थी।

'रात्रि भोजन के बाद मर्डर (हत्या) का खेल खेला जाने लगा। इस खेल में रोशनी गुल कर दी जाती थी और प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र होता था, दूसरे की हत्या करने के लिये। उस दिन भी बिजली बुझा दी गयी और अंधेरे में 'हंट' आरम्भ हुआ। कुछ ही देर बाद जोर की चीख सुनाई दी तो बिजली जला दी गयी। चीख मारने वाली वह फूल के गजरे वाली स्त्री थी और वह अस्त-व्यस्त अवस्था में सोफे पर पड़ी थी। उसके फूलों का गजरा बिखरा पड़ा था।

'उस सुनाने वाले के अनुसार नेहरू साहब ने स्वीकार किया कि वह उसके फूलों के आकर्षण का विरोध नहीं कर सके थे।

'नेहरू साहब ने, जब वह अहमदनगर के किले में बन्दी थे तो अपनी बहन को एक पत्र में लिखा था—"यह एक विलक्षण और चुभने वाली घटना है कि छत्तीस महीने, ठीक-ठीक १०६५ दिन तक, मैंने दूर से भी कोई औरत नहीं देखी।"

'यह कहे जाने वाले विधुर की मनस्थिति का चित्रण है।

'अब फिर तीसरी पीढ़ी की बात भी सुन लो। यह कहा जाता

*"Most of us were strongly attracted by sex and I doubt if any of us attatched any idea of sin to it.... We talked of its being amoral neither moral nor immoral."

—*Autobiography : Jawaharlal Nehru*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि पण्डित नेहरू घर के मामलों में दखल नहीं देते थे। इस पर भी वह अपने घर 'तीन मूर्ति' में होने वाली घटनाओं पर कष्ट अनुभव करने लगे थे। इन्दिरा गांधी रात बहुत देर से घर आती थी और प्रायः अर्ध चेतनावस्था में।

'फिर यह भी कहा जाता है कि इन्दिरा के निजी कमरे में कई पुरुष निसंकोच आते जाते थे।

'इन्दिरा गांधी को 'कोर्ट' करने वालों की सूची बहुत लम्बी है। ये सब लोग उसको दुर्गा का अवतार घोषित करते थे।

'और अब चौथी पीढ़ी की बात भी सुन लो। जिसदिन जवाहर-लाल नेहरू का देहान्त हुआ, उससे पहली रात के समय नेहरू जी ने एक 'कार' की बदमाश लोगों से चोरी किये जाने का समाचार सुना। उन्होंने हँसी-हँसी में इन्दिरा से पूछ लिया, 'I hope none of your brats are involved in it।' (मेरे विचार में इसमें तुम्हारा कोई छोकरा तो नहीं होगा)

'इन्दिरा गांधी के मुख का रंग फीका पड़ गया। जवाहरलाल समझ गया।'

'यह कहा जाता है कि उस रात नेहरू साहब सो नहीं सके और अगले दिन चल बसे।'

'तो श्रीमान्!' सोमदेव ने कहा, 'मैं भी समझ गया हूँ कि मेरा पकड़ा जाना सम्भव है।'

'इसी कारण मैंने तुम्हें बताया है और सचेत कर दिया है।'

'ठीक है, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। परन्तु मैं भूम्यान्तर्गत नहीं होऊँगा और न ही क्षमा माँग छूटने का यत्न करूंगा। मैंने वकील के नाते अपनी कानूनी सम्मति कल दी थी और जब भी कोर्ट माँगेगा, फिर दूँगा।'

भेंट समाप्त हुई और सोमदेव घर पहुँचा। घर पहुँचते ही वह अपनी पत्नी से मिला। लक्ष्मी, प्रेम की माता सुमित्रा को दिल्ली बुलाने का कारण बता चुकी थी। उस कथा के सुनाने पर सुमित्रा की प्रतिक्रिया यही थी कि वह प्रेम के पिता को तीन बजे टेलीफोन करेगी और आशा है कि वह आज सायंकाल तक यहाँ आ पहुँचेंगे।

यह बात लक्ष्मी ने अपनी पति को बता दी। उस समय डाइनिंग हाल में सोमदेव के पिता भी उपस्थित थे। बार कौंसिल के प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हुई बातचीत बताने का अवसर तब मिला जब प्रेम की माता भी आ गयी थीं। सब मेज पर बैठे थे और बेयरा सबके लिये प्लेटें इत्यादि लगा रहा था। लक्ष्मी और प्रेम दोनों भोजन परोस रही थीं। जब तक भोजन परोसा जाता रहा, तब तक सोमदेव ने अपनी बार कौंसिल के प्रधान से हुई वार्तालाप का संक्षेप सुना दिया।

इस कथा के उपरान्त जब सोमदेव ने बार कौंसिल के प्रधान की आशा बताई तो सब घर के लोग चुप कर गये। चुपचाप भोजन होने लगा।

सबसे पहले बाबा रघुनाथ सहाय बोला। उसने कह दिया, 'इस पर भी मेरी सम्मति है कि पुलिस के आने से पूर्व राधा और प्रेम का विवाह हो जाना चाहिये।'

सुमित्रा ने कह दिया, 'बाबा! इतनी जल्दी कैसे हो सकता है! यह तो आप इस दुर्घटना से अनुचित लाभ उठाने का यत्न कर रहे हैं।'

'तो तुम क्या चाहती हो सुमित्रा?'

'कुछ नहीं, प्रेम के पिता से राय कर बताऊँगी।'

'यह तो ठीक है, परन्तु राय में कितनी देर लगती है। यदि उनसे सम्पर्क हो सके तो कर लो। सायं आठ बजे तक वह यहाँ पहुँच जायेगा। तब एक घंटे में राय हो सकती है। और यदि सोमदेव का अनुमान ठीक हुआ तो रात के एक-दो बजे से पहले पुलिस नहीं आयेगी। तब तक बच्चों की सुहागरात मनाई जा चुकी होगी।'

'पर बाबा, इतनी भाग-दौड़ करने की क्या आवश्यकता है! अभी तक प्रेम ने जो कुछ बताया है उसमें उसका कुछ भी दोष नहीं विदित हुआ।'

'परन्तु हम प्रेम को उसके किसी दोष का दण्ड भी तो नहीं दे रहे? हम तो उसके कल वाली घटना में से उत्तीर्ण होने का उसे पुरस्कार ही दे रहे हैं।'

'मैं इसे दण्ड समझ रही हूँ।' प्रेम ने कह दिया।

'प्रेम बेटी का यह भ्रम है।'

इस पर लक्ष्मी ने अपने मुख का ग्रास गले के नीचे उतारते हुए कहा, 'बाबा! जमाना बदल गया है। आपको आज से पचास वर्ष पुरानी बात ही समझ में आ रही है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु लक्ष्मी, विवाह इत्यादि में पचास वर्ष तो क्या, महाराज राम के समय से भी प्रगति नहीं हुई। बाल्मीकि जी ने सीता की आँखों में, राम को देख कर जिस खुमार की बात लिखी है, वही तो मैं प्रेम की आँखों में देख रहा हूँ।'

'मैं समझती हूँ कि आपकी दृष्टि में दोष आ गया है।' लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए कहा।

'अभी दो महीने हुए मैंने अपनी आँखों का नम्बर टैस्ट कराया था?'

कदाचित् औप्टीशियन ने गलती की है।' अभी भी लक्ष्मी मुस्करा रही थी।

बातों का प्रवहन कटुता की ओर चलता देख सोमदेव ने बाबा के आगे कुछ कहने से मना करने के लिये कह दिया, 'पिता जी, प्रेम के पिता को आने दीजिये। शेष युक्तियाँ-प्रतियुक्तियाँ उनके सम्मुख करनी ठीक रहेंगी।'

इस पर बात समाप्त हो गयी। मध्याह्नोत्तर तीन बजे सुमित्रा ने अपने घर चण्डीगढ़ पर टेलीफोन किया और वहाँ से पता चला कि प्रेम के पिता वहाँ से पहले ही विदा हो चुके हैं। वह ढाई बजे की बस से रवाना हुए हैं। इसका अर्थ यह था कि आठ बजे तक वह दिल्ली पहुँचने वाले हैं।

राधाकृष्ण भोजन के तुरन्त उपरान्त कालिज चला गया था और वहाँ से साढ़े पाँच बजे लौट सकने की बात कह गया था।

सोमदेव भी कुछ कागज़ात एक ब्रीफकेस में रख अपने एक सहयोगी और मित्र के घर रखने चला गया था। वह मित्र के घर से चाय इत्यादि लेकर सांय साढ़े आठ बजे तक लौटा। तब तक प्रेम के पिता घर आ चुके थे और उनको सब बात बतायी जा चुकी थी। उसने प्रेम के कालिज के प्रिंसिपल से टेलीफोन पर बात करनी चाही तो प्रिंसिपल ने कह दिया, "टेलीफोन पर बात नहीं हो सकती। आप यहाँ आ सकते हैं।" अतः प्रेम के माता-पिता, दोनों, प्रेम को साथ लिये हुए प्रिंसिपल के क्वार्टर पर उससे मिलने जा चुके थे।

: ८ :

प्रेम के माता-पिता प्रिंसिपल से बात कर कनाट प्लेस में किसी रैस्टोरां में खाने चले गये और वे रात के दस बजे लौटे। परिवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सब व्यक्ति प्रेम तथा उसकी माता-पिता की प्रतीक्षा में ड्राइंगरूम में बैठे हुए थे।

परन्तु प्रेम के माता-पिता के पहुँचने के एक मिनट उपरान्त ही वहाँ पुलिस आ गयी और किसी प्रकार की बातचीत नहीं हो सकी।

सोमदेव तो तैयार बैठा था। अतः पुलिस के आते ही वह उसके साथ जाने के लिये तैयार हो गया। जाने से पूर्व उसने प्रेम के पिता को केवल इतना कहा, 'जो कुछ भी आप उचित समझें, मेरी अनुपस्थिति का विचार छोड़ कर, निश्चय कर लीजियेगा।'

इससे अधिक कुछ कहने-सुनने का अवसर ही नहीं था। सोमदेव पुलिस की जीप में सवार हो चल दिया। रघुनाथ सहाय और राधाकृष्ण अपनी मोटर गाड़ी में पीछे-पीछे गये परन्तु वह कुछ अधिक कह सुन नहीं सके। थानेदार ने केवल यह बताया, 'यह केस यहाँ तैयार नहीं किया गया है, ऊपर से ही बना-बनाया आया है। हम तो केवल आज्ञा का पालन करने वाले हैं।'

अतः किसी प्रकार की सुख-सुविधा पहुंचाने की बात रघुनाथ सहाय इत्यादि नहीं कर सके।

घर पर दोनों स्त्रियाँ, प्रेम की माँ और राधाकृष्ण की माँ, इस परिवर्तित परिस्थिति में यही निर्णय कर सकी थीं कि विवाह अभी नहीं होना चाहिये।

रात बाबा और पोता परस्पर प्रेम के पिता से किसी प्रकार की बात नहीं कर सके। परन्तु प्रेम का पिता अगले दिन प्रातः रघुनाथ सहाय से मिलने आया। रघुनाथ सहाय उस समय बेड-टी ले रहा था। उसने वकील साहब को बाहर जाने योग्य वस्त्र पहन तैयार देखा, तो पूछ लिया, 'वकील साहब, तैयार हो किधर जा रहे हैं ?'

'हम, मेरा अभिप्राय है प्रेम, प्रेम की माता जी भी, अभी चण्डीगढ़ जा रहे हैं। हमने टैक्सी के लिये टेलीफोन किया है। उसके आते ही यहाँ से चल देंगे। मैं वहाँ आकर भविष्य का कार्यक्रम लिखूंगा। वैसे मैंने अपने मन की प्रतिक्रिया राधाकृष्ण की माता जी को रात ही बता दी थी।'

'परन्तु आपने टैक्सी किसलिये मँगवाई है ? यहाँ दो-दो गाड़ियाँ किसलिये रखी हुई हैं ?'

'यह ठीक है, परन्तु यह मेरी ही राय है कि हम टैक्सी में जायें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय सुमित्रा और प्रेम, प्रेम के पिता का ब्रीफकेस उठाये हुए वहाँ आ पहुँची। प्रेम ने बताया, 'पिता जी, टैक्सी आ गयी है।'

'बाबा, नमस्ते।' इतना कह प्रेम का पिता तथा सुमित्रा इत्यादि बाहर निकल गये।

राधाकृष्ण इस समय अपने कमरे में गहरी नींद में सो रहा था।

प्रेम इत्यादि को विदा कर लक्ष्मी वापस बाबा के कमरे में आयी और पूछने लगी, 'पिता जी, अब क्या होगा ?'

'कुछ नहीं, धैर्य से सोम के लौटने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।'

'मैं प्रेम के विषय में पूछ रही हूँ। उसे भी कालिज के प्रिंसिपल द्वारा नियुक्त कमेटी ने कालिज से निकाल दिया है। कमेटी का कहना है कि प्रेम भी सर्वथा निर्लिप्त नहीं है। यद्यपि परसों की घटना उसकी रुचि अनुसार नहीं थी, परन्तु वह साधना और निर्मला से, उनके प्रत्येक प्रकार के अनाचार में सम्मिलित रहती थी।'

रघुनाथ सहाय ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, 'प्रिंसिपल से नियुक्त कमेटी के सदस्य ईश्वर के समान अन्तर्यामी नहीं हैं। प्रेम के विषय में हम अपने विचारित मत को उपमा देंगे। परन्तु यह सबकुछ अब सोम के लौटने पर ही हो सकेगा।'

'तो वह कब तक लौटेंगे ?'

'इसकी कोई तिथि निश्चय करनी अति कठिन है, परन्तु यह निश्चय है कि यह असंवैधानिक स्थिति सदा नहीं रह सकती। धैर्य से प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं।'

लक्ष्मी को बाबा की बात से संतोष नहीं हुआ। परन्तु वह कुछ कर भी तो नहीं सकती थी।

राधाकृष्ण स्नानादि से निवृत्त हो अपने कमरे से नीचे आया तो यह जान कि उसकी आगामी चिन्ता, प्रेम और उसके माता-पिता, चले गये हैं, वह चकित रह गया। दो दुर्घटना हो गयी थीं। एक तो उसके पिता के पकड़े जाने की और दूसरी उसके होने वाली पत्नी, सास ससुर के बिना उससे मिले चले जाने की। यह सब सुन अपने कमरे में जा विचार करने लगा।

प्रातः का अल्पहार सात बजे ही होता था। पिछले पन्द्रह दिन से राधाकृष्ण को हस्पताल में प्रातः आठ बजे से ग्यारह बजे तक जाना होता था। इस कारण राधाकृष्ण के पास पिछले दो दिन की घटनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विचार करने के लिये समय नहीं था। उसे आठ बजे हस्पताल में अपनी ड्यूटी पर उपस्थित होना था। इस कारण बाबा द्वारा मिली सूचना को सुन वह परेशानी अनुभव करते हुए अल्पहार लेने, खाने के कमरे में चला गया। वहाँ उसकी माँ प्रतीक्षा कर रही थी। उसने राधाकृष्ण को कहा, 'बहुत देर से उठते हो। तुम्हारे सोये-सोये में तो यहाँ विप्लव हो गया है।'

'मैंने सब सुन लिया है, परन्तु इस समय मुझे अवकाश नहीं कि इस विषय पर विचार करूँ। मध्याह्न भोजन के समय तुम्हें अपने मन की प्रतिक्रिया बताऊँगा।'

इतना कह वह जल्दी-जल्दी अल्पहार लेने लगा।

पूर्ण घटना का विश्लेषण तो बाबा और पतोहू में अल्पाहार के उपरान्त हुआ। बाबा ने कहा, 'मैं सोमदेव से भेंट के लिये आज प्रार्थना करने जाऊँगा। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ करने को है ही नहीं।'

'बाबा! मैं प्रेम के माता-पिता के व्यवहार के विषय में विचार कर रही हूँ।'

'उनको मैंने मन से निकाल दिया है। साथ ही ईश्वर का धन्य-वाद किया है कि ऐसे मूर्ख और हृदयहीन व्यक्तियों से सम्बन्ध नहीं बन रहा। मैं समझता हूँ कि ईश्वर की कृपा-दृष्टि हम पर अभी भी है। ये, यहाँ से ऐसे भागे हैं जैसे प्लेग का चूहा देख कर लोग मकान छोड़ भाग खड़े होते हैं।'

'देखो बेटी। उनके जाने पर मेरी पहली प्रतिक्रिया यह हुई थी कि मिराण्डा कालेज के प्राध्यापकों के मन में भी सरकारी अधिकारी का भय समा जाने के कारण ही उन्होंने प्रेम को दण्डित किया है, परन्तु उसके माता-पिता के व्यवहार को देखकर मेरे मन में यह बात उठ रही है कि माता-पिता की ही तो लड़की है। अवश्य उनके लक्षण ही लड़की में जागते हुए दिखाई दिये हैं। जैसे माता-पिता वैसे ही उनकी सन्तान प्रकट हो रही है।'

अब तो लक्ष्मी ने भी साहस पकड़ बाबा के वक्तव्य में भूल निकाल दी, 'बाबा, यह ऐसा नहीं है। बात यह हुई है कि माता-पिता का व्यवहार देख कर ही हम लड़की के व्यवहार पर भी संदेह करने लगे हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु बेटी ! यह मैं मिस्टर कपूर तथा उनकी धर्म पत्नी का दोष नहीं मानता । वे बेचारे तो यात्री हैं, उस मार्ग के जिसका आरम्भ भारत में सन् १८३२ में कम्पनी के राज्य ने किया था ।'

'क्या किया था ?'

'यहाँ की शिक्षा पद्धति को कम्पनी के दूषित धन से अपवित्र कर हमारे युवक-युवतियों को पान कराने का प्रबन्ध किया था । उस शिक्षा-पद्धति से हम एक लम्बे सफर पर चल पड़े थे और उसका ही फल यह मधुसूदन कपूर और उसकी धर्म पत्नी ने प्रकट किया है ।

'गांधी जी अस्सी वर्ष से ऊपर की वयस् में यह देखने के लिये कि उनमें यौन-प्रवृत्ति निःशेष हुई है अथवा नहीं, अपनी नग्न पोती के साथ सोने का अनुभव प्राप्त करना चाहते थे । क्या यह उस मूर्खता-पूर्ण शिक्षा का ही परिणाम नहीं था, जो मैकॉले ने भारत के युवक-युवतियों को पान कराने के लिये प्रस्तुत की थी । इसने गाँधी जी की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी ।

'उस दिन मैं राधाकृष्ण को अपने विवाह की बात बता रहा था, बात बीच में ही रह गयी थी । मैं यह कह रहा था कि आज से त्रेसठ वर्ष पूर्व से चलते हुए भारत की नारी कहाँ से कहाँ पहुँच गयी है । मैंने विवाह के उपरान्त जब उस लम्बे घूँघट में छुपी कुमारी को अँगूठी पहिनाने के लिये उसका हाथ पकड़ा था तो वह थर-थर काँप रही थी ।'

'उस घटना के कई वर्ष उपरान्त मैंने जब तुम्हारी सास से पूछा कि वह उस दिन किस भय से त्रसित थी ? वह अपने मन की बात बताने लगी । उसने कहा था कि सोलह वर्ष की वयस् में उसका विवाह हुआ था और उसकी किसी सखी-सहेली ने भी, कभी उसके सम्मुख इस बात की चर्चा नहीं की थी कि पति-पत्नी सम्बन्ध क्या और कैसा होता है । उन सखियों में कुछ विवाहिता भी थीं । एक तो माँ भी बन चुकी थी । विवाह से पूर्व, उसके पूछने पर कि क्या होगा इतने आडम्बर से ! तो उसने बताया था कि आडम्बर इस कारण हो रहा है क्योंकि तुम्हारी ससुराल वाले धनी-मानी व्यक्ति हैं । उनके स्वागत के लिये यह टीप-टाप करनी पड़ रही है परन्तु विवाह तो धनी-निर्धन सब लड़कियों का होता है ।

"क्यों होता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह उस सखी ने हँसते हुए बताया था, "कि यह तुम्हारा पति तुम्हें स्वयं बताएगा। इसके लिये किसी स्कूल कालेज की पढ़ाई नहीं करायी जाती।" इसी ज्ञान के आधार पर, सोने के कमरे में बैठी तुम्हारी सास, चिन्तित मन मेरी प्रतीक्षा कर रही थी और विचार कर रही थी कि क्या अनाथ मैं उसके साथ करने वाला हूँ ? यह कारण था उस समय भय से कांपने का।

'देखो लक्ष्मी, कितनी यात्रा हमने पार कर ली है ! अब लगभग उसी आयु की लड़की तीन मील की यात्रा कर अपने मंगेतर से कहने आयी थी कि उसका कुछ दुष्ट लोग अपहरण करने वाले हैं। इससे वह उसकी माँ के घर छुपने आना चाहती है। वह जानती थी कि अप-हरण के उपरान्त उससे क्या व्यवहार किया जाने वाला है।

'है न, हम यात्रा में प्रगति कर रहे ? यूरोपियन पद्धति से शिक्षा के द्वारा एक अविवाहित कुमारी तुम्हारी सास की विवाहिता सखी से कितनी आगे बढ़ चुकी है !

'आज सब अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि यह ज्ञान के सूर्य की ओर सफर है, परन्तु मुझे यह अज्ञान के अन्धकार की ओर प्रगति प्रतीत होती है।

'यह कांग्रेस, जिसका देश पर राज्य स्थापित हुए अट्ठाईस वर्ष व्यतीत हो चुके है, सर्वथा अंग्रेजी पढ़े-लिखों के हाथ में चलती रही है। यही कारण है कि जब वर्तमान प्रधान मंत्री ने अपने साथियों को १९६९ में धोखा दिया था तो सब अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों और समा-चार-पत्र वालों ने इसे एक चतुर राजनीतिज्ञ घोषित किया था। अब वे सब समाचार-पत्र वालों ने उसी चतुर राजनीतिज्ञ के लौह-हाथों का स्वाद ले रहे हैं। इतनी बड़ी घटना घटी है कि साठ करोड़ के देश में सबको एक चादर में ढाँप दिया गया है, जिससे किसी बाहर के व्यक्ति को पता न चल सके कि चादर के भीतर क्या हो रहा है। और यह भी कि चीख-पुकार बाहर सुनाई न दे सके।

'और बेटी ! देखोगी कि सबसे पहले हमारे गुरु अंग्रेज ही इस इमरजेंसी को न्यायोचित कहेंगे। जो बात वह अपने देश में एक क्षण के लिये भी सहन नहीं कर सकते, उसे ही वह हमारे देश में कल्याण का सूचक कहेंगे।

'इसी यूरोपियन शिक्षा-पद्धति की उपज संयुक्त राष्ट्र संघ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैक्रेटरी 'चार्टर आफ ह्यूमन राइट्स' को रखते हुए भी हमारे देश-वासियों के लिये सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं कह सकेगा। क्या उस चार्टर के रहते हुए भारत को और फिर बंगला देश को राष्ट्रसंघ से निकाल नहीं देना चाहिये ?

'यह सब उस यूरोपियन साहित्य की ही महिमा है कि सिद्धान्त की लम्बी-लम्बी बातें करने वाले भी भारत के तानाशाही शासन पर आशीर्वाद का हाथ रख रहे हैं।'

स्थिति के इस लम्बे-विश्लेषण से लक्ष्मी को कितनी सांत्वना मिली, कहा नहीं जा सकता। वह चुपचाप आज श्वसुर की बात सुनती रही और फिर अपने भविष्य पर विचार करने अपने बेडरूम में चली गयी।

रघुनाथ सहाय कपड़े पहन एडीशनल डिस्ट्रिक मैजिस्ट्रेट की अदालत में लड़के से मुलाकात करने के लिये याचिका करने चल पड़ा। मध्याह्न के भोजन के समय वह ए० डी० एम की कोर्ट से आया और बताने लगा, 'सोमदेव को पकड़ने की आज्ञा तो सीधे मैजिस्ट्रेट ने जारी की है और उसका मामला ए०डी०एम० की अदालत में नहीं आया। इस कारण वह मेरी याचिका पर विचार नहीं कर सकता। इस पर मैं डी० एम० के दफ्तर में जा पहुंचा। वह वहां साढ़े बारह बजे तक नहीं आया था। इस कारण मैं लौट आया हूँ और भोजन के उपरान्त पुनः जाऊँगा और उसके सम्मुख अपनी अर्जी उपस्थित करूँगा।'

राधाकृष्ण भी हस्पताल से लौट आया था। उसने अपना अनुभव बताया, 'इस इमरजेंसी का आतंक इतना है कि मेरा एक सहपाठी हस्पताल में मेरे साथ ही ड्यूटी पर था। मुझे कुछ गम्भीर और चुपचाप देख वह पूछने लगा कि क्या बात है कि तुम्हारी रोनी-सी सूरत बनी हुई है ?'

'जब मैंने पिता जी के पकड़े जाने की बात बताई तो वह एकाएक मुख मोड़, एक भी शब्द कहे बिना चल दिया और मैं मुख देखता रह गया।'

'कौन था वह ?'

'एक मुसलमान साथी है। नाम है अब्दुल हसन कुरैशी। सुना है राय बरेली में किसी मैजिस्ट्रेट का पुत्र है।'

'तब तो उसके व्यवहार की पृष्ठ-भूमि पता चल गयी है। वह सर सैयद अहमद के विचारों की सीधी सन्तान प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देखो राधे, यह अंग्रेजी भाषा में साहित्य ही है जो वर्तमान युवकों में से फूट-फूट कर निकलता प्रतीत होता है।'

: ६ :

सोमदेव को पकड़े पन्द्रह दिन से ऊपर हो चुके थे। उसे हिसार जेल में रखा गया था। 'मीसा' कानून के अन्तर्गत पकड़े हुओं से मुलाकात के लिये सप्ताह में एक बार अपने परिवार के दो व्यक्तियों को ही स्वीकृति मिलती थी और इस मुलाकात में राधाकृष्ण और लक्ष्मी ही गये थे। पकड़े जाने के दो सप्ताह उपरान्त यह मुलाकात हुई थी। मुलाकात का समय तीन बजे नियत किया गया था और माँ पुत्र अपनी गाड़ी भगाते हुए पौने तीन बजे जेल के द्वार पर जा पहुँचे थे।

मुलाकात के उपरान्त दोनों रात के आठ बजे घर पर पहुँचे तो रघुनाथ सहाय उनकी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। जब मोटर आयी तो उसने सुख का साँस ले कहा, 'ईश्वर का धन्यवाद है कि तुम सही सलामत लौट आये हो।'

'क्यों, किस प्रकार का भय लग रहा था आपको?' लक्ष्मी ने पूछ लिया।

'हिसार एक ऐसे राज्य में है जहाँ का मुख्य मंत्री एक 'अत्यंत शरीफ' जाट और ख्याति प्राप्त प्रबंधक है। मैं कल्पना कर रहा था कि कहीं उसको पता चल गया कि उसकी मलिका द्वारा लगाई आपात्-स्थिति की निन्दा करने वाले का पुत्र और और पत्नी उसके राज्य में घूम रहे हैं तो उसके दिल पर साँप लोटने लगे होंगे और फिर जो कुछ भी हो सके वह अप्रत्याशित नहीं कहा जा सकता।

'अपात्-स्थिति से पूर्व भी भिवानी के एक समाचार पत्र 'चेतना' के मालिक तथा सम्पादक का मकान गिरवा दिया गया था। उसके लिये किसी को मरवा देना अथवा किसी स्त्री अथवा पुरुष को बन्दी बना लेना, बायें हाथ का खेल है।

'इसने अपने छोटे से मंत्रीत्व काल में एक लाख तैंतालीस हजार व्यक्तियों को वंदी बनवाया है। यह कहा जाता है कि कोई ही राज-नीतिक विरोधी ऐसा रहा होगा जिसे इसने कम से कम एक बार जेल का मजा न चखाया हो।

'इसके एक मित्र थे श्री हरभजन लाल और उससे इसका मतभेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। उस मतभेद के होने के कुछ दिन उपरान्त पुलिस ने पानी-पत की एक स्त्री कैलाशी से रिपोर्ट लिखा दी कि हरभजन लाल ने उससे बलात्कार किया है।

'हरभजन लाल ने इससे क्षमा माँगी, तब जाकर कैलाशी ने एक दूसरा वक्तव्य पुलिस में दे दिया कि उसकी पहली रिपोर्ट झूठ थी।

'इस प्रकार की बातों को स्मरण कर मैं भयभीत था।'

इस समय तक सब कोठी के ड्राइंगरूम में जा बैठे थे और वहाँ बैठते ही लक्ष्मी ने यह समाचार सुनाया कि राधाकृष्ण के पिता बहुत दुर्बल हो रहे थे और पहली बार मैंने उनके माथे पर शिकन पड़ते देखा है।'

'यह तो सत्य ही तुमने चिन्ता की बात बतायी है।'

'मैंने उनसे पूछा था, 'स्वास्थ्य कैसा है?' इस पर वह कहते थे कि, "ठीक है, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं। भोजन व्यवस्था सहने योग्य है।"

'परन्तु मैं उनकी सूरत-शक्ल देख समझ रही हूँ कि उनको कुछ शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट है।'

रघुनाथ सहाय बहू का मुख देखता रह गया। यह बात बताते-बताते-लक्ष्मी की आँखें डबडबा आयी थीं।

'और तुम बताओ राधे!' बाबा ने बात बदल दी, 'तुम क्या समझे हो?'

'मैं तो, जिस दिन से पिता जी पकड़े गये हैं, संघर्ष समिति में सम्मिलित हो गया हूँ।'

'वह क्या है?'

'इस इमरजेंसी का विरोध करने के लिये एक भूम्यान्तर्गत संस्था बनायी गयी है। मैं इसमें सम्मिलित हो गया हूँ और एक घंटा नित्य उसमें जा कर सहयोग देता हूँ।'

'क्या सहयोग देते हो?'

'हम दिल्ली से एक समाचार साप्ताहिक निकाल रहे हैं।'

'और इसमें तुम क्या करते हो?'

'उसकी तीस चालीस हज़ार प्रतियाँ छापनी होती हैं और हम आठ दस स्थानों पर इसको साईक्लोस्टाईल करते हैं।

'समाचार एकत्रित करने के लिये पृथक् संगठन है। उन समा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों की 'स्टेंसिल' किसी पृथक् स्थान पर निकाले जाते हैं और फिर विभिन्न स्थानों से, कभी कहीं से कभी कहीं से उसकी प्रतियाँ निकाली जाती हैं।'

'और इस सबके लिये धन कहाँ से आता है ?'

'आप जैसे श्रीमान् अपने बच्चों को पॉकेट खर्चा देते हैं और वे बच्चे उसका अधिकांश इसमें दे देते हैं। आजकल उन्होंने कालिज तथा नगरों के रेस्टोरां की कौफी ठंडी कर रखी है।'

पोते की बातों को सुन-सुनकर रघुनाथ सहाय की आँखों में चमक बढ़ रही थी। उसकी बात सुन वह बोला, 'तब होटल वालों को घाटा पड़ने लगा होगा।'

'बाबा, इसकी जांच-पड़ताल तो इमरजेंसी होने के उपरान्त करूँगा। एक होटल का मालिक मेरा परिचित है और मैं उससे पूछ सकता हूँ। परन्तु मैं इन दिनों उससे मिलने से बचता रहता हूँ।'

'और एक बात बताओ ? तुम माँ से मिलने वाले जेब खर्च का कितना अंश इस समिति को देते हो ?''

इस पर राधाकृष्ण मुस्कराता हुआ बाबा का मुख देखता रहा। उसने उत्तर नहीं दिया। रघुनाथ सहाय ने लक्ष्मी से पूछ लिया, 'राधे को पॉकेट खर्च के लिये आजकल क्या देती हो ?'

'फीस इत्यादि के अतिरिक्त दो रुपये नित्य।'

'यह कम है। मेरा विचार है कुछ बढ़ा देना चाहिये।'

इस पर लक्ष्मी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, 'बाबा, तुम आज्ञा देते हो तो बढ़ाना ही पड़ेगा।'

भोजन का समय हो गया था। सेवक बुलाने आया तो सब उठ कर खाने के कमरे में चले गये। खाने के उपरान्त सब ड्राइंगरूम में बैठे थे कि टेलीफोन की घंटी बजी। राधाकृष्ण लपक कर उठा तथा टेलीफोन सुनने पिता के स्टडी रूम में चला गया।

तीन चार मिनट में राधाकृष्ण लौटा और बोला, 'माँ, चण्डीगढ़ से टेलीफोन है।'

'क्या हैं वहाँ ?'

'प्रेम का विवाह हो रहा है।'

'सत्य ? कब ?'

'कल।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और तुम्हें निमंत्रण आया है ?"

'हाँ, परन्तु विवाह में सम्मिलित होने का नहीं वरन् प्रेम का अपहरण करने का।'

बाबा और बाबा की पुतोहू चिन्तित मुख से राधा के आगे कहने की प्रतीक्षा करने लगे थे।

राधा ने बहुत धीमी आवाज में कह दिया, 'मैंने यह शुभ कार्य करने से इन्कार कर दिया है।'

'क्या कहा है तुमने ?'

'यही कि मेरी परीक्षा बहुत ही समीप है और मैं एक दिन की भी छुट्टी कालिज से नहीं कर सकता।'

अब लक्ष्मी ने पूछा, 'प्रेम स्वयं टेलीफोन कर रही थी क्या ?'

'हाँ, वह अपनी एक सहेली के घर से टेलीफोन कर रही थी। उसने कहा है कि वह मुझ से क्षमा चाहती है, जो वह बिना मिले दिल्ली से चली आयी थी। उसे अपनी माँ की आज्ञा थी कि मुझ से सम्पर्क विच्छेद करना है। परन्तु जब से चण्डीगढ़ पहुँची हूँ, सगाई की बातचीत आरम्भ हो गयी है और तीन दिन हुए यहाँ एक वकील के लड़के से उसकी सगाई हो गयी है, कल विवाह है। उसका कहना था कि यदि मैं कल पहली बस से वहाँ आने का प्रबन्ध करूँ तो वह मेरे साथ लापता हो जाने को तैयार है। वह कह रही थी कि यह रुक्मिणी-हरण का दुहराना होगा।'

'और फिर ?' बाबा ने पूछा, 'क्या कह आये हो ?'

'बाबा, मैंने अंतिम बात यही कही है कि न तो मैं कृष्ण हूँ और न ही वह रुक्मिणी। इस कारण यह उस इतिहास का दुहराना नहीं होगा। मैं इस विषय में इस प्रकार से सहायता नहीं कर सकता। हाँ यदि वह माता-पिता की स्वीकृति से अथवा उनको साथ लेकर यहाँ आ जाये तो मैं बाबा को विवाह करा देने के लिये राजी कर लूँगा।'

'क्यों बाबा, आप क्या कहते हैं ?' लक्ष्मी ने पूछा।

'मैं समझता हूँ, 'रघुनाथ सहाय ने कहा, 'तुम्हें उसको' आऊट राईट रिजैक्ट' कर देना चाहिये था। यह जो थोड़ा द्वार खुला रखा है, यह तुमने अपनी दुर्बलता प्रकट की है। जो वस्तु गन्दी समझ अस्वीकार की जा चुकी है, उस पर लालच की दृष्टि रखनी दुर्बलता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो बाबा, अब मैं जाऊँ ?"

'सोने ?' बाबा का प्रश्न था।

पोते ने मुस्कराते हुए अर्थ भरी दृष्टि से बाबा की ओर देखा और फिर माँ की ओर देख कमरे से बाहर निकल गया।

जब वह चला गया तो बाबा ने पतोहू से पूछा, 'लक्ष्मी ! हम बहुत गहरे पानी में पहुँच गये हैं। कैसा अनुभव कर रही हो ?'

'बाबा, यह जो कुछ पिछले पन्द्रह-सोलह दिन से हो रहा है, मेरी करनी से नहीं हो रहा। मैंने उसके उत्पन्न करने में कुछ भी नहीं किया। इस कारण मैं समझती हूँ कि भाग्य मुझे किसी विशेष दिशा में ले जा रहा है। अतः मैं चुपचाप इस प्रवाह में बहती जा रही हूँ।'

'मुझे ज्ञात है कि राधा रात को नित्य बारह बजे से दो बजे तक लापता रहता है। परन्तु मैंने आपको बताया नहीं था। आपको इस वृद्धावस्था में किसी प्रकार से भी कष्ट देना नहीं चाहती थी।

'आज राधा बक गया है। मुझे यह पसन्द नहीं। परन्तु मैं तो इस दिशा में विवश बहती हुई अनुभव करती हूँ। इस कारण मैंने उसे सबकुछ प्रकट कर देने से भी मना नहीं किया।'

उस रात बाबा सोया नहीं। वह बारह बजे ऊपर की मंज़िल पर राधाकृष्ण के कमरे में उसे देखने गया। कमरा भीतर से बन्द था। उसे संदेह हुआ कि राधा भीतर ही है। उसने दरवाजे से कान लगाकर सुनना चाहा कि भीतर से किसी प्रकार का शब्द हो रहा है अथवा नहीं। उसे किसी प्रकार का शब्द होता सुनाई नहीं दिया, परन्तु कमरे का द्वार भीतर से बन्द होने से वह विचार कर रहा था कि क्या वह खिड़की में से फाँद कर गया है।

कमरे की खिड़की भूमि से सोलह फुट ऊँची थी। वह मन में विचार करता था कि यदि इतनी ऊँचे से कूदा है तो उसने मूर्खता की है। उसे राधा इतना मूर्ख प्रतीत नहीं होता था। वह इस रहस्य को समझने के लिए दरवाजे के समीप ही कान लगाकर खड़ा रहा।

एक बजे कमरे में प्रकाश हो गया। पहले भी प्रकाश तो था, परन्तु तब बेड लाईट थी। नीली धीमी रोशनी थी। अब समान्य ट्यूब जल गयी थी। दो मिनट के उपरान्त कमरे का द्वार खुला। कमरे में से दो व्यक्ति निकले। इनमें एक राधाकृष्ण था, जो सोने के समय पहनने वाला गाऊन पहने हुए था। दूसरा व्यक्ति हाथ में एक ब्रीफकेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये हुए था। राधाकृष्ण ने बाबा को वहाँ खड़े देखा तो हाथ जोड़ नमस्ते कर पूछने लगा, 'बाबा, तुम यहाँ खड़े क्या कर रहे हो ?'

राधाकृष्ण के साथी ने कहा, 'अच्छा, अब मैं चलता हूँ।'

इतना कह वह चल दिया।

राधाकृष्ण वहाँ खड़ा बाबा के मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखता रह गया।

'यह कौन था ?' बाबा ने राधाकृष्ण से पूछ लिया।

'एक मित्र था। हमारा साथी है।'

'संघर्ष समिति का ?' बाबा का प्रश्न था।

राधाकृष्ण ने बाबा को सोने के कमरे में आने का निमन्त्रण दिया। दोनों कमरे में गये तो राधाकृष्ण ने कमरे का द्वार बन्द कर दिया और कुछ स्टैंसिल उठा एक ट्रे में रख उसको दियासलाई लगा दी।

बाबा पोते को यह सब करते हुए देखता रहा, स्टैंसिल राख हो गये।

तिपाई पर रखी एक छोटी-सी डूप्लिकेटिंग मशीन बिजली के प्लग से जुड़ी हुई थी। राधाकृष्ण ने उस मशीन को प्लग से उतारा और एक कपड़े के थैले में रख उसे एक ओर कर बोला, 'बाबा, अभी सोओगे नहीं ?'

'नहीं। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम किस समय सोते हो ?'

'अभी एक घण्टा उपरान्त सोऊँगा।'

'क्यों ?'

'इस मशीन को लेनेवाला कोई व्यक्ति आने वाला है।'

'मुझे भय है कि तुम भी शीघ्र ही अपने पिता के पीछे-पीछे चलोगे।'

'नहीं बाबा, वह वकील हैं, मैं डाक्टर हूँ। वह बहस करना जानते हैं और मैं चाकू चलाना। जान गये हो ?'

'तो फिर ?'

'बाबा ! तुम जाकर सो जाओ।'

'मैं विचार करता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।'

'बाबा ! तुम माँ के पास रहो।'

रघुनाथ सहाय नीचे अपने कमरे में ता आ गया परन्तु सो नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १० :

सोमदेव के साथ प्रथम मुलाकात के उपरान्त प्रति सप्ताह मुलाकातें होने लगीं। उत्तरोत्तर सोमदेव के मुख पर ओज लौटने लगा और वह वैसे भी प्रसन्न प्रतीत होने लगा। एक भेंट में लक्ष्मी और रघुनाथ सहाय मिलने गए हुए थे। यह दिसम्बर १९७५ मास था। सोमदेव पकड़ा गया था अगस्त के अन्त में।

रघुनाथ सहाय ने सोमदेव को बताया कि चण्डीगढ़ से सूचना मिली है कि मधुसूदन कपूर की लड़की प्रेम का विवाह वहाँ के एक वकील के लड़के से हो गया है।

'कौन है वह वकील ?' सोमदेव ने पूछा।

'पता चला है कि कोई जसवन्तसिंह मरवाहा है। उसका लड़का रघुवीर सिंह, रेलवे में इंजीनियर हैं, उसके साथ हो गया। परन्तु आज प्रातः दिल्ली में प्रेम की माँ का टेलीफोन आया था कि प्रेम अपने पति के घर से तीन दिन से लापता है। उसका पति कहता है कि वह दिल्ली हमारे पास आयी है।'

'तो आपने क्या कहा है ?'

'मैंने उसे कह दिया है कि राधाकृष्ण अपनी अन्तिम परीक्षा देने में लीन है और उसे लड़कियों के झगड़े में पड़ने का अवकाश नहीं है।' लक्ष्मी ने कहा।

'ठीक है, मैं समझता हूँ कि, 'सोमदेव ने बताया, 'खराबी लड़की में इतनी नहीं थी जितनी उसके माता-पिता में थी। उनके मिथ्या दृष्टिकोण के कारण यह हुआ है। अब लड़की के व्यवहार में भी विकृति आ गयी है।

परन्तु उस दिन जब रघुनाथ सहाय और लक्ष्मी हिसार से लौटे तो कोठी पर पहुँचते ही कोठी के सेवक ने बताया, "प्रेम देवी भीतर आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

दोनों मोटर से उतरते-उतरते रुक गये और विचार करने लगे कि अब क्या करें। लक्ष्मी ने बाबा से पहले होश सँभाली। उसने सेवक से पूछा, 'कब आयी थी यहाँ ?'

'चार बजे के लगभग पहुँची थी। उनके साथ एक अन्य साहब थे। वह उनको अपनी मोटर से उतार चले गये और प्रेमदेवी जी ड्राइंगरूम में बैठी हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बाबा ने पूछा, 'अरे उसे चाय इत्यादि पिलायी है या नहीं?'

'जी पिलायी थी। दो घण्टे की प्रतीक्षा के उपरान्त उन्होंने कौफी माँगी थी। वह भी दे दी है। वह पूछ रही थीं कि माता जी के हिसार से कब तक लौटने की आशा है।'

'और राधाकृष्ण आया है अथवा नहीं?'

'वह आये थे, परन्तु प्रेम जी के भीतर प्रतीक्षा करने की खबर सुन लौट गये हैं।'

अब लक्ष्मी और रघुनाथ सहाय भीतर गये तो प्रेम ने खड़े होकर दोनों को हाथ जोड़ नमस्ते कही। उसने कहा, 'यहाँ एक अनिश्चित काल के लिए रहने आयी हूँ।'

'और हमें यह विदित हुआ है कि तुम पति के घर से सब भूषण चुरा कर भाग आयी हो?'

'मुझे पता है कि उसने यह रिपोर्ट लिखाई है। मैंने आज वकील के द्वारा दिल्ली के डी० एम० के सामने यह अर्जी दी है कि मैं अपने पति का घर छोड़ आयी हूँ। मैं उसके घर से अमुक भूषण लेकर आयी हूँ। मैं यह समझती हूँ कि वे मेरे हैं, इस कारण ले आयी हूँ, मैं चोर नहीं हूँ। इसलिए अर्जी कर रही हूँ कि मैं दिल्ली में रह रही हूँ और अपने पति को लिख रही हूँ कि यदि उसका किसी प्रकार का दावा है तो वह दिल्ली की अदालत में करें।

'मैंने अपना पता यहाँ आपके मार्फत लिखाया है। मेरी जमानत यहाँ एक वकील महाराज कृष्ण ने पाँच हजार रुपये की दी है।

'अब मौसी जी से कह रही हूँ कि मैं यहाँ अनिश्चित काल के लिए रहने आयी हूँ।'

लक्ष्मी ने सेवक को खाना परोसने के लिए कहा और प्रेम को कह दिया, 'अभी तुम यहाँ रह सकती हो परन्तु कल तुम यहाँ रह सकोगी अथवा नहीं, यह राधाकृष्ण से राय कर ही बता सकूँगी। सुना है वह आया था और बाहर से ही यह जान कि तुम भीतर बैठी हो, लौट गया है। मैं समझती हूँ कि वह हमारे लौटने की प्रतीक्षा कहीं कर रहा होगा। उसे विदित था कि हम साढ़े आठ बजे तक लौटने वाले हैं।'

इसमें कुछ उत्तर देने को नहीं था। प्रेम ने भी लक्ष्मी की बात को स्वीकार करते हुए कहा, 'ठीक है, उनको आने दीजिए। मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी अर्जी उनके सम्मुख रखूँगी।'

'परन्तु तुम पति से लड़ क्यों पड़ी हो।

प्रेम ने एकक्षण तक विचार किया और बता दिया, 'आप तो माता समान है। इस कारण आपको मैं सत्य ही कह रही हूँ।

'मेरी सास का लड़का 'रास्कल' है। उसने मुझे अपने अफसर के घर यह कहकर भेजा था कि मैं उसे प्रसन्न कर उसके सम्मुख उपस्थित पतिदेव के विरुद्ध अर्जी को रद्द करा दूँ।

'मैं गयी थी। उसने मुझसे बलात्कार करना चाहा तो मैं वहाँ से भाग आयी। इस पर मेरा पति मुझसे नाराज हो गया और बोला कि उसने मुझसे विवाह इसी कारण किया है। अन्यथा, उसे विदित था कि मुझे कालिज से चरित्रहीन होने के कारण निकाला गया है।

'मैंने उससे कहा कि बिना स्वेच्छा से किसी की भोग-सामग्री बनना मैं बलात्कार समझती हूँ। यदि उसने कुछ ऐसी बात मुझ से चाही तो मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगी कि वह मुझसे पेशा करवाना चाहता है। इस पर उसने मुझे बुरी तरह पीटा। पीछे अवसर देख मैं अपने आभूषण और जो कुछ वहाँ नकदी थी, लेकर दिल्ली चली आयी हूँ।'

'परन्तु तुम तो वहाँ से तीन दिन से लापता हो ?'

'हाँ, मैं एक होटल में ठहर गयी थी। मैंने यह उचित समझा है कि पहले अपनी स्थिति पति से स्पष्ट करूँ और पीछे आपके घर आऊँ। मैं पति के घर में लिखकर रख आयी थी कि मैं स्वेच्छा से उसका घर छोड़ रही हूँ और मेरा पता आपके द्वारा है।'

लक्ष्मी मुख देखती रह गयी।

अभी खाना परोसा जा रहा था कि राधाकृष्ण आ गया। उसने बाबा और माँ के साथ प्रेम को खाने के कमरे में बैठे देखा तो माँ से पूछ लिया, 'माँ, यह किसलिए आयी है ?'

'राधा, बैठो। भोजन कर पीछे बात करेंगे। अभी तो यह यहाँ खाने के लिए आमंत्रित हुई है और शेष अभी विचारणीय है।'

राधाकृष्ण हाथ धो बैठ गया। खाते हुए उसने पूछ लिया, 'पिताजी कैसे हैं ?'

'प्रत्यक्ष रूप में स्वस्थ और प्रसन्न प्रतीत होते हैं।'

'देखें, कब तक यह चलता है। इमरजेंसी उठने के अभी लक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई नहीं देते ।'

इस पर रघुनाथ सहाय ने कहा, 'इसके उठने के लक्षणों से पहले उठने में कारण भी तो प्रकट होने चाहियें ।'

'तो इसके लगने के कारण प्रकट हुए थे ?' प्रेम ने विस्मय से पूछ लिया ।

'हाँ, कोई कार्य विना कारण के नहीं होता । इसके भी कारण हैं यद्यपि भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न कारण बताते हैं ।

'हमारी प्रधानमन्त्री यह बता चुकी हैं कि बाबू जयप्रकाश नारायण का सेना और पुलिस को आह्वान इस आपात्-स्थिति में कारण हैं ।'

'परन्तु यह तो झूठ था ।' राधाकृष्ण नें कह दिया ।

'झूठ तो नहीं था । ऐसा कहा तो गया था परन्तु इसके साथ एक बात और कही गयी थी जो प्रधानमन्त्री ने छुपा रखी थी । इस कारण बाबू जयप्रकाश नारायण का वह कथन विद्रोह नहीं कहा जा सकता । जयप्रकाश नारायण ने कहा था, "सरकार की गैर-क़ानूनी आज्ञायें न मानें ।"

'यदि जयप्रकाश नारायण के कथन को किसी कोर्ट में विद्रोह कहकर उपस्थित किया जाता तो कोर्ट इसे विद्रोह स्वीकार न करता । इसी कारण तो यह अवैधानिक घोषणा कराई गयी है । यह अवैधानिक इस कारण है कि आपात्-स्थिति की घोषणा संविधान में कही शर्तों को पूरा नहीं करती । संविधान में कहा गया है कि जब देश अथवा देश के किसी भाग को भय हो । जयप्रकाश नारायण की घोषणा को, यदि उतना भी मान लिया जाये जितना प्रधानमन्त्री उद्घोषित करती हैं, तब भी वह आपत्-स्थिति की शर्तों को पूरा नहीं करती ।

'सेना और पुलिस सरकार की आज्ञा न मानें, यह विद्रोह तो हो सकता है परन्तु इन्दिरा गांधी की सरकार के खिलाफ । यह देश के विपरीत विद्रोह तब हो सकता था, जब इस उद्घोषणा के साथ यह भी कहा होता कि चीन, रूस अथवा पाकिस्तान की सेना के साथ मिलकर विद्रोह किया जा रहा है ।

'मैं तो यह समझता हूँ कि यदि सेना को यह कहा जाता कि वह इस कांग्रेस सरकार और इन्दिरा गांधी की बेहूदा कार्यवाही को रोकने के लिये सैनिक राज्य स्थापित करें, तब भी वह आपात्-स्थिति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्तें पूरा नहीं करता। कारण यह कि देश अथवा देश के किसी भाग को भय नहीं था। भय तब होता जब देश अथवा देश के किसी भाग को भारत राज्य से पृथक् हो स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का आह्वान होता। दूसरे सेना ने इसे मानने का कोई भी संकेत नहीं दिया था। साथ ही जयप्रकाश नारायण यह कह रहा था कि नये निर्वाचन कराओ। इससे भी यही सिद्ध होता है कि देश को भय नहीं था। हाँ, कांग्रेसी सरकार को भय था।'

'यही बात तो पिताजी ने बार कौंसिल के अपने व्याख्यान में कही थी।' राधाकृष्ण ने कहा।

'हाँ, सोम ने बताया था और कोई भी सही दिमाग वकील ऐसा ही कहेगा और न्यायाधीश इसे मानेगा, परन्तु भारत का तो बाबा ही न्यारा है, यहाँ तो चोटी के व्यक्ति राष्ट्रपति से लेकर एक तहसीलदार के चपरासी अथवा थाने के भंगी तक भी कोई विवेक से काम लेना जानता ही नहीं।

'मैं समझता हूँ कि यदि हमारे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की रीड की हड्डी सीधी होती तो २६ जून १९७५ को ही राष्ट्रपति को लिख देते कि संविधान की धारा २२६ के अधीन वह उससे माँग करते कि कोर्ट में आकर एक बन्द कमरे में बतायें कि उसके आपात्-स्थिति लागू करने में क्या युक्ति है।

'संविधान में लिखा है कि यदि राष्ट्रपति सन्तुष्ट हो तो इस पर राष्ट्रपति को अपने संतोष का कारण बताना चाहिए।'

इस पर प्रेम के मुख से निकल गया, 'तब तो गजब हो जाता। पिताजी के घर में, मेरा अभिप्राय है चण्डीगढ़ में इस विषय पर बात-चीत हुई थी कि क्या कोई राष्ट्रपति से यह बात पूछ सकता है? सब की यही राय थी कि राष्ट्रपति से कारण नहीं पूछा जा सकता।'

'मैं समझता हूँ कि पूछा जा सकता है, संविधान की धारा २२६ स्पष्ट है।

'यह ठीक है कि स्वराज्य काल के अट्ठाईस वर्षों में किसी ने उस धारा का ऐसे कामों के लिए प्रयोग नहीं किया, परन्तु यह इस कारण कि आज तक इस प्रकार की 'इण्टर्नल इमरजेंसी' कभी लागू भी नहीं हुई। जब कोई अपराध किया ही न जाये तब तक उस अपराध के विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही हो भी नहीं सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संविधान की इस धारा में यह कहा है कि कोई भी उच्च न्यायालय देश में किसी भी व्यक्ति अथवा अधिकारी को उसके कार्य पर आज्ञा जारी कर सकता है।

'सर्वोच्च न्यायालय की बार कौंसिल ने तो यह प्रस्ताव पारित कर दिया था कि आपात्-स्थिति की आवश्यकता नहीं। इसी के आधार पर सर्वोच्च न्यायालय राष्ट्रपति से पूछ सकता था।

'परन्तु असल बात यह है कि न्यायाधीश अपनी कुर्सी पर बैठे हुए अपने को सुरक्षित समझ जनता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सके। राष्ट्रपति ने नागरिकों के मूलाधिकारों की अन्य सब धाराएँ वर्जित कर दी थीं, परन्तु यह धारा अभी छूटी हुई थी। इसका प्रयोग किया जा सकता था।'

इस प्रकार की बातें करते-करते भोजन समाप्त हुआ तो सब उठ खड़े हुए और यह चर्चा समाप्त हो गयी।

सब खाने के कमरे से निकल ड्राइंगरूम में आ गये और वहाँ आते ही प्रेम की समस्या पर वार्तालाप होने लगा।

वहाँ आकर बैठते ही लक्ष्मी ने प्रेम से पूछा, 'बताओ, सबके सामने राधाकृष्ण को अपने यहाँ आने का कारण बताओगी अथवा पृथक् में।'

इस पर राधाकृष्ण माँ की बातचीत में ही काटकर बोला, 'माँ, मैं पृथक् में कुछ भी सुनने अथवा करने के लिए तैयार नहीं हूँ। इसका यहाँ आना पूर्ण परिवार के साथ सम्बन्ध रखता है और मैं इसकी बात परिवार में ही सुनना चाहता हूँ।'

प्रेम ने कहा, 'श्रीमान् जी ! आपकी माता तथा बाबा को मैं सब बात बता चुकी हूँ। उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी बताने को नहीं है। माताजी कहें तो मैं वही बात आपके सामने दुहरा सकती हूँ।

'हाँ, कह दो।' लक्ष्मी ने कहा।

प्रेम ने वही बात राधाकृष्ण के सम्मुख दुहरा दी और आगे कहा, 'मैंने विवाह से पूर्व टेलीफोन पर आपको कहा था कि मैं वहां विवाह करना नहीं चाहती, परन्तु आपने मेरा आपसे ऐंगेजमेण्ट पालन करने की आशा नहीं दिलवाई तो चुप हो गई।

'परन्तु वहाँ पति मुझसे वेश्यावृत्ति कराना चाहता था और उससे अपनी स्वार्थ-सिद्धि चाहता था। यह मुझे स्वीकार नहीं था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण मैंने इन्कार किया तो बुरी तरह पीटी गयी। इस कारण मैं वहाँ से भाग आयी हूँ।

'वैसे तो मैं वहाँ अपने पति को एक पत्र में यह लिखकर दे आयी हूँ कि मैं दिल्ली में आपके यहाँ रह रही हूँ। इस पर भी मैंने यहाँ आने से पहले एक वकील से राय की थी कि मैं क्या करूँ जिससे आप पर किसी प्रकार की कानूनी जिम्मेदारी न आये।

'उसकी राय से मैंने आज दिल्ली के डी० एम० की अदालत में एक दरखास्त दी है और उसने मुझे पाँच हजार की जमानत पर यहाँ रह सकने की इजाज़त दे दी है। मेरे पास यहाँ रह सकने का सर्टिफिकेट है।'

'और तुम्हारे भूषणादि ?'

'मैंने अदालत में उनकी एक सूची दे दी है। आभूषण मेरे ब्रीफ-केस में हैं। भूषणों के अतिरिक्त मेरे पास दो हजार रुपये से कुछ अधिक भी हैं। वह मैंने कोर्ट में नहीं लिखाये। वह मेरे विवाह पर माताजी ने मुझे दिये थे।

'परन्तु लोग तो यही समझेंगे कि तुम मेरी पत्नी बन यहाँ रह रही हो ?'

'मेरे कालिज की कमेटी ने तो यह भी घोषित किया है कि मैं भ्रष्ट चरित्र की थी। लोगों के कहने से क्या बनता है ?'

'परन्तु क्या यह सत्य नहीं है ?'

इस पर प्रेम परेशानी में मुख देखने लगी और फिर एक क्षण तक विचार कर साहस पकड बोली, 'मैं उसे भ्रष्ट आचार नहीं समझती। मैंने वह कर्म कभी किसी धन के मोह में नहीं किया। केवल उसी कामना से जिससे कोई एक कॉफी का प्याला पेश किया हुआ पीता है। दोनों में मात्रा का अन्तर है। प्रकार का अन्तर नहीं। दोनों किसी प्रकार की अभ्यान्तरिक लालसा के कारण किये कर्म हैं।'

राधाकृष्ण मन में इसे न पसन्द करते हुए भी चुप कर गया। उसे चुप देख रघुनाथ सहाय ने कह दिया, 'परन्तु राधाकृष्ण उस जूठे प्याले में कॉफी लेना पसन्द नहीं करेगा।'

'यह प्रश्न तो तब उत्पन्न होगा जब कोई जूठे प्याले में कॉफी पेश करेगा। मैं उसके लिये नहीं आयी।' प्रेम ने दृढ़तापूर्वक कहा।

'तो किस बात के लिये तुम ने हमारे यहाँ का पता अपने पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दिया है।' लक्ष्मी ने पूछ लिया।

'इस कारण कि मैं आपको अपनी मौसी मानती हूँ। माँ से उतर कर आपका घर ही दृष्टि में आया था।'

इस पर रघुनाथ सहाय ने कह दिया, 'पर हम तुम्हें यहाँ छुपा कर रहने का स्थान नहीं दे सकते।'

'पर बाबा, मैं छुप कर रहने के लिये नहीं आयी। इसी कारण तो आज अदालत में उपस्थित हो यहाँ रहने की बात घोषित करके आयी हूँ।'

'तो हम तुम्हारी माँ को सूचित कर दें ?'

'यही मैं चाहती हूँ। आपने कहा था कि मैं यहाँ नहीं हूँ, तब नहीं थी। अब आयी हूँ तो माँ को भी सूचित करूँगी ही।'

'बहू ! इसकी माँ को टेलीफोन कर दो कि प्रेम यहाँ अभी-अभी पहुँची है।'

इस प्रकार बात बन गयी। प्रेम की माँ को उसके दिल्ली पहुँच जाने की सूचना दे दी गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

प्रेम के पिता मधुसूदन कपूर देश-विभाजन के समय लाहौर से अपने माता-पिता के साथ शिमला में जा पहुँचा था। उसका पिता अनारकली बाजार में बसाती की दुकान करता था। मधुसूदन उस समय दसवीं श्रेणी में पढ़ता था। शिमला में रहते हुए उसने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर दिल्ली में पढ़ने चला आया। सन् १९५४ में दिल्ली लॉ कालिज से कानून की परीक्षा उत्तीर्ण कर वह चण्डीगढ़ में वकालत करने लगा। उस समय उसके पिता चण्डीगढ़ में बसाती की दुकान करने लगे थे।

प्रेमवती की माता और राधाकृष्ण की माता, दोनों चण्डीगढ़ की लड़कियाँ थीं और सहेलियाँ थी। दोनों का विवाह लगभग एक समय ही हुआ था। प्रेम की माता सुमित्रा के तीन सन्तान हुईं। प्रेम के दो भाई थे, एक उससे बड़ा था, नाम था जगदीश। वह बाबा की दुकान पर काम करता था और दूसरा छोटा था और अभी स्कूल में पढ़ता था, नाम था महेश।

प्रेम ने हायर सैकेण्डरी उत्तीर्ण की तो दिल्ली में पढ़ने चली आयी। यहाँ उसे 'मिराण्डा कालिज' में प्रवेश मिल गया।

सुमित्रा जब प्रेम को लड़कियों के कालिज-होस्टल में छोड़ने आयी थी तो अपनी सहेली लक्ष्मी के घर पर ही ठहरी थी और लड़की को उसी की देख-रेख में छोड़ गयी थी।

तब से प्रेम, लक्ष्मी के घर आती जाती थी। उसका लक्ष्मी के लड़के राधाकृष्ण से मेल-जोल बढ़ा तो पहले उनका परस्पर विवाह का विचार हुआ और पीछे उनके माता-पिता तथा बाबा को भी इसका ज्ञान हो गया।

दोनों में विवाह के वचन का ज्ञान प्रेम के माता-पिता को भी था और वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि राधाकृष्ण डाक्टर बन किसी काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धंधे में लग जाये तो विवाह करें।

प्रेम इस समय बी० ए० द्वितीय वर्ष में पढ़ती थी। राधाकृष्ण और उसके परिवार के लोग प्रेम को एक सद्चरित्र लड़की ही समझते थे।

जब इनको पता चला कि प्रेम कालिज के 'स्कैण्डल' की लपेट में आ गयी है तो उनको यह घटनावश ही प्रतीत हुआ। पीछे जब प्रेम के माता-पिता प्रिंसिपल से मिल कर आये और उन्होंने लक्ष्मी को बताया कि कालिज की जाँच कमेटी ने प्रेम को भी चरित्रहीन समझ कालिज से निकाल दिया है तो लक्ष्मी तथा राधाकृष्ण के बाबा को विश्वास नहीं आया। वे यही समझे कि प्रेम की संगत चरित्रहीन लड़कियों के साथ होने के कारण वह कालिज से निकाली गयी है। इसे वे भूल समझ रहे थे परन्तु वह भी अब प्रेम का कालिज में पढ़ना उचित न समझा, उसके विवाह के लिये आग्रह करने लगे थे।

सोमदेव के पकड़े जाने के उपरान्त सुमित्रा और मधुसूदन ने जब एकाएक चण्डीगढ़ लौट जाने का निश्चय बताया तो वे चुप कर गये। इस पर भी वह प्रेम के चरित्र के विषय में संदेह नहीं करते थे। उसका मन कहता था कि प्रेम परिस्थितियों का शिकार है।

परन्तु उनके मन का चित्र बदला जब उनको सुमित्रा और उसके पति मधुसूदन के प्रेम के विवाह का निमंत्रण भेजा।

लक्ष्मी का विचार था कि प्रेम के माता-पिता को अवश्य कोई बात ऐसी पता चली है जिससे उनको प्रेम का विवाह राधाकृष्ण से ठीक प्रतीत नहीं हो रहा।

निमंत्रण पत्र मिलने पर लक्ष्मी विचार कर रही थी कि वह सहेली की लड़की को शकुन देने तथा सहेली को बधाई देने चण्डीगढ़ जायेगी परन्तु विवाह की निश्चित तिथि से एक दिन पूर्व चण्डीगढ़ से एक टेलीफोन आया। वह राधाकृष्ण के लिये था। राधाकृष्ण ने बाबा को बताया था कि टेलीफोन में प्रेम बोल रही थी और वह कह रही थी कि वह विवाह से पूर्व ही घर से भाग कर यहाँ दिल्ली में आना चाहती है और मुझ से विवाह करना चाहती है।

लक्ष्मी से जब बात हुई तो उसने भी यही राय दी कि अब राधा का विवाह प्रेम से ठीक प्रतीत नहीं होता।

इस पर भी राधाकृष्ण विचार कर रहा था कि प्रेम और प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की माता जी दिल्ली आयेंगी और विवाह की चर्चा पुन: चल पड़ेगी। उसे यह समझ आया कि दहेज इत्यादि का झगड़ा होगा। उस समय तक राधा तथा उसकी माता तथा बाबा के मन में यह विचार नहीं था कि लड़की के चरित्र में किसी प्रकार की खराबी आयी है। परन्तु चण्डीगढ़ से किसी प्रकार की सूचना नहीं आयी।

बात यह हुई थी कि जब मिराण्डा कालिज के प्रिंसिपल ने कालिज के प्राध्यापकों की कमेटी का निर्णय सुमित्रा और मधुसूदन को बताया तो उन्होंने लड़की से एकान्त में पूछा। प्रेम मान गई कि वह पुरुष संगत प्राप्त करती रही है।

इस पर उनका विचार हुआ कि उसका विवाह तुरन्त कर देना चाहिये। वे राधाकृष्ण के माता-पिता के प्रस्ताव को स्वीकार करने का विचार बना बैठे थे। परन्तु कोठी पर पहुँचते ही उन्होंने सोमदेव के पकड़ जाने की घटना देखी। इस पर वे सोमदेव के घर अपनी लड़की देने का विचार छोड़ बैठे। रात सोने के कमरे में ही माता-पिता तथा उनकी लड़की ने बिना किसी प्रकार की सफाई दिये कोठी से चले जाने का विचार बना लिया।

इससे लक्ष्मी इत्यादि को विस्मय हुआ। इस पर भी वे समझ गये कि सोमदेव के पकड़े जाने पर भयभीत हो वे वहाँ से भागे हैं। और कुछ दिन उपरान्त स्थिति सामान्य हो जाने पर भय से मुक्त हो विवाह की चर्चा करेंगे।

चण्डीगढ़ पहुँच प्रेम के माता-पिता और बड़ा भाई जगदीश चन्द्र पृथक् कमरे में बैठ राय करने लगे कि वर्तमान स्थिति में क्या किया जाये।

जगदीश चण्डीगढ़ कांग्रेस कमेटी का प्रधान था और उस समय बन रही संजय की युवा-कांग्रेस में रुचि ले रहा था। उसने जब सोमदेव का इस कारण पकड़ा जाना सुना कि उसने बार कौंसिल में इमरजेंसी के अवैध और अनुचित होने पर व्याख्यान दिया था, तो उसका भी यही मत था कि इन विद्रोहियों के घर प्रेम नहीं जायेगी। माता-पिता भी कांग्रेस मतवादी थे। इस कारण उन्हें सोमदेव के लड़के से सम्बन्ध तोड़ने में देरी नहीं लगी। अब प्रश्न उपस्थित हुआ कि प्रेम का विवाह कहाँ किया जाये।

जगदीश को अपने एक मित्र रघुबीर सिंह, जो रेलवे में इंजीनियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और कालका-शिमला लाइन पर देख-रेख पर नियुक्त था, का विचार आया। इस पर माता-पिता ने उसे कहा कि रघुवीर सिंह के पिता से मिल कर निश्चय करे और यदि उनको विवाह स्वीकार हो तो एक सप्ताह के भीतर ही विवाह कर दिया जाये।

बिना प्रेम से बातचीत किये जगदीश अपने मित्र के पिता जसवन्त सिंह मरवाहा से मिलकर यह निश्चय कर आया कि अगले दिन रघुवीर सिंह उनके घर रात का खाना खाने आयेगा। वह वहाँ लड़की को देख पसन्द करेगा तो विवाह हो जायेगा।

प्रेम को इस विषय में कुछ नहीं बताया गया। वह विचार कर रही थी कि कुछ दिन व्यतीत हो जाने पर वह माँ से आग्रह करेगी कि मौसी लक्ष्मी से पुन: बातचीत आरम्भ करे।

परन्तु चण्डीगढ़ पहुँचने के दूसरे ही दिन वह घर में विशेष चहल-पहल देखने लगी। घर की सबसे बढ़िया क्रोकरी निकाली गयी। घर भर में सामान्य रूप में और बैठकघर में विशेष रूप में सफाई होने लगी तो प्रेम ने माँ से पूछा, 'माँ, आज क्या है जो बैठकघर में पर्दे इत्यादि बदले जा रहे हैं। सब समान झाड़-फूक कर साफ किया जा रहा है?'

'जगदीश का मित्र रघुवीर सिंह भोजन पर आ रहा है।'

'वह कौन है?'

'जसवन्त सिंह मरवाहा, यहाँ के हाईकोर्ट के वकील का नाम सुना है न। उसी का लड़का है। इस समय रेलवे में इंजीनियर है। जगदीश का कहना है कि वेतन तो पन्द्रह सौ रुपया है परन्तु उसकी आय बहुत अधिक है।'

'अर्थात् बहुत बड़ा रिश्वतखोर है।'

'जो कुछ भी हो, वह शिमला में एक बहुत बड़ी कोठी बनवा रहा है। जगदीश का कहना है कि वह शीघ्र ही रेलवे की सेवा से मुक्त हो कोई उद्योग आरम्भ करने वाला है।'

'परन्तु माँ!' प्रेम का प्रश्न था, 'आज किस उपलक्ष्य में उसे दावत दी जा रही है?'

अब सुमित्रा ने बता देना उचित समझा। उसने कहा, 'हमने यह निश्चय किया है कि अब तुम्हारा विवाह एक सप्ताह के भीतर ही कर दिया जाये। जगदीश ने तुम्हारे लिये रघुवीरसिंह को उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा है और आज तुम्हें वह देखने आ रहा है।'

'परन्तु लक्ष्मी मौसी भी तो कल ही विवाह के लिये कह रही थीं ?'

उनसे हमारा सम्बन्ध नहीं होगा। वह राज्य-विद्रोही परिवार है। उनमें हम अपनी लड़की नहीं देंगे।'

"पर माँ, हमारा परस्पर वचन भी तो हो चुका है। आप लोगों का आशीर्वाद भी हमें मिल चुका है।'

'यह सब भूल थी। भूल को सुधारना मनुष्य का धर्म है।'

प्रेम परेशान परन्तु मौन रही। वह भी विचार कर रही थी कि भाई के मित्र को देखकर ही अंतिम निर्णय दे।

उसी सायंकाल रघुवीरसिंह आया। उसकी बहुत खातिरदारी की गयी।

एक कमरे में, भोजन की प्रतीक्षा करते हुए भेंट हुई। जगदीश ने उस समय के लिये 'ड्रिंक्स' का प्रबन्ध किया हुआ था। जीवन में पहली बार प्रेम ने मद्य का सेवन किया। यद्यपि यह बहुत हल्की थी, फलों के रस से मिली होने के कारण स्वाद और सुगन्धि में भी अनुपम थी। इस पर भी उसके सिर को चढ़ने लगी। उससे उत्तजित हो बातचीत में वह रघुवीरसिंह को बता बैठी कि वह कालिज से निकाली गयी है।

रघुवीरसिंह ने प्रेम की सूरत, शक्ल और हावभाव पसन्द किये तथा उसी समय विवाह का निश्चय हो गया। रघुवीरसिंह ने विवाह की स्वीकृति के उपलक्ष्य में सबके समक्ष ही प्रेम के गाल को चूम लिया। इस पर माता-पिता के लड़के-लड़की को बधाई दे दी।

मधुसूदन ने पूछा, 'अपने माता-पिता से तो पूछोगे ही ?'

'उनका इस बात से क्या सम्बन्ध है ?'

'वह तुम्हारे माता-पिता हैं।'

'उन्होंने ही तो मुझे प्रेम को पसन्द करने के लिये भेजा है। इस कारण वे अब इन्कार कैसे कर सकते हैं! साथ ही इतनी सुन्दर लड़की से विवाह को भला वह नापसन्द क्यों करेंगे ?'

'तो हम चाहते है कि शीघ्र ही विवाह हो जाये ?'

'मैं तो अभी इसे घर ले जाने के लिये तैयार हूँ।'

'इस तरह नहीं। बारात लेकर आओ और फिर डोली में हम इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदा करेंगे।'

रघुवीरसिंह हँस पड़ा। उसने जगदीश की ओर देख कर पूछ लिया, 'बस, इसी प्रगतिशीलता की डींग हाँका करते हो?'

'तनिक लोगों और मित्रों को भी खिलाने-पिलाने का अवसर मिलना चाहिये।'

रघुवीरसिंह ने हँसी-हँसी में कह दिया, 'ठीक है, इसमें भी राजनीतिक प्रचार होना चाहिये।'

घर पहुँच कर रघुवीरसिंह ने अपने पिता को यह बताया कि लड़की वाले तुरन्त विवाह करना चाहते है तो जसवन्तसिंह को लड़की के चरित्र पर संदेह हुआ। उसने कहा, 'मैं तनिक लड़की के विषय में जाँच पड़ताल करा लूं, तब सगाई करूँगा।'

'परन्तु पिता जी,' रघुवीर सिंह का कहना था, 'वह बहुत सुन्दर है।'

'तभी तो जाँच की आवश्यकता है, कहीं पहले ही कुछ गड़बड़ हुई तो।'

इस पर लड़का चुप कर गया। पिता अगले दिन दिल्ली जा पहुंचा और मिराण्डा कालिज से प्रेम के निकाले जाने की सब कहानी सुन आया।

सायंकाल वह घर आया तो उसने लड़के को फोन पर अपनी जाँच का परिणाम बता दिया। रघुबीरसिंह के पिता को यह बात रुचिकर प्रतीत नहीं हुई कि लड़की आवारा है। उसने कह दिया, 'पिता जी, जैसी भी है वह मुझे पसन्द है। औरतें तो बहुत काम की वस्तु होती हैं। विशेष रूप में जब वे बहुत सुन्दर हों।'

'तो तुम क्या चाहते हो?'

'यही कि विवाह का दिन-मुहूर्त्त निश्चय कर मुझे टेलीफोन कर दीजिये। मैं अपने मित्रों के साथ समय से पूर्व चण्डीगढ़ पहुँच जाऊँगा।'

इसके विपरीत प्रेम देवी के मन में वहाँ विवाह न करने की प्रतिक्रिया हुई। अगले दिन वह मन में विचार करने लगी कि यह सिक्ख युवक तो सर्वथा लज्जाहीन है। उसके भाइयों के समक्ष ही उसका मुख चूमने लगा था। खाने के समय कुछ खाने तथा कुछ मद्य के नशे में वह उस समय अपने मन के भावों को समझ नहीं सकी थी। अब वह रघुवीरसिंह को राधाकृष्ण की तुलना में सब प्रकार से हल्का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव करने लगी थी ।

विवाह की तिथि निश्चय हुई और सम्बन्धियों तथा मित्रों को बारात के स्वागत के समय आकर बधाई देने के निमंत्रण-पत्र भेजे जाने लगे ।

विवाह का दिन समीप आने लगा परन्तु, प्रेम के मन में लक्ष्मी के घर का वातावरण तथा वहाँ की बौद्धिक चर्चाओं की स्मृति उग्र होने लगी । उसके मन की प्रतिक्रिया फूट निकली, विवाह से एक दिन पूर्व । वह अपने पड़ोस के मकान में गयी और वहाँ से दिल्ली टेलीफोन करने लगी ।

टेलीफोन तो उसके पिता के घर में भी था परन्तु वहाँ से वह दिल्ली बात करने में डरती थी । उसने दिल्ली सम्पर्क अपने माता-पिता तथा भाई-भावज से चोरी बनाया था ।

परन्तु वहाँ से जो उत्तर आया, वह उसे व्यावहारिक प्रतीत नहीं हुआ । राधाकृष्ण ने कहा था कि उसे अपनी माता को उसकी माता के पास भेजना चाहिये । वह स्वयं अपने माता-पिता से चोरी कुछ भी करना नहीं चाहता ।

प्रेम को निराशा तो बहुत हुई परन्तु बलि के बकरे की भाँति बंधी हुई देवता के सम्मुख बलि चढ़ ही गयी ।

: २ :

दो सप्ताह भर तो जीवन भोग-विलास का व्यतीत हुआ । रघुवीर सिंह उसे हनीमून पर कुल्लू ले गया और वहाँ के खेलकूद में वह दिल्ली भूल गयी । परन्तु जब वहाँ से लौटी और रघुवीरसिंह अपने कार्यालय में पहुँचा तो उसे समझ आया कि उसके विपरीत एक रिश्वत का मामला बन चुका है ।

वह अपने कमरे में मेज पर बैठा तो उसकी अनुपस्थिति में आयी डाक उसके सामने उपस्थित की गयी । उसने दिल्ली हैड-आफिस से आये एक लिफाफे को, जो सबसे ऊपर रखा था, खोला ।

पत्र में लिखा था, तुरन्त दिल्ली में उत्तरी रेलवे के चीफ सैक्रेटरी से मिलें ।

उसने उसी समय दिल्ली में सैक्रेटरी से टेलीफोन द्वारा सम्पर्क किया और बताया कि वह पन्द्रह दिन की छुट्टी के उपरान्त लौटा है । अभी-अभी कार्यालय में आने पर आपका आदेश मिला है । यदि आज्ञा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो मैं कल किसी समय सेवा में उपस्थित हो सकता हूँ।

उत्तर आया, 'अब यहाँ आने से काम नहीं चलेगा। मैं स्वयं कल शिमला आ रहा हूँ और वहीं तुम से मिलूँगा।'

अगले दिन सैक्रेटरी ने शिमला आने पर बताया कि उसके विपरीत आरोप यह है कि अम्बाला के सेठ बीरबल से दस सहस्त्र रुपये घूस लेकर उसका ठेका ऊंचे दर पर स्वीकार कराया है।

'तो ठीक है, आरोप पत्र मुझे दिया जाये तो मैं उसका उत्तर दूंगा ?'

'मगर आरोप पत्र देते तुम्हें सस्पेण्ड करना पड़ेगा।'

'और यदि मैं चार्ज को झूठा सिद्ध कर सकूँ तो सस्पैंडकाल का वेतन सरकार को देना पड़ेगा।'

'सरदार साहब, सेक्रेटरी ने व्यंग्य के भाव में कहा, 'प्रतिमास जो सहस्रों रुपये रिश्वत का प्राप्त करते हो और जो नित्य ठेकेदारों से तोहफे लेते हो, उनसे तो वंचित रहना ही पड़ेगा। मेरी सूचना के अनुसार तुम्हें सहस्त्रों रुपये मासिक की ऊपर की आय है।'

'विद आल ड्यूरिस्पैक्ट मेरा निवेदन है कि ऐसा नहीं है। कभी कोई तोहफा अवश्य दे जाता है। इस पर भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वह इतनी बड़ी राशि नहीं जितना आप कह रहे हैं।'

'तब ठीक है, तुम्हें सस्पैंण्ड करने में हानि नहीं है। शेष रही तुम्हारे आरोपों का उत्तर दे सकना, वह तो कुछ अन्य लोग हैं जो सुनेंगे ?'

'अब तुम जा सकते हो और आफिस से सूचना की प्रतीक्षा करो।'

रघुवीरसिंह ने नमस्ते कही और चुपचाप बाहर निकल गया, परन्तु ज्यों ही वह अपने कमरे में आया तो सैक्रेटरी का पी० ए० उसे मिलने आया और एक घंटा भर उससे बात करता रहा।

जब पी० ए० चला गया तो रघुवीरसिंह आँखें मूंद कुछ देर तक विचार करता रहा। तत्पश्चात्, वह काम में रुचि नहीं ले सका और उठ कर बारह बजे घर जा पहुँचा। घर पर पत्नी के पूछने पह उसने बताया कि वह स्वस्थ नहीं है।

'क्या कष्ट है ?'

'सिर में चक्कर आ रहे हैं। मैं समझता हूँ, एक आध दिन आराम करूँगा तो ठीक हो जाऊँगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसी डाक्टर से राय करनी चाहिये। कहीं 'ब्लड प्रेशर न हो'।"

'मध्याह्नोत्तर जाऊँगा। डाक्टर चार बजे अपने क्लीनिक पर मिलेगा।'

'तब ठीक है, आप आराम करियेगा। मैं अपनी माँ से मिलने जा रही हूँ। सुना है, वह शिमला में आयी हुई है ?'

'किससे सुना है ?'

'रामसिंह की पत्नी आयी थी और यह सूचना दे गयी है।'

रामसिंह उनके कार्यालय का चपरासी था। उसकी पत्नी अपने पति के अफसर के काम-काज के लिये आती-जाती थी।

'ठीक है, तीन बजे के पूर्व आ जाना। मैं तुम्हारे साथ ही डाक्टर के पास जाऊँगा। मुझे चलते हुए चक्कर आते है। इस कारण किसी को साथ ले जाना चाहता हूँ।'

तीन बजे पति-पत्नी घर से निकल शिमला ऊपर माल को चल पड़े।

वे डाक्टर के चिकित्सालय पर अभी नहीं पहुँचे थे कि रघुवीर सिंह को सेक्रेटरी मनमोहन चौहान सड़क पर टहलता मिल गया। दोनों में आमना-सामना हुआ तो रघुवीरसिंह ने अपनी पत्नी का परिचय करा दिया।

'सर ! यह मेरी पत्नी प्रेम हैं।'

'ओह, 'सेक्रेटरी ने हाथ जोड़ नमस्ते कही और फिर प्रेम से हाथ मिलाते हुए पूछा, 'मुझे आपके दर्शन कर बहुत प्रसन्नता हुई है। सुनाइये, हनीमून ट्रिप कैसा रहा है ?'

पूर्व इसके कि प्रेम कुछ उत्तर दे, रघुवीर सिंह ने सेक्रेटरी का परिचय करा करा दिया और फिर कहा, 'मैं कल अपने स्टाफ को विवाह के उपलक्ष्य 'क्वालिटी' में चाय पार्टी देने वाला हूँ। उसमें आपको भी आमंत्रित करने वाला हूँ।'

इस पर चौहान ने कहा, 'कल के विषय में तो मैं कह नहीं सकता कि मैं यहाँ रहूँगा अथवा नहीं। मैं तो आज और अभी आप दोनों को चाय पर अपने होटल में आमंत्रित करता हूँ।'

'परन्तु, 'रघुवीरसिंह ने पत्नी को कुछ कहने का अवसर न देते हुए कह दिया, 'इस समय तो मैं डाक्टर सरीन के क्लीनिक पर जा रहा हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वहाँ क्या है ?'

'मुझे चक्कर आते हैं।'

'ओह ! मेरे पास इसकी बहुत अच्छी एक आयुर्वेदिक औषध है। इसकी एक ही खुराक से आप बिल्कुल ठीक हो जाएँगे। आइये, यह तो एक अन्य कारण बन गया है, अभी चलिये।'

रघुवीरसिंह ने प्रश्नभरी दृष्टि में पत्नी की ओर देखा। वह कुछ कह नहीं सकी। उसने केवल यह कहा, 'डाक्टर से 'डायोगनोस' तो कराना ही चाहिये।'

'मैंने इनके रोग का निदान कर लिया है। देखिये मिसेज प्रेम, अभी चलिये और यदि पाँच मिनट में यह ठीक न हो जायें तो फिर डाक्टर की फीस देने चले आइयेगा।'

'लैट अस ट्राई,' रघुवीरसिंह ने पत्नी की ओर देखते हुए कहा, 'और साथ ही इनकी चाय से इन्कार भी तो नहीं करना चाहिये।'

दोनों मनमोहन के साथ चल पड़े। वहाँ से पचास कदम पर ही मैट्रोपौलिटन होटल की शानदार इमारत थी और मनमोहन चौहान वहाँ ठहरा हुआ था।

वह पति-पत्नी दोनों को लेकर रिसैप्शन हाल में ले जाने के स्थान अपने कमरे में ले गया और बोला, 'यहीं चाय मँगवा लूँगा। यहाँ पृथक् में परिचय बहुत अच्छी प्रकार हो सकेगा।'

वे सिटिंग रूम में बैठे तो मनमोहन ने कमरे में लगी घंटी बजाई। बेयरा आया और उसने उसे पहले, 'मटनस्टिक्स' और उसके साथ ड्रिंक्स और पीछे कॉफी का आर्डर लिखा दिया।

'परन्तु,' प्रेम ने कहा, 'मैं तो 'ड्रिंक' नहीं करती।'

'वह मुझे पता है। आपकी सहेली साधना हमारे पड़ोस में ही रहती है। वह बता रही थी कि वह और उसके साथ दो अन्य लड़कियाँ कालिज से 'रिस्टिकेट' की गयी हैं। उसने अपनी सखियों के नाम भी बताये हैं। मैं तो आपका नाम सुनते ही समझ गया था।'

प्रेम इस परिचय से घबड़ा उठी। इस पर रघुवीरसिंह ने बात बदलने के लिये कह दिया, 'चौहान साहब, मेरे सिर के चक्कर की औषध।'

'ओह हां, वह तो मैं भूल ही गया था। प्रेम जी, आइये मैं आपको औषध देता हूँ। आप इनको औषधि दीजियेगा और मैं तनिक बाथ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूम से निपट कर आऊँगा । तब तक निश्चय यह ठीक हो जायेंगे ।'

रघुवीरसिंह ने कहा, 'प्रेम ले आओ । नहीं तो मुझे चाय लेने का स्वाद नहीं आयेगा ।'

मनमोहन चौहान उठा और बोला' 'आइये मैं अपनी मैडिसन चैस्ट से निकाल देता हूँ ।'

प्रेम भी अपने कालिज जीवन की बात चलती देख चुपचाप चौहान साहब के साथ सिटिंग रूम के पीछे बेडरूम में चली गयी ।

वहाँ से प्रेम को लौटने में दस मिनट लगे । प्रेम आयी तो उसका मुख विवरण हो रहा था । मनमोहन चौहान बाहर नहीं आया । इस समय बेयरा एक बोतल, तीन गिलास और तीन प्लेटों में मटनस्टिक्स इत्यादि ट्रे में रखे हुए लेकर आ गया । बेयरा सब सामान रख कर कमरे से बाहर गया तो प्रेम ने बोतल में से एक गिलास आधा भर लिया और दो घूँट में ही सब पी गई ।

रघुवीरसिंह उसके मुख पर देखता हुआ चुप बैठा था । प्रेम ने गिलास तिपाई पर रख कर कहा, 'मैं जरा बाहर बाथरूम में जा रही हूँ । अभी दो मिनट में आती हूँ ।'

इतना कह पति के कुछ कहने की प्रतीक्षा किये बिना वह कमरे से निकल गयी ।

चौहान पहले आया । आते ही उसने पूछा, 'औषधि खायी है अथवा नहीं ?'

'तो आपने औषधि भेजी थी । वह तो श्रीमती जी ने मुझे दी नहीं ।'

'और वह कहाँ है ?'

'वह बाहर के बाथरूम में गयी है ।'

'वह बहुत मजेदार औरत है । उसने वायदा किया है कि रात भोजन तक यहाँ ठहरेगी ।'

रघुवीरसिंह ने कुछ उत्तर नहीं दिया । इस पर मनमोहन चौहान ने कहा, 'मैं कल आपके चार्ज-शीट पर लिख दूँगा कि मैंने जाँच की है और उसमें कोई भी बात प्रमाणित नहीं हुई ।

'मैं समझता हूँ कि इस मामले में आप बरी हो जायेंगे । परन्तु सरदार साहब, सबके साथ बाँट कर खाना चाहिये । अकेले खाने का नतीजा ठीक नहीं होता ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीरसिंह चुपचाप आँखें नीची किये हुए बैठा था। दोनों प्रेम के लौटने की प्रतीक्षा करते रहे। वह नहीं लौटी। प्रतीक्षा करते-करते आधा घंटा व्यतीत हो गया तो रघुवीरसिंह को समझ आया कि वह भाग खड़ी हुई है।

चौहान को भी समझ आया तो बोला, 'देखो रघुवीरसिंह! यदि वह रात आठ बजे खाने पर यहाँ नहीं आयी तो यकीन जानो कि कल तुम सस्पैण्ड कर दिये जाओगे और एक सप्ताह में तुम चण्डीगढ़ में मिट्टी छानते फिरोगे।'

रघुवीरसिंह ने कह दिया, 'मैं देखता हूँ कि क्या हुआ है?'

इतना कह वह भी होटल से निकला और अपने घर को चल पड़ा। रघुवीरसिंह सम्मर हिल पर एक कोठी बनवा रहा था। इस कारण वह उस स्थान के समीप ही भाड़े के मकान में रहता था। वह होटल मट्रोपोलिटन से निकला और एक रिक्शा कर अपने मकान में जा पहुँचा। मकान सम्मर हिल स्टेशन से पचास गज के अन्तर पर था।

रिक्शावाले को भाड़ा दे वह अपने मकान की बैठक घर में पहुँचा तो पत्नी को गम्भीर विचार में एक सोफा पर बैठे देख पूछने लगा, 'तो तुम यहाँ हो?'

'हाँ, अभी तो यहाँ हूँ। पहले यह बताइये कि आपके सिर के चक्करों का क्या हुआ।'

'वह तुम्हारे भाग जाने से भूल गया हूँ। तुम्हारे इस प्रकार वहाँ से भाग आने पर यह नोटिस मिल गया है कि रात तुम उसके साथ भोजन लेना स्वीकार नहीं करोगी तो कल मेरी नौकरी समाप्त।'

'और आप क्या चाहते हैं?'

'वह अफसर है और तुम्हारे पूर्व इतिहास को जानता है।'

'मैं अभी अपने मन को इस काम के लिये तैयार नहीं कर सकी। आप यहाँ बैठिये, मैं आधा घंटा आराम से विचार कर लूँ; तब बताऊँगी।'

रघुवीरसिंह ने घड़ी में समय देखा, अभी पाँच नहीं बजे थे। रात के भोजन का समय आठ बजे था। उसने प्रेम को कहा, 'ठीक है तुम आराम कर लो और इस प्रकार भागने का स्वभाव छोड़ो।'

प्रेम अपने बेडरूम में चली गयी और रघुवीरसिंह बाहर बैठक में उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथाई घंटा ही विश्राम कर प्रेम बाहर आयी तो आते ही उसने पूछा, 'आपके सिर के चक्करों का क्या हाल है ?'

'वह तुम्हारे खाने पर जाने के निर्णय के साथ सम्बन्ध रखता है।'

'मैंने तो न जाने का ही निश्चय किया है। यह काम मुझ से नहीं हो सकेगा।'

'और दस मिनट तक उसके बेडरूम में क्या करती रही हो ?'

'उसे आश्वासन देती रही थी कि रात भर उसके पास रहूँगी।'

'तो अब आश्वासन पूरा करना चाहिये। नहीं तो मैं 'डिसमिस' हो सकता हूँ।'

'इसमें मैं आपकी सहायता नहीं कर सकती।'

'तो तुम्हें जरा सीधा करना पड़ेगा।'

इतना कहते-कहते पति ने एक चपत उसके मुख पर लगा दी। चपत खाते ही प्रेम उठ कर घर से बाहर को भागने को लपकी, परन्तु रघुवीरसिंह ने उसको बालों से पकड़ लिया। उसके सिर के बाल कंधों तक लटक रहे थे।

बालों से पकड़ी जाने पर वह चीख मार कर सौफे पर बैठ गयी उसके बाल अभी रघुवीरसिंह के हाथ में थे।

'देखो,' रघुवीरसिंह ने कह दिया, 'भली औरत की भाँति कहना मान जाओ। नहीं तो आज तुम्हारी हत्या हो जायेगी।'

प्रेम ने एक क्षण तक विचार किया और कहा, 'छोड़िये मेरे बालों को। बहुत दर्द करने लगे हैं। आराम से बैठ कर बात करिये।'

रघुवीरसिंह ने प्रेम के बाल छोड़ दिये। प्रेम ने कहा, 'तो आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी आपके अफसर को 'औबलाइज' करे ?'

'अफसर को नहीं। यह मुझे 'औबलाइज' करना होगा।'

'तो ठीक है। आप उस रास्कल को टेलीफोन कर दीजिये कि मैं ठीक आठ बजे होटल पर अकेली पहुँच जाऊँगी। वह होटल के द्वार पर मेरी प्रतीक्षा करे।'

'तो तुम जाओगी ?'

'न ही जाऊंगी तो क्या करूँगी ? मैं अभी न तो मरने की आयु में हूँ और न ही मरने की इच्छा कर रही हूँ।

'शेष आप जानें, आपका काम जाने। मैं आपको 'औबलाइज' कर दूंगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवीरसिंह मकान के बाहर रेलवे स्टेशन से मैट्रोपोलिटन होटल में चौहान को टेलीफोन करने चल पड़ा।

प्रेम अपने कमरे में गयी। उसने अपने ब्रीफकेस में अपने सब आभूषण रखे और अपने कमरे की अलमारी में से नोटों का एक बंडल निकाला और पति के स्टेशन से लौटने से पहले वह घर से निकल शिमला की ओर चल दी।

उनके घर का नौकर सेवासिंह मकान के द्वार पर खड़ा था। उसने पूछा, 'बीबी जी, कहां जा रही हैं ?'

'शिमला को, कुछ काम है। अभी सरदार साहब आयेंगे तो उनको कह देना कि मैं अपनी एक सहेली से मिलने जा रही हूँ। रात कुछ देर से आऊँगी।'

सेवासिंह विस्मय में मुख देखता रह गया परन्तु प्रेम लम्बे-लम्बे पग उठाती हुई रिक्शा-स्टैण्ड की ओर चल पड़ी।

समर-हिल स्टेशन के अधिकारी रघुवीरसिंह को भली भाँति जानते थे। वह उनके सैक्शन में ही चीफ-इंजीनियर नियुक्त था। इस कारण इसके वहाँ पहुँचते ही स्टेशन-मास्टर ने टेलीफोन करने की सुविधा दे दी। रघुवीरसिंह ने टेलीफोन से मैट्रोपोलिटन होटल शिमला से सम्पर्क बनाया परन्तु पता चला कि मिस्टर चौहान अपने कमरे में नहीं हैं। वह वहीं ठहर गया और प्रति पन्द्रह मिनट के उपरान्त सम्पर्क बनाने का यत्न करता रहा। आखिर छः बजे से यत्न करते-करते सात बजे सम्पर्क बन सका। रघुवीरसिंह ने प्रेम के रात उसके साथ खाने की स्वीकृति की सूचना दे दी।

चौहान ने कहा, 'सरदार साहब ! उसे कह दो कि मैं उसे और तुम को भी मालामाल कर दूंगा। और यदि वह स्वीकार नहीं करेगी तो तुम चण्डीगढ़ और दिल्ली की सड़कों पर भीख माँगते फिरोगे।'

रघुवीरसिंह ने कहा, 'हजूर, इतना कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। मैंने एक अन्य ढंग से उसे सब समझा दिया है। आशा है कि अब आपको निराश नहीं होना पड़ेगा।'

'निराश तो मैं नहीं था। उसने दस मिनट जो मेरे साथ बेड-रूम में व्यतीत किये थे, वह इस बात का प्रमाण है कि वह जिन्दा-दिल है। परन्तु बाहर आकर ही उसके विचारों में जो परिवर्तन हुआ था, वह तुम्हारी वजह से ही प्रतीत हुआ था। खैर, अब तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी समझ गये होगे है कि क्या होना चाहिये। मैं होटल के द्वार पर ठीक आठ बजे उसकी प्रतीक्षा करूँगा।'

रघुवीरसिंह घर लौटा तो सेवासिंह द्वार पर खड़ा मिला। उसने पूछा, 'यहाँ खड़े क्या कर रहे हो?'

'आपकी प्रतीक्षा कर रहा था।'

'क्यों?'

'बीबीजी आपके जाने के पाँच मिनट उपरान्त अपना बैग हाथ में ले गयीं थीं और अभी तक नहीं लौटीं।'

रघुवीरसिंह पूछने लगा, 'किधर गयी हैं?'

'रिक्शा स्टैण्ड की तरफ गयी है।'

रघुवीरसिंह भी उसी ओर चल दिया।

: ३ :

प्रेम को दिल्ली में पृथ्वी राज रोड पर रात भर रहने की स्वीकृति मिल गयी। लक्ष्मी ने चण्डीगढ़ प्रेम की माता को टेलीफोन कर बताया कि प्रेम उनके घर पहुँच गई है। इस समाचार के उपरान्त लक्ष्मी का विचार था कि सुमित्रा और प्रेम का पति रघुवीरसिंह आयेंगे और किसी प्रकार से सुलह-सफाई का यत्न किया जायेगा।

परन्तु तीसरे दिन सुमित्रा अकेली आयी। उसके आने पर पता चला कि रघुवीरसिंह मीसा कानून के अन्तर्गत पकड़ा गया है और चण्डीगढ़ जेल में बंद है। इसको रेल के कार्यालय से सेवामुक्त कर दिया गया है। उसके घरवाले उसके विषय में और अधिक जानने के लिये भाग-दौड़ कर रहे हैं।

इस समाचार से सबको विस्मय हुआ। परन्तु प्रेम ने इसका समाधान कराया। उसने कहा, 'मेरे वहाँ से लापता होने के पूर्व जब वह मुझे प्रेरणा देने लगे थे कि मैं उनके सैक्रेटरी के पास होटल में जाऊँ तो उन्होंने कहा था कि यदि मैं नहीं गयी तो वे कल रेल की सेवा से निकाल दिये जायेंगे। क्यों निकाल दिये जायेंगे, इसका मुझे कुछ ज्ञान नहीं। मेरे साथ उन्होंने अपने कार्यालय की बात कभी नहीं की।'

'क्या तुम दोनों में कभी राजनीति पर भी बातचीत नहीं हुई थी?' सुमित्रा ने लड़की से पूछा।

'केवल एक बार ही बात हुई थी। हम चण्डीगढ़ में थे और वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों को अपने-अपने काम में व्यस्त देख वह कहने लगे कि इमर्जेंसी से पूर्व दिल्ली तथा चण्डीगढ़ में बहुत अन्तर था। शिमला भी अधिक विक्षुब्ध प्रतीत होता था। परन्तु अब तो शिमला और चण्डीगढ़ में किसी प्रकार का अन्तर प्रतीत नहीं होता। लोग मजे में अपने-अपने काम-धंधों में लगे हुए हैं, शिमले में भी और चण्डीगढ़ में भी।

'अब तो मजदूरों और कुलियों में भी शान्ति हैं। अन्यथा चण्डीगढ़ में आये दिन लेबर यूनियनों के जलसे-जलूस होते रहते थे।'

'मैंने सामान्य रूप में कहा था कि यह मृत्यु के लक्षण हैं। उनका कहना था, "नहीं, यह स्वस्थ जीवन का लक्षण है।"

'मैं स्वयं राजनीति में रुचि नहीं रखती। इस कारण मैंने यह चर्चा आगे नहीं चलायी। इसके अतिरिक्त मेरी इस विषय पर उनसे कभी बात नहीं हुई।'

रघुनाथ सहाय समीप बैठा प्रेम इत्यादि में हो रहे वार्त्तालाप को सुन रहा था। उसने कहा, 'इसमें विस्मय करने की बात नहीं है। आखिर एक प्रजातंत्र पद्धति में सरकार क्या है? यह नौकरों का समूह ही तो है। उनके दिमाग की भावनाएँ ही तो सरकार है।

सामान्य समय में उन पर कुछ अंकुश था। वह यह कि कोई भी व्यक्ति उनसे दुःखी हो न्यायालय का द्वार खटखटा सकता था। परन्तु इमर्जेंसी में तो न्यायालय का द्वार भी बन्द है। अतः सरकारी नौकरों को अपने मन की बात करने का अवसर मिल गया है। इनका मन किसी दूसरे का भला करने से अधिक अपना भला करने में लगता है। कारण यह कि सेवा-कार्य करते-करते ये शूद्र वृत्ति के हो जाते हैं और एक शूद्र को स्वतन्त्र विचार करने की बुद्धि ही नहीं रहती।

'इस पर भी स्वार्थ और सब कामनाओं की पूर्ति तो बिना विचार किये ही चलती है। ऐसे ही जैसे एक पशु में चलती है। बस यही नौकरशाही में उभर आयी है और अब निरंकुश चल रही है।'

'और संसद तथा मन्त्रिमण्डल को क्या हो गया है?' सुमित्रा ने राधाकृष्ण के बाबा से पूछ लिया।

'वह तो सिद्धान्तात्मक नियन्त्रण ही कर सकते हैं। इस इमर्जेंसी में दूषित सिद्धान्त को चलने दिया गया है। वह दूषित सिद्धान्त नकारात्मक ही है। मन्त्रिमण्डल और संसद ने यह निश्चय किया है कि नौकरशाही की भूल को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे नौकरशाही बेलगाम हो गयी है।'

'परन्तु उनको भी तो भय होना चाहिये कि वे भी पकड़े जा सकेंगे। मेरा पति नौकरशाही का एक अंग ही है। उसे पकड़ने वाले को यह भय तो होना ही चाहिये कि वह स्वयं भी किसी समय पकड़ा जा सकता है।'

'यही तो पशुपन के लक्षण हैं। पशु को उसका ज्ञान नहीं रहता। उसमें मन तथा बुद्धि अति दुर्बल होने के कारण न तो दूसरे से हो रही बात उसे स्मरण रहती है, न ही बुद्धि से वह यह विचार कर सकता है कि उसके साथ भी कभी उसी प्रकार की दुर्घटना हो सकती है जैसी वह किसी के साथ कर रहा है।

'इमर्जेंसी लगने के पहले एक दो महीने तो सरकारी कर्मचारी भी भयभीत थे। परन्तु ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता जाता है वह भी इस इमर्जेंसी के स्वरूप से अभ्यस्त होते जाते हैं और अब धीरे-धीरे निःशंक हो मनमानी करने लगे हैं।

'सब समझ गये प्रतीत होते हैं कि असल राजा वे हैं। प्रधान-मन्त्री और अन्य सरकारी अधिकारी बहुत दूर ऊँचे बैठे हैं, उनको प्रजा की चीख पुकार नहीं पहुँच सकती।'

'यह तो अब है। मैं प्रेम से यह जानने आयी हूँ कि अब वह क्या करना चाहती है? इसकी सास तथा इसके श्वसुर को सन्देह है कि प्रेम का राधाकृष्ण के पिता से सम्पर्क रहा है। यही कारण हो सकता है कि प्रेम के पति को सोमदेव जी से सम्बन्धित समझ पकड़ लिया गया है। अब प्रेम का भाग कर यहाँ दिल्ली चले आना, जसवन्तसिंह के सन्देह की पुष्टि करता है।

'इसी कारण यह पूछने आयी हूँ कि वह अब क्या करने और कहाँ रहने का विचार कर रही है?'

'अभी तो मैंने निश्चय नहीं किया।' प्रेम ने उत्तर दिया, 'मैंने यहाँ मैजिस्ट्रेट को यहाँ का पता दिया है। इस कारण यहाँ चली आयी हूँ।'

'परन्तु तुम्हारे नये पते की सूचना भी कोर्ट में दी जा सकती है।'

'यह मैं मौसी जी से राय कर ही बता सकती हूँ। माँ, मैं तुम्हारे घर तो जाऊँगी नहीं।'

'क्यों?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुम्हें मुझे शीघ्रातिशीघ्र विवाह देने की जल्दी थी। मैंने तुम्हें कहा भी था कि जो कुछ दिल्ली कालिज में घटा है, उसका विवाह से कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु तुम तो यह समझती थीं कि मेरी समस्या का सुझाव विवाह ही है। यह तुम्हारी बुद्धि का दिवालापन था। इस कारण जहाँ बुद्धि का दिवाला है, वहाँ नहीं जाऊँगी।'

'तो कहाँ रहोगी ? यहाँ से तो पहले ही निकाली जा चुकी हो।'

'नहीं माँ ! मैं यहाँ से निकाली नहीं गयी थी। मौसी के सुपुत्र ने कहा था कि मुझे इस घर में आने के लिये तुम्हें यहाँ विधिवत् भेजना पड़ेगा। यह इसलिये कहा गया था कि तुम और पिता जी, यहाँ किसी से भी बातचीत किये विना मुझे ले गये थे।

'अब मैं तुम्हारी अनुपस्थिति में यहाँ के पुरखा से बात कर ही निश्चय कर सकूंगी कि मुझे कहाँ रहना चाहिये।'

'तुम्हारे यहाँ रहने से तो तुम्हारे घरवाले से किसी प्रकार की सख्ती भी हो सकती है ?'

'मेरी उसमें रुचि नहीं है। न उसकी रक्षा में और न ही उसको फँसाने में।'

'क्यों ?'

'यह मैं स्वयं नहीं जानती। इस पर भी तुम्हारे यह जल्दीपन का स्वाभाविक परिणाम है।'

सुमित्रा चुप रही। प्रेम, राधाकृष्ण की माता से पृथक् में बात करना चाहती थी। उसका विचार था कि इस घर में उसकी ही उससे सहानुभूति हो सकती है।

सुमित्रा दिल्ली बारह बजे के लगभग पहुंची थी और मध्याह्न के भोजन के समय उसकी लड़की और लक्ष्मी बहन से बातचीत हुई थी। उस समय राधाकृष्ण भी वहाँ था। परन्तु भोजन के उपरान्त वह अपने कालिज में विशेष लेक्चरों में उपस्थित होने चला गया था। जब लक्ष्मी और प्रेम पृथक् में बातें कर रही थीं तो सुमित्रा, रघुनाथ सहाय के कमरे के बाहर जा पहुँची।

'बाबा ! मैं आ सकती हूँ ?'

'हाँ, आओ सुमित्रा ! अब क्या कहती हो ?'

'मैं समझती हूँ कि प्रेम आपसे बात करने वाली है। आप इस विषय में क्या समझते हैं ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरे समझने की बात छोड़ो। बताओ, तुम क्या चाहती हो ?'

'मेरा विचार है कि उसे या तो हमारे घर में रहना चाहिये अन्यथा अपनी ससुराल में जाकर रहना चाहिये।'

'देखो बेटी सुमित्रा ! यहाँ यह भय किया जा रहा था कि तुम्हारी लड़की बड़े-बड़े अधिकारियों की रखैल न बन जाये। कालिज में पढ़ते हुए भी उसका कालिज से बाहर के लोगों से सम्बन्ध था और वह अब पुनः स्थापित हो सकता है। इसी का निवारण करने के लिये हमने उसके शीघ्र विवाह का प्रस्ताव किया था और कदाचित् तुम लोगों ने भी इसी भय से बचने के लिये इसका विवाह कर दिया था। परन्तु जो भाग्य में होता है, उसे कोई नहीं टाल सकता।

'अब मैं इस विषय में कुछ नहीं करूँगा। न ही प्रेम को अपना मार्ग बनाने के लिये कहूँगा। हाँ, यदि किसी विषय पर वह मेरी राय माँगेगी तो उसे उस विषय में उचित व्यवहार बता दूँगा।'

'मैं पूछूँगी तो नहीं बतायेंगे ?'

'मैं तुम में और प्रेम में अन्तर नहीं समझता। दोनों को मैं बच्ची ही मानता हूँ।'

'इसी कारण तो आपसे पूछ रही हूँ कि आप इसके विषय में क्या समझते हैं ?'

'पहले तो उसे अभी एक दो मास तक किसी एकान्त स्थान में बैठ कर चिन्तन करना चाहिये। उसे प्रतीक्षा करनी चाहिये और यह देखना चाहिये कि वह कहीं माँ तो नहीं बन रही। आखिर अपने पति की संगत में वह पन्द्रह दिन तक रह चुकी है।

'यदि वह गर्भ से है तब समस्या भिन्न होगी और यदि वह अभी तक इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकी तो समस्या दूसरी है।'

सुमित्रा को बात समझ में आ गयी और वह रघुनाथ सहाय का धन्यवाद कर बोली, 'तो अब यह समस्या रह गयी है कि वह कहाँ रहे ?'

'ठीक है, यह उसे विचार करना चाहिये। मैं समझता हूँ कि उसे अपनी माता के घर पर रहना चाहिये।'

'तो बाबा, आप उसको समझा दें कि कल वह मेरे साथ चण्डीगढ़ लौट जाये।'

'जब वह पूछने आयेगी तो मैं कह दूँगा। यह मेरा स्वभाव नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं बिना पूछे किसी को राय दूँ ।

'अपने व्यवसाय के दिनों में राय देने के मैं दो सौ रुपये लेता था । अब मैं राय देने का व्यवसाय नहीं करता । इसीलिये निःशुल्क राय दे दूँगा ।'

सुमित्रा इस बात पर मुस्करायी और बोली, 'देखती हूँ कि वह मूर्ख लड़की आपकी इस कृपा का लाभ उठाती है अथवा नहीं ?'

इसी समय लक्ष्मी और प्रेम में भी वार्त्तालाप हो रहा था । लक्ष्मी का विचार था कि प्रेम की माँ भी वहाँ आ जायेगी और निर्णयात्मक बात अभी हो जायेगी । परन्तु जब प्रेम ने देखा कि सुमित्रा बाबा के कमरे में चली गयी है तो उसने कहा, 'अब ठीक है ।'

'क्या ठीक है ?'

'मुझे आपसे पृथक् में बात करने का अवसर मिल गया है ।'

'पर मैं तो तुम्हारी माँ के सामने ही बातचीत करना चाहती थी ।'

'मौसी ! उसने मेरा विवाह कर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी है । अब उसका मुझ पर कोई दावा नहीं रहा ।'

'और किसका दावा तुम पर है ?'

'मौसी, आप मेरे विवाह पर नहीं आयी थीं । इसलिये आप मेरे विवाह में किसी प्रकार भी जिम्मेदार नहीं हैं । इसलिये ही मैं आपसे बात करना चाहती थी ।'

'परन्तु मुझे तुम्हारी माँ ने बुलाया तो था । मैं स्वयं ही वहाँ नहीं गई थी क्योंकि तुमने संकेत किया था कि तुम वहाँ विवाह नहीं करना चाहतीं ।'

'तब तो मौसी, यह बहुत ही अच्छा हुआ था कि माँ ने आपको बुलाया था और आप नहीं गयीं । मौसी, मैं आपके घर पर रहना चाहती हूँ ?'

'यह अब कैसे हो सकता है ? जब तुम कालिज में पढ़ती थीं तो यहाँ आया करती थीं । और जब तुम्हारी माँ ने तुम्हारा विवाह राधाकृष्ण से करना चाहा था, तो मैं मौसी न रहकर तुम्हारी सास बन गयी थी और फिर जब से तुम्हारी माँ तुम्हें यहाँ से लेकर भागी थी, तो मैं तुम्हारी कुछ भी नहीं रही हूँ ।

'अब तुम मुझसे नया सम्बन्ध बनाना चाहती हो, अपने माता-पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अवहेलना कर। किस प्रकार का यह सम्बन्ध तुम चाहती हो और किस प्रकार का सम्बन्ध बनना अब सम्भव है, विचारणीय है।

'फिर इस सबमें कुछ अन्य भी हैं जो राय देने का अधिकार रखते हैं। इस कारण यह निश्चय नहीं हो सकता। इस समय राय देने के सब अधिकारी यहाँ नहीं हैं।'

प्रेम इस बात को समझती थी कि मौसी के पुत्र और पति यहाँ नहीं। कदाचित् मौसी अपने पति से भी, जो इस समय जेल में बन्दी हैं, राय करना चाहेगी। इस कारण उसने कह दिया, 'तो मौसी, राय कर लो। मेरी माँग यह है कि मुझे अब शेष जीवन अपने संरक्षण में रखो। जिस रूप में भी रखना चाहो रखो, मैं उस रूप में रहने का यत्न करूँगी।'

बात समाप्त हो गयी। सुमित्रा अभी भी बाबा के कमरे में थी। प्रेम को लक्ष्मी ने अपने बगल के कमरे में रहने दिया था। अतः उसने उठते हुए कहा, 'अच्छा, अभी आराम करो। मैं एक घण्टा विश्राम करना चाहती हूँ।'

प्रेम भी उठी। एक बार उसने रघुनाथ सहाय के कमरे की ओर देखा। फिर यह विचार कर कि वहाँ पर भी उसी के विषय में राय हो रही है, वह अपने कमरे में, जहाँ रात वह सोयी थी, चली गयी।

कठिन समस्या तब उत्पन्न हुई जब प्रेम के विवाहित रघुवीरसिंह के माता-पिता आ पहुँचे। पहली रात जब सुमित्रा को लक्ष्मी का टेलीफोन गया था तो उसने अपने लड़के जगदीश को प्रेम के श्वसुर जसवन्तसिंह मरवाहा के घर भेजा था। उनके घर पर टेलीफ़ोन नहीं लगा था।

जगदीश के सन्देश पर रघुवीरसिंह की माता सुरिन्दर कौर सुमित्रा से मिलने आयी थी। उसी ने सुमित्रा को बताया था कि रघुवीरसिंह उसी दिन प्रातःकाल 'मीसा' के अधीन पकड़ा गया है।

सुमित्रा ने उसे बता दिया था कि दिल्ली पृथ्वीराज रोड पर उसकी एक सहेली रहती है और प्रेम उनके घर पहुँच गई है।

'और वह तीन दिन कहाँ रही है?' सुरिन्दर कौर का प्रश्न था।

'यह उसने नहीं बताया।'

'रघुवीर के पिता यह समझते हैं कि आपकी लड़की ही किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक षड्यन्त्र में सम्मिलित है और उसकी प्रतिक्रिया में रघुवीर पकड़ा गया है।'

सुमित्रा ने कहा, 'हमें इस बात का ज्ञान नहीं कि वह किस प्रकार और कब से उस षड्यन्त्र में सम्मिलित है। दिल्ली से आने के उपरान्त वह एक महीना भर यहाँ अपने पिता के घर में रही थी। परन्तु न तो उस एक महीने में और न ही विवाह के उपरान्त पुलिस हमसे कभी कुछ पूछने आयी है। विस्मय करने की बात यही है कि हमें छोड़कर आपके घर पुलिस कैसे पहुँच गयी है।'

'यह रघुवीर के पिता का विचार है। वह तो मुझे यहाँ भेजने के लिये भी तैयार नहीं थे। परन्तु मैं लड़की के विषय में जानने के लिये चली आयी हूँ।'

सुमित्रा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। कारण कि कुछ उत्तर देने को था ही नहीं।

उस समय तो सुरिन्दर कौर चली गयी। उसने जाते समय इतना ही कहा था कि वह अब अपनी पतोहू में रुचि नहीं रखती। परन्तु अगले दिन मध्याह्नोत्तर तीन बजे के लगभग जसवन्तसिंह और सुरिन्दर कौर पृथ्वीराज रोड पर आ पहुँचे।

सुमित्रा ड्राइंगरूम में ही बैठी भविष्य के विषय में विचार कर रही थी कि कोठी के सेवक ने भीतर आ सुमित्रा से कहा, 'आपसे मिलने के लिए कोई चण्डीगढ़ से आया है।'

'क्या नाम बताया है?'

'जसवन्तसिंह, उनके साथ एक स्त्री भी है।'

सुमित्रा समझ गयी। उसने सेवक को कहा, 'उन्हें भीतर ले आओ।'

जसवन्तसिंह और सुरिन्दर कौर भीतर आकर बैठ गये तो सुमित्रा ने पूछ लिया, 'तो बहन जी, आप भी आयी हैं?'

उत्तर जसवन्तसिंह ने दिया, 'मेरी इच्छा आपकी लड़की के पीछे-पीछे भागने की नहीं थी। परन्तु आज प्रातःकाल ही चण्डीगढ़ रेलवे स्टेशन का स्टेशन मास्टर मिलने आया। उसने बताया कि मिस्टर चौहान भी 'मीसा' के अधीन पकड़ा गया है। इस कारण ठीक-ठीक वृत्तान्त जानने के लिए रेल विभाग के हैड आफिस में आने का विचार मैंने बना लिया। जब मैं आने लगा तो रघुवीर की माँ भी मेरे साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली आई है। यह पृथ्वीराज रोड पर प्रेम से मिलकर पूर्ण घटना का विवरण जानना चाहती है।

'हम दिल्ली में पहुँच सीधे उत्तर रेलवे के आफिस में गये थे। वहाँ से यह पता चला है कि वह शिमला से लौटा था पिछले सोमवार को और मंगल की प्रातःकाल वह पकड़कर तिहाड़ जेल में ले जाया गया है। आज उसके स्थान पर एक नया पक्षी आया है। वह दिल्ली केन्द्रीय सचिवालय से यहाँ भेजा गया है। मैंने उस व्यक्ति को रघुवीर सिंह और मिस्टर चौहान दोनों के विषय में पता करने पर नियुक्त किया है कि इस सब मामले की बैक-ग्राउण्ड क्या है।

'वह दिल्ली के डी० एम० के पास गया है। चौहान साहब के वारण्ट मैंने देखे हैं। उन पर दिल्ली के डी० एम० के हस्ताक्षर हैं। आशा करता हूँ कि सायंकाल तक किसी बात का पता चल जायेगा।

'रेलवे के सर्वोच्च अधिकारी का यह विचार है कि रघुवीरसिंह और मनमोहन दोनों किसी प्रकार की राजनीतिक हलचल में सम्मिलित हैं और पकड़े जाने के उपरान्त रघुवीरसिंह ने किसी प्रकार का रहस्योद्घाटन किया है जिससे चौहान भी पकड़ा गया है।

'इस पर मैंने रेल के सर्वोच्च अधिकारी से पूछा था कि हम किस समय उसके विषय में शेष सूचना लेने के लिए आयें। उसका कहना था कि कल किसी समय आ सकते हैं।

'हम रघुवीर से मुलाक़ात की स्वीकृति माँगने ए० डी० एम० के कार्यालय में भी गये थे परन्तु वह अभी तक अदालत में आया नहीं था और उसके आने की आशा भी नहीं थी। इस कारण हमने विचार किया है कि रात किसी होटल में ठहर कर कल मुलाकात की स्वीकृति लेकर ही वापस जाने का कार्यक्रम बनायेंगे।'

ये बातें कर ही रहे थे कि लक्ष्मी बाहर ड्राइंगरूम में चहल-पहल की आवाज सुन सोने के कमरे से निकल आयी। उसको जब पता लगा कि प्रेम की सास और श्वसुर आए हैं तो उसने नवागन्तुकों के लिए चाय तैयार करने को कह प्रेम को उसके कमरे से जाकर ले आयी।

प्रेम ने मरवाहा साहब और उनकी पत्नी को हाथ जोड़ नमस्कार कही तो सुरिन्दर कौर ने पूछ लिया, 'शिमला से भाग क्यों आयी थीं ?'

'मैं बताना नहीं चाहती, आप अपने लड़के से पूछिये ? आखिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह एक दिन और रात शिमला से लौट चण्डीगढ़ में रहे थे।'

'उसने तो बताया है कि तुम बदकारी करती पकड़ी गयी थीं। इस पर उसने तुम्हें बुरी तरह पीटा था और तुम वहाँ से भाग आयीं। वह अपने अफसर से मिलने गया हुआ था और तुम उसकी अनुपस्थिति में अपने सब भूषण लेकर भाग आयी हो।'

'तो आप मुझे पकड़वाने के लिए पुलिस साथ लायी हैं अथवा नहीं ?'

'हम तो बिना पुलिस के ही आये हैं।'

'तब ठीक है, मैं आपसे बात कर सकती हूँ।'

'हाँ, क्या कहती हो ?'

'मैं आपके पुत्र की करतूत तो बताऊँगी नहीं। हाँ, इतना कहती हूँ कि अब मैं आपके घर अथवा आपके सुपुत्र के घर नहीं जाऊँगी।'

'वह पकड़ा क्यों गया है ?'

'यह मैं नहीं जानती। हाँ, मैं पकड़ी नहीं गयी। मैंने पुलिस को अपने रहने का पता बताया हुआ है।'

: ४ :

चाय बनकर आयी और सब पीने लगे। लक्ष्मी ने सेवक को कहा, 'बाबा को भी बुला लो।' रघुनाथ सहाय भी आया तो नये आये हुओं का परिचय करा दिया गया।

जसवन्तसिंह ने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा। प्रेम ने ही बताया, 'बाबा, ये अपने पुत्र के विषय में उसके कार्यालय से कुछ पता करने आये थे। यहाँ यह किसलिए आये हैं, उन्होंने बताया नहीं। हाँ, मैंने इनको बताया है कि इनके लड़के के दुर्व्यवहार के कारण मैं भाग आयी हूँ और अब उसके घर नहीं जाऊँगी।'

सुरिन्दर कौर तथा उसके पति मरवाहा ने कुछ नहीं कहा। रघुनाथ सहाय ने भी कुछ कहना उचित नहीं समझा। वह समझ रहा था कि यह उसका अथवा उसके परिवार वालों का कार्य नहीं कि किसी दूसरे के घर की बात में झाँकने का यत्न करें।

चाय समाप्त हुई तो सुरिन्दर कौर ने कहा, 'हम अभी दिल्ली में ही किसी होटल में ठहर जायेंगे। अपना भावी कार्यक्रम कल बनायेंगे।'

इसका उत्तर किसी ने नहीं दिया। दोनों, प्रेम की सास तथा श्वसुर उठे और चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके चले जाने पर रघुनाथ सहाय ने कहा, 'क्यों प्रेम ! तुमने अपना क्या कार्यक्रम बनाया है ?'

'बाबा ! मैंने तो आपको बताया है, वह यह कि मैं यहाँ रहने के लिए आयी हूँ ।'

'और लक्ष्मी, तुम क्या चाहती हो ?'

'राधा के आने पर आप से राय कर ही बता सकूँगी ।'

'तब ठीक है, मैं इस समय अपने स्वाध्याय में लगा हूँ । यह मैं पाँच बजे तक करूँगा । तब तक राधा आ जायेगा ।'

इतना कह वह उठकर चला गया । सुमित्रा और प्रेम दोनों प्रेम के कमरे में चली गयीं ।

राधाकृष्ण ठीक पाँच बजे कालिज से लौटा तो आते ही चाय लेने लगा । इस समय लक्ष्मी और रघुनाथ सहाय भी वहाँ आ गये । वैसे तो वे मध्याह्नोत्तर चाय ले चुके थे । परन्तु पुत्र का साथ देने के लिये वे पुनः लेने लगे ।

'माँ,' राधाकृष्ण ने ही बात आरम्भ कर दी, 'इन माँ-बेटी ने क्या निश्चय किया है ?'

'वे सहमत नहीं हो सकीं ।' लक्ष्मी ने बताया, 'माँ उसे चण्डीगढ़ ले जाना चाहती है । प्रेम के सास-श्वसुर भी आये हैं । परन्तु इसे घर ले जाने के लिए नहीं, वह तो अपने लड़के से जेल में भेंट के लिए दिल्ली में ठहरे हैं । एक बात और है । रघुवीर का अफसर स्वयं भी मीसा के अधीन पकड़ा गया है ।'

'पर आजकल इतने लोग पकड़े जा रहे हैं कि सबके विषय में सुनने और जानने की आवश्यकता नहीं रही ।'

'ठीक है ।' बातों का सूत्र बाबा ने अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'प्रेम यहाँ रहना चाहती है, तुम क्या चाहते हो ?'

'मैं क्या कह सकता हूँ, मैं स्वयं माँ के घर पर रहता हूँ ।'

'मतलब यह कि माँ उसे अपने घर में रख सकती है ?'

'मैं माँ को न तो मना कर सकता हूँ और न ही स्वीकृति के लिये कहूँगा । हाँ, माँ जो कुछ निश्चय करेगी, तब मैं अपने विषय में विचार करूँगा ।'

'क्या विचार करोगे ?'

'मैं आजकल दो अत्यावश्यक कार्यों में लगा हुआ हूँ । वे मैं छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सकता। मुझे देखना होगा कि वे काम मैं यहाँ रहते हुए कर सकूँगा अथवा नहीं।'

बाबा और माँ को राधा के दूसरे कार्य के विषय में ज्ञात था। यद्यपि वह काम राधाकृष्ण की परीक्षा समीप आने से कम हो गया था। इस पर भी उसका एक सूत्र उसके साथ बँधा था। वह नित्य रात को बारह बजे से एक बजे तक घर से लापता हो जाता था। इस रहस्य को घर का एक सेवक रामू ही जानता था। वैसे लक्ष्मी और बाबा को भी विदित था।

इस कारण रघुनाथ सहाय ने लड़के को कहा, 'ठीक है। यदि प्रेम को यहाँ रहना हुआ तो हम सबको अपने-अपने कार्यक्रम को 'ऐडजस्ट' करना पड़ेगा।'

'तो बाबा, यह माँ और आप लोगों के निश्चय करने की बात है कि यहाँ घर में कौन रहता है और कौन नहीं रहता।'

लक्ष्मी ने आवाज हल्की कर धीरे से कह दिया, 'यह लड़की तुम्हारी पत्नी बनने का यत्न करेगी।'

'बहुत कठिन है माँ! यद्यपि मैं असम्भव नहीं समझता। मैं रात से ही इस विषय पर विचार कर रहा हूँ। मुझे भी उसकी इस नियत का संदेह हुआ है। परन्तु बाबा, इसमें कई बाधाएँ हैं। मैं इस विषय में तो विचार भी नहीं कर सकता। मेरे पास इस विषय पर विचार करने को समय नहीं है।'

लक्ष्मी का कहना था, 'मैं विचार करती हूं कि यदि यह प्रैगनैण्ट हुई तो स्थिति और भी विषम हो जायेगी।'

राधाकृष्ण हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, 'यह विषमता है क्या? यह आदिकाल से हो नहीं रहा क्या? स्त्रियाँ बच्चे पैदा करती ही हैं और प्रकृति उनको समाप्त करने के यत्न में रहती है। एक हमारा महकमा है, मेरा मतलब है कि हम डाक्टर लोगों का। हम प्रकृति का विरोध कर रहे हैं। हमने 'डैथ रेट' बहुत कम कर दिया है। आज से पचास वर्ष पूर्व पैदावार और मृत्यु का अनुपात दस और आठ था। फिर यह बढ़कर दस और चार हो गया है।

'हम अभी तक इस अनुपात को घटाने में लगे हुए थे। पिछले दस वर्षों से हमारा यत्न हो रहा है कि इस तुलना को कम करें। परन्तु जितना अधिक यत्न किया है उतना ही अधिक यह अनुपात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ता जाता है। इस समय अनुपात दस और तीन का है।

'इसमें विचित्र बात यह हुई है कि यही स्थिति न्यूनाधिक सब देशों में है। चीन में यह अनुपात दस और दो का हो गया बताते हैं। यद्यपि वहाँ की सरकार सही-सही आँकड़े नहीं देती परन्तु इस पर भी लोग अनुमान लगाते हैं और यह ठीक ही है।'

इस पर बाबा ने भी कह दिया, 'और तुम डाक्टरों ने भयभीत हो अब गर्भपात को वैधानिक ओपरेशन कह दिया है। सन्तान-निरोध-प्रचार व्यापक कर दिया हैं।'

'परन्तु बाबा! अभी तक तो हमारे प्रयत्नों का कुछ भी फल निकल रहा प्रतीत नहीं हो रहा। इन औरतों ने भी हमसे होड़ लगा रखी है। हम उपज को जितना कम करने का उपाय कर रहे हैं उतना ही ये हमारे प्रयत्नों को विफल करने का प्रयत्न कर रही हैं।'

'मगर राधा! हम तो तुम लोगों की सहायता चिरकाल से कर रहे हैं। मैं पिता के घर में एक ही सन्तान था। मेरी दो सन्तान हैं और तुम्हारे पिता के घर में भी दो ही सन्तान हैं?'

'हाँ। यह समस्या भी मेडिकल कौंसिल में विचार के लिए उपस्थित हुई थी। परिवार जो पिछड़े हुए है, वे ही अधिक सन्तान उत्पन्न करते हैं। वे उन उपायों का प्रयोग नहीं करते जिनको सन्तान-निरोध का उपाय कहते हैं।'

'परन्तु बरखुरदार,' बाबा ने मुस्कराते हुए व्यंग भाव में कहा, 'हमारे परिवार में तो बिना सन्तान निरोध के ही दो से अधिक बच्चे नहीं हुए। मैंने अपने जवानी के दिनों बहुत यत्न किया कि तुम्हारे पिता का एक भाई और बन जाये, परन्तु सफलता नहीं मिली। कभी यह भी विचार किया है क्या, कि पढ़े-लिखों के घर सन्तान अधिक कैसे हो?'

'जब मैडिकल कौंसिल में अधिक सन्तान उत्पन्न करने पर विचार होने लगा तो बहुसंख्या में डाक्टर बैठे-बैठे जम्हाइयाँ लेने लगे थे।'

रघुनाथ सहाय ने हँसते हुए कहा, 'मैं समझता हूँ कि इन मूर्ख डाक्टरों के तकनीकी ज्ञान से बाहर निकल कुछ मानव का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। शारीरिक ज्ञान ही ज्ञान का अन्त नहीं होता।'

'बाबा, वह क्या है?'

'इस प्रकार यहाँ बैठे-बैठे तो मैं यही बता सकता हूँ कि मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शरीर में एक मन और एक बुद्धि भी है। वे शरीर के कर्मों पर नियन्त्रण करती हैं। इस कारण शरीर पर नियन्त्रण करने के स्थान मन पर नियन्त्रण करोगे तो अधिक सफलता मिलेगी।

'देखो, मैं समझाता हूँ। मैं इन कृत्रिम सन्तान-निरोधकों के विपरीत नहीं हूँ। परन्तु इनका प्रयोग मनुष्य तब करता है जब मन और बुद्धि इस नियन्त्रण के अनुकूल होते हैं। यह नियन्त्रण तुम्हारे अधीन नहीं।'

'तो किसके अधीन है ?'

'मन और बुद्धि के अतिरिक्त शरीर में एक अन्य होता है। उसे जीवात्मा कहते हैं।'

'तो जीवात्मा को कैसे समझाया जा सकता है ?'

'यही तो मैं कह रहा हूँ कि तुम इसको भी सीखो। कम-से-कम वे लोग जो सन्तान-निरोध का प्रचार कर रहे हैं, उन्हें मन, बुद्धि और जीवात्मा को प्रभावित करने की विद्या सीखनी चाहिये जिससे वे लोगों को यह समझा सकें कि कम सन्तान उत्पन्न करना उनके अपने हित में है।'

'परन्तु बाबा ! क्या यह काम नहीं हो रहा ? दिन रात यह घोषणा की जा रही है कि देश में अन्न की पैदावार इतनी नहीं हो रही जितनी जन वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप जाति अति निर्धनावस्था में रहने लगेगी। भूख से व्याकुल लोग अपने ही बच्चों को मार-मारकर खाने लगेंगे।'

'और इसे तुम समझाना कहते हो ? यह तो डराना अथवा धमकाना है। और फिर इस इमर्जेंसी में तो दो से अधिक सन्तान उत्पन्न करनेवालों के लिए दण्ड का भी विधान किया जा रहा है। इस प्रकार सन्तान उत्पन्न करनेवालों को चोर तथा डाकुओं की श्रेणी में रखा जा रहा है। यह एक 'कार्डिनल सिन' बन रहा है।

'बरखुरदार ! कभी इस बात पर भी तुम्हारी कौंसिल ने विचार किया है कि बुद्धि के प्रयोग से कुछ 'कार्डिनल सिन' घोषित किये गये हैं। उनमें से कई ऐसे भी हैं जिनके लिए भूमण्डल की सरकारों ने कठोर दण्ड निश्चय किया हुआ है। इस पर भी संसार में चोर, डाकू और बलात्कार करनेवालों की अथवा स्वेच्छा से अनाचार करनेवालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। क्या इससे यह सिद्ध नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा कि लोग डराने, धमकाने से तथा दण्ड के भय से भी बुरा काम करने से रुकते नहीं ।'

'तो फिर क्या किया जाये ? यह काम तो अत्यावश्यक है । पैदावार का मृत्यु से अनुपात बराबर-बराबर पाँच और पाँच का हो जाना चाहिये ।'

'तुम लोग कुछ वैसा क्यों नहीं करते जो धनी-मानी परिवारों की स्त्रियाँ करती है ?'

'क्या करती हैं और कैसे करती हैं ?'

'कम सन्तान उत्पन्न करती हैं और बिना सन्तति-निरोध के उपायों के प्रयोग से । यह उन्होंने रोटी कमाने के लिए परिश्रम करना छोड़, अन्न खा-खाकर मुटापा पैदा कर सम्पन्न किया है ।

'मेरा अभिप्राय यह है कि यह प्रचार आरम्भ कर दो कि औरतों को घर का काम-काज तथा पतियों और बच्चों के पालन-पोषण का काम ही करना चाहिये । इससे उनके शरीर में चर्बी बढ़ जायेगी और स्वयमेव सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति कम हो जायेगी ।'

'पर बाबा । हम तो इसके उल्ट प्रचार कर रहे हैं । हम स्त्रियों को घर की 'ड्रजरी' से बाहर निकालकर पुरुषों के बराबर काम करने के लिए प्रोत्साहन दे रहे हैं ।'

'यही तो कह रहा हूँ कि तुम लोग धनी-मानी परिवारों की स्त्रियों के वंजर होने की बात का अध्ययन क्यों नहीं करते ।'

'तब तो बाबा ! अन्न की पैदावार भी कम हो जायेगी । देहातों में स्त्रियाँ भी खेतों में काम करती है ।'

'और पुरुषों से अधिक अन्न का प्रयोग करती हैं । उनका परिश्रम अन्न की बचत में योगदान नहीं देता और अब तो अन्न की पैदावार में मानव श्रम से अधिक मशीनों के श्रम का प्रयोग किया जा रहा है ।

'तुम जैसे आधुनिक युग की उपज युवक, स्त्रियों को पुरुषों के सब प्रकार के कार्य करने की प्रेरणा दे रहे हैं । तुम तो चाहते हो कि स्त्रियाँ कंधे पर बन्दूक रख युद्ध-क्षेत्र में भी अवतीर्ण हों ।'

'पर यदि स्त्रियाँ बेकार कर दी जायें तो सन्तान की पैदावार क्या कम हो जायेगी ?'

'इसका परिणाम तो तुम प्रत्यक्ष धनी परिवारों में देख रहे हो । मेरी दादी चक्की पीसती थी और उसकी चार लड़कियाँ तथा तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के थे। मेरी माँ दिन भर शृंगार करने में लीन रहती थी और मैं उसकी एकमात्र सन्तान हूँ।'

राधाकृष्ण मन में विचार कर रहा था कि यह कैसे किया जा सकेगा और किस प्रकार इसका जीवन तथा सम्पन्नता पर प्रभाव पड़ेगा।

वह अभी विचार ही कर रहा था कि प्रेम और उसकी माँ, कमरे से निकलकर वहाँ आ गयीं। दोनों की आँखें लाल और तरल हो रही थीं।

रघुनाथ सहाय इत्यादि समझ गये कि माँ-बेटी कमरे में बैठी झगड़ा करती रही हैं। कदाचित् एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रही होंगी। अतः वह चुपचाप माँ-बेटी के कहने की प्रतीक्षा करने लगा। लक्ष्मी ने रामू को आवाज दी और चाय का गर्म जल लाने के लिए कह दिया। बात सुमित्रा ने ही आरम्भ की। उसने लक्ष्मी को सम्बोधन कर कहा, 'बहन लक्ष्मी ! हमने परस्पर एक समझौता कर लिया है। उस समझौते के अनुसार मैं कल चण्डीगढ़ लौट जाऊँगी और प्रेम, यदि तुम उसे यहाँ रहने की स्वीकृति दोगी तो यहाँ रहेगी। यदि किसी भी कारण से तुमने उसे यहाँ रहने की स्वीकृति नहीं दी तो वह अपने रहने का पृथक् प्रबन्ध एक दो दिन में कर लेगी।

'यह कहती है कि यदि माँ की सहेली उसे नहीं रखेगी तो वह अपनी सहेलियों से विनय-अनुनय करने लगेगी। वह चण्डीगढ़ में, जहाँ उसके सास-श्वसुर रहते हैं, नहीं रहेगी।'

इस निश्चयात्मक निर्णय पर बाबा और लक्ष्मी परस्पर विचार करने के लिए पृथक् कमरे में चले गये। जाते हुए लक्ष्मी ने कहा, 'सुमित्रा बहन ! यह तो प्रेम ने एक प्रबल चुनौती दी है। मैं बाबा से इसी विषय में पृथक् राय कर अभी तुम्हें बताती हूँ।'

बाबा और लक्ष्मी जब सोमदेव के स्टडी रूम में चले गये तो सुमित्रा ने राधाकृष्ण से कहा, 'देखो बेटा ! इसने वचन दिया है कि यदि तुम्हारी माँ ने इसे यहाँ रहने की स्वीकृति दी तो वैसे ही यहाँ रहेगी जैसे पहले कभी-कभी आकर रहा करती थी।'

'मौसी ! मैंने अपनी राय माँ और बाबा को बता दी है। यह सब कुछ उन पर ही निर्भर करता है।'

इस समय रामू चाय का पानी ले आया। प्रेम चाय बनाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने तीन प्याले बना दिये ।

'यह तीसरा किसके लिए है ?'

'भाई साहब के लिये ।'

'पर मैं तो पी चुका हूँ ।'

'तो एक प्याला हमारे साथ भी लिया जा सकता है ।'

रघुनाथ सहाय और लक्ष्मी को राय करने में पाँच-चार मिनट ही लगे । जब दोनों आये तो इधर सब चाय ले रहे थे ।

वे इनके पास आकर बैठे तो लक्ष्मी ने बताया, 'हम दोनों ने निश्चय किया है कि प्रेम जब तक घर की लड़की के रूप में यहाँ रहना चाहे, रह सकती हैं । यह हमारे घर के रहन-सहन को भली-भाँति जानती है और इसे उस परम्परा को निभाना होगा ।'

सुमित्रा ने अपना प्याला सामने मेज पर रखते हुए बाबा को हाथ जोड़ नमस्कार करते हुए धन्यवाद कर दिया और कहा, 'आपके इस निर्णय पर मैं शान्तचित्त चण्डीगढ़ जा सकूँगी ।'

बात समाप्त हुई । इस पर प्रेम और सुमित्रा उठ पड़ीं । सुमित्रा बोलीं, 'हम जरा करोलबाग तक जा रही हैं । प्रेम के लिए कपड़े और कुछ दूसरा सामान खरीदना है ।'

: ५ :

उनके चले जाने पर रघुनाथ सहाय ने अपने पोते राधाकृष्ण को कहा, 'हमने तुम्हारी समस्या पर भी विचार किया है । तुम्हारी माँ जब तक तुम्हारे पिता बन्दीगृह से छूटकर नहीं आते, प्रेम को अपने कमरे में रखेगी । इससे तुम अपने पढ़ाई इत्यादि का कार्य निर्विघ्न कर सकोगे ।'

'यत्न करूँगा ।' राधाकृष्ण का कहना था ।

सुमित्रा और प्रेम रात का खाना बाजार से खाकर लौटीं । आने पर उनको पता चला कि प्रेम के उस घर में आने पर जो चंचलता अनुभव हो रही थी, वह अब नहीं है ।

अगले दिन प्रातः छः बजे ही चण्डीगढ़ जाने वाली प्रथम बस पकड़ने के लिये सुमित्रा वहाँ से चल दी । लड़की माँ को विदा करने भी नहीं गयी ।

राधाकृष्ण आजकल सात बजे उठता था, परन्तु माँ के जाने के उपरान्त प्रेम लक्ष्मी की दिनचर्या में सहायता करने लगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल पाँच बजे के लगभग प्रेम, लक्ष्मी के साथ बड़े कमरे में बैठी थी। उसे सेवक ने बताया कि उसके सास-श्वसुर आये हैं। उसने कह दिया, 'बैठाओ, मैं आती हूँ।'

प्रेम आयी और उनके सम्मुख बैठ पूछने लगी, 'चाय लेंगे अथवा कुछ अन्य ?'

'नहीं, हम कुछ नहीं ले रहे। शीघ्र ही यहाँ से जा रहे हैं। रघुवीर का एक संदेश तुम्हें देने के लिये आये हैं।'

'फरमाइये।'

'वह अपने व्यवहार के लिये तुम से क्षमा चाहता है और कह रहा है कि यदि जेल से जीवित छूट सका तो अपनी पूर्व भूल का प्रतिकार देने का यत्न करेगा।'

'ठीक है, मैं अभी तो यहीं रह रही हूँ। जब जेल से छूटेंगे तो मुझ से सम्पर्क बनाकर पूछ सकते हैं कि मैं उनसे क्या आशा करती हूँ।'

'एक सूचना भी उसने तुम तक पहुँचाने के लिये दी है। वह यह कि उसका चीफ सेक्रेटरी मनमोहन चौहान भी मीसा के अधीन पकड़ कर उसके साथ ही जेल में रखा गया है। दोनों एक ही बैरक में रहते हुए एक दूसरे को गालियाँ दिया करते हैं।'

प्रेम उनकी इस 'प्रेम-कथा' में रुचि नहीं रखती थी। इस कारण वह बिना किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी के मौन बैठी रही। जसवन्त सिंह ने आगे कहा, 'हमें इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है।'

प्रेम ने इस मनोद्‌गार का कुछ उत्तर नहीं दिया। वह अभी भी चुपचाप बैठी थी।

सुरिन्दर कौर ने कहा, 'मैं समझती हूँ कि यदि तुम हमारे साथ चण्डीगढ़ चलकर रहो तो यहाँ से अधिक मान तथा प्रतिष्ठा के साथ रह सकोगी तथा भविष्य में पति के सुखी जीवन का माधुर्य पा सकोगी।'

'मुझे इनमें से किसी की भी लालसा नहीं है।'

'परन्तु यहाँ जो तुम्हारा सम्बन्ध यहाँ के लड़के से था, उसके पुनः जागरित होने की सम्भावना है ?'

'मुझे इसके लक्षण दिखाई नहीं देते।'

'परन्तु यह स्वाभाविक ही है।'

Central Library Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar 167970

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कुछ भी हो, मैं अब यहाँ रहने का निश्चय कर चकी हूँ। माँ चण्डीगढ़ लौट गयी है।'

'ठीक है। तुम्हारे यहाँ रहने से एक सुविधा तो हो सकेगी। तुम अपने घर वाले से प्रति सप्ताह भेंट कर सकोगी। हमारा प्रति सप्ताह चण्डीगढ़ से आना सम्भव नहीं।'

'यह मैं विचार करूँगी। अभी तो मुझे इस व्यर्थ की बात के लिये रुचि और अवकाश अनुभव नहीं हो रहा। इस पर भी विचार करूँगी।'

इस पर जसवन्तसिंह ने कहा, 'कभी-कभी अपने और रघुवीर के सुख समाचार का पत्र लिखा करना।'

प्रेम ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह समझती थी कि उसने मन की अवस्था का दर्शन करा दिया है।

उसे मौन देख जसवन्तसिंह और सुरिन्दर कौर उठे और ड्राइंग-रूम से निकल गये।

उनके चले जाने के उपरान्त ही राधाकृष्ण कालिज से आया और प्रेम को ड्राइंगरूम में बैठा देख उसके समीप बैठ चाय के लिये रामू को कहने लगा।

लड़के के आने की आवाज़ सुन बाबा और उसकी माँ भी वहाँ चले आये।

'बाबा!' राधाकृष्ण ने कहा, 'आज मैं मध्याह्न भोजन के लिये नहीं आया। एक आपरेशन में सहायता देने लगा तो एक हस्पताल में ही बज गया था। अतः वहीं से मैं कालिज में चला गया।

'बाबा! कालिज में अपनी स्टूडैण्ट्स एसोसिएशन में मैंने आपकी कल वाली योजना बतायी थी। सब आपकी योजना सुन हँस पड़े। आपकी बात को एक मूर्ख की कल्पना कहते हैं।'

रघुनाथ सहाय हंस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'वह जूता तुम्हारी ऐसोसिएशन के सदस्यों के पाँव में अधिक फिट बैठता है। मुझे तो वे अपने से अधिक मूर्ख दिखाई दिये हैं। तभी वे मेरी बात को समझे नहीं। वे नहीं समझ सके कि स्त्रियों को रोटी कमाने से मुक्त करने का अर्थ यह होगा कि लड़कों में बेकारी निःशेष हो जायेगी। रोटी कमाने से मुक्ति पाने पर वे पतियों की सेवा अधिक कर सकेंगी और फिर घरों में स्त्रियों के झगड़े बढ़ने से पुरुषों के लिये जीवन का रस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ जायेगा ।'

'वाह बाबा, यह कैसे ? इससे तो घर और परिवार असह्य क्लेश का कारण बन जायेंगे ।'

'तो फिर कुछ लोग वैराग्य का आश्रय ले लेंगे और यदि कुछ पढ़े-लिखों के मन में वैराग्य तथा विवेक उत्पन्न हो गया तो भारत देश के कल्याण की सम्भावना बढ़ जायेगी ।'

'यह सब हवाई किले बनाना है ?'

'तो बरखुरदार ! तुम भूमि पर किले बनाओ । यूरोपियन देश और अमेरिका भूमि पर किले बना रहे हैं, तो भारत भी उनमें सम्मिलित हो जाये । जो उनका हशर हो रहा है, वह भारत का भी हो जायेगा ।

'देखो राधे ! स्वभाविक परिवार नियोजन का ढंग है मन और बुद्धि को सीधे मार्ग पर लाना । जब सब ठीक प्रकार से विचार करने लगेंगे तो फिर दो ढंग इस कार्य को सम्पन्न करने के रह जायेंगे । एक संयम और दूसरा है सब कुछ नाली में बहा देना । मेरा अभिप्राय: है कृत्रिम उपायों से अपनी प्राण शक्ति को नाली में बहाना ।

'उपायों के विषय में मतभेद हो सकता है परन्तु प्रेरणा का स्रोत डर और अव्यवस्था नहीं होना चाहिये । मन और बुद्धि को विश्वास होना चाहिये कि यह होना है, बस शेष स्वयमेव हो जायेगा ।'

इस पर प्रेम ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए पूछा, 'पर बाबा ! क्या मन और बुद्धि इतने बलवान हैं कि इन्द्रियों के सुख भोग को भी नियंत्रण में रख सकते हैं ?'

'ये कृत्रिम सन्तान निरोध के उपाय तो उन लोगों के लिये ही हैं जो अपने पर नियंत्रण नहीं रख सकते तथा जिनके मन और बुद्धियाँ दुर्बल हैं, जो ज्ञान में अल्प और विचार शक्ति में दुर्बल हैं । परन्तु यह असम्भव नहीं कि अधिकांश मनुष्य इन साधनों के बिना भी सन्तान निरोध कर सकते हैं । हमें इन कृत्रिम उपायों को रखते हुए भी अधिक और अधिक मानसिक नियंत्रण का उपाय प्रयोग में लाना चाहिये ।'

प्रेम अपने मन में उठती हुई उमंगों का विश्लेषण करने लगी थी । उस समय की, जब वह कालिज के दिनों में किसी युवक की सेवाएँ अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिये प्रयोग करने चल पड़ती थी और फिर विवाह के उपरान्त पन्द्रह दिन में हनीमून के ट्रिप में जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार उसने अपनाया था।

वह अब विचार करती थी कि उस उन्माद को देख कर ही उसके पति ने अपने अफसर से रियायत प्राप्त करने के लिये उसका प्रयोग करना चाहा होगा।

परन्तु बाबा की बात सुन वह विषय को आगे नहीं चला सकी।

दिन व्यतीत होते गये। मार्च मास में राधाकृष्ण की मेडिकल फाइनल की परीक्षा हुई। परीक्षा के उपरान्त उसे हस्पताल से भी अवकाश मिल गया। परीक्षा और परीक्षाफल घोषित होने के मध्यवर्ती काल में वह सर्वथा मुक्त था।

एकाएक वह घर से लापता हो गया। प्रेम का कार्यक्रम घर में ऐसा हो गया था कि वह लक्ष्मी के साथ प्रातः चार बजे उठती थी। एक ही कमरे में सोने के कारण उस समय उसका जागना स्वाभाविक था। इससे उसकी दिनचर्या लक्ष्मी के समान ही हो रही थी। लक्ष्मी प्रातः चार बजे उठकर शौचादि से निवृत्त हो अपने सोने के कमरे में ही कॉफी बना लेती थी। कॉफी का एक प्याला ले वह गीता पढ़ा करती थी। जिस दिन से प्रेम भी उठ स्नानादि से अवकाश पा लक्ष्मी के साथ ही तैयार होने लगी तो लक्ष्मी एक के स्थान दो प्याले बनाने लगी और कॉफी पी कर वह स्वभाविक रूप में लक्ष्मी के पास बैठ उसे पाठ करते सुनने लगी।

लक्ष्मी केवल श्लोकों का पाठ किया करती थी। वह स्वयं संस्कृत समझती थी और गीता के श्लोकों के अर्थ पाठ मात्र से समझ जाया करती थी। परन्तु एक दिन प्रेम ने पूछा, 'क्या पढ़ती हो मौसी ! यह तो मैंने देखा है कि यह भगवद्गीता है। परन्तु इसका क्या अर्थ है जो तुम नित्य ही इसका पाठ किया करती हो ?'

अतः लक्ष्मी को अर्थ बताना पड़ा। और साथ ही उस पर वह विवेचना सुनानी पड़ी जो पढ़ते समय उसके मन में उठती थी। परिणाम यह हुआ कि भगवद्गीता का स्वाध्याय दोनों करने लगीं। एक दिन लक्ष्मी ने बताया कि मन, बुद्धि और शरीर के द्वारा ही कामनाएँ जीवात्मा पर प्रभाव डालती हैं।

'परन्तु मौसी, जीवात्मा है क्या ?' प्रेम ने पूछ लिया।

'इसमें संदेह नहीं।'

'मुझे तो दिखाई देता नहीं और एक मेरी सखी भी कह रही थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह है परन्तु वह उसे मेरे सम्मुख प्रत्यक्ष नहीं कर सकी।'

इस पर लक्ष्मी ने उसे प्रत्यक्ष और अनुमान का अर्थ बताया। दोनों की प्रमाणिकता पर अपनी विवेचना बता दी। उसका कहना था कि दो पदार्थों के निरन्तर सम्बन्ध से एक के होने पर दूसरे का भी होना मानना, अनुमान कहाता है। लक्ष्मी ने उदाहरण दिया, 'हम सब पैदा हुए मनुष्यों को मरते देखते हैं। इससे हम भी एक दिन मरेंगे, यह अनुमान से सिद्ध माना जाता है।

'इसी प्रकार यह तिपाई पर फूलदान और उसमें फूलों का गुलदस्ता पड़ा है। कल मध्याह्न के समय माली ने लाकर यहाँ रखा था। तब से अभी तक यह ज्यूँ का त्यूँ ही पड़ा है। परन्तु तुम और घर में रहने वाले अन्य प्राणी तो बीसियों बार इस कमरे में यहाँ आये-गये हैं। इससे यह अनुमान लगाते हैं कि हम प्राणियों में कुछ है जो गुलदस्ते में नहीं है। वह प्राण है। उसे शक्ति कहते हैं जो हम में अन्न खाने से पैदा होती है। यह बात भी अनुमान से सिद्ध है। यदि हम भोजन लेना छोड़ दें तो कुछ दिन में हम में हिलने-डोलने की सामर्थ्य नहीं रहेगी। यदि एक सीमा से अधिक फाका करें तो वह हिलने-डोलने की सामर्थ्य सदा के लिये हमें छोड़ जाती है। इससे यह पता चला कि यह सामर्थ्य जिससे हम चलते-फिरते हैं, वह अन्न से प्राप्त होती है। परन्तु अन्न में शक्ति कहाँ से आती है और फिर अन्न में वह शक्ति होते हुए भी अन्न के दाने में हिलने-डोलने की सामर्थ्य उत्पन्न नहीं करती।

'अन्न में उपस्थित कार्बोहाइड्रेट्स और हायर-प्रोटीन की शक्ति सूर्य रश्मियों से आती है। सूर्य में यह शक्ति उपस्थित 'ऐटमों' के संयुक्त होने से उत्पन्न होती है। हाईड्रोजन के ऐटम संयुक्त होकर हीलियम के 'ऐटम' बन रहे हैं। परन्तु इनको संयुक्त भी तो कोई करने वाला है। वह कोई बहुत बड़ी शक्ति का स्वामी समझ में आता है। उसका नाम हमने परमात्मा रखा हुआ है।'

इस पर प्रेम ने अपनी कालिज में पढ़ी विज्ञान की जानकारी बता दी। उसने कहा, 'यह तो सूर्य में बहुत प्रबल गर्मी होने से ऐसा हो रहा है?'

'यही तो कह रही हूँ कि वहाँ गर्मी पैदा करने की भट्टी किसने जला रखी है। बस जिसने जलाई है, वह ही महान् शक्ति का स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा है ।'

'सब वैज्ञानिक यह मानते हैं कि वह स्वयमेव पैदा हुई है ।'

'परन्तु दवाईयों की दुकान पर पड़े हाईड्रोजन सिलिण्डरों में तो यह भट्टी जलती दिखाई नहीं देती । हाईड्रोजन गैस के स्टोर में भी यह भट्टी नहीं जलती । सूर्य में भट्टी जली हुई है । इससे ही यह अनुमान लगाया जाता है कि वहाँ किसी ने भट्टी जलाई है ।'

'वैज्ञानिक मानते हैं कि समय आने पर यह स्वतः होने लगता है ।'

'परन्तु बेटी प्रेम ! वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में जो बात आ जाये, वह बिना किसी उदाहरण के कैसे मान रही हो ?'

प्रेम को समझ आया अथवा नहीं, परन्तु वह उत्तर में कुछ कह नहीं सकी । इस कारण चुप रही । लक्ष्मी ने आगे कहा, 'इस प्रकार हमारा अनुमान यह है कि हम में चलने-फिरने की शक्ति परमात्मा की दी हुई है । जब कोई वैज्ञानिक इसे स्वतः अथवा किसी अन्य स्रोत से उत्पन्न होते दिखा अथवा समझा सकेंगे, तब हम परमात्मा का नाम छोड़कर, उस स्रोत से वह शक्ति आ रही मान लेंगे अथवा उस स्रोत का नाम परमात्मा रख देंगे ।

'परन्तु यह सत्य है कि वह शक्ति हम में है, इसे हम प्राण कहते हैं और उसे अभी तक परमात्मा की देन मानते हैं । इस पर भी जो बात मैं बता रही हूँ, वह इससे अगला पग है । वह प्राण-शक्ति सब प्राणियों में है परन्तु सब में समान रूप में काम नहीं करती । मैं उस शक्ति से उठ कर गीता का स्वाध्याय करती हूँ और तुम 'ओस्कर वाइल्ड' का उपन्यास भी पढ़ सकती हो । कोई दूसरा इस समय भ्रमण के लिये भी जा सकता है तथा कोई अन्य नींद का रसपान भी कर सकता है ।

'इससे यह सिद्ध हुआ कि उस प्राण शक्ति का प्रयोग करने वाला उसके निर्माता से भिन्न है और फिर प्राणी-प्राणी में भी भिन्न-भिन्न है ।

'यह इसी प्रकार है कि दिल्ली में सब मकानों में विद्युत तो 'पावर-हाऊस' से ही आती है परन्तु प्रत्येक घर का स्वामी उस विद्युत से भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य लेता है । घर के स्वामी की भाँति इस शरीर का स्वामी अर्थात् प्राण शक्ति का प्रयोग करने वाला, प्रत्येक प्राणी में भिन्न-भिन्न है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस कारण शास्त्र ने कहा है कि प्राणों को देने वाला तो परमात्मा है, परन्तु प्रत्येक घर (शरीर) में बैठा हुआ जीवात्मा उसका प्रयोग स्वेच्छा से करता है।'

प्रेम इस विश्लेषण पर चकित रह गयी। एक ही दिन में लक्ष्मी ने उसे नास्तिक से आस्तिक बना दिया।

इस प्रकार धीरे-धीरे प्रेम को गीता के स्वाध्याय में रस आने लगा था।

तीन मास के निरंतर एक घंटा के वार्तालाप से वह इन्द्रियों और कामनाओं के विषय में चिन्तन करने लगी थी।

कामनाएँ उत्पन्न होती हैं, जीवात्मा पर मन द्वारा संचित ज्ञान से। वह अब समझने लगी थी कि किस प्रकार जवाहरलाल विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक पर वह मोहित अनुभव होकर उससे सम्बन्ध बनाने की इच्छा करने लगी थी। उसे स्मरण हो आया वह दिन, जब कनाट सर्कस के एक सिनेमा हाल में बैठे हुए दोनों में परिचय हुआ था। पिक्चर में देखे दृश्य की प्रतिक्रिया में बातचीत होने लगी थी। बातचीत में प्रेम ने कहा था, 'हाल में तो बात हो नहीं सकती। शो के उपरान्त स्टैण्डर्ड में बैठकर चाय पीते हुए शेष बात कर सकते हैं।'

प्रोफेसर अविनाश चन्द्र ने कह दिया, 'आज नहीं, फिर कभी। आज मेरी जेब में इस कार्य के लिये दाम नहीं हैं।'

'परन्तु निमंत्रण तो मैं दे रही हूँ और मेरे पास पर्याप्त दाम है।'

'तब ठीक है।' प्रोफेसर ने कह दिया।

इस प्रकार सिनेमा हाल से निकल वे रेस्तरां में जा बैठे। बहुत बातें हुईं और सब विषयों पर बातें हुई। बातों-बातों में प्रेम ने प्रोफेसर से विवाह की इच्छा प्रकट की तो प्रोफेसर ने कह दिया, 'परन्तु मेरी तो पत्नी है और आपको विदित हो कि दूसरा विवाह कानून से वर्जित है।'

'तो फिर क्या हुआ? बिना विवाह-संस्कार के हम मित्रों के समान रह सकते हैं।'

प्रोफेसर अविनाश ने प्रेम के मुख पर देखा। उसने अनुभव किया कि वह इस समय कामाभिभूत हो रही है।

आज लक्ष्मी की विवेचना पर प्रेम विचार करती हुई समझ गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि मन पर ओस्कर वाइल्ड के उपन्यास पढ़ने के कारण विवाह, प्रेम तथा यौन-क्रिया की एक कल्पना बनी थी। उस कल्पना की पृष्ठ-भूमि पर उस दिन वह पिक्चर देखने गई थी तो प्रोफेसर से भेंट हो गई। उसे प्रोफेसर एक अच्छा सुन्दर पुरुष दिखाई पड़ा। बस अपनी उस कल्पना को पूर्ण करने की वह योजना बनाने लगी थी।

लक्ष्मी के समझाने पर वह समझ रही थी कि मन की कल्पना पर बुद्धि ने विचार किया था और फिर प्रोफेसर से बातचीत करने का कार्यक्रम बन गया। यह शरारत बुद्धि की थी।

परन्तु जो कुछ पीछे हुआ वह तो कार्य था। वह जीवात्मा ने किया।

इस प्रकार वह समझ रही थी कि उस दिन पचास रुपये व्यय कर उसने अपनी कामना, जो मन में उत्पन्न हुई थी, पूर्ण की थी।

आज लक्ष्मी ने उसे कहा था कि यदि उसका आत्मा बलवान होता तो बुद्धि और मन को ठीक मार्ग पर लगा सकता।

उस दिन उसका प्रोफेसर से सम्बन्ध बना था परन्तु उस दिन के उपरान्त कई बार अविनाश चन्द्र से भेंट हुई थी और हर बार प्रोफेसर ने उससे पुनः सम्बन्ध बनाने के प्रस्ताव को अस्वीकार किया था।

वह आज विचार करती थी कि उसका जीवात्मा दुर्बल है जो वह अभी भी अविनाश की बात स्मरण करती रहती है और अविनाश चन्द्र का आत्मा इतना बलवान है कि उसने इतने महीनों से उसे ढूंढने का यत्न नहीं किया। एक बार तो वह उससे कनाट प्लेस में मिली भी थी। परन्तु उसने प्रेम से बात करने की भी इच्छा प्रकट नहीं की।

इतना विचार कर प्रेम ने लक्ष्मी से पूछ लिया, 'जीवात्मा को बलवान कैसे बनाया जा सकता है?'

लक्ष्मी ने बताया, 'परमात्मा और जीवात्मा दोनों एक ही श्रेणी के तत्व हैं। इन्हें सयुजा-सखा कहा जाता है। परमात्मा तो अपार शक्ति का स्वामी है। उसका सखा जीवात्मा उससे थोड़ी शक्ति उधार माँग सकता है। और तब उसे आत्म-बल में बदल सकता है।'

'मौसी! यही तो पूछ रही हूँ।'

'इसके लिये योगाभ्यास और प्राणों पर नियंत्रण करने की आवश्यकता है। यदि तुम चाहो तो इसका अभ्यास भी कर सकती हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन यह वार्त्तालाप हो रहा था, उस दिन राधाकृष्ण को को घर से लापता हुए दो दिन हो चुके थे। परन्तु प्रेम देख रही थी कि घर के दोनों बड़े इस विषय पर चर्चा नहीं करते थे। इस कारण प्रात: के स्वाध्याय के समय प्रेम ने पूछ लिया, 'दो दिन से राधा जी दिखाई नहीं दिये ?'

'वह एक काम से बम्बई गया हुआ है।'

'मैं समझती हूँ कि राधाकृष्ण अपना व्यवसाय बम्बई में करने वाले हैं।'

'यह तो अभी समय से पूर्व दिमाग खराब करना होगा। यदि वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया तो एक वर्ष तक उसे किसी हस्पताल में अपने कार्य का अभ्यास करना होगा। तब तक देश और हमारे घर की स्थिति क्या होती है, कुछ कहा नहीं जा सकता।'

: ६ :

परन्तु राधाकृष्ण अपने ट्रिप से नहीं लौटा। उसे घर से गये एक मास अभी नहीं हुआ था कि पुलिस उसके विषय में पूछने घर आयी। उसके स्टडी रूम की तलाशी ली गयी और उसके विषय में पूछगीछ रघुनाथ सहाय तथा उसकी माँ से की गयी।

राधाकृष्ण बम्बई से नागपुर जाता हुआ पकड़ा गया था। उसके ब्रीफकेस में से 'सत्य समाचार' के पर्चे निकले थे। उसको पकड़ कर दिल्ली लाया गया था और उसी ने अपने बयान दिये थे कि यह उस अकेले का काम है। वह कहीं बैठ कर समाचार लिखता है, फिर किसी की डुप्लिकेटिंग मशीन पर दो तीन हजार छापता है और उनको स्वयं ही बाँटता है।

उसके पास इसके लिये धन कहाँ से आता है, इस प्रश्न पर उसने बताया था, 'मैं स्टेशन पर तीन चार घंटे कुलीगीरी कर चार-पाँच रुपये कमाता हूँ और महीने में एक पत्र निकाल देता हूँ।'

पुलिस को राधाकृष्ण के इस बयान पर विश्वास नहीं आया था। उन्होंने उसे थर्ड डिग्री का उत्पीड़न देना आरम्भ कर दिया।

इन्हीं दिनों में उसके घर की तलाशी ली गयी और उसकी माँ तथा बाबा के बयान लिये गये।

लक्ष्मी ने कहा, 'राधा कृष्ण ने मैडिकल फ़ाइनल की परीक्षा दी है और परीक्षा समाप्त होने से एक दिन उपरान्त वह घर से लापता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया है और अभी तक हमें उसका पता नहीं है।'

पुलिस ने बताया नहीं कि वह पकड़ा गया है। यह भी नहीं बताया कि वह कहाँ पकड़ा गया है और उसे कहाँ रखा गया है। उसके कमरे में से तो उसके कालिज की पढ़ाई की पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कुछ मिला नहीं।

पुलिस की जाँच-पड़ताल से रघुनाथ सहाय को विश्वास हो गया था कि राधाकृष्ण पकड़ा गया है और पुलिस की हिरासत में है। अतः उसने सुप्रीम कोर्ट में इस कार्य की याचिका कर दी जिसमें उसने बताया कि उसे पुलिस की जाँच-पड़ताल से पता चला है कि वह पुलिस की हिरासत में है। अतः कोर्ट उसके विषय में पुलिस को नोटिस जारी करे कि उसे कोर्ट में उपस्थित करें और बताये कि किस आरोप में उसे पकड़ा गया है।

पुलिस की ओर से पहले तो यह कहा गया कि इमर्जेंसी में कोर्ट पूछ नहीं सकता। इस पर सर्वोच्च-न्यायालय ने माँग की कि बताया जाये कि वह किस कानून के अधीन, किस मैजिस्ट्रेट की आज्ञा से बंदी बनाया गया है।

अब पुलिस ने कहा, 'पुलिस ने उसे अपनी जाँच के लिये पकड़ा है!'

'कितने दिन पकड़े हो गये हैं?'

'यह हम प्रकट नहीं कर सकते।'

इस पर न्यायालय ने आज्ञा जारी कर दी कि 'मीसा' कानून के अधीन ही प्रत्यक्षीकरण की पटीशन नहीं चल सकती। अतः पुलिस उसे चलान कर रिमाण्ड के लिये उपस्थित करे अन्यथा उसे छोड़ दें।

इसका परिणाम यह हुआ किअगले दिन राधाकृष्ण को मीसा के अधीन बंदी बना तिहाड़ जेल में भेज दिया गया।

राधाकृष्ण के पकड़े जाने और उसके विषय में बाबा को भाग दौड़ करते हुए देख, प्रेम के मन पर विलक्षण प्रतिक्रिया हुई। वह एक दिन मौसी से गीता पढ़ते हुए पूछने लगी, 'यह तो बहुत ही अनर्थ हो रहा है? पुलिस कुछ अनुचित कर रही थी। इसी से तो उसे अब मीसा कानून में पकड़ कर जेल में भेज दिया है।'

'हाँ, बाबा का अनुमान था कि पुलिस उसको मारपीट कर बकाना चाहती थी कि उसके और कौन-कौन से साथी हैं। अब बाबा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्रवाई के परिणामस्वरूप उसे तिहाड़ जेल में भेज दिया गया है। उसे पुलिस अब तंग नहीं कर सकेगी तथा साथ ही हमें अब उससे मिलने की स्वीकृति मिल जायेगी। तब हम पता करेंगे कि पुलिस ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया है?'

'तो मैं भी उनसे मिलने जा सकूँगी?'

'मैं समझती हूँ कि तुम्हें स्वीकृति नहीं मिलेगी। बंदी से मिलने के लिये हमें अपना बंदी से रिश्ता बताना पड़ता है। जहाँ तक मैं समझती हूँ सम्बन्धी के अतिरिक्त किसी अन्य को मुलाकात करने की स्वीकृति नहीं मिलती।'

अब रघुनाथ सहाय और लक्ष्मी का सप्ताह में दो बार जेल जाने का कार्यक्रम बन गया। एक बार तिहाड़ जेल में और एक बार हिसार जेल में। हिसार जाने-आने में तो उनका पूरा दिन लग जाया करता था। तिहाड़ जेल में भी आने-जाने में तीन घंटे लगा करते थे।

प्रेम मन में विचार करती थी कि लक्ष्मी ने और बाबा रघुनाथ सहाय ने इस काम को ऐसे स्वीकार कर लिया है मानो यह एक स्वभाविक कार्य ही है। जिस दिन लक्ष्मी राधाकृष्ण से मिल कर आयी, प्रेम ने उससे पूछ लिया, 'कैसे हैं वह?'

रघुनाथ सहाय और लक्ष्मी जेल से साढ़े चार बजे के लगभग लौटे थे और उनके आते ही रामू ने चाय का प्रबन्ध कर दिया था।

जब लक्ष्मी से प्रेम ने पूछा, 'वे कैसे हैं?' तो रामू जाता-जाता रुक गया। वह जानता था कि छोटे बाबू सरकार के खिलाफ कुछ कर रहे थे और अब बंदी हैं। उसकी बाबू के विषय में जानने में रुचि थी।

लक्ष्मी ने बताया, 'वह सरकारी जोर जुलम के समाचार छपवा कर समाचार वितरण करने का काम कर रहा था। पिछले दो मास से वह बम्बई, पूना, सूरत, बड़ौदा इत्यादि स्थानों पर वह समाचार प्रसारित करने के काम में संलग्न था। बम्बई में उसे समझ आया कि पुलिस उसका पीछा कर रही है। इससे वह बम्बई से सूरत को भाग रहा था कि पुलिस उसके पीछे लग गई।

'इसके पास साइक्लो-स्टाईल किये समाचार पत्र की सौ प्रतियाँ थीं। इस कारण पकड़े जाने से बचने के लिये वह सूरत की गाड़ी पकड़ने के लिये सैण्ट्रल स्टेशन पर जाता-जाता विक्टोरिया टर्मिनस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर घूम गया। उसका विचार था कि वह पुलिस वालों को चकमा दे गया है परन्तु पुलिस अधिक सतर्क थी। उन्होंने अपनी जीप में वायरलैस से टैक्सी का नम्बर बता कर उसमें सवार युवक का पीछा करने का संदेश दे दिया।

'परिणामस्वरूप विक्टोरिया टर्मिनस रेलवे स्टेशन पर पहुँच नागपुर की गाड़ी पर चढ़ता हुआ वह पकड़ लिया गया। साइक्लो-स्टाइल पत्र उसके पास से निकले और उसे दिल्ली में लाया गया। उसे यहाँ लाकर अपने कार्य में साथियों के नाम बताने के लिये उत्पीड़न किया गया। उसके हाथ और पाँवों पर अभी भी पीटे जाने के निशान हैं।

'बाबा का विचार है कि हमारे सर्वोच्च न्यायालय में याचिका करने का यह परिणाम है कि उसे मीसा के अधीन पकड़ कर तिहाड़ जेल में भेज दिया गया है। इससे हम अब प्रसन्न हैं।'

'परन्तु मौसी! मैं यह नहीं पूछ रही। मैं यह जानना चाहती हूँ कि भाई साहब के इस कार्य में सम्मिलित होने का आपको अफसोस क्यों नहीं? अब आपके व्यवहार से पता चला है कि आपको विदित था कि आपका लड़का यह कार्य कर रहा था। आपने न कभी किसी को बताया और न ही उसके पकड़े जाने पर दुःख प्रकट किया है। उसको छुड़ाने का यत्न अवश्य किया है। यह तो पीछे की बात है परन्तु इस कानून के विरुद्ध कार्यवाही पर न आपने लड़के को मना किया, न उसके ऐसा करने पर खेद प्रकट किया है।'

लक्ष्मी गम्भीर विचार में निमग्न हो गयी। उसने आँखें मूंद कुछ क्षण विचार किया और फिर कहा, 'तुमने दो बातें पूछी हैं। एक तो यह कि जब हमें यह पहले विदित था तो मैंने अथवा बाबा ने उसे मना क्यों न किया। दूसरे इस कानून के विरुद्ध 'ऐक्शन' से हमने उसे मना नहीं किया।

'इस प्रश्न के प्रथम अंश का ही मैं उत्तर दे सकती हूँ। कानून की बात बाबा बतायेंगे। तुमने पूछा है कि हमें विदित था कि राधा यह प्रचार कार्य कर रहा है, जिसमें जेल जाने का भय है तो हमने मना क्यों नहीं किया?

'मैं इसे उसके शौर्य का कार्य मानती हूँ और माँ को बच्चों को शौर्यवान होते देख प्रसन्नता होती है, दुःख नहीं होता। मैं इसमें गर्व अनुभव करती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वह इमर्जेंसी लगने के एक-दो महीने पीछे ही इस कार्य में सहयोग देने लगा था। जब मुझे पता चला तो मैंने बाबा से यह बात कही थी। बाबा ने मुझ से ही पूछा था, "तुम क्या समझती हो ?"

'मेरा कहना था, "इसमें भय तो है। किसी भययुक्त बात को निर्भीकता से करते देख मुझे पुत्र पर गर्व अनुभव हुआ है।"

'बाबा का कहना था कि इसमें पकड़े जाने का भय है और फिर कहीं पुलिस वालों से मुठभेड़ हो गयी तो जान जाने का भी भय है ? परन्तु मैं समझती हूँ कि यह परमात्मा के अधीन है। हम इसे कर्मफल के अधीन भी मानते हैं। यह मेरे और राधा के बस की बात नहीं कि वह कर्मफल और ईश्वरेच्छा का विरोध कर सके। हाँ, विचारणीय यह है कि घर पर इसका क्या प्रभाव होगा ? जब मैंने बाबा से इसका संकेत किया तो वह बोले, "कुछ नहीं, जो कुछ प्रभाव पड़ना है वह इसके पिता के पकड़े जाने से पड़ रहा है। पाँच छः हज़ार रुपये महीने की आय होनी बंद हो गयी है। इस पर भी मैं समझता हूँ कि तुम्हारे जीवन-निर्वाह के लिये पर्याप्त है और जानती हो, सोम ने पिछली बार मुलाकात में क्या कहा था ?

'उसने कहा था, "मुझे यह निश्चय है कि इस इमर्जेंसी से अधिक लम्बी आयु है मेरी। मैं छूट कर बाहर आऊँगा। इस पर भी अभी कुछ समय है।"

'मैं समझती थी कि परीक्षा उत्तीर्ण कर राधाकृष्ण इस कार्य में लगता तो अधिक अच्छा था। परन्तु यह कार्य की दिशा के विषय में नहीं है। यह कार्य के समय के विषय में है।

'बाबा से इस वार्त्तालाप के उपरान्त मेरे मन में राधा के कर्म के औचित्य पर यदि कुछ संदेह था तो वह भी नहीं रहा था। बाबा ने उसके काम को गलत नहीं कहा था।'

प्रेम ने प्रथम अवसर मिलते ही बाबा से भी पूछ लिया, 'बाबा ! भैया यह काम कानून के विरुद्ध नहीं कर रहे थे क्या ?'

'किस कानून के ?'

'कानून तो सरकार ही बनाती है। सरकार के अतिरिक्त अन्य कानून का स्रोत ही नहीं।'

'नहीं प्रेम बेटी, कानून ईश्वरीय होते हैं। सरकारें उन ईश्वरीय कानूनों को वर्तमान भाषा में व्यक्त करती हैं। कभी राजा लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरीय विधि-विधान को न समझ, उसके विरुद्ध कानूनी भाषा में लिखने लग जाते हैं, तब वह कानून नहीं होता।

'मैं समझता हूँ कि कुछ ऐसा ही यहाँ हो रहा है। ये संसद सदस्य जो कांग्रेस के टिकट पर सफल हो लोकसभा और राज्य सभा में बैठे हुए हैं समझते हैं कि कानून बनाने वाले वे हैं। इसी भ्रम में उन्होंने कुछ निश्चय लिये हैं तथा कुछ और लेने का विचार कर रहे हैं। वे भूल कर रहे हैं।'

'क्या किया है उन्होंने ईश्वरीय नियम के विरुद्ध ?'

'सबसे पहली बात यह है कि उन्होंने इस इमर्जेंसी का समर्थन किया है। यह इमर्जेंसी अस्वभाविक, अनावश्यक और ईश्वर-प्रदत्त अधिकारों का विरोध करती है।

'जब देश में राजाओं का राज्य होता था, तब भी इतने कठोर प्रतिबन्ध नहीं होते थे। कदाचित् उस समय हो सकते भी नहीं थे। आज इस याँत्रिक युग में बुरे कामों का प्रभाव अति व्यापक हो सकता है। अतः एक छोटा-सा अनृत कर्म सैकड़ों गुणा अधिक होकर प्रभाव उत्पन्न करता है। इस कारण इमरजेंसी का समर्थन करने वालों का कुकर्म घोर पाप हो रहा है।

'देखो बेटी ! जब प्रधानमंत्री के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में मुकद्दमा था तो संसद ने यह पारित कर दिया कि प्रधानमंत्री के विरुद्ध किसी भी न्यायालय में मुकद्दमा नहीं हो सकता। यह ईश्वरीय विधि-विधान के विपरीत है। यह तो वही बात हो गयी है जैसी मध्य-कालीन राजाओं ने अपना यह अधिकार समझ लिया था कि वे किसी की भी बहू-बेटी का अपहरण कर सकते हैं।'

'परन्तु बाबा ! इमर्जेंसी में कौन सी बात ईश्वरीय नियम के विरुद्ध हो रही है ?'

'एक तो मैंने अभी बतायी है। दूसरे, बिना आरोप लगाये और बिना बताये किसी को भी सरकार पकड़ कर अनिश्चित समय के लिये बंदीगृह में डाल सकती है।'

'परन्तु किसी को पकड़ने से पहले डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, जिसे वारण्ट जारी करने का अधिकार है, यह भी तो विचार कर सकता है कि यह अपराधी है अथवा नहीं ?'

'परन्तु डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट स्वतंत्र व्यक्ति नहीं है। वह राज्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्वनर के अधीन होता है और गर्वनर सरकारी नौकरशाही का अंग है, न्यायाधिकरण का नहीं।

'भला यह बताओ कि तुम्हारा पति रघुवीरसिंह किस अपराध पर बंदी बनाया गया है?'

'जरूर वह रिश्वत लेने के अपराध में पकड़ा गया होगा।'

'परन्तु उसके लिये तो कानून और न्यायालय बने थे। 'मीसा' में उसे क्यों पकड़ा गया? पहले तो महकमा में ही जांच होनी चाहिये और पीछे मामला पुलिस के हाथ में जाना चाहिये। इस मामले का देश की रक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं।'

'यह ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा ने उसे मुझ पर अनाचार करने का फल दिया है। मुझे, मेरी इच्छा के विरुद्ध वह पर-पुरुष के वश में कर रहा था।'

'उसका फल तो तुम दे रही थीं। तुम उसका घर छोड़ कर आ गयी थीं और यदि वह तुम्हारे विरुद्ध कुछ भी कार्यवाई करता तो तुम उसके विरुद्ध कार्यवाई करने वाली थीं।

'यदि परमात्मा को इस मामले में हस्ताक्षेप करने की आवश्यकता अनुभव हुई थी तो उसे तुम्हारी सहायता करनी चाहिये थी जिससे रघुवीरसिंह भलीभाँति बदनाम हो जाता।

'अब तो वह जब जेल से छूटेगा तो एक वीर बहादुर बन कर छूटेगा। यह तो तुम्हें बेचने के जुर्म का उसे पुरस्कार मिल जायेगा।

'मैं समझता हूँ कि तुम्हारे साथ हुए अन्याय का फल पृथक् है। वह तो अभी पीछे मिलेगा। परन्तु वर्तमान कठिनाई तो किसी अन्य कारण से है। कदाचित् इस प्रकार दोष से रहित व्यक्ति को दंड देने से राज्य के किसी उच्चाधिकारी के पुण्य क्षीण हो रहे हैं।

'देखो प्रेम! मैं यह समझ रहा हूँ कि भारत की प्रधानमंत्री पूर्व जन्म में बहुत ही पुण्य कर्म कर के आयी हैं जो सहज ही किसी भी प्रकार की योग्यता न रखने पर भी प्रधानमंत्री बन गयी हैं। इस पद का प्रयोग यदि यह संभल-संभल कर करतीं तो कदाचित् पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों के आश्रय पर खड़ी हो वह और भी ऊँचाइयों पर पहुँच सकती थीं। परन्तु इस मूर्ख स्त्री ने पूर्व जन्म से प्राप्त शक्ति का दुरुपयोग किया है। मैं समझता हूँ कि इसे शीघ्र ही उस आश्रय से नीचे गिराने के लिये परमात्मा उससे ऐसे कर्म कराने लगा है, जिनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पुण्य कर्म शीघ्र ही क्षीण हो सकें और कोई अन्य भाग्यशाली व्यक्ति उस पद पर पहुँच सके।'

'तो मेरी सास के दुष्ट पुत्र को भी परमात्मा ने अपने किसी शुभ कार्यों में बाटों के रूप में प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है?'

'हाँ, वह इस कारण कि उसको इस प्रकार के लोग जो जिस अपराध के अपराधी नहीं, इसे अपने पद पर बदमस्त औरत के सामने उपस्थित कर दण्ड दिलाना आवश्यक हो गया है।'

प्रेम इस गोरखधंधे के समाधान का यत्न करती हुई मौन हो गयी।

इस समझने-समझाने में वह अपने जीवन पर विचार करने पर विवश हो गयी। उस रात वह अपने पलंग पर लेटी तो रात भर सो नहीं सकी।

अगले दिन प्रातः चार बजे लक्ष्मी जागी तो प्रेम बाथरूम में गयी हुई थी।

लक्ष्मी को समझ आया कि वह स्वस्थ नहीं है। इस कारण वह बाथरूम के खाली होने की प्रतीक्षा करने लगी। प्रेम स्नान कर ही बाहर निकली।

'क्यों प्रेम! आज बहुत जल्दी नींद खुल गयी है?'

प्रायः बाथरूम में पहले वह जाया करती थी और जब वह अपनी पूजा कर रही होती थी, तो प्रेम स्नानादि से निवृत्त होने बाथरूम में जाया करती थी। आज इससे उल्ट हुआ था। उसके पूछने पर प्रेम ने कहा, 'नींद खुलने की बात तो तब होती जब नींद आयी होती। मैं रात भर नहीं सोयी।'

'तो अब सो सकती हो?'

'हाँ, स्नान करने से दिमाग कुछ ठंडा हुआ है तो सोने की इच्छा हो रही है।'

'तो सो जाओ।' इतना कह लक्ष्मी बाथरूम में चली गयी।

: ७ :

रात न सो सकने के विषय में लक्ष्मी ने प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त ड्राइंगरूम में बैठे हुए प्रेम से पूछा। उस समय बाबा अपने स्वाध्याय के लिये अपने कमरे में चला गया था।

रामू आया था और घर के साग-भाजी तथा अन्य आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थों के विषय में मालकिन से आज्ञा ले चला गया था। लक्ष्मी ने पूछ लिया, 'तो अब नींद पूरी हुई है अथवा नहीं ?'

'रात के छः घंटे गहरी नींद के स्थान पर तीन घंटे की नींद पर्याप्त नहीं हो सकती। इस पर भी मौसी, अब सिर उतना भारी नहीं जितना प्रातः चार बजे था।'

'पर नींद क्यों नहीं आयी ?'

'कल मध्याह्नोत्तर की चाय के उपरान्त बाबा से कुछ बात हुई थी। वह परमात्मा और कर्मफलों के विषय में समझाने लगे थे। इससे न चाहते हुए भी मैं अपने चित्त में, आगे के तीन चार वर्ष के जीवन पर विचार करने लगी थी।

'मैंने बहुत यत्न किया था कि सो जाऊँ परन्तु सो नहीं सकी। झपकी आती थी और अज्ञात भय से चित्त कांप उठता था और फिर नींद खुल जाती थी। तब घंटों ही भूत, वर्तमान और भविष्य पर विचार करती हुई पलंग पर करवटें लेती रही थी।

'आखिर साढ़े तीन बजे के लगभग उठी और गुसलखाने में चली गयी। वहाँ स्नानादि से निवृत्त हो बाहर निकली तो मस्तिष्क ठंडा हो गया था।'

लक्ष्मी ध्यानपूर्वक प्रेम की बातों को सुन रही थी। उसे समझ आया कि यह युवती अपनी यौवन के आवेश से विवश हो सटपटा रही है। उसने प्रेम को अपने चित्त की अवस्था बताने में प्रोत्साहन देने के लिए पूछा, 'तो तुम नवीन विवाह की इच्छा करने लगी हो ?'

'नहीं मौसी ! विवाह करने की बात नहीं वरन् विवाह किये की बात से चित्त अस्थिर था। मैंने एक बार आपको बताया था कि मेरे मन में पुरुष सम्बन्ध की इच्छा हुई थी। मेरी सखी न जाने कहां से एक मूवी फिल्म और प्रोजेक्टर कमरे में ले आयी थी और उसने वह वहाँ दिखाई तो वासना का बीज मेरे चित्त पर जमने लगा। उससे तथा अमरीकन साहित्य पढ़ते रहने से मन चंचल हो उठा था। इस पर भी कदाचित् चित्त की शुष्क भूमि पर वह बीज प्रस्फुटित न होता यदि रीगल में पिक्चर देखते हुए मेरा ध्यान समीप बैठे एक युवक की ओर आकर्षित न हो जाता। उस समय का उन्माद मुझे रात स्मरण हो आया था और उसे स्मरण कर अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वह प्रोफेसर मुझे कहता था कि वह अपनी पत्नी से सर्वथा सन्तुष्ट है और मैंने उसकी वासनाओं को उघाड़ कर उसे अपनी पत्नी से बेवफाई करने पर विवश कर दिया है।

'मैंने उससे एक दिन पूछा था, "तो वह मुझ से भी अधिक सुन्दर है।"

उसका प्रश्न था, "तो उसके दर्शन करोगी ?"

'मैंने कहा, "चित्त तो करता है। मुझे किसी ने कहा है कि मैं कालिज में सबसे अधिक सुन्दर लड़की हूँ।"

'उसका कहना था, "होगी। परन्तु तुम मेरी पत्नी शकुन्तला से अधिक सुन्दर नहीं हो।"

इस पर उससे भेंट का कार्यक्रम बन गया।

'प्रोफेसर ने कहा, "तो ऐसा करिये, कल रविवार है। मैं उसे 'लंच' के लिये 'स्टैण्डर्ड' में लाने वाला हूँ। तुम भी वहाँ आ सकती हो। परन्तु शर्त यह है कि तुमने यह प्रकट नहीं करना कि तुम मुझसे सम्बन्ध बना चुकी हो। यदि तुम वहाँ पहले ही उपस्थित होगी तो मैं ही तुम्हें सम्बोधन करूँगा और यह प्रकट करूँगा कि मैं तुम्हारे माता-पिता को जानता हूँ और इसी कारण तुम्हें भी जानता हूँ।"

"आप वहाँ किस समय पहुँचने वाले हैं ?"

"एक बज कर बीस मिनट पर पहुँचूँगा।"

'मौसी !' प्रेम ने बताया, 'मैं अगले दिन एक बजे ही वहाँ आ पहुँची और एक मेज पर अधिकार कर बैठ गयी। बेयरा आया तो मैंने कोल्ड ड्रिंक मंगवा ली और कहा, "कुछ देर में खाना आर्डर लिखाऊँगी।"

'ठीक एक बज कर बीस मिनट पर प्रोफेसर अविनाश चन्द्र अपनी पत्नी के साथ हाल में दाखिल हुआ और सहज स्वभाव वह मेरे साथ वाली टेबल पर बैठने का विचार कर वहाँ पत्नी को ले आया।

'वहाँ पहुँचा तो मैंने नजर भर कर उसकी पत्नी को देखा तो चकित रह गयी। वह बहुत सामान्य यदि यह कहूँ कुछ कि कुरूप रूप-रेखा वाली स्त्री ही थी तो अधिक ठीक होगा।

'मैं अभी उसकी ओर देख ही रही थी कि प्रोफेसर साहब ने मुझे देख पहिचानने का अभिनय करते हुए कहा, "ओह प्रेम जी ! माता-पिता कैसे हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरा चित्त स्थिर हुआ। मैंने भी उनको वहाँ देख विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "इस बार तो उनको दिल्ली आये छः मास से अधिक हो चुके हैं।"

'इस पर प्रोफेसर साहब ने पूछ लिया, "तो किसी साथी की प्रतीक्षा कर रही हो?"

"नहीं। मैं आज अकेली यहाँ आ पहुँची हूँ।"

'उसने अपनी पत्नी को सम्बोधित कर कहा, "तो आओ शकुन्तला, आज तुम्हारा इनसे परिचय करा दूँ।"

'वे मेरी वाली टेबल पर ही बैठ गये। उन्होंने पहले मेरा परिचय अपनी पत्नी से कराया—"यह है हमारे एक परिचित श्री कपूर, चण्डीगढ़ के एक वकील साहब की लड़की प्रेम। मिराण्डा कालिज में थर्ड यीअर में पढ़ती है।

"और प्रेम जी, यह है शकुन्तला देवी, मेरी धर्मपत्नी। मेरे दो बच्चों की माँ। केवल हायर सैकेण्डरी तक पढ़ी हैं परन्तु इनकी सैल्फ-स्टडी बहुत अधिक है। मेरी घर-गृहस्थी की गाड़ी को बहुत सुन्दरता से चला रही हैं।"

इस समय बैयरा आया तो मैंने पूछा, "क्या लेंगे?"

"तो तुम हमें खिलाओगी?"

"क्या हानि है! आपके मित्र अर्थात् पिताजी का दिया हुआ ही तो मेरा पास है, वह बहुत देते हैं।"

"तब ठीक है। यदि तुम्हारे पास कम पड़ जायेगा तो बताना, मेरे पास पर्याप्त है। यह मैं इसलिये कहता हूँ कि हम पीछे देहात के रहने वाले हैं और खाते हैं खूब डट कर।"

'पर मौसी, वास्तव में वह बहुत असुन्दर नारी थी। जब मैंने ध्यान से शकुन्तला देवी की ओर देखा तो मुझे उसकी आँख में थोड़ा स्क्विण्ट भी दिखाई दिया। आँखें एक तरफ देख रही लगती हैं, परन्तु वे देख दूसरी तरफ रही होती हैं।

'मैं लंच लेते हुए पूर्ण समय विस्मय करती रही कि प्रोफेसर ने मेरी हँसी उड़ायी है, जब उसने कहा था कि उसकी पत्नी मुझ से कहीं अधिक सुन्दर है।

'पूरे लंच पर वह मुझ से बातें करती रही और मेरे कालिज के विषय में और मेरी पढ़ाई के विषय पर बात करती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उसने मुझ से पूछा "क्या विषय लिये हुए हैं ?"

'मैंने बताया, "कॉमर्स।"

"ओह ! तो तुम कोई व्यापार करना चाहती हो ?"

"नहीं। पर मैं विचार करती हूँ कि क्या जाने जीवन में कभी नौकरी करनी पड़ जाए।"

"तो विवाह नहीं करोगी ?"

"कोई मन-पसन्द का मिल गया तो करूँगी।"

"तो मन की पसन्द बहुत ऊँची कर रखी है, जो पढ़ाई में ऐसा विषय ले रखा है जिसका व्यापार से सम्बन्ध है ?"

"तो और क्या विषय लिया जा सकता है जिसके पढ़ने से सेवा-कार्य सुगमता से मिल सकता है।"

"परन्तु जीवन का लक्ष्य सेवा-कार्य तो बहुत तुच्छ है।"

'मैं भौंचक मुख देखती रह गयी। इस पर उसने बात बदल दी और मुझसे बैंकिंग के विषय में प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये।

'उसने पूछा, "बैंकों के राष्ट्रीयकरण का क्या परिणाम होगा ?"

'मैंने अपने प्रोफेसर से सुना हुआ बता दिया, "सरकार को अपने पब्लिक सैक्टर में उद्योगों के लिये धन सुगमता से मिल जायेगा।"

'उसका कहना था, "यह तो पहले भी मिल सकता था। सरकार 'लोन फ्लोट' कर रुपया एकत्रित कर सकती है।

"देखो प्रेम बहिन ! मैं बताती हूँ कि इसका सीधा प्रभाव यह होगा कि प्राईवेट-सैक्टर के उद्योगों के लिये धन का अभाव हो जायेगा। इससे प्राईवेट सैक्टर धन को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये ऊंचे ब्याज पेश करेगा। परिणामस्वरूप प्राईवेट-सैक्टर में उपज पर लागत बढ़ जायेगी। मँहगाई बढ़ेगी। इससे कर्मचारी बेचारे परेशान हो अधिक वेतन माँगेंगे और फिर इससे वस्तुएँ और मँहगी होंगी।

"तब मँहगाई और धन पर ब्याज एक चक्रमाण गति से ऊपर और ऊपर चढ़ने लगेंगे और सब परेशान होंगे।"

'मैंने व्यंग के भाव में पूछा, "आप अर्थशास्त्र कहाँ पढ़ी हैं ?"

"इन तुम्हारे भाई साहब के पुस्तकालय में।"

"परन्तु यह परिणाम किसी पुस्तक में लिखा मुझे मिला नहीं।"

"इसलिये कि तुम्हारे कालिज के पुस्तकलय में एक ही विचार की पुस्तकें मँगवाई जाती हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किस विचार की पुस्तकें मँगवाई जाती हैं?"

"समाजवाद में पक्ष की।"

"और इससे विपरीत भी कोई पक्ष आज संसार में है?"

"हाँ, है तो। वह है रैशनलिज्म, मेरा अभिप्राय है बुद्धिवाद का पक्ष। देखो प्रेम! वस्तुओं के दाम दो बातों पर निर्भर करते हैं। मैटिरियल अर्थात् कच्चे माल की कीमत पर और दूसरे कर्मचारियों के वेतन पर। किसी भी उद्योग में दो बातें उपज की कीमत निश्चय करने में योगदान देती हैं।

"कर्मचारियों का वेतन खाने-पीने वाली वस्तुओं पर निर्भर करता है और मैटिरियल का दाम पूँजी उपलब्ध होने पर।

"बैंकों के राष्ट्रीयकरण से सरकारी कार्यों के लिये धन सुगमता से मिलने लगा है और निजी उद्योगों में धनाभाव हो गया है। इससे कच्चे माल खरीदने में ऊँचा ब्याज देकर कठिनाई से धन मिलता है। अट्ठारह और बीस प्रतिशत ब्याज पर रुपये की माँग हो गयी है और इस पर भी उद्योगों को विस्तार देने के लिये धन उपलब्ध नहीं है।

"दूसरी ओर कृषि का यंत्रीकरण किया गया है। उसके लिये भी पूंजी चाहिये और किसान को रुपया मिलना बंद हो गया है।

"कुछ सरकारी बैंक कम ब्याज पर धन देते हैं, परन्तु उस धन को प्राप्त करने के लिये जो रिश्वत देनी पड़ती है, वह भी तो एक प्रकार से ब्याज ही है। इस सब का परिणाम यह है कि वस्तुएँ सस्ती नहीं होतीं।"

'मौसी! मैं उस औरत के ज्ञान और उसकी वर्णन शैली सुन चकित रह गयी। मुझे प्रोफेसर के कथन कि उसकी पत्नी मुझ से अधिक सुन्दर हैं, का अर्थ समझ में आने लगा था।

'उस लंच के कुछ दिन पीछे मैं प्रोफेसर साहब को कनाट प्लेस में अकेले घूमते देख, उनकी तरफ लपकी परन्तु उन्होंने मुझे न देखने का बहाना कर मुख दूसरी ओर किया और चल दिये।

'अब हम, मेरा मतलब है मैं और प्रोफेसर साहब की आपस में बोलचाल नहीं है। हम कभी किसी पब्लिक स्थान पर मिल जाते हैं तो एक दूसरे के पास से ऐसे निकल जाते हैं जैसे सर्वथा अपरिचित हैं।'

लक्ष्मी ने प्रेम की बात सुन पूछ लिया, 'तो तुम प्रोफेसर अविनाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वियोग में पागल हुई घूमती हो ?'

'मौसी ! यह वियोग नहीं प्रतीत होता। मैंने रात पलंग पर करवटें लेते हुए बहुत विचार किया है। यह वियोग नहीं, यह यौवन का उन्माद भी नहीं। मुझे अब शान्त चित्त होने पर यह समझ में आया है कि रात बेचैनी अपनी मूर्खता पर उत्पन्न हुई थी।

'वैसे तो प्रोफ़ेसर का सम्मोहन कुछ तो उसकी अवेहलना से और शेष उसके पत्नी के सद्गुण देख कर मिट चुका है। बाद में मैंने वही ढंग राधा जी पर प्रयोग करने का यत्न किया था जो मैंने रीगल में पिक्चर देखते हुए प्रोफेसर पर प्रयोग किया था। परन्तु राधा जी ने मुझे डाँट दिया था।

'इससे मैं आपके पुत्र की मानसिक श्रेष्ठता पर मुग्ध थी।'

'तो फिर रघुवीरसिंह से विवाह पर तैयार क्यों हुई थीं ?'

'मैं, माँ और भैया जगदीश द्वारा रचे षड्यंत्र में फंस गयी थी। इसका भास मुझे विवाह से पूर्व ही हुआ था। इसलिये विवाह से पूर्व मैंने राधा जी को टेलीफोन किया था परन्तु राधा जी ने बहुत ही शान्तचित से कहा था, "अब मेरी माता जी आपको अपनी पतोहू नहीं बनायेंगी।"

'मैं समझती थी कि आपको कालेज कमेटी के निर्णय पर मुझ से अरुचि हुई है। इस पर मैं विवाह वेदी पर बलि का बकरा बनने को तैयार हो गयी।'

'तो अब अपने पति की प्रतीक्षा करो।'

'बाबा का कहना है कि यह आपात्-स्थिति कम से कम एक वर्ष और चलेगी। संसद ने लोक सभा के निर्वाचन एक वर्ष के लिये स्थगित कर दिये हैं। इसका अभिप्राय है कि एक वर्ष तक इमर्जेंसी रहेगी।'

'तो निर्वाचन अधिक काल के लिये रोके नहीं जा सकते क्या ? इमर्जेंसी की अवधि बढ़ भी तो सकती है ?'

'बाबा बता रहे थे कि एक-एक वर्ष कर ये अनिश्चित काल तक निर्वाचन रोके जा सकते हैं परन्तु देश में असन्तोष बढ़ेगा और फिर विस्फोट हो सकता है।'

'परन्तु अनुभव तो यह हो रहा है कि ज्यों-ज्यों इमर्जेंसी लम्बी होती जाती है लोग अपने भाग्य पर संतोष कर अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बनाते जाते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हां ! प्रत्यक्ष रूप में तो सब यही कहते हैं, परन्तु भीतर ही भीतर अग्नि सुलग रही है। अवसर पाते ही यह ज्वालामुखी की भाँति फूट भी सकती है।'

प्रेम गम्भीर भाव में बैठी रह गयी। लक्ष्मी भी अपने मनोभावों का विश्लेषण करने लगी थी। वह स्वयं अपने पति की पतिव्रता पत्नी थी। परन्तु किसलिये ? वह इस बात पर प्रेम की कथा से प्रोत्साहित हो विचार करने लगी थी।

उसे समझ आया कि उसकी माँ तथा उसकी सहेलियों ने उसके मन पर यह अंकित कर रखा था कि पति की निष्ठावान पत्नी बनने से स्वर्ग प्राप्त होता है।

एक दिन उसने अपने मन की इस भावना पर अपने पति से बात भी की थी। सोमदेव ने हँसते हुए कहा, 'मैं समझता हूँ कि तुम स्वर्ग तो आज भी पा चुकी हो। स्वर्ग सुख भोग रही हो। यदि स्वर्ग ही लक्ष्य है जीवन का, तो तुम सुगमता से अपने जीवन का अन्त कर लो और फिर मर कर भी स्वर्ग-सुख पा लोगी। कहते हैं न कि जिसे यहाँ स्वतः स्वर्ग प्राप्त हो, उसे परलोक में भी स्वर्ग मिलेगा ही।

'परन्तु लक्ष्मी ! मैं समझता हूँ कि स्वर्ग से भी अधिक सुख है इस संसार में।'

'क्या सुख है ?' लक्ष्मी ने पूछा था।

'तो तुम नहीं जानतीं ? हाथ में एक, पेड़ पर दो से अधिक होते हैं। स्वर्ग सुख तो किसी ने देखा नहीं, परन्तु संसार का सुख तो नित्य प्राप्त होता है। हाँ, एक बात है कि कभी स्व-सुख के लिये पर-अहित न होने लगे। यदि पर-अहित न हो तो मैं समझता हूँ जीवात्मा के लिये संसार में अधिक आकर्षण है।'

'परन्तु बिना दूसरे का अहित किये संसार में रहा जा सकता है क्या ?'

'कुछ अधिक कठिन नहीं है। इतना तो निश्चय ही है कि पर-अहित करने से पर-हित करना सुगम है।'

लक्ष्मी को यह स्व-हित और पर-अहित की समस्या समझ नहीं आयी थी। सोमदेव ने उसके मन भावों को समझ कह दिया, 'तुम नहीं समझीं न ? देखो, मैं समझाता हूँ।

'यदि अपने पास जीवन-यापन और सामान्य सुविधाओं के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधन उपलब्ध हों तो मैं समझता हूँ कि पर-अहित करने की आवश्यकता नहीं रहती और मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सामान्य सुविधा प्राप्त करने के लिये कुछ अधिक कष्ट भी नहीं करना पड़ता।

'मनुष्य अपने परिश्रम से अपनी आवश्यकताओं से अधिक उत्पन्न कर सकता है। प्रकृत्ति अति दयालु है। हम यदि भूमि पर एक दाना गेहूँ का डालें तो उससे दो सौ दाने उत्पन्न होते हैं। यदि मजदूर दो घंटे परिश्रम करे तो दिन भर के खाने के योग्य उत्पन्न कर सकता है।

"कठिनाई तब होती है जब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं से अधिक अर्थात् ऐश, जिसे अंग्रेजी में लग्ज़री कहते हैं, के लिये यत्न करना आरम्भ करता है। ऐश अर्थात् कामनाओं की तो कोई सीमा नहीं हो सकती। निष्कर्ष यह निकला है कि परमात्मा ने मनुष्य को इतना कुछ दे रखा है कि वह अति सुगमता से निर्वाह योग्य पा जाता है। कठिनाई हवस अर्थात् आवश्यकता से अतिरिक्त कामनाओं के उत्पन्न होने पर होती है। यही नरक का द्वार है। उसके बिना तो यह संसार भी स्वर्ग है।'

इससे लक्ष्मी समझी कि पति की निष्ठावान पत्नी का अर्थ है जितना प्राप्त है उसे ही प्राप्तव्य मान ले।

प्रोफेसर अविनाश भी यही कह रहा था, जब कहता था कि वह अपनी पत्नी से सन्तुष्ट है।

: ८ :

राधाकृष्ण को पकड़े हुए तीन मास व्यतीत हो चुके थे। सितम्बर १९७६ आ गया था। रघुनाथ सहाय मध्याह्न की चाय लेकर कोठी के प्रांगण के लान में कुर्सी लगाये बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था। प्रेम और लक्ष्मी थोड़ा टहलने के लिये लान में ही इधर उधर चक्कर काट रही थीं कि एकाएक सरदार जसवन्त सिंह मरवाहा, उसकी पत्नी सुरिन्दर कौर और उनका पुत्र रघुवीरसिंह टैक्सी में बैठे वहाँ आ गये।

टैक्सी कोठी के बाहर खड़ी कर तीनों प्राणी भीतर आये और सीधे प्रेम तथा लक्ष्मी की ओर लपके।

एक अनुभवी वकील होने से रघुनाथ सहाय समझ गया कि ये लोग किसी अच्छी नियत से यहाँ नहीं आये हैं। इससे वह अपनी कुर्सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उठ इनकी ओर आ गया। प्रेम भी समझ गयी कि उसका पति जेल से छूट गया है और उसे लेने आया है। इससे वह बोली, 'बाबा! ये मेरे विवाहित हैं और ये इनके माता-पिता हैं। इनके लिये चाय पानी का प्रबन्ध करना चाहिये।'

रघुवीरसिंह को समझ आया कि इतने दिन के पति वियोग से प्रेम को विवशता समझ में आ रही प्रतीत होती है। इस कारण उसके मुख की दृढ़ और आक्रमक मुद्रा नरम पड़ गयी।

पूर्व इसके कि वह कुछ कहे, बाबा ने प्रेम को ही कहा, 'तनिक तुम ही भीतर जा रामू को सूचना दे दो।'

प्रेम कोठी के भीतर गयी तो रघुनाथ सहाय ने आने वाले को कहा, 'आइये, भीतर ड्राइंग रूम में चलें। यहाँ बातचीत नहीं हो सकेगी।'

अब लक्ष्मी ने साहस पकड़ सुरिन्दर कौर से पूछ लिया, 'आपका लड़का कब छूटा है?'

सुरिन्द्र कौर ने उत्तर दिया, 'यह परसों छूटा था। कल चण्डीगढ़ गया था। आज यह अपने कार्यालय में पता करने आया था कि उसकी नौकरी रही है अथवा नहीं। जब यह दिल्ली आने लगा तो मैं और इसके पिता भी साथ आ गये हैं। हम समझते हैं कि प्रेम के अब यहाँ रहने में कोई कारण नहीं है।'

'हाँ, हम भी कुछ ऐसा ही समझते हैं।' इस समय तक सब ड्राइंग रूम में पहुँच सोफों पर बैठ गये थे।

रघुवीरसिंह समझा कि उसके माता-पिता का विचार गलत भी हो सकता है कि प्रेम उनके घर जाना नहीं चाहती। वह बोला, 'आप लोगों को प्रेम के कारण बहुत कष्ट हुआ है, परन्तु हम विवश थे। इमर्जेंसी के कारण कोई नहीं कह सकता कि कल क्या हो जायेगा।

'ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे तो पकड़वाया था मेरे सेक्रेटरी मनमोहन चौहान ने। परन्तु उसे पकड़वाया है रेलवे बोर्ड के चेयरमैन ने। उसके पकड़ने के वारण्ट मुझसे पहले जारी हो चुके थे।

'मैंने पंजाब के मुख्य मंत्री की सिफारिश पहुँचवाई तो बहुत मुश्किल से मुझे छोड़ने की आज्ञा आयी है।

'हमारा सेक्रेटरी भी उसी वार्ड में था, जिसमें मैं था। वह अभी भी वहाँ ही है। तीन दिन पहले जब मेरे छोड़ने की आज्ञा आयी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मेरा मुख देखता रह गया।'

इस समय प्रेम आयी और लक्ष्मी के समीप बैठ गयी। रघुवीरसिंह ने कहा, 'मैं तुम्हें लेने आया हूँ।'

'पहले चाय तो पीजिये। यदि आपत्ति न हो तो रात यहीं रह जाइयेगा! इतमीनान से मौसी से विदा ले सकूंगी।'

'तो यह तुम्हें कुछ विदाई देने वाली हैं?'

प्रेम ने उत्तर देने के स्थान लक्ष्मी की ओर देखना आरम्भ कर दिया।

जसवन्तसिंह मरवाहा ने पूछ लिया, 'यदि यहाँ से बहू को विदा होने में कुछ देर लगनी है तो मैं टैक्सी को विदा कर दूँ?''

'हाँ, पिता जी!' प्रेम ने कह दिया, 'आवश्यकता पर टेलीफोन से तुरन्त बुलाई जा सकती है।'

बाबा ने बात बदल दी, 'रामू को चाय कही है क्या?'

'जी। वह पकौड़े बना रहा है।'

जसवन्तसिंह उठकर कोठी के बाहर चला गया। वह टैक्सी को विदा कर देना चाहता था।

बाहर टैक्सी वाले से कुछ झगड़ा होने लगा तो रघुवीरसिंह भी अपने पिता के पीछे बाहर चला गया।

रामू पकौड़े और चाय ले आया और पिता पुत्र बाहर से नहीं आये तो रघुनाथ सहाय भी बाहर चला गया। वह समझ नहीं सका था कि बाहर क्या हो रहा है।

औरतें लक्ष्मी, सुरिन्दर कौर और प्रेम उत्सुकता से पुरुष वर्ग के भीतर आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। एकाएक प्रेम उठी और यह कह कि मैं देखती हूँ कि क्या हो रहा है, वह ड्राइंगरूम से बाहर चल दी।

वास्तव में बाहर लॉन से भीतर चाय के लिये कहने को आते ही प्रेम ने सफदरजंग थाने में टेलीफोन किया था कि यहाँ अपहरण की सम्भावना उत्पन्न हो गयी है और पुलिस की मदद चाहिये।

थानेदार ने पूछा था कि टेलीफोन कौन कर रहा है?

'घर की नौकरानी।' प्रेम ने कह दिया था।

पुलिस जीप तो थाने में तैयार खड़ी थी। थानेदार चार सिपाहियों के साथ कोठी पर आ धमका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जसवन्तसिंह बाहर टैक्सी वाले को विदा करने आया था तो टैक्सी वाले ने कहा, 'आपने तो कहा था, वापस चलेंगे इसलिये मैं कनाट प्लेस तक वापसी का भाड़ा भी लूँगा।'

'कितना होगा?' जसवन्तसिंह ने पूछा।

टैक्सी वाले ने मीटर पढ़ा। बारह रुपये चालीस पैसे, आने के बने थे। उसने कहा, 'जाने के भी इतने अर्थात् पच्चीस रुपये निकालिये।'

इतना सुन जसवन्तसिंह उससे भावताव करने लगा। उसने कहा, 'जरा कम कर लो। यह तो बहुत ज्यादा है। हम परदेशी लोग नहीं जानते थे कि इतने पैसे लोगे।' टैक्सी वाला मान नहीं रहा था।

इस झगड़े में रघुवीरसिंह भी आ कर शामिल हो गया।

बातचीत हो रही थी कि पुलिस जीप आ पहुँची। थानेदार हरियाणा का जाट था। उसने जब दो सिक्खों को टैक्सी ड्राइवर सिख से बातचीत करते देखा तो उसे विश्वास आ गया कि जरूर कुछ गड़बड़ हो रही है। पुलिस ने टैक्सी और तीनों सिक्खों को घूर कर पूछा, 'कहाँ से से आये हो सरदार साहब।'

रघुवीरसिंह ने अकड़ कर पूछा, 'क्यों? क्या बात है?'

'तुम तीनों हिरासत में हो।'

इस पर टैक्सी वाले ने कहा, 'हजूर, मैं तो टैक्सी वाला हूँ और अपना भाड़ा ले रहा था।'

थानेदार ने पूछ लिया, 'कहाँ से लेकर आये हो?'

'कनाट प्लेस से।'

'ठीक है, तुम टैक्सी लेकर थाने चलो। तुम्हारे बयान वहीं होंगे।

'और तुम दोनों सरदार साहब, हमारे साथ जीप में चलो।'

'पर बात क्या है थानेदार साहब! आपको विदित हो कि मैं पंजाब के चीफमिनिस्टर का खास सलाहकार हूँ।'

यह सुन तो थानेदार की सूझ-बूझ कुछ और दूर तक जा पहुँची। वह समझा कि पंजाब के चीफ मिनिस्टर की आज्ञा पर यह अपहरण हो रहा है। उसने एक क्षण तक विचार किया और जसवन्तसिंह को कहा, 'जरा इधर आओ।'

जसवन्तसिंह टैक्सी से कुछ दूर जा थानेदार को बताने लगा था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हजूर।......'

इस समय रघुनाथ सहाय कोठी से निकल आया। उसने पुलिस देखी तो समझ गया कि प्रेम ने पुलिस बुलायी है। इससे वह सीधा वहाँ आ खड़ा हुआ जहाँ थानेदार जसवन्तसिंह से बात कर रहा था।

रघुनाथ सहाय ने कहा, 'यह हमारी लड़की को जबरदस्ती पकड़ कर ले जाने आये हैं।'

थानेदार के दिमाग में अब यह बात समाने लगी थी कि पंजाब के चीफ मिनिस्टर का यह केस है और कहीं उसके आदेश पर ही लड़की का अपहरण न किया जा रहा हो। अत: उसने कह दिया, 'फिर क्या हुआ! जहाँ लड़कियाँ होंगी, वहाँ उसे ले जाने वाले भी आयेंगे। लड़की कहाँ है?'

जसवन्तसिंह समझ गया था कि पंजाब के चीफ-मिनिस्टर का नाम लेते ही पुलिस का रवैया बदला है। इस कारण वह बोला, 'यही बूढ़ा है जो झगड़ा कर रहा है।'

'ठीक है। मैं सब ठीक कर दूँगा।'

इस समय प्रेम बाहर आयी। उसे आते देख जसवन्तसिंह ने कहा, 'लड़की यह है।'

थानेदार ने नजर भर कर लड़की की ओर देख होंठों पर जुबान फेरते हुए कहा, 'ए लड़की! चलो उस टैक्सी में बैठो।'

रघुनाथ सहाय ने प्रेम को कहा, 'कोठी में जाओ।'

परन्तु थानेदार ने लपक कर प्रेम की बाँह पकड़ ली और घसीट कर उसे टैक्सी में बैठाने ले चला।

जसवन्तसिंह ने कहा, 'रघुवीर, माँ को बुलाओ। जल्दी करो।'

रघुवीर, कोठी में भागा। जसवन्तसिंह ने थानेदार की सहायता से प्रम को घसीट कर टैक्सी में डाल दिया और स्वयं उसके साथ बैठ गया।

रघुनाथ सहाय ने पूछा, 'किस थाने से आये हो?'

'अभी बताता हूँ।' थानेदार ने कहा।

सुरिन्दर कौर और रघुवीर भागे-भागे आये और दोनों टैक्सी में जा बैठे। थानेदार ने टैक्सी वाले को आज्ञा दे दी, 'जाओ इन्हें ले जाओ।'

रघुनाथ सहाय यही समझा था कि यह सारा नाटक जसवन्तसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि ने प्रेम को ले जाने के लिये खेला है। इस पर भी कुछ करना चाहिये, इस विचार से उसने थानेदार से पूछ लिया, 'आप किस थाने से आये हैं ?'

अब थानेदार ने रघुनाथ सहाय को कहा, 'आप जीप में वैठ जाइये।'

'क्यों ?'

"आपको वह थाना दिखाना है जहाँ से हम आये हैं। चलिये बैठिये, सब पता चल जायेगा।'

'आपने इस लड़की के अगवा में मदद दी है। मैं यह यहाँ के होम मैम्बर को कहना चाहता हूँ।'

'तुम अब मेरी हिरासत में हो।' थानेदार ने गुस्से में कहा। उसने दो कान्स्टेबलों को संकेत किया और उन्होंने रघुनाथ सहाय को पकड़ कर जीप में बिठा दिया।

जीप अभी स्टार्ट ही हो रही थी कि लक्ष्मी देखने बाहर आ गयी। वह देखना चाहती थी कि क्या हो रहा है। उसने देखा कि बाबा पुलिस की हिरासत में जीप में ले जाया जा रहा है।

टैक्सी उसके बाहर आने से पहले जा चुकी थी। उसको भी यही समझ में आया कि प्रेम का पति और ससुर पुलिस लेकर ही आये थे।

प्रेम को यह बताने का अवसर ही नहीं मिला था कि पुलिस को उसने टेलीफोन किया था। लक्ष्मी परेशानी में किंकर्तव्य-विमूढ़ की भाँति बैठी रह गयी।

रामू चाय का सामान सैण्टर टेबल पर रखे खड़ा था। जब उसने देखा कि बाहर से लक्ष्मी अकेली लौटी है और उसका मुख विवर्ण हो रहा है तो उसने पूछा, 'माता जी, क्या हुआ है ?'

लक्ष्मी ने बताया, 'बाबा भी पकड़ लिए गये हैं।'

'ओह।' रामू के मुख से निकल गया। फिर उसने कहा, 'माता जी, आप इन्दिरा जी को टेलीफोन करिये न।'

'वह क्या करेगी ?'

'वही तो सब कुछ करा रही है ?'

परन्तु लक्ष्मी को कुछ करने का आह्वान मिला तो वह उठी और भीतर जा टेलीफोन डायरैक्टरी से दिल्ली के उपराज्यपाल का नम्बर ढूँढने लगी। इसमें उसे कुछ समय लगा। रामू सामने खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुपचाप देख रहा था।

आखिर नम्बर निकला और लक्ष्मी ने नम्बर घुमाया। दूसरी तरफ से उपराज्यपाल का सैक्रेटरी बोला।

लक्ष्मी ने सब कहानी बता दी। उसने बताया कि कैसे प्रेम उनके घर में रह रही थी। उसका पति और श्वसुर आये और पुलिस की मदद से लड़की को बलपूर्वक पकड़ कर ले गये हैं। मेरे श्वसुर ने आपत्ति की तो उसे भी पुलिस पकड़ कर ले गयी है।

लक्ष्मी से पूछे जाने पर उसने कोठी का नम्बर और अपने पति का नाम बता दिया।

उपराज्यपाल का सैक्रेटरी सोमदेव को जानता था। इस कारण उसने कहा, 'बहन जी! आप अपना नम्बर बता दीजिये। मैं जाँच कर असल बात आपको बता दूँगा। आज पूर्ण देश में पकड़-धकड़ हो रही है। ऊपर से मुकद्दमा कुछ भी बना लिया जाता है और पीछे कारण कुछ और होता है। इस कारण सब बात जान कर मैं आपको वस्तु-स्थिति बताऊँगा। में सोमदेव जी का मित्र हूं और जो कुछ सम्भव हुआ करूँगा।'

लक्ष्मी ने अपने टेलीफोन का नम्बर बताया और टेलीफोन का चोंगा रख दोनों हाथों में सिर को थाम विचार-मग्न हो गयी।

अब रामू ने पूछा, 'माता जी! क्या कहा है इसने?'

उसने समझा था कि मालकिन ने प्रधानमंत्री की कोठी पर टेली-फोन किया है।

लक्ष्मी ने बताया, 'मैंने यहाँ के गवंनर को टेलीफोन किया था। उसके सैक्रेटरी ने कहा है कि असल बात पता कर बतायेगा।'

रामू ने कहा, 'वह कुछ नहीं कर सकेगा। यदि कहें तो मैं भी किसी को टेलीफोन करके पता करूँ।'

लक्ष्मी ने समझा कि यह एक-सफदरजंग रोड पर किसी को फोन करेगा। उसने कहा, 'तुम भी करके देख लो। मुझे आशा नहीं कि प्रधानमंत्री इस मामले में दखल देंगी।'

'मैं प्रधानमंत्री को नहीं करूँगा।' इतना कह रामू ने आगे बढ़कर एक नम्बर घुमाया। उधर से कोई बोला तो रामू ने कहा, 'सोहन!'

उत्तर आया, 'हाँ।'

'भैया, यहाँ एक और दुर्घटना हो गयी है। आज घर के पुरखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी पकड़ लिये गये हैं।'

कुछ पूछने पर रामू ने बताया, 'सफदरजंग थाने का थानेदार मालूम होता था। जो कुछ भी हो सके करो।'

जब रामू ने टेलीफोन बन्द किया तो लक्ष्मी ने पूछा, 'कहाँ टेली-फोन किया था?'

'होम मैम्बर के एक सेवक को।'

लक्ष्मी मुस्करायी और चुप कर रही।

रात खाना बना परन्तु खाया नहीं गया। रात के ग्यारह बजे टेलीफोन आया। लक्ष्मी गवर्नर के प्राइवेट सैक्रेटरी से टेलीफोन की आशा कर रही थी। इस कारण वह वहीं स्टडी रूम में ही सो रही थी। घंटी बजते ही वह लपक कर उठी और सुनने लगी। बोलने वाले ने कहा, 'मैं सोहन हूं। रामू से बात करूँगा।'

लक्ष्मी ने कहा, 'ठहरो, बुलाती हूं।'

रामू भी स्टडी-रूम के बाहर ही भूमि पर दरी बिछा सोया हुआ था। उसने भी टेलीफोन की घंटी सुनी थी। उसने मालकिन को बात करते भी सुना था और जब लक्ष्मी स्टडी-रूम से निकली तो उसने पूछा, 'माता जी! क्या है?'

'सोहन का टेलीफोन है।'

रामू टेलीफोन सुनने लगा। दो मिनट से अधिक समय तक उधर से सोहन बातें करता रहा। आखिर टेलीफोन बन्द हुआ तो रामू ने बताया, 'माता जी! सोहन ने कहा है कि सैक्रेटरी अभी सिनेमा देखकर आये हैं। इससे पहले बात नहीं हो सकी। उसने वचन दिया है कि वह बाबा की फाईल थाने से कल मंगवायेगा। परन्तु उसने एक बात और बताई है कि वकील साहब को छोड़ने की आज्ञा हो चुकी है। आशा करनी चाहिये कि कल प्रातःकाल वह छोड़ दिये जायेंगे।'

लक्ष्मी ने कहा, 'रामू! यह सोहन कौन है? यह तो बहुत काम की बात बता रहा है?'

'हाँ माता जी, सबमें अपने-अपने गुण होते हैं। बस यही समझ लीजिए।

'सोहन मेरे गाँव का है। दो महीने हुए वह मुझे मिला था तो मुझे पता चला कि वह होम मैम्बर के घर पर काम करता है। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे यहाँ की सब कहानी सुनाई थी। उसने बाबूजी का तथा छोटे बाबू का नाम और यहाँ का पता लिख लिया था।

'बीच-बीच में टेलीफोन तो होता रहा था तथा वह कहता रहा है कि शीघ्र ही वकील साहब तथा राधे बाबूजी के विषय में कुछ-न-कुछ होगा। मैंने आपको बताया नहीं क्योंकि मुझे यक़ीन नहीं था कि वह कुछ कर सकेगा। आज बाबा की बात बताई तो उसने होम मेम्बर के प्राइवेट सैक्रेटरी से पूछकर यह सूचना दी है। राधा बाबू के विषय में इतना ही बताया है कि उनका मामला संगीन है। अभी उस विषय में कुछ नहीं हो सकता।'

इस सूचना से कि राधा के पिता के छूटने की सम्भावना है, लक्ष्मी कुछ साहस अनुभव करने लगी थी। इस पर भी न तो वह खाने में रुचि रखती थी और न ही सो सकी थी। प्रात: चार बजे वह उठी और नियमानुसार बाथरूम में चली गयी।

स्नानादि कर वह अपने नित्य कर्म अर्थात् गीता पाठ में लग गयी।

आज उसका चित्त पाठ में भी नहीं लगा। वह ज्यों-ही एक श्लोक पढ़, उस पर मनन करने लगी कि वह घर पर आई मुसीबत पर विचार करने लग गई। वह समझती थी कि सब मुसीबत सीधी उपज है इमर्जेंसी की, परन्तु इसका श्रीगणेश हुआ था प्रेम के कालिज में घटी घटना से।

लक्ष्मी विचार करने लगी थी कि प्रेम के कर्मफल, उनको भी साथ ले डूब रहे हैं। इस विचार के उठने और उस पर मनन करने से प्रेम के प्रति उसके मन में कटुता उत्पन्न होने लगी। उसे बार-बार कुछ ऐसा अनुभव होने लगा था कि भवसागर में तैरते हुए उन्होंने एक बहुत बड़ा बोझा अपने कंधों पर उठाया हुआ है और उसके भार से पूर्ण परिवार सागर में डूब रहा है।

बुद्धि से जब वह विचार करती थी तो प्रेम के प्रति कटुता का आधार नहीं मिलता था। तब वह इसे मन से निकालने का यत्न करने लगती थी।

परन्तु ज्यों ही उसका विचार परिवार के सब पुरुष वर्ग के बंदी बनाये जाने की ओर जाता था तो तुरन्त प्रेम ही उसके विचारों का लक्ष्य बन जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार प्रातः के साढ़े छः बज गये और किसी प्रकार उसके पति की सूचना नहीं आयी थी। वह विचार कर रही थी कि सूचना हिसार से आयेगी अथवा उसके पति स्वयं ही आ उपस्थित होंगे।

इसी प्रकार के विचारों में वह उठी। इस समय वह कुछ पेट में डालने की आवश्यकता अनुभव करने लगी। वह जब अपने शयनागार में से, जिसमें ही उसका पूजा स्थान था, निकली तो उसे ड्राइंग-रूम में रामू खड़ा दिखाई दिया।

'कैसे खड़े हो रामू ?'

'किसी भी क्षण मालिक की किसी प्रकार की सूचना की प्रतीक्षा में हूँ। यहाँ टेलीफोन की घण्टी सुनाई दे जाती है।'

'तो तुम्हें विश्वास है कि वह आज छूट आयेंगे ?'

'मालकिन ! सोहन बहुत डींग हाँका करता है। उसको सत्य मान ही आशा और प्रतीक्षा में यहाँ ठहरा हुआ हूँ।'

'अच्छा जाओ। एक प्याला चाय और कुछ खाने को ले आओ। राधा के पिताजी के आने के समाचार की आशा से जीवन की लालसा भी जाग पड़ी प्रतीत होती है और भूख लगने लगी है।'

रामू रसोई की ओर घूमा ही था कि स्टडी-रूम में टेलीफोन की घण्टी बजी। रामू ही उधर को लपका और सुनने लगा। सुनकर उसने आते ही प्रसन्नता से उबलते हुए कहा, 'मालकिन ! तिहाड़ जेल से सूचना है कि मालिक जेल की ड्योढ़ी में प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनको लाने के लिए गाड़ी जानी चाहिए।'

लक्ष्मी चाय लेना भूल गयी और बोली, 'ड्राइवर को बुलाओ।'

रामू बाहर निकल गया। लक्ष्मी कपड़े बदलने चली गयी।

वह कपड़े बदलकर बाहर निकली तो रामू ने कहा, 'सोहन कह रहा था कि बाबा का चालान हुआ है कि वह अपनी कोठी में बहुत से लोगों को एकत्रित कर किसी प्रकार की साजिश कर रहे थे। दफा एक सौ आठ के अधीन अदालत में उपस्थित किये जायेंगे।'

'किस अदालत में।'

'यह तो मैंने पूछा ही नहीं।'

'तो टेलीफोन कर पता करो।'

रामू ने सोहन को टेलीफोन किया और पता चला कि पार्लियामेण्ट स्ट्रीट की कोर्ट में बाबा आज दो बजे के करीब उपस्थित किये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेंगे।

मोटर आयी तो लक्ष्मी तिहाड़ जेल को चल पड़ी।

: ६ :

सोमदेव घर आया और उसे जब घर की पूर्ण स्थिति का ज्ञान हुआ तो जल्दी-जल्दी नहा-धोकर तैयार हो नाश्ता कर अपने मित्रों से मिलने जाने को तैयार हो गया।

'परन्तु,' लक्ष्मी का कहना था, 'यदि आप शैडो किये जा रहे होंगे तो जिनके घर जायेंगे, उन पर भी मुसीबत लाने में साधन बन जायेंगे।'

सोमदेव विचार करने लगा। फिर उसने कहा, 'होम मैम्बर से मेरा परिचय है। उससे तो टेलीफोन पर बात कर ही सकता हूँ।'

'हाँ, उससे सम्पर्क करने में हानि प्रतीत नहीं होती।'

सोमदेव ने टेलीफोन किया। उसके पी० ए० से बातचीत हुई। सोमदेव ने कहा, 'मुझे यह विदित हुआ है कि मैम्बर साहब ने मुझे छुड़ाने में विशेष परिश्रम किया है। मैं उनका धन्यवाद करना चाहता हूँ।'

'इस समय वह प्रधानमन्त्री से मिलने गए हुये हैं। वह आयेंगे तो मैं उनको बता दूँगा। आपका नाम और सन्देश मैंने नोट कर लिया है।'

'मैं उनसे स्वयं मिलकर कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।' सोमदेव ने कहा।

उसका उत्तर आया, 'आपकी यह बात भी लिख ली है। यदि इसका कुछ उत्तर हुआ तो आपको सूचित कर दूँगा।'

'मेरा टेलीफोन नम्बर भी नोट कर लें।'

'वह यहाँ नोटिड है।'

इसके उपरान्त नई दिल्ली मैजिस्ट्रेट के कोर्ट में हाजिर होने वाले वकीलों का नाम वह स्मरण करने लगा। एक परिचित का नाम स्मरण आया, रामचन्द्र सरीन। सोम ने उसका टेलीफोन नम्बर देख उससे मिलने का समय निश्चय कर लिया।

सोमदेव का अपना लाइसेंस तो ज़ब्त कर लिया गया था। इस कारण वह स्वयं किसी अदालत में वकील के रूप में उपस्थित नहीं हो सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्याह्न के भोजन के समय सोमदेव नई दिल्ली पार्लियामेण्ट स्ट्रीट पर मैजिस्ट्रेट की कचहरी में उपस्थित हो गया।

मैजिस्ट्रेट के आते ही सबसे पहले रघुनाथ सहाय का मुकद्दमा उपस्थित हुआ। पुलिस ने आरोप-पत्र उपस्थित किया। इस आरोप-पत्र पर चार्ज शीट बनने वाला था। इस पर सरीन ने अदालत से पूछा, 'हजूर! किस स्थान पर मीटिंग बुलायी गयी थी।'

'कोठी की लान में ?' पुलिस का कहना था।

'तब तो यह खुफिया मीटिंग नहीं हो सकती।'

'लोग ज्यादा आ गये थे। भीतर ड्राइंगरूम में इतनी जगह नहीं थी।'

'कितने लोग होंगे ?' मैजिस्ट्रेट ने पूछ लिया।

'लान भरी हुई थी।'

'थानेदार साहब! वह चाँदनी चौक था क्या जो बिना सूचना के भीड़ एकत्रित हो गयी थी। पृथ्वीराज रोड पर की कोठियों के मालिक तो आये नहीं होंगे। ये सबके सब आये भी हों तो भी उनसे भीड़ नहीं हो सकती थी। और वहाँ दूसरों की भीड़ कहाँ से आ गयी ? कोई सूचना थी क्या ?'

थानेदार के मुख से निकल गया, 'पर हजूर! हमें हुक्म था।'

'तो यह बात है ? इसमें कुछ 'बैक-ग्राउण्ड' होगी।' मैजिस्ट्रेट ने पूछ लिया।

'जरूर होगी।' थानेदार ने अपने कथन की सफाई दे दी, 'हजूर! इमर्जेंसी का मतलब यही है कि कुछ है जो प्रकट नहीं किया जा सकता। जो प्रकट नहीं करना, उसके छुपाने के लिए चादर डालनी पड़ती है।'

मैजिस्ट्रेट मुस्कराया और बोला, 'ठीक है। बैक-ग्राउण्ड स्पष्ट होनी चाहिए, तब निर्णय दे सकूंगा।'

मिस्टर सरीन ने कहा, 'तब तक अभियुक्त की जमानत हो जानी चाहिए।'

'ज़ामिन कौन है ?'

एक पड़ौसी उपस्थित किया गया। मैजिस्ट्रेट ने हुक्म दे दिया, 'जमानत के कागज दाखिल किये जायें। पुलिस उनकी जाँच कर अठारह तारीख तक रिपोर्ट करे। अभियुक्त को तिहाड़ जेल में रखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाये ।'

जब अदालत से बाहर निकले तो रघुनाथ सहाय खिलखिला कर हँस पड़ा । हँसते हुए उसने सोम से पूछा, 'तुम कब और कैसे छूटे हो ?'

'बाबा ! मेरे छूटने और आपके पकड़े जाने में कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता । मुझे दो दिन हुए हिसार से दिल्ली लाया गया था । ऐसा प्रतीत होता है कि आपात्-स्थिति के पीछे किसी प्रकार से योजनाबद्ध कार्य नहीं हो रहा । कार्यवाई आरम्भ करनेवाले बहुत छोटे दर्जे के अफसर हैं ।'

रघुनाथ सहाय ने कहा, 'मेरे विषय में तो यह हुआ है कि जब मैंने प्रेम के बलपूर्वक ले जाये जाने का विरोध किया तो मुझे पकड़ लिया गया । पकड़ते समय अधिकारियों को अपने ड्यूटी पालन में रुकावट डालने का आरोप था । यही मुझे थाने में बताया गया । मैंने थानेदार को कहा कि वर्दी पहनने से कोई पुलिस अधिकारी नहीं हो सकता । उसे यह भी बताना पड़ता है कि वर्दी पहनकर वह क्या कर रहा था । जब मैंने पूछा कि भला तुम उस कोठी पर गए क्यों थे ? तब उसे ध्यान हो आया कि कोठी से किसी का टेलीफोन आया था और टेलीफोन आने पर रिपोर्ट लिखी गयी थी । इस रिपोर्ट पर ही पुलिस ने कोठी पर छापा डाला था । इतना याद आने पर थानेदार ने रिपोर्ट मँगवाई । रजिस्टर पर समय तथा टेलीफोन द्वारा रिपोर्ट कि किसी लड़की को अगवा करने का यत्न हो रहा है, लिखी हुई थी ।

'इस पर थानेदार को समझ आया कि इस रिपोर्ट में और मेरे पकड़े जाने में कुछ सम्बन्ध होना चाहिए । इस कारण उसने मुझे तो हवालात में बन्दी करने की आज्ञा दे दी और यह आरोप-पत्र तैयार कर दिया जो आज अदालत में उपस्थित किया गया है ।'

सोम ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं समझता हूँ कि आपको भी 'मीसा' के अधीन पकड़ लिया जायेगा । उसके लग जाने पर मैजिस्ट्रेट को 'बैक-ग्राउण्ड' जानने की आवश्यकता नहीं रहेगी ।'

अगली तारीख दस दिन उपरान्त पड़ी थी । सोमदेव घर आया तो लक्ष्मी ने पिछले छः मास का सब वृत्तान्त बता दिया । सोमदेव समझता था कि देश का कानून अच्छा-बुरा जैसा भी था, अब तो वह भी 'कोल्ड स्टोरेज' में रख दिया गया है और अन्धेरगर्दी चल रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जो जिसके मन में आता है, करता है और किसी भी अधिकारी के किसी भी कार्य पर अंकुश नहीं रहा।

अगले दिन वह सुप्रीम कोर्ट में अपना लाइसेंस निकलवाने का यत्न करने जा पहुँचा। लाइसेंस जप्त हुआ था 'होम मिनिस्ट्री' की आज्ञा से और उस आज्ञा का विरोध करने का साहस कोई नहीं करता था।

इस पर भी सोमदेव ने एक याचिका दे दी कि उसका लाइसेंस उसे मिलना चाहिये। उस याचिका पर आज्ञा रजिस्ट्रार ने स्थगित रखी।

तीन चार दिन तक जब उसकी याचिका का उत्तर नहीं आया तो वह पुनः कोर्ट में गया। रजिस्ट्रार ने कहा, 'आपकी याचिका होम मिनिस्ट्री में भेज दी गयी है। लाइसेंस ज़प्ती की आज्ञा वहीं से हुई थी। अब बिना वहाँ की आज्ञा के लाइसेंस नहीं मिल सकता।'

सोमदेव ने घर आकर होम मिनिस्टर के कार्यालय पर टेलीफोन किया और प्राइवेट सैक्रटरी से मिनिस्टर साहब से मिलने की स्वीकृति माँगी। प्राइवेट सैक्रेटरी ने बताया, 'होम मैम्बर साहब को मिलने का अवकाश नहीं है। आप काम बताइये।'

इस पर सोमदेव ने अपने लाइसेंस की बात बताई तो प्राईवेट सैक्रेटरी ने बताया, 'आप मुझसे आज रात आठ बजे मिल लीजिए। मैं आपको पूर्ण परिस्थिति बता दूँगा।'

सोमदेव होम मिनिस्टर के पी० ए० के कार्यालय में आठ बजे पहुँचा तो पी० ए० उसे एक पृथक् कमरे में ले गया और वहाँ पन्द्रह मिनट बातें करता रहा।

सोमदेव ने यह भी पूछा, 'मेरे पिता पकड़े गये हैं, मैं समझता हूँ कि अकारण।'

इस पर पी० ए० ने कहा, 'उनको दण्ड हो जाने दो। फिर यहाँ से केस पर पुनरावलोकन किया जायेगा। और मैं समझता हूँ कि वह छोड़ दिये जायेंगे। इस समय इतना कहना पर्याप्त होगा कि हमारे हस्ताक्षेप करने का भी एक समय होता है। जब कागज़ सामने आते हैं तो जिनके विषय में कुछ पता होता है, मैं सिफारिश कर देता हूँ।'

'और मेरे लड़के के विषय में।'

पी० ए० हँस पड़ा। और बोला, 'अभी कुछ देर तक ठहरना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा। अब तो ये लोग भी छोड़े जा रहे हैं।'

सोम घर आया तो लक्ष्मी ने पूछा, 'क्या कर आये हैं ?'

सोमदेव की हँसी निकल गयी। लक्ष्मी प्रश्नभरी दृष्टि में मुख देखने लगी तो पतिदेव ने बताया, 'होम मिनिस्टर के पी० ए० से भेंट हुई थी। वह हमारे परिवार से सहानुभूति रखता है और कहता था कि वह हमारा काम ऐसे करेगा कि होम मिनिस्टर साहब को पता भी नहीं चलेगा और उनके हस्ताक्षर हो जायेंगे। इस कारण मुझे चुपचाप घर पर बैठना चाहिए। जिन दिन दाव लगेगा, मेरे सारे काम हो जायेंगे।'

'तो यह बात है ?'

'हाँ; एक बात और पता चली है कि हमारा सेवक रामू उनके चपरासी सोहन का साथी है और मैं उसी के कहने पर छूटा था।'

लक्ष्मी मुख देखती रह गयी। 'तब तो रामू की उन्नति करनी चाहिए।' उसने कह दिया।

'मैं भी कुछ ऐसा ही विचार कर रहा हूँ।'

अगले दिन सोमदेव ने रामू को अपने कार्यालय में बुलाया और पूछ लिया, 'किस श्रेणी तक पढ़े हो ?'

'हायर सैकेण्डरी पास हूँ।'

'और आगे क्यों नहीं पढ़े ?'

'साधन नहीं थे। पिता का देहान्त हो गया था। माँ के तीन बच्चे और हैं। एक भाई और दो बहनें हैं। मैं क्लर्क की नौकरी ढूंढता रहा था, वह मिली नहीं। घर का काम मिला। अब मैं अपने वेतन में से केवल दस रुपये अपने लिये रखकर शेष वेतन माँ के पास भेज देता हूँ। खाना आपके यहाँ खाता हूँ। वस्त्र राधे बाबूजी के मिल जाते हैं।'

'और राधे की माँ कितना वेतन देती हैं ?'

'एक सौ दस रुपये।'

'अच्छा। मैं क्लर्क का काम दूँ तो करोगे ?'

'मालिक ! जो भी काम मिलेगा करना पड़ेगा अन्यथा क्या करूँगा।'

'ठीक है। कल से मेरे कार्यालय में काम करना होगा। वेतन दो सौ रुपये और घर पर भोजन। अब तुम वस्त्र अपने खरीदोगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इससे तो घाटा रहेगा ?' रामू ने कहा।

'कैसे ?'

'जी, बाबू बनूंगा तो बाबू के लायक वस्त्र बनवाऊँगा, वस्त्र महँगे पड़ेंगे। अब तो मालकिन से कहता हूँ तो राधे बाबू के कपड़ों में से मिल जाते हैं।'

'पर तुम क्लर्क का काम तो आज से करोगे। वेतन की बात मुझे लाइसेंस मिल जाये तो विचार करूगा।'

'वह मिल जायेगा।'

'तब तुम मेरे नायब-मुन्शी होंगे। तब मुंशिआने की कमीशन भी मिलेगी।'

'बाबूजी ! बहुत धन्यवाद है।'

'मुझे कल ही पता चला है कि तुम पढ़े-लिखे और गुणवान युवक हो।'

रामू ने मुस्कराकर कहा, 'बाबूजी ! मैं आज से रामचन्द्र गुलाटी हूँ, ठीक है न।'

'तुम्हारी दो पोशाकें मैं अपने पास से बनवा दूंगा। तुम कनाट प्लेस में खद्दर भण्डार में चले जाओ। वहाँ से दो कुर्त्ते, दो पायजामे दो जवाहर कोटियां और एक अच्छा-सा जूता खरीद लाओ। राधा की माँ तुम्हें रुपये दे देंगी।

'शेष तुम पीछे देख लेना। आज से तुम यहाँ दफ्तर में बैठना। मैं मुन्शी को सब समझा दूंगा।'

रामू की सेवाओं का प्रतिकार लक्ष्मी ने कुछ और ही दिया। उसको वकील साहब ने रामू के घर की हालत बतायी तो लक्ष्मी ने रामू की माँ का पता पूछा और उसे सौ रुपये महीना अपने पास से भेजने का निश्चय बना लिया।

उसने रामू को कह दिया, 'जो कुछ तुम भेजोगे, यह इसके अति-रिक्त होगा। माँ को लिख देना कि यह मैं बच्चों की पढ़ाई और परवरिश के लिए भेज रही हूँ।'

'आप बहुत कष्ट कर रही हैं। मैं समझता हूँ कि होम-मिनिस्टर के पी० ए० ने बाबूजी को कुछ कहा है।'

'हाँ, और बाबूजी ने बताया है कि तुम पढ़े-लिखे समझदार युवक हो। तुम्हारी उन्नति का मार्ग खोल देना चाहिए। आगे तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग्य है।'

जिस दिन रामू खद्दर-भण्डार से लाए कपड़े पहन वकील साहब के कार्यालय में बैठा, उसी दिन मध्याह्न समय प्रेम टैक्सी में कोठी में आ पहुँची। लक्ष्मी और सोमदेव एक मित्र के यहाँ मध्याह्न का भोजन करने गये हुए थे। वकील साहब का मुन्शी सुप्रीम कोर्ट में जाने लगा था। वह वकील साहब के परिचितों से मिलकर उनके लिए काम प्राप्त करने का यत्न कर रहा था। वकील साहब को लाइसेंस का आश्वासन मिल चुका था।

कार्यालय बाहर कोठी के बरामदे में खुलता था। कार्यालय के सामने ही द्वार था, वकील साहब के स्टडी-रूम में जाने का और स्टडी-रूम कोठी के भीतर ड्राइंग-रूम में खुलता था। प्रेम कोठी के बाहर टैक्सी वाले को भाड़ा देकर भीतर आयी तो रामू उसे कोठी में आते देख विस्मय में बरामदे में आ खड़ा हुआ।

प्रेम ने रामू को नये खद्दर के कपडों में अकड़कर बरामदे में खड़े देखा तो उसके सामने मुस्कराती हुई बोली, 'तो तुम रामू हो ?'

'हाँ बहन जी ! आप किधर से आ रही हैं ?'

'मौसी भीतर हैं ?'

'नहीं। वकील साहब छूट गये हैं और माताजी उनके साथ कहीं खाने पर गयी हैं।'

'और राधा बाबू ?'

'वह अभी जेल में ही हैं।'

'मैं जेल से छूट आयी हूँ।'

'ओह ! तो आप भी पकड़ी गयी थीं ?'

'हां, मैं प्राइवेट जेल में थी।'

'प्राईवेट जेल ?'

'हाँ।'

रामचन्द्र गुलाटी मुख देखता रह गया।

'परन्तु यह तुम्हें क्या हो गया है ?' प्रेम ने कहा।

'मेरी तरक्की हो गयी है। मैं घर के सेवक के स्थान पर दफ्तर का बाबू बना दिया गया हूँ।'

'तो तुम कुछ पढ़े-लिखे भी हो ?'

'वकील साहब ने परीक्षा ले ली है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तब तो ठीक हुआ है।'

'बहन जी, उधर से द्वार बन्द है। आप कार्यालय में से भीतर जा सकती हैं।'

घर में फर्श साफ करने, कपड़े धोने और बर्तन साफ करने के लिए एक सेविका भी थी। वह मध्याह्न को अपने घर चली जाया करती थी और फिर मध्याह्नोत्तर तीन बजे आया करती थी।

प्रेम ड्राइंगरूम में जाकर बैठ गयी।

दो बजे के उपरान्त सोमदेव और लक्ष्मी आये तो सीधे कोठी खोल भीतर पहुँच गये। दोनों वहाँ प्रेम को इत्मीनान से बैठे देख कर एक क्षण तक तो विस्मय में मुख देखते रहे और फिर खिलखिलाकर हँस पड़े। प्रेम ने उठ कर दोनों को नमस्कार कर कहा, 'देखिये मौसी जी! मैं अपनी सास तथा ससुर को हवालात में डलवा कर यहां आ गयी हूँ।'

'अरे!' सोमदेव ने पूछ लिया, 'यह कैसे हुआ है?'

'बैठिये, बहुत रोचक कहानी है, सुनाती हूँ।'

अब वकील साहब, उनकी पत्नी बैठे तो प्रेम भी बैठ गयी। उसने अपनी कहानी सुना दी। उसने बताया, 'वे लोग मुझे यहाँ से लेकर फतेहपुरी के एक होटल में, जहाँ वे ठहरे हुए थे, पहुँच गये। मुझे और रघुवीरसिंह को एक कमरे में बंद कर बाहर से ताला लगा मेरी सास और श्वसुर चले गये। पीछे पता लगा कि उन्होंने बगल में एक पृथक् कमरा ले लिया था। पहले वे तीनों एक ही कमरे में रहते थे।

'कमरे के बंद होते ही मेरे सरदार साहब ने पहली बात जो की, वह मुझ पर बलात्कार करना था। मैं चुपचाप उसे सहन करती रही। मेरे मन में भी एक योजना बन गयी थी और वह योजना उनका विश्वास प्राप्त किये बिना चल नहीं सकती थी।

'सायंकाल तक परस्पर विश्वास हो गया। इस पर मैंने आँख बचा होटल के दफ्तर में जा अपने वकील साहब मिस्टर सरीन को टेलीफोन कर दिया। वह भागे हुए होटल में आये और मैंने उन्हें अपनी सब अवस्था बता दी। वकील साहब को समझने में दो मिनट ही लगे और वह होटल के दफ्तर के बाहर खड़े-खड़े ही बात सुन चले गये।

'मैं अपने कमरे में आयी। सरदार साहब गहरी नींद सो रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार मेरी हरकत का उनको ज्ञान नहीं हुआ।

'अगले दिन सरदार साहब रेलवे भवन में गये हुए थे और मेरे सास-श्वसुर मेरे कमरे में आ हँसी-मज़ाक की बातें करते हुए बैठे थे। वे दिल्ली की पुलिस पर पंजाब के चीफ़-मिनिस्टर के नाम का असर देख विस्मय करते हुए हँस रहे थे।

'इस समय दो कान्स्टेबल और साथ ही अदालत का चपरासी अदालती आज्ञा से मुझे छुड़ाने और मुझे रोकने वालों को हिरासत में लेने के लिये आ पहुँचे।

'मेरे श्वसुर ने उनको डाँटना चाहा तो वकील साहब जो उनके पीछे खड़े थे बोले, "लड़की यही है और इसकी सुरक्षा की आज्ञा अदालत से पहले ही हो चुकी है।"

'अदालत के मुंशी ने पूछा, "क्यों बीबी! कहाँ जाना चाहती हो?"

'मैंने आपकी कोठी का पता बताया। उस आज्ञा के मुताबिक मुझे अदालत में हाज़िर होकर ब्यान देने थे।

'मुझे टैक्सी में बैठा कर वकील साहब और अदालती मुंशी तो कचहरी पहुँच गये और मेरे सास-श्वसुर को हवालात में भेज दिया गया।

'अदालत में मेरा बयान हुआ है। मेरे ज़ामिन को बुला कर पुनः पहली जमानत तसदीक करायी गयी। मैंने इस झमेले से सर्वथा मुक्त हुए बिना यहाँ आना उचित नहीं समझा। मुझे पता नहीं था कि मौसा जी छूट गये हैं अन्यथा मैं तीन दिन होटल में न रहती और यहाँ आ जाती।

'अब हालत यह है कि मेरे विवाहित, उसके पिता और उसकी माता तीनों पाँच-पाँच हजार की जमानत पर छूटे हैं। वे तीनों चण्डीगढ़ लौट गये हैं।

'इतना कुछ हो जाने पर मैंने यही उचित समझा है कि आपके यहाँ चली आऊँ।

'मेरा सब खर्चा होटल का और अदालत का मिस्टर सरीन ने किया है। उनका बिल छः सौ रुपये बन गया हैं। यह मैं उनके पास भेजना चाहती हूँ। यहाँ मेरे भूषण रखे हैं, उन में से एक-आध बच कर यह रुपया उन्हें भेज दूंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अब आप आ गये हैं तो मैं चाहूँगी कि मैं यहाँ ही रहूँ। मेरा माँ के घर जाने को चित्त नहीं करता।'

'तो उनसे भी कुछ झगड़ा है ?'

'पिता जी मेरे विरुद्ध हैं। मेरा भाई रघुवीरसिंह का मित्र है और उसका पक्ष लेता है। और मेरी माँ पिता जी के विरुद्ध नहीं जा सकतीं। मेरे बहुत कहने पर भी माँ ने मेरी नहीं सुनी। वह कहती थी, "तुम नहीं जानतीं और मैं जानती हूँ कि तुम्हारा कल्याण इस कोठी में नहीं है।"

'पिछली बार भी जब वह मुझे यहाँ मिलने आयी थीं तो मुझे कह गयी थीं कि मैं मृगतृष्णा के पीछे भाग रही हूँ। मैं इस माँ के घर में जाना नहीं चाहती। इस कारण यहाँ ही आयी हूँ।'

'ठीक है,' सोमदेव ने कहा, 'तुम यहाँ रह सकती हो। हमने तुम्हें लड़की स्वीकार किया हुआ है। उसी रूप में भली लड़की बन रह सको तो रहो।'

अगले दिन सोमदेव को वकालत करने का लाइसेंस मिल गया। वकील साहब सर्वोच्च न्यायालय में गये तो अब दो मुँशी उनके साथ थे।

जिस दिन मध्याह्नोपरान्त बाबा की दफा एक सौ आठ के मुकद्दमे की तारीख थी, उसी दिन उन्हें छोड़ दिया गया। सरकार ने दफा एक सौ आठ का मुकद्दमा वापिस ले लिया था।

रघुनाथ सहाय घर पहुँचा तो उसने बताया—'मुझे यहाँ लाने से पहले थाने में ले गये थे। वहाँ वही थानेदार बैठा था, जिसने मुझ पर क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की दफा एक सौ आठ का मुकद्दमा बनाया था। उसने पूछा, "सोहन लाल को जानते हो ?"

'मैंने कहा कि मैं इस नाम के किसी भी व्यक्ति को नहीं जानता।'

"वह आपको जानता मालूम होता है।"

"कहाँ है और कौन है वह ?"

"जब आप जानते नहीं तो बताने की आवश्यकता भी नहीं। परन्तु आपको छुड़ाने में उसने बहुत यत्न किया है।"

"मुझे इसका कुछ ज्ञान नहीं है।"

'थानेदार ने आगे कहा, "मैंने आपके खिलाफ 'मीसा' का वारण्ट जारी किया था परन्तु जब वह वारण्ट कल जेल में पहुँचा तो सुपरिंटें-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेण्ट ने मुझे बताया कि होम मिनिस्टरी से रघुनाथ सहाय को छोड़ देने की आज्ञा आ चुकी है।'

'इस पर मैंने थानेदार से पूछा, "तो मीसा के वारण्ट किस मजिस्ट्रेट ने जारी किये थे ?"

"वारण्ट जारी करने का अधिकार तो डी० एम० को ही है, परन्तु बहुत सी खजालत से बचने के लिये डी० एम० साहब ने कुछ मीसा वारण्टों के फार्म हस्ताक्षर कर सब थानों में भेजे हुए हैं। इस पर भी हम जब वारण्ट जारी करते हैं तो मुलज़िम की फाइल बना कर डी० एम० के पास भेज देते हैं। आज वह फाइल भी इस लिखे के साथ वापस आ गयी है कि रघुनाथ सहाय को छोड़ दिया जाये। मैंने पता करने का यत्न किया था कि कौन जबरदस्त हस्ती आपकी हिमायत कर रही है। पता चला है कि कोई सोहनलाल नाम का व्यक्ति है। मैंने जो केस आपके खिलाफ बनाया था वह सोहनलाल ने सब गड़बड़ कर दिया है।"'

सोमदेव ने सोहन के विषय में बताना उचित नहीं समझा। परन्तु रामू को सफेद कपड़े पहने सोम के कार्यालय में कागजों को ठीक करते देख रघुनाथ सहाय पूछने लगा, 'सोम ! रामू को तुमने कार्यालय में लगा लिया है ?'

'हाँ बाबा ! मुझे पता नहीं था कि वह पढ़ा-लिखा युवक है। उसकी समझदारी के लक्षण तो प्रकट हुआ करते थे। यह जेल से मेरे छूटने पर पता चला था। मैंने इसकी परीक्षा ली है और इसे नायब-मुंशी के रूप में रख लिया है।'

'और यह प्रेम ?'

'यह अपनी ससुराल वालों से अवकाश पा गयी है और इसका पति और श्वसुर पाँच-पाँच हज़ार की जमानत पर छूट सके हैं।'

'तो यह तुमने किया है ?'

'नहीं बाबा ! यह सब प्रेम ने स्वयं ही किया है। उसने पहले ही कोर्ट में अपनी प्रौटेक्शन की याचना की हुई थी। वह मंजूर भी थी। उसको पुनः जीवित कर प्रेम ने अब पुनः यहाँ रहने की कोर्ट से मंजूरी ले ली है।'

'और लक्ष्मी से ?'

'वह तो उसकी मौसी है। हाँ, उसने प्रेम की माँ को सबकुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो यहाँ घटा है, बता दिया है। प्रेम का पिता मधुसूदन इस शनिवार को यहाँ आने वाला है। वह प्रेम के स्थाई प्रबन्ध की बात पर विचार करना चाहता है।'

इस पर भी मधुसूदन आया दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में। तब तक राधाकृष्ण भी छूट कर आ चुका था। उसका परीक्षाफल घोषित हो चुका था। वह बहुत अच्छे अंक लेकर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका था।

जेल से बाहर आते ही वह कालिज में गया तो उसे मुरादाबाद सेण्ट्रल हॉस्पिटल में अभ्यासार्थ भेज दिया गया। इस कारण वह मुरादाबाद में अस्थाई रहने का प्रबन्ध कर, वहीं रह रहा था।

दिसम्बर की चार तारीख को मधुसूदन, सोमदेव की कोठी पर आ टपका। उसकी पत्नी सुमित्रा उसके साथ थी। आते ही मधुसूदन ने सोमदेव से कहा, मुझे तो सिर खुजलाने का भी अवकाश नहीं और मैं प्रेम की माँ से कह रहा था कि अगले मास ही चण्डीगढ़ से बाहर जा सकूँगा। परन्तु रघुवीरसिंह ने नाक में दम कर रखा है और सुमित्रा भी प्रेम के मामले को शीघ्र निश्चय कराने की बात कह रही है। मैं कल किसी समय भी चण्डीगढ़ लौट जाऊँगा।'

सोमदेव मुस्कराता हुआ पूछने लगा, 'तो प्रैक्टिस बहुत बढ़ गयी है?'

इस पर मधुसूदन हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'यह बात नहीं। काम तो वैसा ही है जैसा पहले था। हाँ, राजनीति की लटक लग गयी है।'

'ओह! तो प्रधानमंत्री बनने की लालसा जाग पड़ी है?'

'वह कुर्सी तो बहुत ऊँची है। मैं उस पर चढ़ नहीं सकता। हम सब लोग मिल कर किसी अन्य को उस पर बैठाने का यत्न कर रहे हैं।'

'किसे वहाँ बिठाना चाहते हैं?'

'प्रधानमंत्री इन्दिरा जी के पुत्र संजय जी को।'

'परन्तु उसे तो यूथ-कांग्रेस आगे ला रही है।'

'हाँ और मैं पंजाब की यूथ कांग्रेस का प्रधान निर्वाचित हुआ हूँ।'

'आप?' सोमदेव ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, 'क्या आयु है आपकी?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस समय पैंतालीस वर्ष का हूँ। परन्तु सीने में अभी भी यौवन का उन्माद पाता हूँ।'

'तो नया विवाह करोगे?' सोमदेव कहता-कहता खिलखिला कर हँस पड़ा।

'विवाह नहीं। परन्तु इस इमर्जेंसी के उपरान्त चुनावों में मैं लोक सभा के लिये खड़ा होने की इच्छा करने लगा हूँ।'

'यह क्या उन्माद समा गया है आपके मन में?'

'मैं समझता हूँ कि कुछ इसका लुत्फ भी उठा लेना चाहिये। मेरे यूथ-कांग्रेस में सम्मिलित होने का फल तो सबसे पहले जगदीश को मिला है। उसे यहाँ पंजाब सरकार के कार्यालयों में स्टेशनरी सप्लाई करने का ठेका मिल गया है। लगभग पैंतीस-चालीस हजार का काम है। मैं समझता हूँ कि शीघ्र ही जगदीश को पूर्ण पंजाब के सरकारी कार्यालयों का काम मिल सकेगा। लाख डेढ़ लाख का काम होगा।'

सोमदेव ने बात बदल दी। उसने कहा 'तो आप चण्डीगढ़ में हो रहे कांग्रेस के अधिवेशन में भी कुछ काम कर रहे हैं?'

'मैं ही तो सब प्रबन्ध कर रहा हूँ। रिसैप्शन कमेटी का चैयरमैन तो वहाँ का एक सरदार है, परन्तु वह मिट्टी का माधव है।'

'तो आजकल आपकी पाँचों उंगलियाँ घी में हैं।'

मधुसूदन मुस्कराया। अब उसने प्रेम के विषय में बात आरम्भ कर दी, 'परन्तु आपने प्रेम के विषय में क्या विचार किया है?'

'वह अब सज्ञान है और विवाहित है। इस कारण मैं उसके विषय में विचार करने की आवश्यकता नहीं समझता।'

'परन्तु वह आपके घर में तो रहती है?'

'यह तो वह दिल्ली के सब-जज की स्वीकृति से यहाँ रहती है।'

'पर आज्ञा तो रद्द करायी जा सकती है।'

'ठीक है, ऐसा करा लीजिये। अभी तो वह सब-जज की स्वीकृति कहो अथवा आज्ञा कहो, उसके अनुसार यहाँ रहती है।'

'मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि एक हिन्दू लड़की को अपनी ससुराल जाकर रहने की राय तो देंगे ही।'

'हाँ। उस ससुराल को यदि वह स्वीकार करेगी। मुझे उसने बताया है कि उसने अदालत में यह लिखाया है कि वह वहाँ नहीं रहना चाहती क्योंकि उसका विवाहित उससे पेशा करवाना चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।'

'मगर यह तो झूठ है ?'

'तो रघुवीरसिंह को इसके विपरीत अर्जी करनी चाहिये।'

'पहले आप प्रेम को समझा लें, फिर वह भी किया जा सकेगा।'

'परन्तु भाई साहब ! मैं प्रेम की बात को सत्य समझता हूँ। इससे मैं उसे इस व्यक्ति के घर जाने की राय नहीं दे सकता।'

'जो कुछ सात-आठ मास पहले हुआ था, अब नहीं होगा। साथ ही अदालत में यदि मामला गया तो प्रेम इसका प्रमाण नहीं दे सकेगी।'

'मुझे बताया गया है कि शिमला के होटल के मैनेजर और वहाँ के बेयरा के बयान प्रेम के समर्थन में हो चुके हैं।'

'उसके खिलाफ गवाहियाँ उपस्थित की जा सकती हैं। मैं तो इसलिये आया हूँ कि मामला घर पर ही तय हो जाये तो ठीक है।'

'मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है !'

'भाई साहब ! मैं आपकी आपत्ति के विषय में कुछ नहीं पूछ रहा। मैं तो आपका इस विषय में सहयोग चाहता हूँ।'

'मेरा सहयोग केवल यहाँ तक ही है कि मैं राय दे सकता हूँ और प्रेरणा दे सकता हूँ।'

'इससे अधिक हम चाहते भी नहीं ?'

'ठीक है। प्रेम और उसकी माता की बात समाप्त हो जाये तो हम भी अपनी ओर से जोर लगा देंगे।'

भीतर लक्ष्मी और सुमित्रा, प्रेम से वार्त्तालाप उसके कमरे में कर रही थीं। एक घंटा भर के वार्त्तालाप के उपरान्त वे तीनों बाहर आयीं। मधुसूदन और सोमदेव भी वहाँ आ गये। उनके आने पर प्रेम ने कहा, 'मौसी ! बाबा को भी बुला लें। आखिर वह भी तो मेरे लिये जेल की हवा खा आये हैं ?'

रघुनाथ सहाय आया तो बात प्रेम ने ही आरम्भ की। उसने कहा, 'बाबा ! मेरे माता-पिता आये हैं और मुझे अपनी ससुराल जाने के लिये कह रहे हैं ?'

'और तुमने क्या निश्चय किया है ?' रघुनाथ सहाय का प्रश्न था।

'मैंने माँ को बताया है कि मैं मर जाऊँगी परन्तु अब वहाँ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाऊँगी ।'

'मैं समझता हूँ कि तुम एकान्त में बैठ अपने परमात्मा को स्मरण करती हुई निश्चय करो । इस प्रकार जल्दी से जीवन भर का निर्णय मत करो ।'

'ठीक है । मैंने यही माता जी से कहा है । मैंने कहा है कि यदि कल प्रातःकाल तक वे यहाँ रहे तो मैं अपने भविष्य पर विचार कर अंतिम बात कल प्रातःकाल तक बता दूँगी । परन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले मैं मौसी, मौसा और बाबा से जानना चाहती हूँ कि यदि मैं पति के घर न जाने का विचार बनाऊँ तो क्या मैं यहाँ रह सकूँगी ? आपकी स्वीकृति से मुझे इस पूर्ण जीवन का यह ध्रुव संकल्प लेने में सुविधा हो जायेगी ।'

'देखो प्रेम ! तुम्हारा निर्णय हमारे किसी प्रकार के आश्वासन के बिना होना चाहिये । एक ओर तुम्हारे पति का संरक्षण है और दूसरी ओर तुम अकेली हो । ऐसा विचार कर ही तुम इस भगीरथ संकल्प को लेने की बात करो । जब तुम निश्चय कर लोगी तब ही हम इस विषय पर विचार करेंगे कि प्रेम हम से किस प्रकार की आशा करती है और हम उस आशा की पूर्ति कर सकते हैं अथवा नहीं ।'

पूर्व इसके कि प्रेम इस पर कुछ कहे, सोम ने पिता की बात का समर्थन कर दिया ।

'तो माँ !' प्रेम ने अपनी माँ की ओर देख कर कहा, 'मैं आपकी सब युक्तिओं पर अब एकान्त में बैठ चिन्तन कर निर्णय करूँगी ।'

मधुसूदन को समझ आया कि प्रेम को रघुनाथ सहाय की ओर से आश्रय की आशा न रहने पर बात उसके पक्ष में जाने की सम्भावना हो गयी है । उसने रघुनाथ सहाय का धन्यवाद किया और प्रेम को अपने कमरे में जा विचार कर निर्णय करने को कह दिया ।

अगले दिन प्रातः के अल्पाहार के समय प्रेम ने अपना निर्णय बता दिया । उसने कहा, 'मैं रघुवीरसिंह के घर नहीं जा रही । मैं उसे अपना पति नहीं मानती । उसने अपने पति का अधिकार उस दिन ही समाप्त कर दिया था जिस दिन उसने मुझे अपने अफसर को प्रसन्न करने जाने के लिये कहा था । इस कारण, मैं वहाँ नहीं जाऊँगी ।

'हाँ, अगर माँ मुझे मैया जगदीश की सौगन्ध खा कर कहे कि वह मुझे रघुवीरसिंह के हवाले नहीं करेगी तो मैं माँ घर के जाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हूँ।'

इसका उत्तर मधुसूदन ने दिया। उसने कहा, 'देखो प्रेम! मैंने तुम्हारा कन्यादान रघुवीरसिंह के हाथ में किया था। मैं उसे बदल नहीं सकता। अब जब कि वह अपने किये पर पश्चात्ताप करता है तो तुम्हें वहां चले जाना चाहिये।'

'यह सब मैंने सुना है, समझा है और इस पर मनन किया है। मैं इतना कुछ करने के उपरान्त इस परिणाम पर पहुँची हूँ कि मुझे वहाँ नहीं जाना और अब पिता जी कि बात सुन मैं माँ के घर भी नहीं जा रही।'

'तो कहाँ जा रही हो?' सुमित्रा ने पूछ लिया।

'माँ, मैं अपना बिस्तर, सूटकेस इत्यादि यहाँ से जाने के लिये तैयार कर चुकी हूँ। परन्तु यहाँ से जाना मेरे और मौसी के बीच की बात है। आपका उससे कोई सम्बन्ध नहीं। आप जब चले जायेंगे तब मैं इनसे निश्चय करूँगी कि मुझे कहाँ जाना चाहिये।'

'कहाँ-कहाँ का विचार किया है?'

'यह आपको नहीं बताऊँगी। मैं नहीं चाहती कि आप वहाँ भी आकर मुझे तंग करें।'

सुमित्रा की आँखें लाल हो गयी थीं। प्रेम ने देखा और कह दिया, 'माँ! देखो, दो पथ हैं। एक है रघुवीर का और दूसरा है तुम्हारी लड़की प्रेम का। तुम चाहो तो लड़की के पथ में आ जाओ।'

'और तुम्हारे पिता जी को छोड़ दूँ?'

'जब वह अधर्म का पक्ष लेने लगे हैं तो और कर ही क्या सकती हो?'

'नहीं प्रेम! यह नहीं होगा, तुम नहीं समझ सकतीं। मेरे विवाह को पच्चीस वर्ष हो चुके हैं। वह सम्बन्ध इस प्रकार टूट नहीं सकता।'

इसका उत्तर प्रेम ने नहीं दिया। वह चुपचाप बैठी रही।

मेज पर खाने का सामान रखा था। परन्तु कोई भी खा नहीं रहा था। एकाएक मधुसूदन उठा और पत्नी से बोला, 'सुमित्रा, अब चलो। यह ठीक नहीं हो रहा। इसका परिणाम भी ठीक नहीं होने वाला।'

पति-पत्नी उठे और बिना खाये-पिये चल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वे चले गये तो प्रेम ने भी मेज पर से उठते हुए कहा, 'मौसी ! तो मैं भी जाऊँ ?'

लक्ष्मी ने दयनीय दृष्टि से पति की ओर देखा तो बाबा ने कह दिया, 'प्रेम बेटी ! तनिक समझने दो कि क्या हुआ है और क्या हो सकता है ।'

सोमदेव ने कहा, 'खाना खा लो । पेट भर कर विचार करोगी तो समस्या सरल प्रतीत होगी । मुझे तो इसमें कुछ भी विलक्षणता प्रतीत नहीं होती । मैं तुम्हारे माता-पिता से और तुम से भी कुछ ऐसी ही आशा कर रहा था । मेरा प्रस्ताव है कि भोजन कर पीछे विचार करेंगे और यदि विचार अब न हो सका तो सायंकाल की चाय पर भी विचार किया जा सकता है । मुझे सुप्रीम कोर्ट में पहुँचना है क्योंकि लाइसेंस मिलने के बाद आज पहले केस में मैं उपस्थित हो रहा हूँ ।'

अल्पाहार समाप्त होने से पूर्व ही सोम ने अपना निर्णय बता दिया, 'प्रेम इस घर में तब तक रह सकती है, जब तक चाहे अथवा जब तक रह सके ।'

'तो मौसा जी ! आप यह भी समझते है कि यह मेरे बस में नहीं भी रह सकता कि मैं यहाँ रहूँ ?'

'देखो बेटी ! न तो मैं सदा इस घर में रह सकने का दावा कर सकता हूँ और न ही कोई अन्य कर सकता है । हम प्राणी अन्त वाले हैं । हम में से कोई भी यहाँ सदा रहने का दावा नहीं कर सकता ।'

इस पर बात समाप्त हो गई ।

सोमदेव ने कहा, 'मैं तुम्हारे विषय में शेष विचार कुछ दिन उपरान्त करूंगा । शेष से मेरा अभिप्राय शेष जीवन के विषय में ही है ।'

सोमदेव जब न्यायाधीश के सामने मुकद्दमे में उपस्थित हुआ तो न्यायाधीश उसे सामने खड़े देख विस्मय में पड़ गया । वह अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सका ।

जब सोमदेव अपना मुकद्दमा उपस्थित कर चुका तो शेष सुनवाई की तारीख देने के उपरान्त जज ने उठते हुए कहा, 'मैं आपसे अपने कमरे में मिलना चाहूँगा ।'

सोमदेव ने पूछ लिया, 'किस समय, श्रीमान् ?'

'अभी ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमदेव कोर्ट-रूम से सीधा जज के कमरे में जज के पीछे-पीछे वहाँ जा पहुँचा। जज ने सोमदेव को बैठाते हुए कहा, 'आप छोड़ दिये गये हैं अथवा जेल से दीवार फाँद कर आये हैं ?'

'श्रीमान् ! मैं सीधे रास्ते से ही आया हूँ। मैं हिसार जेल में बंदी था। वहाँ से छोड़ने के पहले दिल्ली तिहाड़ जेल में लाया गया और वहाँ से मुख्य द्वार से ही और नियमित छूट पर हस्ताक्षर कर बाहर किया गया था।'

'मैं इसलिये पूछ रहा हूँ कि दो दिन हुए मैंने होम मैम्बर साहब से आपको छोड़ देने के लिये कहा था और वह कह रहे थे कि चाहे सब दुनिया छोड़ दी जाये परन्तु आप नहीं छूट सकते। आप जैसों के अपराध को रोकने के लिये ही तो इमर्जेंसी लगी है ?'

सोमदेव ने कह दिया, 'सर ! वह बहुत ही व्यस्त अधिकारी हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि आपका प्रश्न वह न समझे हों और यदि समझे हों तो छोड़ देने की आज्ञा को ही भूल चुके हों। साथ ही अभी तीन दिन हुए मेरे लाइसेंस को पुनः जीवित करने की आज्ञा रजिस्ट्रार साहब को उन्हीं के कार्यालय से आयी है।'

इस बात ने जस्टिस महोदय का समाधान कर दिया। इस पर भी उसने सोमदेव के जाने के उपरान्त रजिस्ट्रार को बुलाया और सोमदेव के लाइसेंस के विषय में पूछ लिया।

रजिस्ट्रार ने बताया, 'सोमदेव का लाइसेंस होम मिनिस्ट्री से आज्ञा आने पर ज़प्त हुआ था। इस कारण मैंने उसकी याचिका वहीं भेज दी थी। तीन दिन हुए वहाँ से याचिका स्वीकार करने का आदेश आया है।'

जस्टिस महोदय को सोमदेव की बात अधिक सम्भव प्रतीत हुई कि होम मिनिस्टर साहब कार्य के अधिक होने के कारण भूल ही गये हैं कि सोमदेव छूट चुका है और वह किसी अन्य के विषय में ही कह रहे होंगे कि वह कभी छूट नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

चण्डीगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन पंजाब सरकार की सहायता से बहुत घूमधाम से मनाया गया। जो विशेष बात वहाँ हुई और जिसने पूर्ण देश का काँटा बदलने में सबसे अधिक योगदान दिया, वह था युवा कांग्रेस का सब प्रबन्ध अपने हाथ में ले लेना।

विषय-निर्धारणी समिति में भी वे सब सदस्य जो स्वागत-कारिणी समिति का प्रतिनिधित्व करते थे, प्रायः युवा कांग्रेस की ओर से ही थे और स्वाभाविक रूप में इसका परिणाम यह हुआ था कि प्रधानमन्त्री की अपेक्षा प्रधानमन्त्री के पुत्र को प्रमुखता मिल रही थी।

चण्डीगढ़ से संजय को पंजाब और हरियाणा के मुख्य-मुख्य नगरों में भी घूमने तथा सार्वजनिक सभाएँ करने का अवसर मिला। युवा कांग्रेस में प्रायः वे युवक थे जो किसी समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रभाव में रह चुके थे, परन्तु प्रमुख स्वयंसेवक न होने के कारण पकड़े नहीं गये थे और जो अपनी जान बचाने के लिए युवा कांग्रेस का आश्रय ले रहे थे।

इस कारण अथवा कुछ अन्य कारणों से संजय के भाषणों में झुकाव कम्युनिस्टों के विपरीत और प्राचीन भारतीयता की ओर दिखाई देने लगा। प्रायः युवकों ने इसका स्वागत किया। परन्तु जवाहरलाल नेहरू कालीन कांग्रेसियों और इन्दिरा गांधी के सन् १९६९ के उपरान्त बने साथियों में इससे हलचल मच गयी।

उन्हें इमर्जेंसी का यह अप्रत्याशित परिणाम दिखाई देने लगा। सबसे पहले कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों में, जो इन्दिरा गांधी का, इमर्जेंसी के लगाने में खुलकर समर्थन कर रहे थे, विचार करने की आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव हुई ।

कम्युनिस्टों से उतरकर, कम्युनिस्ट सहयात्रियों को भी अपनी स्थिति पर विचार करने का अवसर आ उपस्थित हुआ और साज़िश की जाने लगी कि घटनाओं और विचारों के इस प्रभाव को कैसे रोका जाये ।

अब सीधे अथवा घुमाव-फेराव से यह प्रस्ताव प्रधानमन्त्री और उसके इमर्जेंसी में सहयोगियों को पहुँचने लगे कि नये निर्वाचन कराने चाहिएँ । इससे अच्छा अवसर अन्य कोई नहीं हो सकता ।

नये निर्वाचन का अभिप्राय था इमर्जेंसी उठाना अथवा इसे बहुत सीमा तक ढीला करना । इमर्जेंसी में सबसे विकट घटना यह होती रही थी कि सरकारी समाचार एजेंसी के अतिरिक्त भी समाचार-पत्रों के पास देश के समाचार आते रहते थे । यद्यपि सेंसर की छननी से न छन सकने से छपते नहीं थे । इस पर भी वह समाचार-पत्रों के कार्यालयों में जमा हो रहे थे । प्रधानमन्त्री और उसके परामर्शदाता यह समझ रहे थे कि इमर्जेंसी ढीली करते ही यदि वे सब समाचार पब्लिक में आने लगे तो अति भयावह स्थिति हो सकती है । इतना सब जानते थे कि इमर्जेंसी के दिनों में नौकरशाही ने अपनी मनमानी खूब चलाई थी ।

इस कारण अब पुराने कांग्रेसियों को नये निर्वाचनों के पक्ष में होते देख कांग्रेस के उच्च अधिकारियों में विवाद चल पड़ा ।

यद्यपि लोकसभा के निर्वाचन एक अन्य वर्ष के लिए स्थगित हो चुके थे और उसके अनुसार सन् १९७८ तक रोके जा सकते थे, परन्तु चण्डीगढ़ के कांग्रेस अधिवेशन के उपरान्त लोकसभा के चुनावों को एक वर्ष के लिए और स्थगित करना भययुक्त कहा जाने लगा ।

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह की बात है कि रविवार के दिन सोमदेव मध्याह्न का भोजन कर विश्राम के लिए अपने कमरे में जाने वाला था कि एक अपरिचित व्यक्ति उनसे मिलने की स्वीकृति प्राप्त कर उनके कार्यालय में आ उपस्थित हुआ । सोमदेव ने उस व्यक्ति को सामने बैठाते हुए पूछा, 'आपका परिचय ?'

'श्रीमान्, मैं मुहम्मद अफज़ल हूँ । मुरादाबाद के डाक्टर असलम जिलानी का लड़का । दो सन्देश लेकर आया हूँ ।'

'हाँ, फरमाइये ।' सोमदेव ने कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एक तो यह कि कल रात डाक्टर राधाकृष्ण साहब मीसा के मातहत पकड़ लिये गये हैं और किसी अनजान जगह पर ले जाये गये हैं।

'दूसरी बात यह है कि मेरी बहन शीरीं इस समय हामला है। वह आपकी पनाह में आकर रहना चाहती है जिससे होने वाली उनकी औलाद का आपसे ताल्लुक ज़ाहिर हो सके।'

दोनों ही समाचार सोमदेव को परेशान करने वाले थे। परन्तु उसने एक सूझ-बूझ रखने वाले वकील की भाँति अपने पर नियन्त्रण कर कहा, 'जहाँ तक पहली खबर का ताल्लुक है, मैं आपका मश्कूर हूँ कि आपने आकर बताने की तकलीफ की है। मगर उसमें मैं कुछ नहीं कर सकता।

'जहाँ तक दूसरी खबर का ताल्लुक है, उसकी मुझे पहले से किसी किस्म की इत्तला नहीं। इसलिए यदि शीरीं के पास किसी किस्म का इस बात का सबूत है तो वह आ जाये। मैं उन सबूतों को देखकर ही इसकी बाबत बता सकूँगा।'

"ठीक है, वालिद शरीफ यही कहते थे। वह अपने दामाद राधाकृष्ण साहब के वालिद से इसी जवाब की उम्मीद रखते थे। अगर आप कहें तो बहन कल हाजिर हो अपने सबूत आपके सामने रख सकती है।'

'ठीक है, उसे कह देना कि वह जल्द से जल्द यहाँ चली आए। इस मामले में मैं देरी पसन्द नहीं करूँगा।'

इसके बाद मुहम्मद अफजल का परिचय होने लगा।

उसने बताया, 'मैं अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का तालिब इल्म हूँ। यूनिवर्सिटी आजकल बन्द है और मैं घर पर ही था जब डाक्टर साहब के पकड़े जाने का वाकया हुआ है।

'वालिद साहब भी उसी हस्पताल में काम करते हैं जहाँ डाक्टर राधाकृष्ण आजकल काम कर रहे हैं।'

सोमदेव ने इस नौजवान के लिए वहीं चाय इत्यादि मँगवा ली और उसे शीघ्रातिशीघ्र अपनी बहन को लाने के लिए कह कार्यालय से ही वापस भेज दिया।

मुहम्मद अफज़ल के जाते ही सोमदेव घर के भीतर आ लक्ष्मी और बाबा को ये दोनों समाचार सुनाने लगा। उसने अपने उत्तर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बता दिए। रघुनाथ सहाय का कहना था, 'मुझे इस दूसरे समाचार पर विश्वास नहीं आ रहा।'

लक्ष्मी ने कुछ विचार कर कहा, 'बाबा! हमें अपने विश्वासों के आधार भी बदलने पड़ेंगे। मुझे इस घटना में कुछ भी अनहोनी बात समझ नहीं आई। कुछ संकेत एक पत्र में राधा ने दिया भी है।

'यह तो हम जानते ही थे कि राधाकृष्ण, डाक्टर असलम की कोठी में रहता था। इससे यह सम्बन्ध हो जाना किसी प्रकार असम्भव प्रतीत नहीं होता।'

रघुनाथ सहाय बदलते ज़माने को देख पतोहू का मुख देखता रह गया। उसके मुख से निकल गया, 'हाँ, यात्रा में हम काफी दूर तक चले आए हैं।'

'परन्तु', सोमदेव ने कहा, 'विवाह किसी रीति से भी हुआ हो, सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान तो वही है जो मानव-इतिहास में किसी भी समय था। इस प्रक्रिया में तो इन्सान ने कोई नई ईज़ाद अभी तक नहीं की।'

'वह भी होनी जरूरी है।' रघुनाथ सहाय ने आँखें मूँदे हुए कहा, 'यह भी होगा। राज्य-बल से नसबन्दी का व्यापक प्रचार होने से जब सरकार को भावी युद्धों के लिए सैनिकों की आवश्यकता पड़ेगी तो कृत्रिम सैनिक निर्माण करने पड़ेंगे।'

'हाँ, और उसकी शुरूआत हो गई है। आज से बीस वर्ष उपरान्त युद्ध कम्प्यूटर लड़ा करेंगे। कम्प्यूटर ही टैंकों और मशीनगनों पर बैठे हुए शत्रु सेना के कम्प्यूटरों पर आक्रमण किया करेंगे। कम्प्यूटर ही युद्ध सामग्री उनको पहुँचाया करेंगे।'

लक्ष्मी हँस पड़ी। वह बोली, 'बाबा! यह तब होगा जब नगरों में भी युद्ध का निर्णय सुनने वाले कम्प्यूटर ही रह जायेंगे।'

इस पर रघुनाथ सहाय हँस कर बोला, 'तब ठीक है, न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।'

परन्तु बाँसुरी इस तरह बजी कि उसी रात आठ बजे सोमदेव भी पकड़ लिया गया। वह पुनः 'मीसा' के अधीन पकड़ा गया था।

जब पुलिस वकील साहब को ले गई तो रामचन्द्र ने अपने मित्र सोहनलाल को टेलीफोन किया। होम-मैम्बर के घर से सोहनलाल बोला। सोमदेव तथा उसके लड़के राधाकृष्ण के पकड़े जाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार बताने पर सोहनलाल ने कहा, 'राम ! रात के ठीक दस बजे टेलीफोन करना तो कुछ बता सकूँगा। इस विषय में मुझे कुछ पता नहीं और पी० ए० साहब इस समय यहाँ नहीं हैं।"

रघुनाथ सहाय और लक्ष्मी रामू के पास खड़े थे। वे जानना चाहते थे कि उस तरफ से क्या समाचार आता है। जब रामू ने बताया कि सोहनलाल को इस घटना के विषय में कुछ ज्ञान नहीं और उसने रात के दस बजे पूछने को कहा है तो बाबा और उसकी पतोहू चुपचाप अपने-अपने कमरों में जाकर लेट गये।

प्रेम को भी घर में हुई दुर्घटना का पता चला तो वह अपने कमरे से निकल लक्ष्मी के कमरे में जा पहुँची। लक्ष्मी ने पूछा, 'प्रेम, किस काम से आई हो ?'

'मन में आया है कि मुझे आपके कमरे में सोना चाहिए।'

'प्रेम बेटी ! इसकी आवश्यकता नहीं। मैं समझती हूँ कि पीछे छः मास निकल गये थे और अब भी यह समय निकल जायेगा।'

'पर मौसी ! मेरे यहाँ सोने से तुम्हें कष्ट होगा क्या ?'

'कष्ट नहीं। फिर एक पलँग यहाँ लगवाना पड़ेगा।'

'वह कल देख लेंगे। अभी मैं भूमि पर बिस्तर लगा लेती हूँ।'

'इसकी क्या आवश्यकता है ? मेरे साथ ही यहाँ सो जाओ।'

दोनों एक ही पलँग पर अपनी-अपनी रजाई में लिपटी हुई सो गईं।

अगले दिन रघुनाथ सहाय कचहरी में पुत्र से मुलाकात की याचिका देने चला गया। याचिका देकर वह मुरादाबाद भी जाने का विचार रखता था। वहाँ राधाकृष्ण के विषय में पता करना था कि वह किस जेल में है और कब उससे मुलाकात हो सकेगी।

डी० एम० के कार्यालय से पता चला कि सोमदेव को इस बार तिहाड़ जेल में रखा गया है और बृहस्पतिवार उससे भेंट हो सकेगी। यह सोमवार था।

वह मध्याह्नोत्तर चार बजे डी० एम० के कार्यालय से लौटा तो लक्ष्मी मुरादाबाद के डाक्टर की लड़की शीरीं के साथ ड्राइंगरूम में बैठी थी। लड़की का भाई मुहम्मद अफज़ल बाहर वकील साहब के दफ्तर में बैठा था।

प्रेम लड़की के दूसरी ओर बैठी थी। रघुनाथ सहाय आया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नयी लड़की को घर की दोनों स्त्रियों के बीच में बैठा देख लौटने लगा कि प्रेम ने आवाज़ दे दी, 'बाबा ! आइये, इस नये जीव के आपको दर्शन करायें ।'

रघुनाथ सहाय बैठा तो सेवक को चाय लाने के लिए कह दिया गया । बात प्रेम ने कही, 'बाबा ! यह शीरीं हैं, मुरादाबाद से आयी हैं ।'

रघुनाथ सहाय को पहले दिन मुरादाबाद से एक मुहम्मद अफ़ज़ल के आने की याद आ गई । उसने पूछा, 'तो यह अकेली आई हैं ?'

'नहीं बाबा ! इनका भाई साथ आया है और वह बाहर कार्यालय में बैठा है ।'

'तो यह क्या चाहती है ?'

'कहती है कि भैया ने इससे विवाह किया है और उसके प्रमाण स्वरूप भैया ने इसे एक पत्र दिया है । वह पत्र यह लाई है ।'

'देखें ।'

शीरीं ने अपने पर्स में से देवनागरी में डाक्टर राधाकृष्ण के लैटर-हैड पर लिखित पत्र दिखा दिया ।

रघुनाथ सहाय ने पत्र देखा । उस पर लिखा था, 'आज ५ अक्टूबर सन् १९७६ के दिन मैंने डाक्टर असलम की लड़की शीरीं से विवाह किया है । यह लिखकर दे रहा हूँ जिससे किसी दुर्घटना हो जाने पर यह दोनों में सम्बन्ध का प्रमाण रह सके ।'

बस इतना ही लिखा था और नीचे राधाकृष्ण के हस्ताक्षर थे ।

इसका अभिप्राय यह था कि न तो कोर्ट में जाकर शादी रजिस्टर कराई गयी थी और न ही किसी मुल्ला-मौलाना से निकाह पढ़ाया गया था ।

रघुनाथ सहाय ने राधाकृष्ण का लेख पहिचान लिया और चिट्ठी शीरीं को वापस देकर कहा, 'इसे सुरक्षित रखो । यह एक अत्यावश्यक दस्तावेज़ है ।'

शीरीं ने पत्र अपने पर्स में रख लिया । रघुनाथ सहाय ने कह दिया, 'देखो बेटा शीरीं ! तुम्हें अब इस घर में रहना होगा ।'

अब शीरीं ने मुख खोला, 'मुझे कल उनसे जेल में मुलाकात के के लिए जाना है ।'

'राधाकृष्ण की माता जी तुम्हारे साथ जाएँगी ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं कल सुबह छः बजे की रेलगाड़ी से जाना चाहूँगी, जिससे बारह बजे वहाँ पहुँच जाऊँ और फिर घर पर खाना खाकर तीन बजे मुलाकात के लिए जेल में पहुँच सकें।'

'हो जायेगा, चिन्ता मत करो। तुम्हारा भाई कब जाना चाहेगा ?'

'यह तो उससे पूछने पर ही पता चलेगा।'

मुहम्मद अफज़ल को भी भीतर बुला लिया गया और सब चाय लेने लगे। चाय लेते हुए रघुनाथ सहाय ने पूछ लिया, 'बेटा अफज़ल! कब लौटने का विचार है ? तुम्हारी बहन तो अब यहीं रहेगी।'

'मगर कल इसने डाक्टर साहब से मुलाकात के लिए जाना है ?'

'उसके लिये प्रबन्ध यहाँ से होगा। तुम साथ भी जा सकते हो और चाहो तो पहले भी जा सकते हो।'

भाई ने बहन की ओर देखा तो शीरीं ने कह दिया, 'भाई जान! तुम हमारे साथ ही कल सुबह की गाड़ी से चलना। मैं कल सायंकाल यहाँ लौट आऊँगी।'

अब प्रेम और शीरीं का, एक ही कमरे में सोने का प्रबन्ध हो गया।

चाय के उपरान्त लक्ष्मी बाबा के कमरे में गयी तो बाबा ने बताया, 'यहाँ मुलाकात बृहस्पतिवार को होगी। अब फिर भाग-दौड़ आरम्भ होगी।'

'मैं समझती हूँ मुरादाबाद मोटरगाड़ी से ही जाया जाये तो ठीक रहेगा। चार घण्टे का मार्ग है। रात आठ-साढ़े-आठ बजे तक लौट आयेंगी।'

'अकेली, इस अपरिचित लड़की के साथ जा सकोगी ?'

'मैं समझती हूँ कि कल आप साथ चलें और इसके बाद उसके ख्यालात जानने का अवसर मिलेगा। तब भविष्य के विषय में विचार कर लिया जायेगा।'

'ठीक है।'

अब लक्ष्मी ने बताया कि इस लिखा-पढ़ी के विषय में शीरीं कहती है कि राधाकृष्ण ने स्वेच्छा से लिखकर दिया है। इस पर भी यह तो स्पष्ट ही है कि यह राधाकृष्ण के एहद पर यकीन रखती थी। राधाकृष्ण ने इसे पहले ही बता रखा होगा कि उसके पकड़े जाने का डर है। इस कारण यह चिट्ठी उसकी सहायता करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लड़की कैसी लगी है ?'

'प्रेम जितनी सुन्दर तो नहीं है। मगर उससे ज्यादा अक्लमन्द मालूम होती है। इस विषय में अभी और जानने की जरूरत है।'

'प्रेम में कुछ खराबी दिखाई नहीं देती थी।'

'मैंने उसे कहा था कि वह अपने पति को तलाक दे दे तो राधाकृष्ण को विवाह के लिए राजी किया जा सकता है।

'प्रेम ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था। उसका कहना था, "मैं अपने को डाक्टर साहब के योग्य नहीं समझती। मैं अपने पति को स्वयं तलाक नहीं दूंगी। उसकी हिम्मत है तो वह मुझे तलाक दे। तब मैं स्वीकार कर लूंगी। इस पर भी अब विवाह की लालसा नहीं रही।"

'बाबा।' लक्ष्मी ने आगे कहा, 'मुझे पता चला है कि वह किसी अन्य से मुहब्बत करती थी परन्तु वह इसकी परवाह नहीं करता। उसका विवाह हो चुका है और उसकी विवाहिता, प्रेम कहती है कि शारीरिक सौन्दर्य में पचास प्रतिशत है। इस पर भी वह उससे प्रेम करता है।

'प्रेम से उसका मेल भी हुआ था। केवल एक बार और उसके उपरान्त उसने कह दिया है कि वह अपनी पत्नी से सर्वथा सन्तुष्ट है।'

रघुनाथ सहाय ने मुस्कराते हुए कहा, 'तो यह बात है ?'

'क्या बात है ?' लक्ष्मी ने बाबा का अर्थ न समझते हुए पूछ लिया।

'मेरा मतलब है, प्रेम और राधा के विवाह का निश्चय प्रेम के मन की कल्पना के अतिरिक्त था।'

'प्रेम ने उस प्रोफेसर से मेल-जोल केवल खेल समझकर उत्पन्न किया था, परन्तु, पीछे जब वह उसके लिए प्रबल आकर्षण अनुभव करने लगी तो उसका विवाह रघुवीरसिंह से निश्चय हो चुका था।

'रघुवीरसिंह से अरुचि तो वह राधा के प्रति कृतज्ञता के कारण समझी थी परन्तु पीछे ससुराल से भाग आने पर और यहाँ रहते हुए उसे यह समझ में आया है कि उसके प्रेम का लक्ष्य राधा नहीं, वरन् नेहरू विश्व-विद्यालय का प्रोफेसर है। जब से उसे यह समझ आया है वह राधा को भाई के रूप में स्वीकार करती है।

'मैंने राधा के मुरादाबाद जाने से पहले उसके मनोभावों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने का भी यत्न किया था। उसने बताया था कि वह प्रेम के प्रति किसी प्रकार का न तो आकर्षण और न ही तिरस्कार अनुभव करता है।

'उसके बाद आज की स्थिति तो आपके सम्मुख है। मैं जो मन में संशय कर रही हूँ कि वह यह विवाह है क्या ?'

'कानून की दृष्टि से यह विवाह नहीं है। परन्तु धर्म की दृष्टि से मैं इसे विवाह ही समझता हूँ। मनु ने इसे गन्धर्व विवाह कहकर स्वीकार किया है।

'ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय मन के आवेग में सम्बन्ध बना है और यह दस्तावेज लिखकर राधा ने अपने शरीफज़ादा होने का प्रमाण दे दिया है।

'एक बात मुझे यह भी प्रतीत होती है कि राधा वहाँ भी संघर्ष-समिति का कार्य करता रहा है। इसी का उसने अपने पत्र में संकेत किया है। उसने कहा है कि किसी दुर्घटना होने की अवस्था में यह पत्र अर्थयुक्त हो जायेगा।'

अगले दिन रघुनाथ सहाय, लक्ष्मी, शीरीं और शीरीं का भाई मुहम्मद अफज़ल वर की मोटरगाड़ी में सवार हो मुरादाबाद के लिए चल पड़े। प्रेम का पहली रात तो मुरादाबाद जाने का विचार था परन्तु प्रातः उसने बताया कि मैं साथ जाने में कोई कारण नहीं समझती, फिर कभी चलूंगी।

: २ :

मुरादाबाद में डाक्टर असलम शीरीं की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। यद्यपि मुहम्मद अफज़ल ने बताया था कि डाक्टर राधाकृष्ण के पिता ने इससे विवाह का प्रमाण माँगा है और कहा है कि प्रमाण ठीक होगा तो वह उसको स्वीकार कर लेगा।

इस पर भी जब तक शीरीं को वे स्वीकार नहीं करते तब तक वह सर्वथा निश्चिन्त अनुभव नहीं करता था।

दिल्ली से सात बजे चले हुए साढ़े ग्यारह बजे वे मुरादाबाद पहुँच गये और मुहम्मद अफज़ल जो अगली सीट पर ड्राइवर के साथ बैठा था, उसे मार्ग दिखाता हुआ डाक्टर साहब के मकान पर ले गया।

मोटर के द्वार पर पहुंचते ही डाक्टर और शीरीं के तीन छोटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई द्वार पर आ खड़े हुए। आयी तो असलम की माँ रहीमन भी थी, परन्तु वह शीरीं के साथ एक वृद्ध पुरुष को देख द्वार पर से लौट पर्दे के पीछे जा खड़ी हुई।

रघुनाथ सहाय तथा राधा की माँ लक्ष्मी की भी वह आशा नहीं कर रहे थे।

सबको कोठी के बरामदे में बैठाया गया। इनके वहाँ बैठते ही शीरीं भीतर माँ के पास चली गयी और मुहम्मद अफज़ल राधा के सम्बन्धियों का अपने वालिद से परिचय कराने लगा।

परिचय के उपरान्त डाक्टर असलम ने राधा और शीरीं के सम्बन्धों की चर्चा कर दी। उसने कहा, 'मैं एक ख्याल से मुसलमान नहीं हूँ, अगरचे अपने दिमाग से मैं अपने को एक कट्टर मुसलमान मानता हूँ।

'मैं कुरआन शरीफ को इल्हामी किताब समझता हूँ मगर मैं उस इल्हाम के उतरने के लिए अरब देश और वहाँ की जनता को उचित स्थान नहीं समझता। इल्हाम का लाने वाला पैगम्बर तो आला शखसीयत था मगर जिनको इल्हाम सुनाया गया, वह एक टूटे छकड़े पर केसर लादने की मिसाल है। गन्दे छकड़े पर बढ़िया शै लाद दी जाए तो शै भी कुछ मैली, कहीं-कहीं गन्दी हो जाती है।

'यह तो हम केसर-कस्तूरी के प्रयोग करनेवालों का काम है कि छकड़े पर लदे माल को साफ कर ही इस्तेमाल करें।

'यह है मेरा कुरआन के बारे में कन्सैप्ट।

'इसीलिए मेरे दोस्त मुसलमान मुझे काफ़िर कहते हैं और मुझे हर रोज कुरआन पढ़ते देख हँसते हैं और मुझे नमाज को पलीद करता हुआ मानते हैं।

'मेरे इन ख्यालों का ही यह नतीजा है कि मैं किसी फिरके के रस्मो-रिवाज को एक बदलने वाली शै समझता हूँ।

'एक दिन शीरीं और डाक्टर राधाकृष्ण शाम के वक्त आये और बोले कि उन्होंने शादी का इरादा कर लिया है तो मैंने दोनों की पीठ पर प्यार देकर मुबारकबाद दे दी।

'शीरीं की अम्मी की गाड़ी उतनी तेजी से नहीं चलती जितनी मेरे दिमाग की गाड़ी चलती है। इस वजह से वह इनकी शादी की बात सुन ऐसे लपक कर उठी मानों इसे बिच्छू ने डंक मारा हो। मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों को प्यार कर शीरीं की माँ से कहा, "बेगम ! परेशान किसलिये हो ? क्या डाक्टर में कुछ नुक्स देख रही हो ?"

"मगर हज़रत ! शादी की रस्म ?" उसका कहना था।

"तो बिना रस्म के भी कोई काम होता है। बेगम, तुम तो जानती हो कि मैं तरीके को ही रस्म मानता हूँ। बिना मुनासिब तरीके के भला शादी कैसे हो सकती है ?"

'मेरी बात सुन वह मुस्करा दी और बोली, "शीरीं, जरा भीतर चलो। मैं जानना चाहती हूँ कि किस तरीके से शादी करोगी ?"

'इस पर दोनों भीतर कमरे में चली गयीं। दस मिनट की गुफ़्तगू के बाद आधी रज़ामन्दी के साथ वह आई और बोली, "शीरी के अब्बा ! इनकी कोर्ट में ले जाकर शादी रजिस्टर करवा दो।"

'मैंने डाक्टर राधाकृष्ण से पूछा, "क्यों डाक्टर, तुम क्या चाहते हो ?"

'उसका कहना था, "अब्बाजान ! जिस तरह से भी शीरीं तसल्ली करना चाहे, कर सकती है। मुझे तसल्ली है और मैं इसे प्रसन्न करने के लिए तैयार हूँ।"

'अपनी माँ की तजवीज़ का जवाब शीरीं ने दिया। उसने कहा, "मैजिस्ट्रेट से भी बहुत बड़ी हस्ती की गवाही हमने शादी की रस्म पर हासिल कर ली है। मेरा मतलब खुदाबन्द करीम रहीम से है। मैं मुरादाबाद के किसी भी जज को उससे ज्यादा मोतबिर नहीं मानती और मैं खुदाबन्द की तौहीन करने किसी भी अदालत में नहीं जाऊँगी।"

'इसके बाद उसने कहा, "अब्बाजान ! मैंने अम्मी को अपने ख्यालात बता दिए हैं। मुझे आपके दामाद पर बहुत भरोसा है।"

'मैंने बेगम को समझाया कि शीरीं ठीक कहती है। वह बहुत मुश्किल से मानी थी।

'मगर पीछे के इनके ताल्लुकात से अभी तक किसी भी किस्म की शिकायत की वजह पैदा नहीं हुई। शादी का ऐलान किये दो महीना से ज्यादा हो चुके हैं।

'डाक्टर तीन दिन हुए पकड़ा गया। शीरीं ने बताया कि वह इसकी रज़ामन्दी से आजादी हासिल करने की कोशिश में लगा था और हम किसी भी दिन इनके पकड़े जाने की उम्मीद कर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मगर यहाँ के डी० एम० मेरे गहरे दोस्त हैं। उनका कहना है कि डाक्टर राधाकृष्ण तो सीधे दिल्ली के होम-मैम्बर के हुक्म से पकड़ा गया है। उसका पकड़ा जाना यहाँ के किसी किस्म के अमालों का नतीजा नहीं।'

रघुनाथ सहाय ने बताया, 'यह सब हमें मालूम है कि इसे किसी अफ़सर के जाती तनाजे की वजह से पकड़ा गया है। उसी वजह से डाक्टर राधाकृष्ण के वालिद भी पकड़े गये हैं।

'डाक्टर की एक मौसिया बहन है। वह अपने खाविन्द से झगड़ कर हमारे घर में रहती है। उस लड़की के ससुराल वाले यह समझते हैं कि लड़की डाक्टर से मुहब्बत करती है। हम सब जानते हैं कि यह बात ग़लत है। मगर वे लोग युवा कांग्रेस के कार्यकर्त्ता होने से डाक्टर और उसके वालिद को पकड़वाने में कामयाब हो गये हैं।

'हम लोग दोनों के केस पर नजरसानी करवाने की कोशिश कर रहे हैं।'

ठीक तीन बजे शीरीं और लक्ष्मी डाक्टर राधाकृष्ण से मिलने जेल में गयीं। राधाकृष्ण, शीरीं और माँ को इकट्ठे खड़े देख माँ की चरण-वन्दना कर मुस्कराते हुए पूछने लगा, 'माँ! कैसी लगी है शीरीं?'

'बेटा! तुमने पसन्द की है तो मुझे न-पसन्द कैसे हो सकती है? मैं तो यही कह सकती हूँ कि तुम्हारी पसन्द गलत नहीं।

'यह कल दिल्ली गई थी। रात वहाँ रहकर आई है। तुम्हारे बाबा भी यहाँ आये हैं और इसके वालिद शरीफ से परिचय बढ़ा रहे हैं।

'तुम्हारे पिता फिर पकड़े गये हैं और इस समय तिहाड़ जेल में हैं। हमें यह पता चला है कि यह मधुसूदन कपूर की शरारत है।'

'प्रेम कैसा अनुभव करती है?'

'वह तुम्हारे इस फेल पर सन्तुष्ट है।'

'तब ठीक है। माँ, जेल का डाक्टर आज आया था और कह रहा था कि मेरा ट्रांसफर दिल्ली हो रहा है।'

'मगर हमें कैसे पता चलेगा?'

'मैं कोशिश करूँगा कि शीरीं के वालिद साहब को पता चल जाये। मैं उम्मीद करता हूँ कि अगले सप्ताह आपको इतनी दूर आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तकलीफ नहीं करनी होगी।'

माँ अपने लड़के के लिए फल, मिठाई और बिस्कुट इत्यादि लाई थी। वह उसने दिए और उस दिन की मुलाकात शीरीं की बातों में ही समाप्त हो गई।

शीरीं ने मोटर में दिल्ली लौटते हुए लक्ष्मी को बताया, 'अम्मी ! मेरी अम्मी आपसे मिल अजहद खुश हैं।'

'सत्य ? भला क्या खूबी देखी है उसने मुझमें ?'

'यह तो उसने बताया नहीं। मगर इतना कहा है कि आपसे मिलकर उसे मेरे मुत्तअल्लिक अब किसी किस्म का डर नहीं रहा।'

'ओह ! तो उनका ख्याल था कि मैं कोई खूंखार जानवर हूँ।'

'अम्मी ! खूंखार जानवर से खूंखार इन्सान ज्यादा डरने की चीज है। जानवर तो अपना गुस्सा निकालने का एक ही तरीका जानता है। वह यह कि पेट फाड़कर हमें मार डाले, मगर खूंखार इन्सान तो अपनी नाराज़गी जाहिर करने के एक सौ एक तरीके तजवीज कर सकता है। हैवान के एक तरीके का मुकाबला सोचा जा सकता है परन्तु इन्सान के एक सौ एक तरीकों का मुकाबला मुश्किल से हो पाता है।'

शीरीं ने हँसते हुए आगे कहा, 'मेरी अम्मी आज कह रही थीं कि डाक्टर साहब की अम्मी तो पालतू गाय लग रही हैं।'

इस पर लक्ष्मी ने हँसते हुए कह दिया, 'तो मैं उनको दूध देती गाय दिखाई दी हूँ ?'

'शीरीं की अम्मी ने ठीक ही समझा है।' रघुनाथ सहाय ने हँसते हुए कह दिया, 'लक्ष्मी के दूध का रस तो हम सबको मिलता ही है।'

इस पर तीनों हँसने लगे।

रघुनाथ सहाय ने बात बदल दी। उसने कहा, 'मैं शीरीं के अब्बाजान के मजहब के मुतअल्लिक ख्यालात सुनकर बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ।'

'क्या कहा है उन्होंने ?' लक्ष्मी ने पूछ लिया।

'डाक्टर असलम कह रहे थे कि दुनिया में दो ही मजहब हैं। एक खुदादोस्त और दूसरे खुदा से बदजन। खुदादोस्तों के कई फिरके हैं। इसी तरह खुदा से बदजनों के भी कई फिरके हैं। मैं इस्लाम और हिन्दू दोनों को खुदा-दोस्तों के फिरके मानता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर," मैंने उनसे कहा, "मुसलमान हिन्दुओं से ज्यादा जोश से लड़ते हैं बनिस्बत किसी बदजन से।"

'इस पर डाक्टर साहब ने कहा, "यह कुदरती है। भाई-भाई एक ही खानदान के बेटे होने पर भी आपस में खूब लड़ते हैं और बाहर वालों से सुलह रखते हैं। इसमें वजह है कि उनमें कुछ सांझा बँटवारे के लिए है।"

"मगर डाक्टर साहब!" मैंने उनको बताया, "एक खानदान के लोग ख्यालात में फरक होने पर झगड़ा नहीं करते। यह ठीक है कि जायदाद के मामले में बहुत बुरी तरह लड़ते हैं।"

'उनका कहना था कि हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा जायदाद का ही तो था। मुसलमान शहंशाह अपने ज्यादा-से-ज्यादा हिमायती बनाने के लिये हिन्दुओं को मुसलमान बनाने में जेर, जन तलवार का इस्तेमाल करते थे।

'मुश्किल यह थी कि जो हिन्दू जबरदस्ती मुसलमान बनाये जाते थे, उन लोगों को हिन्दू वापस नहीं लेते थे। एक आध नसल के बाद तालीम से मुसलमान बने हुए हिन्दू पैदायिशी मुसलमानों से भी अधिक कट्टर मुसलमान हो जाते थे।

'बेकायदगी तो हिन्दुओं ने पैदा कर रखी थी। हकूमत इस्लामी थी। हकूमत का मतलब ही है जबरदस्ती की जाये। यह तो हिन्दुओं को बगावत करनी चाहिये थी। मगर वे मुसलमान बनाये जाने के बाद मुतास्सिब मुसलमान बन जाते थे।"

'डाक्टर साहब की बात ठीक थी। इसलिए मैं उनका जवाब नहीं दे सका

'इस पर उन्होंने बताया कि मैं मजहब बदलने के लिए जबरदस्ती को पसन्द नहीं करता। डाक्टर असलम की एक और बात मुझे पसन्द आयी है। वह कहने लगे कि मैं गाय का मांस नहीं खाता। मुझे इससे नफरत है। यह सिर्फ इसलिए कि जिसका मैं दूध पीता हूँ, उसका मांस नहीं खा सकता।

'एक बात उन्होंने और कही कि मैं शादियाँ दूर-से-दूर रिश्ते में करना चाहता हूँ। चचा अथवा फूफी, मौसी के घर शादी करना तो कतई पसन्द नहीं करता। जब किसी को एक बार बहन कह दिया तो फिर उससे शादी करने में मन नहीं मानता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस किस्म की बातें करते हुए रात के साढ़े आठ बजे सब लोग कोठी पर पहुँच गये। इनके पहुँचते ही प्रेम ने पूछा, 'भया कैसे हैं?'

'बहुत प्रसन्न और उत्साहित। एक बात वह कहता था कि इस बार वह 'सत्य समाचार' के सम्बन्ध में नहीं पकड़ा गया। हमने उसे वही बात बतायी है जो रामू ने कल रात बतायी थी। इस पर वह तुम्हारे विषय में पूछ रहा था।'

'इसका मुझसे क्या सम्बन्ध है?' प्रेम ने पूछ लिया।

'तुम्हारे माता-पिता पर वह सन्देह करता था।'

'तो बाबा! क्या किसी के माता-पिता मूर्ख नहीं हो सकते? यह कहाँ का नियम है?'

'नियम तो नहीं। मगर यह भी तो सत्य है कि बच्चे माता-पिता के सदा अनुकूल ही होते हैं।'

'मैं उनको अपना माता-पिता मानती ही नहीं।'

इस पर रघुनाथ सहाय मुख देखता रह गया।

बात प्रेम ने ही जारी रखी, 'कल रात की बात सुन तो मेरे मन में एक प्रतिक्रिया यह भी हुई है कि मेरा जन्म उस घर में भूल थी। और क्या इस भूल का प्रतिकार यहाँ इसी जन्म में हो सकेगा?

'अभी समझ में नहीं आ सका कि इस भूल का प्रतिकार कैसे हो? अभी तक इस प्रश्न का उत्तर मन में नहीं आया। यदि कुछ उत्तर न मिला तो कुछ दिन तक आत्म-दाह होता रहेगा। मैं अपने आप में भीतर-ही-भीतर जल रही अनुभव करती हूँ।'

इस सब बात को शीरीं सुन रही थी। रात भोजन के उपरान्त शीरीं और प्रेम सोने के कमरे में गयीं तो शीरीं अपने मन का सन्देह प्रकट करने लगी।

दोनों रात सोने के वस्त्र पहन अपने-अपने पलँग पर बैठीं तो शीरीं ने कहा, 'मैं तो कल यह समझी थी कि आप उनकी हमशीरा हैं। परन्तु सुबह आपकी मुरादाबाद जाने में दिलचस्पी न देख मुझे पता चला कि आप हमशीरा नहीं हो सकतीं। बाबा के कुछ अब्बाजान को बताने से पता चला कि आप मौसिया बहिन हैं। मगर अभी खाने से पहले हुई बातचीत से यह समझ में आया है कि आपका मौसिया बहन होने के अलावा कुछ दूसरा ताल्लुक भी है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, 'शीरीं बहन ! बहुत ख्याली घाड़े दौड़ा रही हो। मैं बताती हूँ। मेरी माँ और तुम्हारी सास सहेली थीं। मेरे दिल्ली आने से पहले से ही इनमें मेल-मुलाकात थी। जब मुझे दिल्ली कालिज में भरती कराया गया तो मुझे यह घर बता दिया गया। यह कहा गया कि मैं इसे अपनी दूसरी माँ का घर समझूँ। मैं यहाँ आती-जाती रही। मैं राधाकृष्ण जी को पति के रूप में पसन्द करने लगी तो मैंने उनसे कहा कि हम परस्पर सम्बन्ध रख सकते हैं।

'इस पर यह बोले कि बिना शादी के वह इसे पसंद नहीं करते। तब मैंने का ह शादी कर लें। इस पर उन्होंने कहा कि वह शादी पढ़ाई के उपरान्त करेंगे। इसके उपरान्त हमारे शादी करने को कौल-इकरार हुआ।

'मगर इस बीच में मैं किसी दूसरे से विवाह की इच्छा करने लगी। मैंने छेड़छाड़ से अपने प्रेमी को थोड़ा उत्तेजित किया तो वह मुझे प्रसन्न करने चल पड़ा। हमारी मुलाकात हुई, परन्तु पीछे क्या हुआ कि वह मुझसे मिलना छोड़ बैठा। कभी आमने-सामने होता तो वह मुख मोड़कर उस ओर चल देता जिधर मैं नहीं जा रही होती।

'एक दिन मौका पाकर मैंने उससे पूछा कि वह मुझसे इस तरह की बेरुखी किसलिए इख्तियार किये हुए है ? वह कहने लगा कि सिफ इसलिए कि मैं अपनी पत्नी से अजहद मुहब्बत करता हूँ और वह बहुत खूबसूरत है। मुझे कालिज में सबसे खूबसूरत लड़की समझा जाता था। इस कारण मैं उनकी पत्नी को देखने की लालसा करने लगी।

'अगले दिन एक रेस्टोराँ में उन्होंने अपनी पत्नी से भेंट कराई। वह बहुत ही सामान्य रूप-रेखा की स्त्री थी। परन्तु उससे बातचीत करने पर मुझे पता चला कि उसका वास्तविक सौन्दर्य उसकी शिक्षा तथा व्यवहार-कुशलता में है। मेरे विषय में उसका कथन था कि मन की साफ और चित्त की सरल हूँ और कुछ बुद्धि में दुर्बल होने से दूसरों की बात पर अधिक विश्वास रखती हूँ।

'मैं चकित रह गयी। उसने मुझे असुन्दर कह भी दिया था और ऐसे शब्दों में जो पहले तो सामान्य ही प्रतीत हुए, परन्तु पीछे विचार करने पर मैं समझ गयी कि उसकी सम्मति मेरे विषय में सामान्य ही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उस दिन के उपरान्त मुझे वे पति-पत्नी कई बार घूमते-फिरते कनाट प्लेस में मिले परन्तु दोनों ने मुझसे बात नहीं की।

'एक दिन वह अकेली थी तो मैंने उसको नमस्ते कह कर उसका मार्ग रोककर पूछा, "मुझे पहिचानती हैं ?"

'उसने आँखें मूँद स्मरण करने का यत्न किया और फिर कह दिया, "मैंने आपको पहले कभी देखा हो, ऐसा मुझे याद नहीं आ रहा।"

'मैं समझ गयी कि वह मुझसे परिचय बढ़ाना नहीं चाहती। इस कारण मैंने उसका मार्ग छोड़ते हुए कहा, "क्षमा करना। भूल हो गयी मालूम होती है।" '

: ३ :

अगले दिन ब्रेकफास्ट पर बैठे हुए शीरीं ने प्रेम से कहा, 'प्रेम बहन ! मेरा एक काम करोगी ?'

'क्या ?'

'मुझे अपनी ज़ुबान सिखा दो।'

'कौन-सी ज़ुबान ?'

'जिसमें आप, माताजी तथा बाबा जी से बातचीत करती हैं ?'

'ज़ुबान तो वही है जो तुम बोलती हो। बहुत थोड़ा-सा ग्रामर का अन्तर है। वैसे दोनों ज़ुबानें के बोलने में फरक नहीं पड़ता। फरक है लफ़्ज़ों का। जैसा एक शै के दो नाम हों तो बोलते वक्त दोनों में से कोई भी नाम लिया जा सकता है। इसी तरह इल्फाजों का इस्तेमाल है और ये इल्फाज़ तुम सुनते-सुनते समझने लगोगी।'

इस पर लक्ष्मी ने बातों में हस्तक्षेप कर कहा, 'दरअसल फरक बोलने में नहीं बल्कि लिखने में है। दोनों ज़ुबानें लिखने में एक-दूसरे से मुख्तलिफ हैं। उनको देवनागरी हरुफ और फारसी हरुफ कहते हैं।

'फारसी लिखी जाती है दाईं ओर से बाईं ओर और देवनागरी लिखी जाती है बाईं ओर से दाहिनी ओर। यह तो सीखनी पड़ती है ? अगर तुम नाश्ते के बाद मेरे कमरे में आ जाओ तो मैं तुम्हें सिखा दूँगी।

'इस लिखने के इल्म को हम लिपि कहते हैं। देवनागरी लिपि यदि एक बार समझ में आ जाये तो बात सुगम हो जायेगी। फिर कुछ भी बोलो, वह उन हरुफ में लिखा जा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मगर जुबान सीखने से अधिक मैं एक और बात तुम्हें सिखाना चाहती हूँ ।'

'क्या ?'

'अक्ल को तेज करने और फिर उस तेज अक्ल को इस्तेमाल करने का तरीका ।'

'मैंने बी० ए० पास किया हुआ है । तो क्या, मेरी अक्ल में अभी कुछ कमी है ?'

'अक्ल की तरक्की की कोई हद नहीं है । एक हद तक तो यह हमें खुदा ने दी है और उससे आगे हम इसको दूर तक तेज़ कर सकते हैं ।

'उस तेज़ अक्ल से हम उन चीजों को भी देखने लग जाते हैं जो हम अपनी आँखों से देख नहीं सकते ।'

'तब तो बहुत मज़ा रहेगा ?'

'हाँ, उसके लिए बहुत सुबह चार बज मेरे कमरे में आने की जरूरत पड़ेगी ?'

'यह आजकल तो हो ही सकेगा ।' शीरीं ने कहा ।

'और कब नहीं हो सकेगा ? जब राधाकृष्ण आ जायेगा ?'

'हाँ । और जब उनके वालिद शरीफ आपके कमरे में आकर सोने लगेंगे ।'

इस पर तो प्रेम और लक्ष्मी दोनों हँसने लगीं । बात प्रेम ने ही कही, 'यहाँ खाविन्द, बीवी के कमरे में कभी नहीं आते । जब जरूरत पड़े तो बीवी खाविन्द के कमरे में जाती है । इसलिए बीवियों के कमरों में उलझन नहीं रहती । कोई भी किसी वक्त वहाँ जा सकता है ।

'हाँ, कभी-कभी बीवी वहाँ हाजिर नहीं होती ।'

'यह विचित्र है । हमारे यहाँ तो अम्मी का कमरा पाक समझा जाता है । वहाँ कोई नहीं जा सकता । मेरी दादी भी अपने लड़के के कमरे में नहीं जाती ।'

'यह पाक और नापाक की बात कहाँ से आ गयी ? यहाँ हम औरतों ने आज़ादी हासिल की हुई है । औरतों के कमरे में सब आते हैं, मगर वहाँ किसी किस्म का खाविन्द-बीवी वाला अमल नहीं होता । वहाँ कोई भी किसी समय भी भीतर जा सकता है ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो यह अक्ल को तरक्की देने के लिए बहुत सुबह जागना पड़ेगा ?'

'यह प्रेम तुम्हें सिखायेगी। वह आज भी ठीक चार बजे मेरे कमरे में आयी थी। उससे पहले वह गुसल वग़ैरा कर चुकी होगी। जरूर तीन बजे उठी होगी।'

शीरीं मुख देखती रह गयी। फिर उसने मुस्कराकर पूछा, 'तो उस वक्त कोई फरिश्तः अक्ल बाँटने आता है क्या ?'

'नहीं। वह तो बच्चे को माँ के पेट में ही दे जाता है। बस ज़िन्दगी में एक ही बार वह बाँटने आता है। जो कुछ अपनी किस्मत में है वह उस वक्त मिल जाता है। उसमें रद्दोबदल और तरक्की पीछे कुछ तो कुदरत करती है। ऐसे ही जैसे शरीर के दूसरे अंग बढ़ते हैं। बच्चों के हाथ-मुख सिर-टाँगें वग़ैरा बहुत छोटे-छोटे होते हैं और जो खुराक हम खाते हैं उससे वे बढ़ते हैं।

'इन्हीं अंगों में तरक्की मुनासिब वर्ज़िश से भी होती है। इसी तरह अक्ल की भी बात है। वह भी इस जिस्म का एक जुज़ है। और जिस्म के सब हिस्सों की तरह उसमें भी वर्ज़िश से तरक्की की जा सकती है। फरक यह है कि उसकी वर्ज़िश वह नहीं जो हाथ पाँव को मजबूत करने के लिए की जाती है।'

'तो प्रेम बहन ! कल से मुझे भी इस दरगाह में ले चलना, जिससे मैं तरक्की का रास्ता पा सकूँ।

'मैं अम्मी के बेटे को अपनी उम्र से बड़ों की सी दानिशमन्दी की बातें करते देख हैरान हुआ करती थी।

'एक दिन अब्बाजान ने कहा, "डाक्टर राधाकृष्ण तो खुदा के भी कान कतरने की तोफीक रखता है।"

'तब मैं समझी थी कि अब्बाजान मजाक कर रहे हैं। मगर अब समझ रही हूँ कि शायद अब्बाजान ठीक ही कह रहे थे।'

नाश्ता समाप्त हुआ। रघुनाथ सहाय समीप बैठा इन औरतों की बातों में दखल दिये बिना अपने खाने में लगा हुआ था। जब सब उठने लगे तो उसने कह दिया, 'मैं समझता हूँ कि लक्ष्मी को प्रेम से एक भिन्न प्रकार का शिष्य मिल रहा है।'

'बस यही तो मैं सीखना चाहती हूँ। बाबा ने एक ही फिरके में तीन चार नये इल्फाज़ कह दिये हैं, जो मुझे मालूम नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मगर यह ज़ुबान नई नहीं है। यह तो केवल इस तरह से है जैसे कोई अंग्रेजी पढ़ा-लिखा बीच-बीच में फ्रेंच के इल्फाज़ बोलने लगे।

'हम भी हर रोज़ बीसियों अंग्रेजी के इल्फाज़ अपनी बातचीत में इस्तेमाल करते हैं। मगर वह इतने जाने-बूझे हो गए हैं कि हम उनको महसूस नहीं करते। जैसे रेल, स्टेशन, एयरोप्लेन, पैन, टेबल, सोफा वगैरा। इसी तरह तुम भी कुछ और इल्फाज़ सीख जाओगी। हाँ, यह लिखने के हरुफ और अक्ल को फरोग़ देने की बात तो बिना सीखे नहीं जान सकोगी।'

उस दिन शीरीं को जल्दी ही सो जाना पड़ा। प्रेम ने ही उसे याद दिलाया—'अगर सुबह माता जी से सबक लेना है तो अब सो जाओ, नहीं तो समझते हुए ऊंघने लगोगी।'

ठीक तीन बजे प्रेम ने शीरीं को जगा दिया।

लक्ष्मी ने उस दिन शीरीं को 'ओं' शब्द के उच्चारण का ढंग सिखाया और उसका मन-ही-मन जाप करने का ढंग बताया।

'यह इल्फाज़ लिखने में तो अलफ, लाम, मीम है, मगर अब्बाजान ओम् कहकर ही बोलते हैं।

'मैंने एक दिन उनसे पूछा था कि वह 'लाम' क्यों नहीं बोलते। वह कहने लगे कि पुरानी अरबी ज़ुबान में, जिसका यह इल्फाज़ है बोलने में लाम साइलैण्ट है। जैसे अंग्रेजी के लफ्ज 'फाईट' में 'जी-एच' नहीं बोला जाता। हाँ, यह ज़ुबान में नुक्स है। लाम के साथ अलिफ भी तो है। अलिफ बोलने के वक्त 'लिफ' नहीं बोला जाता, खाली 'अ' बोलते हैं।

'इसी तरह उर्दू हरूफ में 'दाल' हरूफ है, इसमें 'आल' की आवाज पढ़ने के वक्त नहीं की जाती, खाली 'द' बोला जाता है।'

लक्ष्मी ने कहा, 'देवनागरी लिपि में ऐसा नहीं है। जो हरूफ, जसा अकेला बोलने में आता है, वैसा ही इबारत में पढ़ने के वक्त आता है। हमारी ज़ुबान में 'ओं' कहा जाता है। लिखने की शक्ल में थोड़ा फरक है मगर ऐसा तो दूसरे हरूफ से भी है। हम जो 'ओं' बोलते हैं, दरअसल वह 'अ', 'उ', 'म', है।'

'इसके बार-बार कहने से क्या होगा?'

'यह तुम एक महीने की मशक के बाद पूछना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीरीं ने बताया, 'वैसे तो कुरान में, अलफ, लाम, मीम का एक सुपारा भी है। अब्बाजान कहते थे, यह पाक इल्फाज़ है। खुदा का नाम है।'

'बस यही हम मानते हैं। मगर यह खुदा का नाम है या नहीं, इसको छोड़ो। इसके बताये ढंग पर बार-बार कहने के असर की बात कहती हूं। कुछ देर मशक करके देखो।'

१८ जनवरी को प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि पुरानी लोकसभा भंग की जाती है। नई लोकसभा के लिये चुनाव मार्च के दूसरे सप्ताह में होंगे।

इस समाचार ने पूर्ण देश को ऐसे जगा दिया, मानो किसी सोये व्यक्ति को पाँव से ठोकर मारकर जगाया जाता है। रघुनाथ सहाय ने यह खबर अपने कमरे में रेडियो से सुनी तो भागा हुआ लक्ष्मी को बताने आया। लक्ष्मी के कमरे में रेडियो नहीं था।

अब शीरीं इस वक्त लक्ष्मी के कमरे में देवनागरी हरूफ में उर्दू की एक पंक्ति लिखने लगी थी। उसे हिन्दी लिखने का बहुत अभ्यास हो गया था।

ज्यों ही वह देवनागरी लिखने तथा पढ़ने लगी थी, लक्ष्मी ने उसे भगवद् गीता पढ़ने के लिये दे दी थी।

कमरे में बाहर से बाबा ने आवाज दे दी, 'बहू ! एक समाचार है।'

लक्ष्मी उठकर देखने आयी कि क्या समाचार है। उसके द्वार पर आते ही रघुनाथ सहाय ने समाचार सुनाया। लक्ष्मी ने पूछा, 'बिना इमर्जेंसी उठाये चुनाव होंगे?'

'इसकी भी अब आशा करनी होगी।'

इक्कीस तारीख को सोमदेव छूटा। वह घर पर आया तो राधा-कृष्ण की चिन्ता होने लगी।

इस बार सोमदेव का वकालत का लाइसेंस ज़प्त नहीं हुआ था और वह जेल से बाहर आते ही कोर्ट में जाने लगा था।

सोमदेव को छूटकर कोर्ट आते देख किसी को विस्मय नहीं हुआ। मित्र और परिचित दोनों निर्वाचनों की घोषणा के उपरान्त इसकी आशा ही कर रहे थे।

सोमदेव ने वहाँ पहुंचते ही रजिस्ट्रार से अपने लाईसेंस के विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पता किया। वहाँ से संतोषजनक उत्तर पा वह अपने पकड़े जाने के कारण छूट गये मुकद्दमों की सुध लेने लगा। उनमें से दो अभी न्यायाधीशों के सम्मुख उपस्थित नहीं हुए थे। इस कारण वह उनके मुवक्किलों से सम्पर्क बनाने का यत्न करने लगा।

घर पर सब कुछ सामान्य रूप से चल रहा था। विशेष स्थिति तो शीरीं ही थी। वह अब तीन मास के गर्भ से थी और उत्सुकता से अपने पति के छूटने की प्रतीक्षा कर रही थी।

शीरीं ने मुरादाबाद अपने वालिद शरीफ को अपने श्वसुर के छूट जाने की चिट्ठी लिखी तो वहाँ से उत्तर आया, मैं यहाँ एक निहायत ही जरूरी काम में लगा हुआ हूँ। इस कारण अभी नहीं आ सकता। डाक्टर राधाकृष्ण के छूटने की सूचना तार द्वारा भेजना। तब एक दिन का अवसर निकाल कर आऊंगा।'

राधाकृष्ण नहीं छूटा। सोमदेव को लोकसभा की सदस्यता के लिये प्रत्याशी बनने के लिये कहा गया। परन्तु यह काम उसकी रुचि का नहीं था। इस कारण उसने जनता पार्टी का टिकट लेने का यत्न नहीं किया।

इस इन्कार से कांग्रेस वालों ने समझा कि वकील साहब जनता पार्टी के सिद्धान्तों से सहमत नहीं हैं। इस कारण कांग्रेस के टिकट पर खड़े होने के लिये प्रस्ताव भी पहुँचा। जो सज्जन उसे निर्वाचन लड़ने के लिये तैयार करने आये थे, वे कांग्रेस के एक वृद्ध नेता थे।

सोमदेस ने उनकी बातें सुन कह दिया, 'बाबू साहब! आपात्-स्थिति में दो बार 'मीसा' के अधीन पकड़ा जा चुका हूँ। इस कारण यह एक बहुत बड़े साहस की बात ही मानी जायेगी कि आप मुझे कांग्रेस के टिकट पर निर्वाचन लड़ने के लिये कहने आये हैं।'

'इसमें साहस की बात नहीं है। यह स्वाभाविक बात है। यदि जेल-यंत्रणा सहन करके भी कांग्रेस टिकट पर लोकसभा का निर्वाचन लड़ेंगे तो कांग्रेस की श्रेष्ठता सिद्ध होगी और आपका पकड़ा जाना भूल समझा जायेगा।

जब आपने जनता के टिकट को अस्वीकार किया है तो स्वाभाविक रूप में हमारे मन में यह प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई है।'

इतना कहते-कहते प्रवक्ता ने मुख कान के समीप कर कह दिया, 'और वकील साहब! कांग्रेस प्रत्येक सीट पर खड़े होने वाले प्रत्याशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को एक एक लाख रुपया सहायता देने का विचार रखती है।'

इसपर तो सोमदेव खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, 'आप मुझे खरीदने आये हैं ?'

'नहीं जी। कांग्रेस को बेचने।'

इसपर दोनों हँसने लगे। सोमदेव ने हँसते हुए कहा, 'अब जब आप इतना कुछ खर्च करने के लिये दे रहे हैं तो आपको बहुत ऐसे मिल जायेंगे जो इस धन का भोग करना चाहेंगे। मुझसे यह नहीं हो सकेगा।'

नेता जी गये तो सोमदेव जोर से हँसा। रामचन्द्र उर्फ रामू कार्यालय में एक ओर बैठा हुआ था। वह वकील साहब को हँसते देख प्रश्न भरी दृष्टि में इनके मुख पर देखने लगा। इसपर सोमदेव ने कह दिया, 'इन मूर्खों की बहुत बुरी तरह पराजय होगी। इनमें मित्र-शत्रु, भले-बुरे तथा बुद्धिमान और मूर्ख की पहिचान नहीं।

'जनता पार्टी की ओर से मैंने निर्वाचनों में खड़ा होना इस कारण अस्वीकार नहीं किया कि मैं उनके पक्ष को दोषयुक्त समझता हूँ और उनके विपक्षियों को दोषरहित मानता हूँ। वरन् इस कारण कि इस प्रकार की राजनीति को, जो संसदीय प्रजातंत्र में चल रही है, मैं दूषित मानता हूँ। यह एक अन्याययुक्त और समाज का अकल्याण करने वाला प्रपंच है।'

'तो यह प्रजातंत्र से इन्दिरा जी की तानाशाही ठीक थी ?'

'तुम कांग्रेसियों की-सी बुद्धिमत्ता का ही प्रदर्शन कर रहे हो। मैं जनता पाटी और कांग्रेस में मुकाबिला नहीं कर रहा। दोनों में दोष समान रूप में उपस्थित है।'

'क्या दोष है बाबूजी ?'

'यही कि दोनों संसद को सर्व-सत्ता-सम्पन्न मानते हैं। सबसे बड़ा दोष इस प्रपंच में यही है।

'इन्दिरा गाँधी का शासनकाल उतना ही दोषपूर्ण था जितना पण्डित नेहरू अथवा लालबहादुर शास्त्री का था। परन्तु इन्दिरा जी ने पूर्व के दोनों प्रधानमंत्रियों के शासन को दोष में पछाड़ दिया, जब १९६९ में उसने संविधान की धारा १३ में एक उपधारा-चार मिला दी। उस धारा में यह है कि जनता के मूलाधिकारियों को भी संसद उसी प्रकार रद्द कर सकती है जैसे संसद निर्वाचन के नियमों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदल सकती है ?

'यह सैद्धान्तिक अन्तर जो इन्दिरा गाँधी के प्रधान-मंत्रीत्व काल में आया, और जो कुछ पीछे हुआ है वह इस एक परिवर्तन से ही सम्भव हो सका है। इसके उपरान्त तो धाँवली आरम्भ हो गई।

'इस परिवर्तन को जनता पार्टी ने अस्वीकार नहीं किया। शेष बातें गौण हैं, यह विकृति का स्रोत है। शेष बातें हटा दें तो फिर लायी जा सकती हैं, परन्तु यह बिगाड़ की जड़ है।

'देखो रामचन्द्र! उस समय इन्दिरा-दल का दो तिहाई बहुमत नहीं था। इस संशोधन को पारित करने में बहुत से जनता पार्टी के वर्तमान सदस्यों की सहमति भी थी। इस कारण इस पाप से ये भी लथपथ हुए हैं। अभी भी उन्होंने इस दोष को दूर करने का और इसके अभाव में क्या उपाय है, यह स्पष्ट नहीं किया।

'इस प्रकार जो कुछ भी यह करने की घोषणा कर रहे हैं वह जड़ को छोड़ पत्तों को जल देन के तुल्य है।'

'तो वर्तमान प्रपंच में इसका कोई इलाज है भी ?"

'मेरे विचार में तो है परन्तु इस उपाय को, यह जन-साधारण की वाहवाह प्राप्त करने के इच्छुक लोग लाने की या तो बुद्धि नहीं रखते अथवा इच्छा नहीं रखते।'

रामू इस पेचीदा मामले को समझने की योग्यता नहीं रखता था। इस पर वह चुप रहा।

: ४ :

उसी रात भोजन के समय शीरीं ने अपने अब्बाजान की बात सुना दी। उसने कहा, 'मैंने अब्बाजान को यहाँ अपके छूट जाने का समाचार भेजा था। इस पर अब्बाजान और अम्मी के दो पत्र अलहदा-अलहदा आये हैं। अब्बाजान ने तो लिखा है कि आपका दीदार हासिल करने की अजहद ख्वाहिश है, मगर वह आजकल किसी निहायत ही जरूरी काम में मशगूल हैं। इसलिये अभी कुछ अर्सा के लिये मुरादाबाद से बाहर नहीं जा सकते। हाँ अगर उनके दामाद जब छूट कर आयेंगे तो काम-धंधा छोड़कर भी आ सकेंगे।

'मगर पिताजी! अम्मी के पत्र में अब्बाजान की मशगूलियत की बाबत लिखा है। उनके सिर पर भी सियासियत की बहशत सवार हो रही है और वह लोकसभा के चुनावों में उम्मीदवार बन रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता का टिकट उनको मिल रहा है।'

सोमदेव हँस पड़ा और कहने लगा, 'हाँ, हमसे मिलने से अधिक जरूरी काम उनको मिल रहा है। इस पर भी उनकी कृपा है कि वह अपने दामाद को हम पर उपमा दे रहे हैं।'

'यह उनकी आपके सुपुत्र के साथ खास लगाव की वजह से है।'

शीरीं एक महीने से ऊपर तक पृथ्वी राज रोड वाली कोठी वालों की संगत से संस्कृत भाषा के शब्दों का कुछ-कुछ प्रयोग करने लग गयी थी। अब वह चिट्ठी के स्थान पर पत्र और फर्जंद के स्थान पर सुपुत्र सुगमता से बोल सकती थी।

'इससे हमें प्रसन्नता हुई है,' सोमदेव ने कहा, 'कि वह राधाकृष्ण को पसन्द करते हैं।'

'हाँ, पिताजी! मेरे आपके पुत्र को 'प्रपोज' करने से पहले ही वह उनको पसन्द करने लगे थे। हकीकत में यह उनका ही सुझाव था कि मैं आपके घर आने की तजवीज़ आपके पुत्र से करूँ और उनकी रजामन्दी हासिल करूँ।

'यह मेरे मन की बात थी। इस पर भी उनकी हिदायत से ही मैंने विवाह वाले दिन सायंकाल कोठी की बगल वाले पार्क में टहलते हुए तजवीज की थी।

'मैंने कहा था, "डाक्टर साहब, मेरा दिल आपकी माता जी के पास चलकर रहने को करता है।'

"किसलिये?" उनका सवाल था।

"मैं उनसे ज्यादा गहरा ताल्लुक बनाना चाहती हूँ।"

"किस किस्म का ताल्लुक?" उन्होंने पूछा।

'मैंने दिल को कड़ा कर कह दिया, "उनके लड़के की वहू बनकर।"

"वह तो तुम वहाँ गये बिना भी बन सकती हो।"

"सच कैसे?" मेरा सवाल था।

'इस पर वह कहने लगे, "अभी अब्बाजान और अम्मी के सामने जा हलफिया बयान दे देते हैं। उसमें अपनी इस ख्वाहिश को ज़ाहिर कर देंगे। उम्मीद कामिल है कि वे मंजूर कर लेंगे और हम आज रात ही मियाँ बीवी बन जायेंगे। तब तुम माता जी की पतोहू बन जाओगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बिना उनसे पूछे ?"

"वह मैंने उनसे पहले ही पूछ रखा है। तुम्हारा नाम धाम नहीं बताया, मगर अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर की थी। उनका कहना है कि मैं अब बालिग हूँ, इसलिये मुझे इसका हक हासिल है।"

"तब चलिये। इसी वक्त बात हो सकती है। वालिद साहब इस वक्त फुरसत में होंगे ?"

'बस हम पार्क से घर लौट आये और वालिद साहब के सामने हाजिर हो आपके सुपुत्र ने कहा, "डाक्टर साहब! मेरी और शीरीं की यह राय हुई है कि मैं आपका असिस्टैण्ट से उठकर आपका फरजन्द बन जाऊँ।"

"कैसे ?" अब्बाजन ने पूछा।

"आपकी लड़की शीरीं को बीवी बनाकर।"

"ओह! तो यह तुम दोनों का फैसला है ?" उन्होंने पूछा।

"हाँ, सबजैक्ट टू यूअर ऐप्रूवल[1]।"

"बिना अपने माता-पिता से पूछे ?"

"उनकी मंज़ूरी मेरे पास है।"

"तो शीरीं की अम्मी से राय कर लूँ।"

'अब्बाजान भीतर गये और अम्मी को बुला लाये और उसके सामने हमारी इल्तेजाह रख दी।

'अम्मी ने मेरी आँखों में देखा और मेरी आँखों में कुछ देख मुझ से बात की और फिर कह दिया, "कुछ लिखा-पढ़ी तो हो ही जानी चाहिये।"

"हाँ।" अब्बाजान ने कहा, "देखो डाक्टर राधाकृष्ण! एक चिट्ठी शबनम के नाम लिख दो।"

'डाक्टर अपने कमरे में गये और एक चिट्ठी जो मैंने यहाँ माता जी को दिखाई थी, लिखकर दे दी।

'आपके सुपुत्र का विचार था कि हम हनीमून मना कर ही दिल्ली आयेंगे। मगर हनीमून के खत्म होते-होते वह पकड़ लिये गये। पीछे मेरे 'हामला' होने की खबर पर अम्मी ने भाई जान को यहाँ आपके पास भेज दिया।'

---

१. आपकी स्वीकृति होने पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मतलब यह है कि तुम्हारे अब्बाजान ने राधाकृष्ण को दामाद बनाना मंजूर किया था। यह इसलिये कि वह उसे अज़हद पसन्द करते हैं।'

'जी। वह डाक्टर साहब को भाईजान अफजल से भी ज्यादा अज़ीज़ समझते थे।'

'ठीक है। तब तो हमें राधाकृष्ण की इन्तजार करनी पड़ेगी जो हमारी वाकफीयत तुम्हारे अब्बाजन से करा सके।'

शीरीं की यह कहानी परिवार के दूसरे लोग भी सुन रहे थे। इसे सुन प्रेम बोल उठी, "शीरीं बहन ने भी वही कुछ किया है जो मैंने प्रोफेसर को कहा था। फरक डाक्टर भैया और प्रोफेसर में हुआ है। हम दोनों समान रूप में ही 'हस्बैण्ड हंटिंग' कर रही थीं।"

इस पर रघुनाथ सहाय ने कहा, 'हाँ, राधाकृष्ण में अन्तर तो है ही मगर तुम दोनों में भी थोड़ा सा अन्तर है। वैसे मैं समझता हूँ कि तुम दोनों मानव-जीवन के एक ही स्तर पर पहुँची हुई हो। इसी को मैं मानव यात्रा का एक पड़ाव मानता हूँ।

'आज से चालीस-पचास साल पहले की औरतें इसे नितांत निर्लज्जता का भाव मानती थीं, परन्तु आज की औरत इसे तरक्की का शिखर समझती हैं।'

'और बाबा, आप क्या समझते हैं?"

'निर्लज्जता तो नहीं कह सकता मगर जिस्मानी ख्वाहिशात के सम्मुख सर्वथा पराजित होना तो कहूँगा ही।

'राधा और शीरीं को एक तरफ और प्रेम तथा अश्विनी को दूसरी तरफ। बहुत आगे निकल गये हैं ये लोग।'

भारत में जनता लहर बहुत तेज थी। इस पर भी उतनी तेज़ नहीं जितनी इन्दिरा की लहर १९७१ में थी। यह कहा जाता है कि इन्दिरा लहर की तह में धन, जन, फरेब और कांग्रेस की पचासी साल की प्रतिष्ठा थी और जनता पार्टी का इस रूप में प्रथम प्रयास ही था। इस पर भी जनता पार्टी २८५ के लगभग स्थान लोकसभा में पा गयी तथा कांग्रेस की १९७५-७६ की कारगुजारी के होने पर भी उसे एक सौ पचास स्थान मिले।

सोमदेव का कहना था कि इसे भी कांग्रेस की विजय ही कहा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा उसकी करतूत तो यह थी उसको एक भी स्थान पर सफलता न मिलती।

दक्षिण में इमर्जेंसी के दिनों में पुलिस का अत्याचार कम नहीं हुआ था, परन्तु वहाँ कांग्रेस ने जनता पार्टी को चारों खाने चित्त किया था।

लोकसभा के निर्वाचनों का परिणाम निकल रहा था और शीरीं के अब्बाजान मुहम्मद असलम, शीरीं की अम्मी रहीमन, उसकी बहन दिल्ली आ पहुँचे। निर्वाचन के एक दिन पूर्व ही राधाकृष्ण छूटा था और उसके छूटने का समाचार मुरादाबाद भेज दिया गया था।

इस पर भी डाक्टर असलम और उसके परिवार के सदस्य निर्वाचन के उपरान्त ही आ सके थे। अभी भी डाक्टर साहब का बड़ा लड़का मुहम्मद अफज़ल वोटों की गणना की देख-रेख के लिये पीछे रह गया था।

राधाकृष्ण एकाएक घर आ पहुँचा था। वह भीतर आया तो सब घर के प्राणी चाय ले रहे थे। राधा को बिना सूचना के भीतर आते देख लक्ष्मी लपक कर उठी, 'ओह! राधा—।'

राधाकृष्ण माँ के चरण स्पर्श करने लगा तो माँ ने उठा गले लगा लिया और उसका माथा चूम कर कह दिया, 'ईश्वर का धन्यवाद है।'

राधा ने माँ से मिलने के उपरान्त समीप खड़ी शीरीं की ओर देखा तो वह लपक कर सबके सम्मुख ही उससे आलिंगन करने लगी।

राधा ने शीरीं की गाल पर चूम कर अपने मन की भावना प्रकट कर दी।

अब बारी प्रेम की थी। वह हाथ जोड़ नमस्ते करने करने लगी तो राधा ने कहा, 'जब माँ और पत्नी ने गले लगाया है तो बहन क्यों पीछे रहे? वह भी तो दिल खोल कर मिल सकती है।' इतना कह राधाकृष्ण ने उसे भी गले लगा कर उसके मन से हीन भावना निकाल दी।

इस पर भी जब राधा, बाबा के चरण स्पर्श कर पीठ कर प्यार ले चुका तो प्रेम ने कहा, 'तो बाबा से गले नहीं मिले? भला क्यों?'

रघुनाथ सहाय ने सोफा पर बैठते हुए कहा, 'यह इस कारण कि कस कर मिलने की हिम्मत मुझ में नहीं है। यह जवान तो बूढ़े बाबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अपनी बाहों में कचूमर ही निकाल देगा।'

सब हँसने लगे। प्रेम ने पूछ लिया, 'और बहनों से भी गले मिलने का अभ्यास जेल में करते रहे हैं?'

'जेल में तो औरतों के दर्शन ही नहीं होते थे।' राधाकृष्ण ने हँसते हुए कहा, 'यह रिवाज़ शीरीं के अब्बाजान के घर शीरीं की छोटी बहन शबनम ने सिखाया है। वह बाप और भाईयों से गले मिलती रहती है और डाक्टर साहब इसे बुरा नहीं मानते।

'डाक्टर साहब का कहना है कि दिली जज़बात जिस्म से ताल्लुक नहीं रखते। यह रूह की सिफात है। और रूहों में भाई-भाई का रिशतः होता है। उनमें सैक्स का भेद नहीं होता। वे न मर्द हैं न औरत।'

जब डाक्टर असलम अपनी पत्नी और लड़की के साथ दिल्ली आये तो सोमदेव से मिले और इस भेंट में दो महीने की देरी होने पर क्षमा माँगने लगे।

'और वोटिंग कैसा हुआ है?' सोमदेव ने पूछ लिया।

'जहाँ तक मेरा इल्म है बहुत बड़े 'मार्जन' से जीतूंगा। आज वहाँ वोटों की गिनती हो रही है।'

'कितना कुछ खर्च कर दिया है?'

'कुछ ज्यादा नहीं। वोटरों के लिये परचियाँ, कुछ पोस्टरबाजी और तीन चार ज़लसों पर पाँच छः हजार से कम ही खर्च वैठा है। मेरा हल्का शहरी होने की वजह से भाग-दौड़ का खर्च कुछ ज्यादा नहीं बैठा। मेरे दो-तीन मरीज परिवारों ने अपनी मोटर-गाड़ियाँ मुझे दे रखी थीं और जब तक गाड़ियां इस्तेमाल होती रहीं, पैट्रोल भी उन्होंने ही खर्च किया है।'

'तब तो आप सस्ते में छूट गये हैं।'

'हाँ, मैं समझता हूँ कि इस कामयाबी का दाम मुझे कामयाबी के बाद देना होगा और वह तब तक देता रहूँगा जब तक लोकसभा का मैम्बर रहूँगा।'

'वह तो उस शोहरत का मूल्य होगा जो आपको मैम्बर बन जाने से हासिल होगी।'

'सरकार कुछ हद तक उसका मुआविज़ा देती है मगर एक प्रोफैशनल के लिये वह मुआवजा कुछ वुकत नहीं रखता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली में डाक्टर असलम सोमदेव की कोठी में ही रहे। रात सोने से पूर्व माँ ने लड़की से पूछा, 'सुनाओ। कैसे लगे हैं सास और श्वसुर ?'

'अम्मी ! उनका सुलूक तो तुम और अब्बाजान जैसा ही है मगर यहाँ के बाबा का सलूक मुखतलिफ है।

'वह एक फिलासोफर मालूम होते हैं और उसी तरह इस नाकस दुनिया से 'डिटैचड' नजरियाँ रखते हैं। वह एक कहावत अपने परिवार के साथ सलूक को जाहिर करने के लिये कह दिया करते हैं, 'कोई मरे कोई जिये, सुथरा घोल प्याला पिये।' इसका मतलब वह यह बताते हैं कि दुनिया से एक बेताल्लुक व्यक्ति को दुनिया के बहने से कोई ताल्लुक नहीं हो सकता। नदी के किनारे पर खड़े नदी में डूबते-लुढ़कते लोगों को वह कहता ही है कि वे जहन्नुम को जा रहे हैं। यह नदी खारी समुन्द्र में जाती है। वक्त रहते इसमें से निकल आओ। बस इतने से ही उनका इसके साथ सम्बन्ध है। इससे ज़्यादा कुछ नहीं।'

अगले दिन प्रातःकाल पता चला कि प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी श्री राजनारायण से पराजित हो गयी हैं और संजय गांधी भी बुरी तरह पराजित हुए हैं; जनता पार्टी के सफल उम्मीदवारों की संख्या कांग्रेस के सफल लोगों से बढ़ गयी है; साथ ही उत्तरोत्तर यह बढ़ रही है।

'क्यों बाबा !' राधाकृष्ण ने अपने बाबा से प्रश्न किया, 'क्या यह यात्रा का अंत नहीं ?'

सब लोग निर्वाचनों के आ रहे परिणामों पर चर्चा करते हुए प्रातः का अल्पाहार ले रहे थे। डाक्टर असलम हाथ में रेडियो पकड़े हुए नौ बजे का बुलेटीन सुन रहा था। वह अपने क्षेत्र के परिणाम को सुनने के लिये उत्सुक था।

एकाएक राधाकृष्ण के प्रश्न से रघुनाथ सहाय का ध्यान भंग हुआ और उसने पूछ लिया, 'किस यात्रा का अन्त पूछ रहे हो ? एक तो जीवात्मा है जो अनादि और अनन्त यात्रा पर चला जा रहा है। दूसरे, भूमण्डल में मानव एक यात्रा पर चला आ रहा है। और तीसरी यात्रा हमारे बुद्धिमान राजनीतिज्ञों ने सन् १९४७ में आरम्भ की थी। तुम किस यात्रा का वृत्तान्त पूछ रहे हो ?'

'बाबा,' राधाकृष्ण का कहना था, 'आज तो राजनीति की उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा के अन्त की बात ही पूछ रहा हूँ जो महात्मा गांधी के तथा तत्कालीन कांग्रेस के नेताओं ने १९४७ में आरम्भ की थी।'

'देखो बेटा! यह यात्रा उस यात्रा के क्रम में ही थी जो गांधी जी ने १९१९ में आरम्भ की थी।

'करना कुछ अन्य और जब दूसरों से पकड़े जाना और विरोधाभास का प्रकट हो जाना तो मूर्ख जनता को धोखा देने के लिये बात बना देना कि मैं परीक्षण कर रहा हूँ, यह था उनका व्यवहार।

'साथ ही, उसकी बात में यदि कोई दोष निकाले तो हो-हल्ला करने वाले लोग ऊँचे-ऊँचे शब्द कहकर उसे पक्षपाती एवं दोष निकालने वाला बता देते थे।

'यह सन् १९१९ से हो रहा है। महात्मा गांधी ने राजनीति की समस्याओं को सुलझाने का उपाय सामूहिक सत्याग्रह उपस्थित किया। इसमें नवीनता यह थी कि महात्मा जी इसमें शान्तिमय उपायों से सत्याग्रह की बात करते थे।

'यह यात्रा थी, जो सन् १९१९ में आरम्भ हुई थी। इसका अंत हुआ सन् १९४७ में, जब शान्ति की उपासना करने वाली संस्था राज्यारोहण कर बैठी। तब इस शान्तिमय सत्याग्रह का सूत्र पकड़ लिया प्रजा ने और कांग्रेस ने राज्य बल से उनके शान्तिमय आन्दोलनों को उन्हीं हथकण्डों से दबाना आरम्भ किया जिनसे ब्रिटिश राज्य कांग्रेस के आन्दोलनों को दबाता था।

'आज उस ढोंग का अंत हुआ प्रतीत होता है परन्तु अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। कारण यह कि कांग्रेस का विरोधी पक्ष तो निर्वाचनों के लिये एक भानुमति के कुनबे की भाँति एकत्रित हुआ है।

'इस भानुमति के कुनबे में जहाँ मोरारजी भाई हैं, जो आज भी महात्मा जी की शान्तिमय नीति की कसमें खा रहे हैं, वहाँ इसमें श्री फर्नान्डीस, श्री चन्द्रशेखर और श्री राममनोहर लोहिया के अनुयायी भी हैं। ये शान्तिमय उपायों के लिये राजनीति को छोड़ने के लिये तैयार हैं। हिंसा, अहिंसा में इनको अन्तर प्रतीत नहीं होता।

'फिर इस दल के सहायक हैं मार्क्सवादी कम्युनिस्ट, अकाली सम्प्रदायवादी और जनसंघी। ये सब लोग अभी तक विभिन्न दिशाओं में मुख किये खड़े थे। निर्वाचनों में इन्होंने अपनी पीठें एक तरफ की हैं, परन्तु इनकेमुख एक तरफ हुए हैं, यह कहा नहीं जा सकता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाबा ! इनका घोषणापत्र, एक ही मुख का सूचक नहीं है क्या ?'

'नहीं, यह एक ही स्वर में राग अलापना कहा जा सकता है। यह दिशा में कार्य का भी सूचक है क्या, अभी देखना है।'

इस समय मुहम्मद असलम बोला, 'वकील साहब ! मार लिया।'

सब डाक्टर असलम की ओर देखने लगे। डाक्टर असलम ने कहा, 'मैंने तीस हजार पांच सौ पचपन वोटों से एक कांग्रेसी को हरा दिया है।'

यह कह मुहम्मद असलम खाने की मेज से उठ कर खड़ा हुआ और बोला, 'मैं अभी मुरादाबाद जा रहा हूँ।'

सोमदेव ने कहा, 'भाई साहब ! पेट तो भर लीजिये।'

'वह कामयाबी की खबर से भर गया है।'

सब हँसते हुए उठ खड़े हुए। डाक्टर असलम और उसकी बीवी रहीमन और लड़की शबनम अपनी मोटर-कार में मुरादाबाद जाने के लिये तैयार हो गये।

सोमदेव के परिवार के लोग भी खाना छोड़ शीरीं के परिवार को विदा करने कोठी के बाहर आ खड़े हुए।

: ५ :

अब देश में राजनीतिक गाड़ी तीव्रगति से चलने लगी। इन्दिरा गांधी ने इस गाडी को रोकने का यत्न किया। वास्तव में जिस समय इसके पराजित होने की घोषणा हुई थी, उसी समय उसे अपने मंत्रि-मण्डल का त्याग पत्र राष्ट्रपति के पास भेज देना चाहिये था, परन्तु श्रीमती गांधी ने दो दिन तक ऐसा नहीं किया।

इन दो दिनों में यह क्या करती रहीं, कहना कठिन है। भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न अनुमान लगा रहे थे।

जो लोग दिल्ली में थे, उनमें कुछ यह समझ रह थे कि श्रीमती गांधी सेना से साँठ-गाँठ कर रही थीं और मुजीबुर्रहमान तथा अय्यूब खां का परीक्षण भारत में करना चाहती थीं।

कुछ अन्य लोग थे जो यह कह रहे थे कि श्रीमती गांधी सरकारी फाईलें एकत्रित कर विनष्ट कर रहीं थीं। वह कुछ भी, अपने सफेद और काले कारनामों को, भावी संतति के ज्ञानवर्द्धन के लिये छोड़ना नहीं चाहती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ और थे जो यह अनुमान लगा रहे थे कि देश की रक्षा के लिये राष्ट्रपति से साँठ-गाँठ कर पूर्ण देश में राष्ट्रपति शासन की घोषणा कराना चाहती थीं।

इन दो दिनों की देरी में क्या कारण था, यह पता नहीं चला। आखिर पण्डित जवाहरलाल जी की लड़की श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने राज्य परिवार चलाने का मोह छोड़ चुपचाप राज्य छोड़ने की घोषणा कर दी। राष्ट्रपति ने जनता पार्टी के नेता मोरारजी भाई को मन्त्रिमण्डल बनाने का निमत्रंण दे दिया।

एक काम चलाऊ मन्त्रिमण्डल संगठित किया गया। मन्त्रिमण्डल ने शपथ ली और पूर्ण जनता दल महात्मा गांधी जी की समाधि-स्थान पर श्रद्धा के फूल चढ़ाने जा पहुँचा।

इस दिन सर्वोच्च न्यायालय में कोई काम नहीं था। इस कारण सोमदेव घर पर ही था। जनता पार्टी के लोकसभा के सदस्य महात्मा गांधी जी की समाधि से लौटे तो डाक्टर असलम भी सोमदेव की कोठी पर आ पहुँचा।

डाक्टर ने जब से निर्वाचन लड़ने का निर्णय किया था, हस्पताल की सेवा से त्याग पत्र दे दिया हुआ था। अतः सफल होने पर वह अपने पूर्ण परिवार को लेकर दिल्ली आ गया।

अभी तक तो वह सोमदेव की कोठी के एक फ्लैट में टिका हुआ था। वह आशा कर रहा था कि शीघ्र ही उसे संसद सदस्यों के लिये निश्चित क्वाटरों में से कोई एक मिल जायेगा।

वह पृथ्वी राज रोड से नित्य संसद भवन अपनी मोटर गाड़ी पर जाया करता था। लंच के समय वह कोठी पर नहीं आता था। परिणाम यह हो रहा था कि प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त बाबा के कमरे में मजलिस लग जाया करती थी। उसमें शीरीं, प्रेम, शबनम, रहीमन और कभी-कभी लक्ष्मी भी सम्मिलित हो जाया करती थीं।

सबसे पहले प्रेम और शीरीं ने ही यह मजलिस शुरू की थी। उस समय राधाकृष्ण अभी जेल में था और डाक्टर असलम अपने निर्वाचनों में मुरादाबाद में व्यस्त था।

प्रेम अध्यात्म के विषय में समझने के लिये आया करती थी। शीरीं उसका साथ देती थी।

उन्हीं दिनों शीरीं ने बताया था कि उसके अब्बाजान के विचारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सुन उनके ओस-पड़ोस के मुसलमान उनके सख्त खिलाफ थे और प्राय: मुसलमान उनके खिलाफ़ राय देंगे ।

'तो तुम्हारे अब्बाजान ने निर्वाचन लड़ने की भूल की है ?' बाबा का प्रश्न था ।

'हाँ, मैं भी यही समझती हूँ । वहाँ के हिन्दू प्राय: कांग्रेस के पक्ष में रहते रहे हैं । साथ ही मुसलमानों को भी अपनी भलाई कांग्रेस का साथ देने में दिखाई देती है ।'

'क्या भलाई दिखाई दी है, वहाँ के मुसलमानों को ?' रघुनाथ सहाय का प्रश्न था ।

शीरीं ने अपने ख्याल से बताया, 'अकसर मुसलमान अनपढ़ हैं और समझते हैं कि कांग्रेस भारत में इस्लाम की हिफाजत कर रही है । वरना हिन्दू तो मुसलमानों को कच्चा ही चबा जायेंगे । खासकर उन हिन्दुओं की आर० एस० एस० संस्था तो मुसलमानों के सख्त खिलाफ है ।'

'और तुम किस मज़हब की हो ?' रघुनाथ सहाय ने पूछ लिया ।

'मैं ला-मज़हब हूँ ।'

'ऐसा तो दुनिया में कोई नहीं । तुम भी तो एक मज़हब को मानती हो ?'

'नहीं बाबा ! मैं किसी भी मज़हब पर एतकाद नहीं रखती ।'

'मज़हब के मायने रास्ता है और ल-मज़हब होना भी तो एक रास्ता है । दूसरे मुख्य मजहबों से मुख्तलिफ ।'

'बस इसी को मैं ला-मज़हब कहती हूँ ।'

'इसे अंग्रेजी में 'एगनास्टिक' कहते हैं और हमारी जुबान में नास्तिक कहते हैं । यह भी तो एक तरजे-अमल है । इसलिये यह भी मज़हब है ।'

'मगर बाबा !' शीरीं ने कहा, 'प्रेम बहन तो बता रही थीं कि नास्तिक के मायने हैं खुदा को न मानना ।'

'तो तुम खुदा की हकीकत को मानती हो ?'

'हाँ बाबा ! मैं हर रोज उससे दुआ किया करती हूँ ।'

'और उस दुआ में क्या माँगा करती हो ।'

'प्रेम के भाई साहब की जेल में सेहत बरकरार रहे । वह जल्दी छूट कर आयें ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और तुम्हें यकीन है कि खुदा तुम्हारी दुआ को मानेगा ।'

'वह मान रहा है । पिछली बार जब मैं उनसे मुलाकात करने गयी थी तो वह कहते थे कि उनको रात को खूब नींद आती है और वह जेल से छूटने पर शीघ्र ही अपना हस्पताल का कोर्स खत्म कर नई दिल्ली में ही अपना क्लीनिक खोलेंगे ।'

'मैं तो उसे राय दूंगा कि वह सरकारी नौकरी कर ले । इससे वह खलकत की खिदमत ज्यादा कामयाबी से कर सकेगा ।'

'मगर बाबा ! वह कहते थे कि वह ऐलोपैथिक दवाइयाँ इस्तेमाल नहीं किया करेंगे ?'

'और क्या करेगा ?'

'वह जेल में होम्योपैथी स्टडी कर रहे हैं और वह तरीका इलाज का इनको ज्यादा पसन्द आया है ।'

'मगर सर्जरी होम्योपैथी में है नहीं ।'

'मैंने पूछा था और वह कहते थे कि एक हद तक तो है और वह इसमें और ज्यादा खोज करेंगे ।'

'तब ठीक है । मैं समझता हूँ कि खोज ही इन्सान को तरक्की पर ले जाती है ।'

'यह तो मैं भी कर रही हूँ ।'

'किस मजमून पर खोज कर रही हो ?'

'खुदा की बाबत ।'

'क्या खोज कर रही हो ?'

'मैं उसकी शक्ल-सूरत जानना चाहती हूँ ।'

'और किस तरह यह जानने की कोशिश कर रही हो ?'

'एक तरीका यहाँ माता जी ने बताया है । वह उसका नाम 'योग' कहती हैं । मैं उस तरीके से कोशिश कर रही हूँ ।'

'तब तो तुम वैदिक मजहब को मानने लगी हो । यह तरीका वैदिक है ।'

'तो वैदिक तरीका हिन्दू तरीके से दूसरा है क्या ?'

'हाँ, हिन्दू तरीका देखना हो तो किसी दिन बिड़ला मन्दिर में जाकर देखना । वह उससे भिन्न है जो लक्ष्मी तुम्हें बता रही है ।'

'तो मैं माता जी से कहूँगी कि एक दिन वहाँ ले चलें । मैं उनकी भी जानकारी प्राप्त करूँगी ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रात: के अल्पाहार से लेकर मध्याह्न के भोजन के समय तक बाबा से इस प्रकार वार्तालाप हुआ करते थे। जब राधाकृष्ण आया तो उसने शीरीं को मना नहीं किया।

इसके बाद निर्वाचन हुए और डाक्टर असलम भी परिवार सहित आकर लक्ष्मी के घर पर रहने लगा। उस समय राधाकृष्ण मुरादाबाद अपनी हस्पताल में टर्म पूरी करने चला गया था।

वहाँ वह डाक्टर साहब की कोठी में रहता था। शीरीं ने साथ जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की थी, मगर लक्ष्मी ने मना कर दिया था। यह उसकी गर्भ-स्थिति का विचार कर किया गया था।

इन दिनों प्रेम और शीरीं के साथ-साथ रहीमन, शबनम और कभी-कभी लक्ष्मी भी बाबा के कमरे में एकत्र होने लगी थीं।

इस प्रकार की गोष्ठी चलते हुए पन्द्रह-सोलह दिन से ऊपर हो चुके थे। डाक्टर को अभी मुनासिब निवास नहीं मिला था। उसने बड़ा क्वार्टर जो परिवार सहित रहने के योग्य हो, माँगा हुआ था।

एक दिन शबनम ने शीरीं का एक राज़ बता दिया। उसने कहा, 'बाबा, बहन ने अपना ससुराल का नाम चुन लिया है।'

'सत्य ?' रघुनाथ सहाय ने पूछा।

'हाँ बाबा!' उत्तर शीरीं ने दिया,'मैं तो अपना नाम पिछले अक्तूबर मास में ही शादी के फौरन बाद बदल लेना चाहती थी। प्रेम के भाई साहब ने बताया था कि यह ज़ुबान बदलने की शुरुआत होगी। मगर वह कोई नाम तजवीज नहीं कर सके थे। वह कहा करते थे कि हनीमून के बाद जब हम दिल्ली आयेंगे तो यहाँ माता जी से राय कर नाम रखेंगे। अब माता जी ने मेरा नाम रख दिया है।'

'क्या रखा है ?' रहीम ने पूछ लिया।

'माता जी का कहना है कि शीरीं नाम मेरे गुणों के मुताबिक ही है। और उसका तरजुमा उनकी ज़ुबान में 'मधु' है।

'मैंने माता जी के सुपुत्र को लिख कर भेज दिया है। अगर उन्होंने पसन्द किया तो मैं मधु हो जाऊँगी। माता जी कहती हैं कि यह ऐसे ही है जैसे कोई कहे, मेरी किताब अलमारी में रख दो। दूसरे उसे कहे यह पुस्तक अलमारी में रख दो। किताब, पुस्तक और बुक कहने वाले कोई आपस में झगड़े की बात नहीं करते। माता जी का कहना है कि तीनों इल्फाज़ से एक ही मतलब निकलता है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण में शीरीं भी हूँ और मधु भी हूँ।'

'मगर इस नये लेबल की जरूरत है क्या ?'

'मैंने एक 'इटिमोलोजी' की पुस्तक में पढ़ा था कि 'डाल' 'रे' 'ये' 'हार्ड लेटर' हैं। इनके ज्यादा इस्तेमाल से आदमी की तबीअत कुरख्त हो जाती है। और नाम में बल पड़ता है। इसलिये यह कुछ जुबान पर अटकता था। मधु के दोनों हरुफ 'सौफ्ट' हैं। इस पर भी मैं डाक्टर साहब की मंजूरी की इन्तजार में हूँ।'

'उसकी मंजूरी की भी क्या ज़रूरत है ?'

'वैसे तो माता-पिता नाम रखते हैं मगर अब मैं उनके 'ज्यूरिस्डिक्शन' से बाहर हो चुकी हूँ। इसलिये माता जी के पुत्र की रजामन्दी चाहती हूँ।'

'तो तुम अब डाक्टर राधाकृष्ण की 'ज्यूरिस्डिक्शन' में हो ?' रहीमन ने पूछ लिया।

'ज्यूरिस्डिक्शन तो नहीं, उन्होंने इसका नाम 'कोलाबोरेशन' बताया है। इससे भी तो उनकी राय जाननी ठीक समझ में आयी है।'

उसी दिन शाम को रहीमन ने शीरीं के नाम बदलने की बात शीरीं के वालिद से कही तो उसने कह दिया, 'मैं समझता हूँ कि वह ठीक ही कर रही है।

'वैसे तो तुम्हारे नाम में भी 'आर' हरुफ आता है। यह भी जुबान पर अटकता है। रहीमन से तो ईमान ज्यादा सौफ्ट होगा।'

'तो मेरा भी नया नाम रख दीजिये। मैं भी ईमान पसन्द करूँगी। यह छोटा भी है और आसानी से मुख से बोला जाता है।'

'तो बेगम ! आज से तुम 'ईमान' हो।'

'किसकी ईमान और किस पर ईमान ?'

'मेरे लिये तो तुम मेरा 'ईमान' हो। क्या मैं गलत कहता हूँ ?'

'यह तो आप जानें।'

'मैं जानता हूँ और जानने से मेरी जुबान से यह निकल गया है।'

अगले दिन रहीमन ने बाबा के कमरे में लगी मजलिस में बताया कि उसके खाविन्द ने उसका नाम 'ईमान' रख दिया है।

यह रविवार का दिन था और सोमदेव भी बाबा के कमरे में आया हुआ था। राधाकृष्ण भी हस्पताल में आज का 'ऑफ-डे' होने से दिल्ली आया हुआ था। डाक्टर असलम लोकसभा की बैठक न होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बाबा की बातों का रस लेने के लिये वहाँ बैठा था।

सोमदेव ने ईमान शब्द पर आपत्ति कर दी। उसने कहा, 'यह पुल्लिग है।'

'वह क्या होता है ?' डाक्टर असलम ने पूछ लिया।

'मेस्कुलाइन जेण्डर।' सोमदेव ने कह दिया।

'इसमें क्या फरक पड़ता है ! शीरीं की अम्मी तो कई साल से बीवी का काम भी नहीं करतीं। हम दोनों आज कल 'न्यूटर जेण्डर' में हैं।'

सब हँसने लगे।

'हाँ। तब ईमान नाम ठीक है।' सोमदेव का कहना था।

इस पर शबनम बोल उठी, 'मैं भी अपना नया नाम रखूँगी।'

'क्या रखोगी ?'

'यह वह बतायेगा जो मुझसे शादी करेगा।'

'और वह कौन करेगा ?'

'कोई है, मगर उसने अभी नाम बताने की इज़ाज़त नहीं दी।'

सब शबनम का मुख देखते रह गये। शबनम मुरादाबाद में कालिज के प्रथम वर्ष में पढ़ती थी और दिल्ली में अभी उसे कालिज में भरती कराने का फैसला नहीं हुआ था।

कालिजों की नई टर्म मई मास में आरम्भ होने वाली थी। तब तक के लिये शबनम घर पर ही कुछ पढ़ती थी।

सब विस्मय कर रहे थे कि इसने किसको शादी के लिये चुना है।

रहीमन ने शबनम से पूछ लिया, 'कौन है जो तुम्हारा नया नाम तजवीज कर रहा है ?'

'देखो अम्मी ! मेरी उनसे बात हुई है। वह कहता था कि वह एक गरीब माता-पिता का लड़का है और अभी तरक्की कर रहा है। वह समझता है कि एक साल में इस लायक हो जायेगा कि मुझसे शादी कर अलहदा मकान में रह सकेगा।'

'वह कहाँ रहता है ?'

'यहीं नजदीक ही रहता है अम्मी ! तुम उसे जरा रियायती नम्बर दोगी तो वह पास हो जायेगा।'

'पास होकर क्या करेगा ?'

'मुझसे शादी कर लेगा। मैंने उसे बहन शीरीं की शादी का हाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया तो उसे इस तरह की शादी करने में कोई एतराज नहीं। फिर भी अपनी माँ से बात कर लेना चाहता है। तब वह मुझे सबके सामने तजवीज करेगा और मुझसे विवाह करना चाहेगा।'

इस पर डाक्टर असलम कहने लगा, 'मगर तुम अभी नाबालिग हो। शीरीं तो बालिग थी।'

'पर अब्बाजान, उसने हमें बताया था कि उसने शादी की तजवीज आपकी राय से ही की थी।'

'हाँ।'

'तो मैं भी आपसे राय कर लूंगी।'

'पर मैं तुम्हें राय नहीं दूंगा। जब तक तुम कम से कम उतना पढ़-लिख नहीं जातीं जितना शीरीं पढ़ी थी।'

'मगर शीरीं तो कहती है कि मैं अभी भी उससे ज्यादा जानती हूँ।'

'वह तुम्हें बेवकूफ बनाती मालूम होती है।'

'क्यों शीरीं बहन! तुम मुझे बेवकूफ बना रही हो?'

'नहीं, मैं ऐसा ही समझती हूँ। मैं समझती हूँ कि जो बाबा के कालिज में दाखिल हुआ और यहाँ की पढ़ाई समझने लगा, वह बी० ए०, एम० ए० से ऊपर जा पहुँचा है।'

'ओह!' डाक्टर असलम ने कहा, 'तो पन्द्रह दिन में ही यह इतना कुछ पढ़ गयी है।'

'मुझे यही समझ में आया है। अब्बाजान, एक दिन बाबा ने बताया था कि सबसे मुश्किल मजमून इन्सान खुद है और उसका इल्म रखने वाले को आलम-फाजल समझना चाहिये। मैं समझती हूँ कि शबनम खुद को समझने लगी है।'

'मगर मैं तो समझता हूँ,' डाक्टर असलम ने कहा, 'कि सबसे मुश्किल मजमून यह दुनिया है। यह इतनी बहुरंगी है कि इसको समझने के लिये तो कई-कई जिन्दगियाँ लग जाती हैं।'

'तो अब्बाजान!' शबनम ने बातचीत को रोक कर पूछ लिया, 'आप मसलह तनासब मानते हैं?'

'हाँ। उसके बिना तो हम अपने को और दुनिया को समझ ही नहीं सकतें।'

'तो आप मुसलमान नहीं रहे?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'असल मुसलमान तो मैं ही हूँ। जो मजहब में इस्लाह को माने वह मुसलमान है और मेरा मजहब इस्लाह-शुदा है। मैंने हज़रत का मजहब पढ़ इस्लाह की है, इसलिये मैं ऊँचे दर्जे का मुसलमान हूँ? मेरी इस्लाम पर इस्लाह जमाना हाल की साइंस की रोशनी में हुआ है।'

'तो हज़रत मुहम्मद पर आपको एतकाद नहीं रहा?'

'वह बहुत अर्से से गायब हो चुका था। इस पर भी मैं कुरान पर एतकाद रखता हूँ। कुरान का वह जुज़ जो हज़रत की अपनी जिन्दगी से ताल्लुक नहीं रखता। इससे मुझे एक निहायत ही इल्मीयत का पता चलता है। देखिये, कुरुआन की एक आयत है—

व मा मिन् दाब्बत्रिन् फ़िल्अर्जि इल्ला अल्लाहि रिजकुहा व यऽलमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौदअहा त् कुल्लुन् फ़ी किताबिम्-मुबीनिन् ॥

'वकील साहब इसका मतलब है, 'जमीन पर जितने चलने-फिरने वाले हैं उनकी रोजी अल्लाह के ही जिम्मे है। वह ही उनके ठिकाने को और उनको सोये जाने की जगह को जानता है। सब कुछ खुली किताब में दर्ज है।

'खुली किताब का मतलब है कि जो आँखों से दिखाई देती है। हमारा मज़हब और आजकल के सायंसदान भी यह मानते हैं कि अनाज वही देता है। किसी इन्सान की ताकत में यह अभी नहीं आया कि एक दाना भी अन्न का बना सके।

'है न मार्के की बात? और फिर आगे कहा है कि जो सबको रोजी देता है वह कौन है? कहा है?—

व हुवंल्लजी खलक़स्समावाति वल्अर्ज फ़ी सित्तत्रि अय्यामिव्व कान अर्शुह अलल्माई लियब्लुवकुम् अंयुकुम् अह्सनु अमलन् त् व लअिन् कुल्त अिन्नकुम मब्अूसून मिम्बऽदिल्-मौति लयकूलन्नल्-लजीन कफ़रू ईन हाजा अिल्ला सिहरुम्मुबीनुन् ॥

'इसका मतलब यह है कि वही है जिसने आस्मानों और जमीन को छः दिन में बनाया है और उसका तख्त पानी पर था, ताकि वह जाने कि तुम में किसके कर्म अच्छे हैं।

'यही बात अंजील में कही है कि खुदा ने जमीन-आस्मान को छः दिन में बनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इसी से मैं यह कहा करता हूँ कि हज़रत मुहम्मद ईसाइयों का चेला था।'

रघुनाथ सहाय हँस पड़ा और बोला, 'डाक्टर साहब! यही बात हमारे सूर्य सिद्धान्त में कही है। महाभारत में और लगभग सब पुराणों में भी कहा है। ये सब किताबें तो अंजील से भी पहले लिखी गयी थीं।'

'तब तो मैं यह कहूँगा,' डाक्टर असलम ने कह दिया, 'कि हजरत कुछ ऐसा ही कह रहे थे जैसे मैं कभी-कभी कहा करता हूँ।'

'क्या कहा करते हैं?'

'मेरी अम्मी मेरे पेट में दर्द के वक्त मुझे आजवायन गरम पानी से दिया करती थी और मैं आजवायन का 'टिंक्चर' बना कर उस पर 'डाइजेस्टो' का लेबल लगा अपनी पेटेण्ट दवाई कह कर बेचता हूँ।'

'तो आप भी पैगम्बर हो गये हैं?' सोमदेव ने कहा, 'अक्सर पैगम्बर किसी पुराने विद्वान् की बातों को अपने ढंग से कह कर ला-इमलों में उसे इल्हाम ज़ाहिर किया करते हैं।'

डाक्टर विचार करने लगा। एकाएक उसने एक आयत और बोल दी—

व लक़द् आतैना मूसल्किताब फ़ख्तुलिफ़ फ़ीहि त् व लौला कलिमत्नुन् सबक़त् मिर्रब्बिक लकुजिय बैनहुम् त् व अिन्नहुम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीबिन् ॥

'मतलब यह है, कि हमने मूसा की किताब 'तोरेत' दी थी। फिर लोग उसमें भी भेद डालने लगे। और अगर तुम्हारा परवरदीगार एक बात पहले से न कह चुका होता तो लोगों में फैसला हो चुका होता। बेशक जो लोग (कुरुआन की तरफ से) ऐसे शक में पड़े हुए हैं, जिसने इनको डाँवाडोल कर रखा है।

'मतलब यह कि हजरत वही कुछ कह रहे हैं जो 'तोरेत' में लिखा था। सिरफ कुछ लोग अपने पास से मायने दूसरे लगा रहे हैं।'

रघुनाथ सहाय ने कह दिया, 'जैसे आप आजवायन के टिंक्चर पर अपने नये 'ड्रग' का लेबल लगा कर बेच रहे हैं।'

सब फिर हँसने लगे। हँसते हुए प्रेम ने पूछ लिया, 'बाबा! जनता पार्टी के टिंक्चर पर किसका लेबल लगा है?'

'लेबल महात्मा गांधी का है पर मिक्सचर तो पार्लियामेण्टेरियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रूल का है। यह है विभिन्न भले-बुरे डाक्टरों की इजादों का गदला-सा पानी।'

: ६ :

शबनम की इस घोषणा पर डाक्टर असलम और उसकी बीवी में उसी रात एकान्त में जब वे अपने कमरे में थे, बात होने लगी। शबनम शीरीं के कमरे में थी। राधाकृष्ण तो मुरादाबाद चला गया था। इस कारण रात का खाना लेकर शबनम बहन के कमरे में सो जाया करती थी।

रहीम ने कहा, 'मालूम होता है कि कोठी में ही कोई शख्स है जिससे शबनम शादी करना चाहती है। वह कोठी से बाहर अकेली जाती नहीं। कोठी में भी उसकी संगत डाक्टर राधाकृष्ण की अम्मी और बाबा के इलावा किसी से मालूम नहीं होती।'

'मगर बेग़म! यह शादी की बीमारी तो बिना 'अपोज़िट-सैक्स' के नजदीक पाये पैदा नहीं होती। मैं तो जब किसी की शादी की बात सुनता हूँ तो मुझे तुम्हारी बात याद आ जाती है।

'याद है, उस दिन क्या हुआ था? तुम्हारे अब्बाजान ने रात के खाने की दावत दी थी और उस दावत में तुम्हारे सब भाई बहनों में तुम्हें भी ला बैठाया था। मेरी अम्मी मेरे पास बैठी थीं और तुम्हारी अम्मी तुम्हारे पास बैठी थीं। दोनों के अब्बाजान कुछ दूर खड़े आपस में बातचीत कर रहे थे।

'मुझे यह तो मालूम था कि मेरी शादी का इन्तज़ाम हो रहा है। मैंने नज़र दौड़ाई और अन्दाज लगाना चाहा कि किसकी तजवीज हो सकती है। मुझे जब समझ में आया कि सब बच्चों में तुम ही शादी के लायक हो तो मैंने तुम पर गौर किया और फसला हो गया।

'मेरी अम्मी ने पूछा, "क्यों? कैसी लगी है?"

'मैंने कहा, "देख लिया है। लड़की शादी के लायक है। मैं समझता हूँ कि बच्चे पैदा कर सकती है।"

'अम्मी हँस पड़ी और तब खाना परोसा जाने लगा। अब्बाजान भी आ बैठे। मालूम होता था कि वे अभी इत्तफाक राय हो गये थे।

'खाना खत्म हुआ तो मुझे तुम्हारे अब्बाजान ने कहा, "बरखुरदार इधर आओ।"

'मुझे एक कमरे में धकेल कर वह बाहर ही रह गये। मैं कमरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेला अभी सोच ही रहा था कि इसका क्या मतलब है कि तुम सामने के दरवाजे से आकर फर्श की तरफ देखती हुई खड़ी हो गयीं। मैं समझ गया। याद है मेरा क्या सवाल था ?'

रहीमन हँसती हुई बोली, 'उस बहशत की बात को छोड़िये। अब तो हम पचास से ऊपर हो चुके हैं। मेरे अन्दर की आग तो तकरीबन बुझ चुकी है।'

'बस, मैं भी तो यही कह रहा हूँ कि शबनम के सीने में आग जल रही है। और यहाँ कोठी में कोई है जिसके सीने में उसके लिये उल्फत जाग पड़ी है। दोनों मिले हैं और उनमें गुफ्तगू हुई है। तभी तो उसकी अम्मी से पूछने की बात हुई है।'

'हाँ और सबके सामने उसने अपनी राय भी बताने का वायदा किया है।'

'तो ?'

'अब सोना चाहिये। जब तक वह सामने नहीं आते तब तक अंधेरे में भटकते रहना ठीक नहीं।'

'मैंने वकील साहब के बात की है। वह हैरान थे कि ये नौजवान कैसे मेरे घर में अलहदा में बातचीत का मौका निकाल लेते हैं ?'

'तो वह जानते हैं कि कोई इसी कोठी में है ?'

"हाँ, वह शक करते हैं कि यह उनका नायब मुंशी रामचन्द्र है।'

'वह कितना पढ़ा-लिखा है ?'

'कालिज की फर्स्ट ईअर से पढ़ाई छोड़े हुए है।'

'मुझे लड़का तो अच्छा जवान और खूबसूरत मालूम होता है।'

'मगर बहुत गरीब है। सुना है कि वह घर के काम के लिये नौकर हुआ था। पीछे वकील साहब को जब पता चला कि वह कुछ पढ़ा-लिखा भी है तो उन्होंने उसे मुँशी के काम पर लगा लिया।"

'लड़की ने क्या देखा है उसमें ?'

'बेगम ! यही कह रहा हूँ कि देखा वही है जो मुझे उस कमरे में जहाँ हमारी पहली मुलाकात हुई थी, दिखाई दिया था।'

'मगर आप तो एक धनी बाप के बेटे थे।'

'वह एक निर्धन बेवा माँ का बेटा है। उसकी माँ के तीन और बच्चे भी हैं और वे वहाँ गाँव में उसके साथ ही रहते हैं।'

'तब क्या होगा ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रामचन्द्र की माँ ने मंजूरी दी तो शादी हो जायेगी।'

'मैं समझती हूँ कि आपकी राय के बिना नहीं होगी।'

'और मैं समझ रहा हूँ कि जब दोनों शादी के लिये इजाज़त लेने आयेंगे तो मैं पाँच सौ रुपया महीने की अपनी जायदाद शबनम के नाम कर दूँगा।'

'वाह! यह कहाँ का इन्साफ है? शीरीं की शादी पर तो आपने दामाद को एक अंगूठी तक नहीं दी थी।'

'मगर डाक्टर राधाकृष्ण ने तो शीरीं को अंगूठी दी थी।'

'इसी तरह यहाँ भी शबनम का घर वाला इसे दे देगा।'

'एक बात मेरे मन में बार-बार उठ रही है। वह यह कि हमारी यह आजादख्याली से हिन्दुओं के घर आबाद हो रहे हैं।'

'मगर ये लोग क्या हिन्दू हैं?'

'नामों से तो ऐसा ही मालूम होता है। वकील साहब हैं सोमदेव। उनके वालिद हैं रघुनाथ सहाय! उनकी पत्नी है लक्ष्मी। ये सब नाम तो हिन्दुओं के से मालूम होते हैं।

'और जानती हो न कि मुझे सबसे ज्यादा वोट उन लोगों ने दिये हैं जिनके नाम इनकी जुबान में हैं। मुसलमान तो मेरे खिलाफ सख्त थे। वे सब कांग्रेस कैम्पों में हलुवा पूरी खा रहे थे।'

'और लड़की अब मधु हो रही है।'

डाक्टर मुस्कराता हुआ पत्नी का मुख देख रहा था। बात रहीमन ने ही जारी रखी। उसने कहा, 'मैं समझती हूँ कि सब बच्चों को लेकर मैं मुरादाबाद चली जाऊँ।'

'सबसे क्या मतलब है? यहाँ तो अब एक ही है, लड़के तो वहीं हैं।'

'मेरा मतलब शबनम से है।'

'तो चली जाओ। मैं तो यह तजवीज़ कर रहा था कि अफजल वगैरा को भी यहाँ तुरन्त दिल्ली यूनिवर्सिटी में दाखले के लिये बुला लूँ।'

'मत करिये। एक शीरीं से मधु हो गयी है। दूसरी शबनम से कुछ होने जा रही है और अफज़ल यहाँ आयेगा तो वह भी कुछ हो जायेगा।'

'तो कब जा रही हो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कल सुबह ही।'

'ठीक है। मैं पार्लियामेंट से छुट्टी के दिन मिलने आ जाया करूंगा।'

इस प्रकार रहीमन की बेचैनी दूर हुई और दोनों सो गये।

नीचे प्रेम के मन में फिर वहशत सवार होने लगी थी। वह सब को शादी के लिये तैयारी करते देख अपने दिल में बेचैनी अनुभव करने लगी थी। रात इन विचारों में वह बहुत देर तक जागती रही। परिणामस्वरूप प्रातः वह लक्ष्मी के साथ अभ्यास और चिन्तन में सम्मिलित नहीं हो सकी।

लक्ष्मी का नियम था कि छः बजे वह पति के कमरे में जाती थी। वह उस समय तक जागकर अपने मुकद्दमों की फाइलें देखने लगा होता था। लक्ष्मी के आने पर दोनों एक एक प्याला चाय लिया करते थे। और उस वक्त घर की कोई बात होती थी तो उस पर विचार कर लिया करते थे।

आज लक्ष्मी आयी तो उसने बताया, 'प्रेम अभी सो रही है।'

'तो ?'

'तो यह कि वह रात बहुत देर तक जागती रही मालूम होती है।'

'उसे अपने खाविन्द के पास चला जाना चाहिये। सुना है कि वह अपने काम पर बहाल कर दिया गया है।'

'कल तक तो वह उसे जली-कटी सुना रही थी।'

'मगर यह मन का काँटा बदलते देर नहीं लगती। मैं समझता हूँ कि उससे पता करो। अगर वह चाहे तो दोनों में सुलह-सफाई कराने का मैं यत्न कर दूंगा।'

'पता करूंगी।'

'हाँ और प्रेम का 'फ्रेंड' अश्विनी कुमार, सुना है रेल की मिनिस्ट्री में चला गया है।'

'किस काम पर ?'

'रेलवे बोर्ड का सैक्रेटरी बन गया है। रेलवे मिनिस्टर बोर्ड का सैक्रेटरी कोई अर्थशास्त्री चाहता था। विश्वविद्यालय ने अश्विनी कुमार का नाम भेजा तो मिनिस्टर साहब ने उसकी नियुक्ति कर दी है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह आपको किसने बताया है ?'

'किसी ने बार-कौंसिल में ही बात की थी। मैं अश्विनी कुमार और नेहरू विश्वविद्यालय का नाम सुन सब समझ गया था।'

लक्ष्मी पति के साथ चाय ले अपने कमरे में आई तो उसके कमरे के बाहर रहीमन खड़ी थी।

'आइये बहन जी ! चाय इत्यादि मिली है अथवा नहीं ?'

'पी ली है। मैं मुरादाबाद जा रही हूँ। मगर एक उलझन पैदा हो गयी है।'

'क्या ?'

'मैं शबनम को साथ ले जाना चाहती थी और वह जाने से इन्कार कर रही है। मैंने उसे आपके कमरे में बुलाया है। अब आप ही उससे पूछिये।'

लक्ष्मी इस नयी परिस्थिति पर चिन्ता अनुभव करती हुई कमरे में गयी तो रहीमन उसके पीछे-पीछे चली आयी। वे अभी बैठी ही थीं कि शबनम आ गयी। उसने आ कर खड़े-खड़े ही पूछ लिया, 'अम्मी ! मैं आ गयी हूँ, क्या हुक्म है ?'

'हुक्म तो तुम मान नहीं रहीं। इसलिये इल्तजाह कर रही हूँ।'

'यही न कि तुम्हारे साथ मुरादाबाद चलूँ ?'

'हाँ।'

'अम्मी ! मैं चलने को तैयार हूँ, मगर यह बताओ कि तुम आयी थीं अब्बाजान की देखभाल करने के लिये। तुमने कहा था कि वह अपने पार्लियामेंट के काम में इतने मशगूल होंगे कि उनके खाने-पहनने वगैरा की देखभाल के लिये तुम्हारा यहाँ आना जरूरी है। अब बताओ कि क्या बात हो गयी है कि अब्बाजान को अकेले छोड़ भागी जा रही हो ? इस पर तुर्रा यह कि मुझे भी साथ ले जाना चाहती हो, जिससे मैं अब्बाजान की जो कुछ थोड़ी बहुत खिदमत कर सकती हूँ, वह भी न हो सके। बताओ, क्या तुम अब्बाजान से लड़ पड़ी हो ?'

लक्ष्मी इस दलील को सुन हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, 'बहन रहीमन ! यह अपने बाप की बेटी मालूम होती है। तुम्हारे औसाफ इसमें नजर नहीं आते।'

'यही खराबी दूर करने के लिये तो इसे अब्बाजान से दूर ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना चाहती हूँ ।'

'और अम्मी ! इसीलिये मैं जाना नहीं चाहती । मुझे अब्बाजान की वसीअ ख्याली पसन्द है। हमारे भाईजान अफजल की तंगदिली पसन्द नहीं ।'

'और क्या तंगदिली देखी है तुमने भाई में ?'

'वह अपनी बीवी को कभी-कभी पीटा करता है ?'

'ऐसा तो सब खाविन्द करते हैं ।'

इस पर शबनम और लक्ष्मी दोनों हँसने लगीं । बात शबनम ने ही की। उसने कहा, 'अम्मी, यह गलत बयानी है । मैं अब सोलह-सत्रह साल की हो गयी हूँ । मैंने कभी अब्बाजान को तुम्हें पीटते नहीं देखा ।'

'यह तुम अब्बाजान से पूछना ।'

'तो ठीक है, तुम आज मत जाओ । पार्लियामेण्ट से आज उनके आ जाने पर पता करूँगी कि वह तुम जैसी गाय को भी पीटा करते हैं क्या ?'

'तो मैं गाय हूँ ?'

'अम्मी ! यह तो मैंने तुम्हारी तारीफ की है जिससे तुम खुश हो कर मेरा कहा मान जाओ । वर्ना मैं तुम्हें गाय नहीं समझती ।'

'तो क्या समझती हो ?'

'यह नहीं बताऊँगी ? मैं उन लफ्जों में जो मेरे दिमाग में हैं, कह कर अपनी अम्मी का दिल नहीं दुखाना चाहती ।'

अब लक्ष्मी ने समाधान उपस्थित कर दिया । उसने कहा, 'मैं समझती हूँ कि रहीमन बहन को मुरादाबाद जाने की जरूरत नहीं है। इसने कल यह वायदा किया था कि यह उस किस्मत वाले के दर्शन करायेगी जिसको अपनी जिन्दगी सौंपने वाली है ।'

'हाँ अम्मी ! मैं भी यही कह रही हूँ कि ऐसे जरूरी मौके पर तुम्हें यहाँ जरूर रहना चाहिये । जिस आदमी ने मेरी जिन्दगी में साथ देने का वायदा किया है, उसने अपनी माँ को चिट्ठी लिखी है। वह एक दो दिन में जवाब की उम्मीद कर रहा है । अम्मी, मैं समझती हूँ कि तुम्हें तब तक यहाँ रहना ही चाहिये, जिससे इस मौका पर तुम भी मेरे लिये खुदा से दुआ कर सको ।'

लक्ष्मी ने कह दिया, 'मैं समझती हूँ कि शबनम बहुत ही समझ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारी की बात कर रही है। मगर शबनम ! मैं एक बात पूछती हूँ।' लक्ष्मी ने अब उससे पूछ लिया 'अगर तुम्हारी अम्मी ने उस शख्स को तुम्हारे खाविन्द के तौर पर पसन्द न किया तो फिर इनका कहा मानोगी या नहीं ?'

'देखो मौसी ! अगर अब्बाजान और अम्मी दोनों एक राय हुए तो मेरे लिये दोनों का कहा मानना ही होगा और अगर अब्बाजान और अम्मी में इख्तलाफ राय हुई तो मैं अब्बाजान की बात मानूँगी। मैं समझती हूँ कि अम्मी को भी अब्बाजान की राय माननी चाहिये।'

'तुम दलील तो बहुत बढ़िया करती हो ?'

'वह इसलिये कि मैं बहुत पढ़ती हूँ। शीरीं तभी तो कहती है कि मैं अभी भी उससे बहुत ज्यादा जानती हूँ। आखिर अक्ल ही तो इन्सान को इन्सान बनाती है और दलील अक्लमंद ही कर सकते हैं।'

रहीमन लाजवाब हो चुपचाप उठ जाने लगी तो लक्ष्मी ने पूछ लिया, 'बहन रहीमन ! अब क्या प्रोग्राम है आपका ?'

'मैं मुरादाबाद नहीं जा रही। मुझे अपने घर वाले की सुध लेनी चाहिये। यही समझ में आया है।'

'तब ठीक है। इससे मैं समझी हूँ कि बहन रहीमन हमसे नाराज होकर नहीं जा रहीं।'

रहीमन ने उत्तर नहीं दिया और कमरे से निकल गयी। जब चली गयी तो शबनम जो नीचे कालीन पर लक्ष्मी के कदमों में बैठी थी, उठी और लक्ष्मी के पास सोफा पर वहाँ बैठ गयी जहाँ उसकी अम्मी बैठी थी।

'मौसी ! मैं अपने को तुम्हारी बेटी मानती हूँ। उस दिन बाबा कह रहे थे कि औलाद पेट से पैदा होने से नहीं बनती। औलाद ख्यालात की बिना पर माननी चाहिये।

'जैसे कांग्रेसी महात्मा गांधी की औलाद हैं और जनता दल वाले भी गांधी की औलाद बन रहे हैं, हकीकत में दोनों में से कोई भी नहीं।'

'यह तुम्हें किसने बताया है ?'

'अब्बाजान और बाबा एक दिन बातचीत कर रहे थे और उसमें बाबा कह रहे थे, मैं सुन रही थी।'

'सत्य ही तुम शीरीं से अधिक पढ़ी-लिखी लड़की मालूमहोतीहो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर यह बताओ, वह कौन है जो तुम्हें अम्मी के घर से ले जाना चाहता है ?'

'मौसी, तुम्हें बता सकती हूँ, अगर तुम इसे तब तक किसी को नहीं बताओगी, जब तक उनकी मां की चिट्ठी नहीं आ जाती।'

'मगर उसकी मां तुम्हें नामंजूर भी तो कर सकती है।'

'उम्मीद नहीं। इस पर भी अगर ऐसा हुआ तब तो इस भेद को छुपा कर रखने के कुछ मायने ही नहीं रह जायेंगे।'

'मगर सब तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।'

'उनको मेरी हँसी उड़ानी ही चाहिये। दूसरों की गलती पर हम उनकी हँसी उड़ाते ही हैं। उस हँसी से गलती करने वाले को सबक सीखना चाहिये।'

'अच्छा तो बताओ। इतना कुछ तो मैं कर ही दूंगी।'

'क्या कर दोगी मौसी ?'

'यही कि तुम्हारे तजवीज-शुदा खाविन्द का नाम तब तक नहीं बताऊँगी जब तक तुम बताने के लिये कहोगी नहीं।'

'यह तो मेरी उम्मीद से भी ज्यादा है। मौसी, बहुत-बहुत शुक्रिया। वकील साहब के जो नायब मुंशी हैं, उनसे मेरी बातचीत हो रही है।'

'मैं भी कुछ ऐसा ही समझी थी, मगर हैरानी की बात यह है कि तुम किस वक्त और कब यह प्रेम-गोष्ठी करती रही हो ?'

'मौसी ! इस बात को समझने के लिये आपको पचास साल पीछे की दुनियाँ से निकल आगे आ जाना चाहिये। हम आजकल के लड़के लड़कियाँ बिना बात किये भी बड़े-बड़े मसलह तय कर लेते हैं। वह तीसरी मंजिल पर रहते हैं और मैं दूसरी मंजिल पर अब्बाजान के साथ रहती हूँ। हमारे रास्ते में नीचे मंजिल तक जाने वाली सीढ़ियाँ साँझी जगह हैं और बस उसमें खड़े-खड़े जिन्दगी के मसलह तय कर लेते हैं।

'हम दोनों में पिछले पन्द्रह दिन में पाँच मिनट से ज्यादा बात नहीं हुई और इसमें हमने इतने कुछ फैसले कर लिये हैं कि उसमें जिन्दगी का कार्यक्रम बन गया है।'

लक्ष्मी इस नये युग की लड़की की बात सुन चकित रह गयी। उसने अब रामचन्द्र से पूछने और इस मामले में जानने का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना लिया। इस कारण उसने कहा, 'अब तो तुम्हारी माँ मुरादाबाद नहीं जा रहीं। इसलिये तुम्हें इत्मीनान से यहाँ रहना चाहिये।'

शबनम उठी और कोठी के ऊपर के कमरों की ओर चल दी। वहाँ उसकी अम्मी उसके अब्बाजान से अपना मुरादाबाद जाना मुलतवी करने की वजह बता रही थी।

लक्ष्मी इस नई दुनिया की बेचैन आत्मा के विषय पर सोचती रह गयी। वह मन में विचार कर रही थी कि यह आत्मा में चंचलता किस कारण से उत्पन्न हुई है।

इसका समाधान प्रेम ने किया। वह आज जाग कर स्नानादि से अवकाश पा सीधी अल्पाहार के लिये डाईनिंग रूम में जा पहुँची। वह आँखें नीची किये हुए अपने स्थान पर बैठ गई। वहाँ रघुनाथ सहाय, सोमदेव, शीरीं और डाक्टर असलम तथा उसकी पत्नी और लड़की भी आये हुए थे। डाक्टर साहब के आते ही सोमदेव ने पूछ लिया, 'डाक्टर साहब, आज लोकसभा में किस मसलह पर विचार होने वाला है ?'

'मैंने ऐडजर्नमेण्ट मोशन का नोटिस दिया है। मैं वहाँ इस मसलह पर विचार के लिये वक्त चाहता हूँ कि इमर्जेंसी में डेढ़ लाख के लगभग लोगों को पकड़कर जेल में ठूँस देने का जिम्मेदार कौन था ? अफसरों पर अपने ओहदे का नाजायज़ लाभ उठाने के जुर्म में मुकद्दमा चलाया जाना चाहिये।'

'कौन हैं वे लोग जिन्होंने इतने लोगों को पकड़ा था और किस अदालत के पास इतना वक्त है कि इतनी बड़ी तादाद में अफसरों को इतने अधिक लोगों पर अन्याय करने के मुकद्दमें करे ?'

'मेरा मतलब था कि एक-दो मुल्जिमों के खिलाफ मुकद्दमा किया जाये।'

'यह तो कोई पकड़ कर कैद किया गया व्यक्ति ही कर सकता है। गवर्नमेण्ट तो जब मुकद्दमा करेगी तो डेढ़ लाख का मामला लेगी। साथ ही वह व्यक्ति इस प्रकार नाजायज़ कैद करने का अब हर्जाना माँग सकता है।

'इसका हर्जाना माँगने पर तो कोर्ट-फीस देनी पड़ेगी। यह सब बहुत झमेला हो जायेगा।'

'तो बेइन्साफी की सज़ा किसको और कैसे दिलाई जाये ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं समझता हूँ कि सिर्फ इन्दिरा गांधी पर मुकद्दमा होना चाहिये। उसने अपने प्रधान-मंत्रीत्व काल में इमर्जेंसी लगाकर घोर अन्याय किया है और इस गुनाह-अजीम का उसे दंड दिया जाये।'

'और यह मुकद्दमा कौन कर सकता है?'

'यह आजकल की सरकार उस व्यक्ति पर कर सकती है, जिसने इमर्जेंसी लागू की थी?'

'वह कौन है?'

'भूतपूर्व राष्ट्रपति है। उस कानून में लिखा है कि जब उसे तसल्ली हो जाये।' अतः उस पर दावा होना चाहिये कि वह अदालत में हाजिर होकर बताये कि उसने अपनी तसल्ली किस तरह की कि मुल्क में इतनी खतरनाक हालत पैदा हो गयी थी, जिससे मुल्क को अथवा मुल्क के किसी हिस्से को खतरा था और क्या 'खतरा' था।'

'परन्तु राष्ट्रपति अब है नहीं। उनका इन्तकाल हो चुका है।'

'तो यह दावा बेअसर हो गया है। मुजरिम इसके असर से बाहर हो गया है।'

'मगर वकील साहब! मैंने तो नोटिस दिया है और मेरी मोशन आज के 'अजैण्डा' पर है। मैंने इसके वास्ते एक धूआंदार तकरीर तैयार की है। उसमें आपके पकड़े जाने की बात भी कहने वाला हूँ।'

'मैं कल के समाचार पत्र में आपकी धूआंधार स्पीच की रिपोर्टिंग पढ़ूंगा।'

इस प्रकार की बातें होती रही। किसी ने डाक्टर साहब की पत्नी तथा लड़की के मुरादाबाद जाने के विषय में चर्चा नहीं की। न ही किसी ने प्रेम के देरी तक सोये रहने की बात की।

प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त वकील साहब अपने कार्यालय को चले गये और डाक्टर साहब पार्लियामेण्ट भवन को जाने की तैयारी करने लगे।

: ७ :

जब लक्ष्मी अपने कमरे में जाने लगी तो प्रेम उसके पीछे-पीछे वहाँ आ पहुँची। लक्ष्मी ने स्वयं सोफा पर बैठ और प्रेम को अपने समीप बैठने का निमंत्रण दे कर कहा, 'मैं अल्पाहार के उपरान्त डाक्टर को टेलीफोन कर बुलाने वाली थी कि आकर देखे कि तुम्हें क्या तकलीफ है। परन्तु तुम्हें डटकर भोजन करते देख समझ गयी हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम किसी प्रकार भी अस्वस्थ नहीं हो।'

'हाँ मौसी ! आपका अनुमान ठीक ही है कि मैं किसी प्रकार से भी अस्वस्थ नहीं हूँ। मगर मौसी, रात मेरी तबियत खराब थी।'

'क्या कष्ट था ?'

'मानसिक विक्षोभ कष्ट देने लगा था। शबनम और शीरीं की बातें याद आ आकर मन में चचंलता उत्पन्न करने लगी थीं।'

'तो उठकर मेरे कमरे में आ जातीं। मैं अब तक तुम्हें चण्डीगढ़ ससुराल भेजने का प्रबन्ध कर देती।'

प्रेम मुस्कराई और बोली, 'नहीं मौसी ! वह रात वाली मानसिक हलचल तो एक आपके नुस्खे से शान्त हो गयी और जब वह शान्त हुई तो फिर गहरी नींद आ गयी। अब ठीक छः घंटे सोने पर ही आँखें खुली हैं।'

'क्या नुस्खा प्रयोग किया था ?'

'पहले तो आपकी यह बात याद आयी कि इस संसार में कोई बात अकारण नहीं होती और उसका इलाज करने के लिये इसका कारण जानना बहुत लाभदायक है।

'तब मैं अपनी रात उत्पन्न हुई अव्यवस्था का कारण जानने का यत्न करने लगी। मुझे समझ आया कि यह शीरीं और शबनम की हस्बेंड-हंटिग की बात सुनकर अपने हस्बैण्ड-हंटिग की बात स्मरण आ गयी थी। प्रोफेसर अश्विनी कुमार की मेरे प्रति अवहेलना का ध्यान आया। जब मैं उसके इस भाव के कारणों पर विचार करने लगी तो अपनी और उसकी पत्नी की तुलना हो गयी। प्रत्यक्ष ज्ञान पर वह मुझ से बहुत घटिया प्रतीत हुई थी। मुझ तो लगा था कि प्रोफेसर मूर्ख है। परन्तु यह भाव बहुत देर तक मन में टिका नहीं। वह ऐम० ए०, पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त है। इस पर विचार आया कि उसकी पत्नी में कुछ आभ्यंतरिक गुण होंगे। इस पर उस स्त्री के साथ रेस्टोरां में हुआ वार्तालाप स्मरण हो आया और फिर मुझे ज्ञान हुआ कि प्रोफेसर मूर्ख नहीं था, मैं ही मूर्ख थी जो पहुंच से ऊपर की वस्तु को पाने का यत्न करने लगी थी।

'अब प्रोफेसर और अपने पति में अन्तर पर विचार करने लगी। इस पर समझ आया कि दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर है।

'यह अन्तर अपने अवगुणों के कारण समझ में नहीं आया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर अपने वर्तमान के कर्मों का अवलोकन करने लगी। वर्तमान का व्यवहार स्मरण आने लगा।

'अब समझ में आया है कि जो कुछ हुआ है, अकारण नहीं था और भविष्य को उज्ज्वल करने के लिए कारण उत्पन्न करने चाहिएँ।

'यहाँ तक विचार करते-करते मस्तिष्क थक गया और फिर नींद आ गई। नींद खुली तो दिन के सात बजे थे। बस अब अपना अगला जीवन सुधारने की बात विचार करने आपके पास आई हूँ।'

'तो बहुत दूर की बातों की योजना बना रही हो ?'

'हाँ मौसी ! यह तुमने ही तो बताया है। तुमने एक दिन कहा था कि चलने वाला अपने पाँव में ही देखता रहे तो अवश्य ठोकर खाकर गिर पड़ेगा। इसलिए अपने पाँवों की ओर न देख अपने स्थान से बीस मीटर दूर देखते हुए ही चलने का विचार बना लिया है।

'मैं समझ गई हूँ कि यह जीवन व्यर्थ गया है और एक रघुवीर सिंह जैसे शराबी-कबाबी के पल्ले पड़ गयी हूँ। उससे बचने और भविष्य में सुखी जीवन के निर्माण की योजना बनाना चाहती हूँ।'

'तो ठीक है, बनाओ योजना।'

'मैं चाहती हूँ कि आप सहायता कर दें।'

'मैं तो एक बात जानती हूँ कि जो कुछ भाग्य में बँधा है उसको भोगने पर ही वह भोगफल समाप्त होता है।'

'यही तो समझ में नहीं आ रहा कि भोगफल रघुवीरसिंह की पत्नी बनना है अथवा पति-वियोग है ?'

'इसके जानने का एक पैमाना है।'

'मौसी, वही तो पूछ रही हूँ ?'

'किस जीवन में तुम परोपकार का जीवन व्यतीत कर सकती हो। पति की संगत में रह कर अथवा पति से पृथक् रह कर।'

'पति की संगत में तो मद्य-सेवन, दिन-रात वासनामय चिन्तन, मांस अण्डों का सेवन ही हो सकेगा।'

'और लोक-कल्याण ?'

'यही तो समझ में नहीं आ रहा।'

'इसमें मैं सहायता नहीं कर सकूँगी। लोक-कल्याण वह कार्य है जिसमें अपने लाभ का विचार छोड़कर अपने विचार से परहित की बात लक्ष्य हो। इसका मादपण्ड तो तुम्हारा मन, तुम्हारी आत्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रौर तुम्हारी बुद्धि है । इन तीनों के संयोग को चित्त कहते हैं ।

'अपने चित्त से ही विचार कर लोकहित के किसी कार्य को करो। बस, इसी से लाभ होगा ।'

प्रेम मौसी के कमरे से गम्भीर विचार में मग्न निकली और अपने कमरे में जाने लगी तो शबनम उसके पास आ उसके साथ उसके कमरे को चल पड़ी । तो तुम मुझसे मिलने आ रही हो ?' प्रेम ने पूछा ।

'प्रेम बहन से एक राय करने ?'

'तो आ जाओ । मगर एक बात समझ लो कि मैं स्वयं अनुभव-विहीन हूँ ।'

'यह कैसे ?'

दोनों कमरे में जा कुर्सियों पर बैठ गयीं । वैसे प्रेम इस समय स्वस्थ मन थी । पन्द्रह-बीस मिनट तक लक्ष्मी से वार्त्तालाप के उपरान्त वह अपना मार्ग कुछ दूर तक देखने लगी थी और अपने को इस योग्य पा रही थी कि जीवन के अन्त तक की योजना बना ले ।

बात शबनम ने आरम्भ की । उसने कहा, 'कल आप उस समय बैठक घर में थीं जब मैंने विवाह करने का ऐलान किया था ।'

'हाँ ।'

'मैंने कहा था कि मेरा चुना हुआ 'वुड-बी हस्बैण्ड' अपनी माँ से पूछकर बतायेगा । अगर उसकी माँ ने उसको शादी करने की इजाज़त दी तो वह उसका नाम बता देगी ।'

'हाँ, मुझे सब बात याद है ।'

'आज बहुत सुबह माँ ने मुझे जगा कर कहा कि मुरादाबाद चलना है । मैं समझ गयी कि मुझे अपने चुने हुए शख्स से जुदा करने के लिए यह तजवीज़ की जा रही है । इसलिए मैंने माँ के साथ जाने से इन्कार कर दिया ।

'अभी नाश्ते से पहले मेरी अम्मी के साथ गुफ्तगू हुई है । उस वक्त मौसी लक्ष्मी भी सामने थीं । मैंने बहुत इत्मीनान से कहा था कि मेरी शादी उसी शख्स से होगी और मैं अब्बाजान की इज़ाज़त से शादी कर लूंगी । माँ मान गयी और मुरादाबाद जाना मुलतबी हो गया है ।

'मगर अभी-अभी मुझ खबर मिली है कि उस शख्स की माँ ने उसे शादी करने से मना कर दिया है । मेरे चुनाव-शुदा शख्स का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्याल है कि माँ ने उसके लिए कोई लड़की गाँव में ही चुन रखी है।'

'और फिर तुम क्या करना चाहती हो ?'

'यही तो बहन प्रेम से पूछने आयी हूँ ?'

'उससे शादी करने का इरादा तर्क कर दो।'

'दिल नहीं मानता।'

'अम्मी के साथ मुरादाबाद चल दो। वहाँ तुम्हारी अम्मी तुम्हारी शादी का इन्तजाम किसी दूसरी जगह कर देंगी।'

'तो यह गाजर-मूली की खरीद हो रही है ?'

'सिरफ इतना फर्क है कि गाजर-मूली अपने आप ग्राहक के घर को नहीं चल पड़ती, दुकानदार जहाँ जिसको देना चाहता है, वहाँ ही वह जाती है। मगर शादी में खाविन्द और बीवी तो बेजान गाजर-मूली नहीं हैं। वे अपना भी कुछ दाम रखती हैं।

'मगर शबनम बहन ! तुम्हारे पसन्द शख्स ने तो अपने को गाजर-मूली ही साबित किया है ?'

'उसने तो कहा है, इन्तजार करो। मैं गाँव जा रहा हूँ और माँ से बातचीत कर आकर बताऊँगा।'

'तब तो अभी इन्तज़ार करनी चाहिए। मगर तुमने अपनी ख्वाहिश नहीं बतायी कि उसके इन्कार करने पर तुम क्या करना चाहती हो ?'

'मैं यही तो तुम से जानना चाहती हूँ। मैंने सुना है कि तुम भी यहाँ बैठी किसी की याद में घुल रही हो ?'

प्रेम ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'तो तुम्हें मैं घुल रही दिखाई देती हूँ ?'

'तुम्हारी बाबत बताने वाले ने तुम्हारे लिए यही इल्फाज इस्तेमाल किए हैं।'

'मगर मैं तो इस कोठी में रहती हुई दिन-ब-दिन मोटी हो रही महसूस करती हूँ।'

'मगर तुम यहाँ किस गर्ज़ से पड़ी हो ?'

'यह कल रात मैं आपके पलँग पर करवटें लेती हुई सोचती रही हूँ। कई घण्टों की कोशिश के बाद मुझे यह समझ में आया है कि मैं अब खाविन्द की ख्वाहिश में यहाँ नहीं पड़ी। कुछ दूसरी ही वजह है जो मुझे इस घर से बाँधे हुए है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या मैं यह जान सकती हूँ ?'

'यह खानदान पढ़े-लिखे अक्लमन्दों का है। इनका मजहब तो है मगर वह सबका अपना-अपना है और वे एक-दूसरे के मज़हब पर एतराज नहीं करते। यह खूबी मुझे अपनी माँ के घर में भी नहीं मिली।

'यहाँ सब अपने-अपने मज़हब के पैराश्रो हैं, मगर किसी दूसरे के अपने मज़हब पर चलने पर एतराज नहीं करते। यह बात मुझे बहुत ही पसन्द आयी है। इसलिए मैं इस दुनिया में ऐसा महसूस करती हूँ कि मैं एक खुले मैदान में हूँ और इसकी चारों दिशाओं में से जिस तरफ भी चाहूँ जा सकती हूँ।'

'तो बहन प्रेम ! बताओ, मैं क्या करूँ ?'

'जो तुम्हारे मन में आये।'

'वह तो मैंने कल सब में बैठे ऐलान किया था।'

'परन्तु दुनिया में कई चीजें हैं जो बहुत मेहनत-मुशक्कत से हासिल की जा सकती हैं। तुम भी उसको हासिल करने की कोशिश करो।'

'मुझे महात्मा गांधी का तरीका अपने मन की बात मनाने का समझ में आ रहा है ?'

'तो तुम भूख हड़ताल करोगी ?'

'तुम बताओ। यह करनी चाहिए या नहीं ?'

'नहीं। यह भी तो दूसरों को अपनी बात मनवाने के लिए मजबूर करना है। बाबा ने एक दिन बताया था कि हिन्दुस्तान के लोग, खास तौर पर हिन्दू गांधी जी को एक नेक हस्ती और काबिले-इज़्ज़त मानते थे। इतना जानकर गांधी जी ने भूख-हड़तालें की हैं और लोग उन्हें फाकाकशी खत्म करने के लिए राजी करते रहे हैं। बाबा का कहना है और अब तो मैं भी यही समझती हूँ कि यह अपनी मोहब्बत की बिक्री करना है या इसे यह कहो तो ज्यादा ठीक होगा कि मुहब्बत के बल पर दूसरों को उनके अपने मत के खिलाफ अमल करने पर मजबूर करना है। यह पुलिस भेज कर दण्डे के बल पर लोगों को कोई काम करने के लिए मजबूर करने जैसा ही है।'

'तो भूख-हड़ताल से भी तानाशाही चलती है ?'

'हाँ, जैसी पूर्व की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने इमर्जेंसी लगा-कर की थी। अगर कुछ फर्क है तो सिर्फ यह है कि एक तरफ राजसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल से मजबूर किया जा रहा है और दूसरी तरफ मुहब्बत के बन्धनों से मजबूर किया जा रहा है। मजबूरी तो दोनों हालतों में बराबर है।

'अगर यह मजबूरी न होती तो कलकत्ता के बाद नौआखली और उसके बाद बिहार और फिर उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में जो कुछ हुआ, वह न होता।'

'यह तो मेरे पैदा होने से पहले की बात है।'

'मगर तुम उस वक्त के चलन पर ही तो अमल करने की बात कह रही हो। वैसे तो मेरा जन्म भी मुल्क की तकसीम के बाद हुआ था। मैं भी तो उस ज़माने की तकसीम कुछ तो किताबों के पढ़ने से और कुछ बड़ों की बात सुनने से जानती हूँ। मेरे माता-पिता भी पंजाब से भाग कर चण्डीगढ़ में जाकर बसे हैं।'

शबनम को समझ आया कि प्रेम उसे अभी इन्तजार करने को कह रही है।

एक बात तो वह भी इन पन्द्रह-बीस दिनों में समझ गई थी कि मौसी लक्ष्मी के घर में मुरादाबाद वाले घर से ज्यादा आज़ादी है। सबसे बड़ी बात यह है कि यहाँ वकील साहब के पुस्तकालय से कई किताबें लेकर वह पढ़ चुकी है। उनके पढ़ने से उसे कितनी ही नई बातों का पता चला था। घर के सब प्राणी किताबों को पढ़ने के बहुत शौकीन थे। इस कारण यहाँ का वातावरण पढ़े-लिखे सभ्य लोगों का-सा था।

एकाएक वह उठी और प्रेम का शुक्रिया अदा कर जाने लगी तो प्रेम ने कह दिया, 'शबनम बहन! मुरादाबाद जाओगी तो मिलकर तो जाओगी न?'

'मगर मैं मुरादाबाद नहीं जा रही। यहाँ तो हम तब तक हैं जब तक अब्बाजान को सरकारी मकान ऐलाट नहीं हो जाता।'

'पर वह मकान तो नई दिल्ली में ही मिलने वाला है। यहाँ रहते तो मेल-मुलाकात होगी ही।'

'हाँ, उम्मीद तो यही करती हूँ। फिर शीरीं भी तो यहाँ है। उससे मिलने को जी करता रहता है।'

इतना कह शबनम कमरे से निकल गई। उसने यह नहीं बताया कि अपनी शादी का ख्याल उसने छोड़ा है अथवा नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी सायंकाल दो नई घटनाएँ घटीं। एक यह कि एक जस्टिस शाह के अधीन इमर्जेंसी के मुतअल्लिक सब किस्म की घटनाओं का वृत्तान्त जानने के लिए एक कमीशन नियुक्त की गई और दूसरे 'मारुति' के मुतअल्लिक जानकारी प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद के सेवामुक्त मुख्य न्यायमूर्ति का कमीशन नियुक्त हो गया। सोमदेव इन दो कमीशनों की नियुक्ति की खबर से प्रसन्न और सन्तुष्ट था।

सब लोग चाय लेने ड्राइंगरूम में बैठे हुए थे। मुरादाबाद से राधाकृष्ण भी आया हुआ था और लोकसभा से लौटकर डाक्टर असलम भी परिवार में बैठा चाय ले रहा था।

डाक्टर साहब का कहना था, 'मुझे यह एक लम्बा प्रोसीजर मालूम होता है।'

'यह लम्बा तो है', सोमदेव का कहना था, 'मगर इसका असर भी तो बहुत दूर तक जाने वाला है। उन न्यायाधीशों की रिपोर्ट इतिहास के पन्ने बन जाएँगे और यह इतिहास डाक्टर साहब ! आपके परपोते और नगरपोते पढ़-पढ़ कर नेहरू परिवार की इस महिला की सूझ-बूझ पर विस्मय किया करेंगे।'

डाक्टर असलम ने मुस्कराकर कहा, 'वकील साहब, आप जरा मेरी जुबान में बात किया करें। कम-से-कम जब हम मुरादाबाद वाले बैठे हों तब हमें आपकी यह संस्कृत भाषा समझ में नहीं आती।'

इस पर सब हँसने लगे। मगर सोमदेव ने गम्भीर भाव में ही कहा, 'मैं आपको पाठ पढ़ा रहा हूँ और आप यहाँ दो चार महीने रह गये तो आपको यह संस्कृत वसे ही समझ में आने लगेगी जैसे उर्दू-फारसी समझ में आती है।

'उर्दू बाजारी जुबान है। इसी तरह जो कुछ मैं यहाँ बोल रहा हूँ वह बाजारी जुबान ही है, संस्कृत नहीं। हाँ, जो कुछ मैं कह रहा हूँ इसका मुख संस्कृत की ओर है।'

'मैं अपनी बोली में पद-विन्यास (सिन्टेक्स) वही इस्तेमाल कर रहा हूँ जो उर्दू बोलते वक्त आता है। सिर्फ कुछ इल्फाज ऐसे हैं जो आपके कानों ने पहले शायद सुने नहीं। आप उन इल्फाज को जल्दी ही समझने लगेंगे।'

'मगर आप अंग्रेजी में बात क्यों नहीं करते ?'

'दिन भर 'कोर्ट' में वही बोलता-सुनता रहता हूँ। इसलिये घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वातावरण में उसे बोलने और सुनने को चित्त नहीं करता। मैंने यह निश्चय कर रखा है कि घर में मैं अंग्रेजी में बात नहीं करूँगा।'

'मगर अब्बाजान! अब तो मैं यहाँ की सब बातें समझने लगी हूँ। मेरा इनकी ज़ुबान के शब्दों का खजाना काफी बड़ा हो गया है।' शीरीं ने बताया।

'मुझे साऊथ ऐविन्यु में एक मकान ऐलाट हो गया है?' डाक्टर असलम ने अपनी बात कह दी।

'तब तो हमारे घर की चहल-पहल कम हो जाएगी।'

'मैं दो दिन में उस घर में चला जाऊँगा।'

'और इस कोठी वालों को वहाँ आने की दावत दिया करेंगे या नहीं?'

'मेरा तो ख्याल है कि हम हर रोज ही यहाँ आ जाया करेंगे। मैं अपनी मोटर गाड़ी का इस्तेमाल करूँगा। तब आने-जाने में सहुलियत हो जाएगी।'

'मगर मैं तो अपने को वहाँ बुलाए जाने की बाबत पूछ रहा हूँ?'

'वह शीरीं की माँ का काम है। वहाँ की वही मलिका होंगी।'

'मैं तो मुरादाबाद जाने की तैयारी में हूँ।' रहीमन ने कह दिया।

'तो शीरीं के अब्बाजान से लड़ पड़ी हो?' बाबा ने पूछ लिया।

'लड़ी नहीं बाबा! इस पर भी कुछ इख्तिलाफ राय हो गई है।'

'किस विषय में? क्या हम लोगों के रहन-सहन के विषय में एक राय नहीं रहे?'

'आपके नहीं। अपने रहन-सहन के बारे में एक राय नहीं रहे। मैं तो 'साउथ ऐविन्यू' पर भी जाकर रहना नहीं चाहती।'

'मगर मैंने तो वहाँ 'बड़ा क्वार्टर' लिया है।'

'अब फिर छोटे में बदल लीजिए?'

'यह अब नहीं हो सकता।'

'तो मेरा कमरा खाली पड़ा रहेगा।'

'अब्बाजान!' शबनम बोल उठी, 'मैं भी वहाँ नहीं जा रही।'

'तो तुम माँ के साथ मुरादाबाद जा रही हो?'

'नहीं अब्बाजान! मैं यहाँ बहन के साथ रहूँगी।'

'इसकी हम इज़ाज़त नहीं दे सकते।' रहीमन ने कहा।

'तो अम्मी! मैं बिना इज़ाज़त के ही रहूँगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो तुम हम से बगावत कर रही हो ?'

'यह बगावत नहीं कहाती। यह बच्चों का बालिग होने पर माँ-बाप से अलहदा घर बनाना है।'

'और घरवाले के बिना घर बना लोगी ?'

'घर का ताल्लुक रहने वाले से है। इसका ताल्लुक शादी वगैरा से नहीं। मैं यहाँ के कुतुबखाने का इस्तेमाल करना चाहती हूँ। शीरीं से मेरी बातचीत हो चुकी है।'

'क्यों शीरीं ! शबनम को अपने पास रख रही हो ?'

'हाँ अम्मी ! कुछ महीनों के लिए। जब तक इसके जीजाजी अपना काम मुरादाबाद में खत्म कर नहीं आ जाते।'

'उसमें अभी छः महीने हैं।' शबनम ने कह दिया।

'बहन ने अपने बगल वाला कमरा मेरे इस्तेमाल के लिए देने का वायदा किया है।' शबनम ने बताया।

'बात यह है', प्रेम ने बातों में दखल देखे हुए कहा, 'यहाँ एक बहुत ताकतवर मैगनेट मौजूद है। और जो भी लोहे का टुकड़ा उसके नजदीक आता है वह इससे चिपट जाता है।'

'तो यह बात है ?' डाक्टर असलम ने कह दिया।

'मेरा मैगनेट तो यहाँ का पुस्तकालय है।'

प्रेम मुस्कराती हुई शबनम की ओर देखने लगी। रहीमन ने लक्ष्मी से पूछ लिया, 'बहन जी ! क्या आपने इस बात की इज़ाज़त दे दी है।'

'बात यह है कि जब से शीरीं का विवाह राधा से हुआ है, वह इस घर की उतनी बड़ी ही मालकिन है, जितनी मैं हूँ। इसलिये उसे भी इस घर पर उतना ही हक हासिल है जितना मुझे है। जब उसने शबनम को कोई कमरा रहने के लिए दिया है तो मैं मना नहीं कर सकती।'

'मगर वह अभी नाबालिग है ?'

'अम्मी ! मैं अब्बाजान की इज़ाजत से यहाँ रहूँगी।' शबनम का कहना था।

'यह खूब है, जब मैं कुछ कहती हूँ तो अपने अब्बाजान को बीच में लाकर खड़ा कर देती है।'

'पर वह तो मेरे पैदा होने से भी पहले के खड़े हैं। मैं कैसे उनको बीच में ले आती हूँ ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अब बताइए हजरत ! क्या हुक्म है इस बागी लड़की की बाबत ?' रहीमन ने पूछा ।

'यह बागी नहीं है बेगम ! यह तो कह रही है कि मेरे घर में, बारसूख पार्टी मैं हूँ, तुम नहीं हो ? यह हमारी शरअ़ के मुताबिक हक-हकूक का बयान कर रही है । और यह ठीक ही है कि हमारी शादी शरअ़ के मुताबिक हुई थी ।'

'मैं आपकी शरअ से तंग आ गई हूँ ।'

'तो दोनों में तलाक हो सकता है । और फिर जिस कायदे से तुम चाहो, दुबारा हमारी शादी हो सकती है ।'

'मगर मैं तो आपके शरअ की रूह से तलाक दे नहीं सकती ।'

'अगर तुम मेरी अदालत में अर्जी करोगी तो मैं तुम्हें खुश करने के लिए तलाक दे सकता हूँ ।'

'यह तो मैं देखती हूँ कि आप जब से यहाँ मैम्बर बनकर आये हैं, मुझे छोड़ने के लिए बेताब मालूम होते हैं ।'

'नहीं बेगम ! यह बात नहीं है । जिस लहमा मैं तुम्हें शरअ़ वाली शादी से तलाक दूंगा, उसके दूसरे लहमा में ही तुमसे नये तरीके से शादी के लिए तैयार हो जाऊँगा ।'

'किस तरीके से शादी कर लेंगे ?'

'मसलन जिस तरीके से डाक्टर राधाकृष्ण ने शीरीं से शादी की है । मेरा मतलब है तुम्हें एक चिट्ठी लिखकर बीवी बना लूंगा ।'

'तब ठीक है, कर दीजिए । तब मैं कुछ हक-हकूक तो रख सकूंगी ।'

'हाँ, तब तुम जब चाहोगी, उस चिट्ठी को फाड़कर मेरे मुख पर दे मारोगी और इस खुली दुनिया में जिधर चाहो चल दोगी ।'

रघुनाथ सहाय ने पति-पत्नी की इस कानूनी बहस में हस्ताक्षेप करते हुए कहा, 'मगर डाक्टर साहब ! इस झगड़े की बिना क्या है ?'

'बिना है शबनम । इसकी बाबत इख्तलाफ राय हो गयी है । यह यहाँ के किसी नौजवान से, अपनी अम्मी की राय के खिलाफ, शादी करना चाहती है । मेरी उसमें रज़ामन्दी है ।'

'मगर,' रघुनाथ सहाय ने कह दिया, 'जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है वह शादी अभी हो नहीं रही ।'

'सच ?' रहीमन के मुख से खुशी में निकल गया, 'मैं इससे बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुश हूँ।'

'मगर अम्मी! मैं इस घर में रह रही हूँ।'

'अब किसलिए?'

'बताया तो है। यहाँ के 'कुतुबखाने' की सैर के लिए।'

'और मैं इसे जायज़ ख्वाहिश मानता हूँ।' डाक्टर ने कह दिया।

अब रघुनाथ सहाय ने पुन: बातों में दखल देते हुए कहा, 'डाक्टर साहब! इस मुश्किल का हल मैं बताता हूँ। आप इसे दिन भर लायब्रेरी की सैर की इजाज़त दे दें और रात को इसकी अम्मी के पास ले जाया करें।'

'क्यों शबनम, यह सलाह ठीक है?'

'अगर यहाँ वकील साहब रात भर के इस्तेमाल के लिये एक-आध किताब वहाँ ले जाने की इजाज़त दे दिया करें तो?'

रहीमन ने वकील साहब की तरफ देखते हुए कहा, 'भाई साहब! इतनी मेहरबानी मेरी खातिर कर दीजिये।'

'यह हक तो इस बेटी को पहले से ही हासिल है। यह पहले भी पुस्तकालय में से किताबें अपने कमरे में ले जाया करती है।'

'क्यों शबनम! अब ठीक है?'

'हाँ अम्मी! मैं जब चाहूँगी यहाँ आ जाया करूँगी।'

इस प्रकार बाप और बेटी का झगड़ा खत्म हो जाने पर डाक्टर असलम ने शबनम से पूछा, 'अब तो बता दो। किससे शादी की बातचीत हो रही थी, जहाँ से दो टका जवाब मिल गया है?'

'अब यहाँ पिता जी जान गये हैं। अगर वह चाहें तो बता सकते हैं।'

'अब यह किसी किस्म का राज़ नहीं रहा। मेरा नायब मुंशी रामचन्द्र इससे शादी का उम्मीदवार था। मगर उसकी माँ ने यह लिख भेजा है कि अगर विवाह उसकी पतोहू बनाने के लिए कर रहे हो तो उसे अपनी बहू को देख खुद पसन्द कर लेने दो। और अगर वह सिर्फ उसकी बीवी ही बनने वाली है तो जो मन में आये करो।

'मुंशी ने मुझसे राय की है और मैंने उसे राय दी है कि ज्यों ही बीवी उसके घर में दाखिल होगी वह सास की पतोहू उसी समय बन जायेगी। यह इसलिये कि तुम अपनी माँ के बेटे हो और माँ-बेटे का रिश्ता टूट नहीं सकता। हाँ, अगर बेटा माँ से लड़ पड़े और माँ-पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों एक-दूसरे का मुख न देखें, तब बेटे की बीवी का उसकी माँ से रिश्ता नहीं रहेगा।

'मुंशी ने मुझसे राय पूछी तो मैंने कह दिया कि माँ को यहाँ लाकर लड़की को दिखा दो। अगर वह पसन्द करे तो उससे शादी कर लो।'

'तो वह कुछ पढ़ी-लिखी औरत है ?' रहीमन ने पूछ लिया।

'मैंने रामचन्द्र से पूछा है। उसका कहना है कि किताबें पढ़ने से तो पढ़ाई नहीं होती। एक किताब परमात्मा ने सबके लिये खोल रखी है। वह है यह संसार। उसने उस किताब का अध्ययन मुझसे ज्यादा किया है।

'मैंने उसको यही राय दी है कि गाँव में जाकर अपनी माँ को यहाँ ले आये। माँ और बहन-भाइयों को अपनी होने वाली बीवी को देखा कर उनको राजी कर ले। उसने मेरी राय मान ली है और अपनी मां को एक चिट्ठी लिख दी है कि वह उसे दिल्ली की सैर कराने के लिये यहाँ लाना चाहता है। अगले सप्ताह वह गाँव को मुझसे छुट्टी लेकर जा रहा है। मैंने उसे एक राय और दी है।'

'क्या ?'

'वह यह कि अपनी होने वाली बीवी और सास को भी साथ में गाँव ले जाये। जिससे ये भी देख लें कि उसका घर जिसमें जा कर वह रहने वाली है, कैसा है। यहाँ दिल्ली में तो उसकी पक्की रिहायश नहीं हो सकती।

''यहाँ रहने के लिये कम से कम पाँच-छः सौ रुपये महीने की पक्की आमदन होनी चाहिये। यह यहाँ की रिहायश के लिये है और शेष खर्च के लिये अलहदा। वहाँ गाँव में एक सौ रुपया महीने में जिन्दगी के सब काम निकल जाते हैं।'

वकील साहब की इस तजवीज़ पर तो सब उनका मुख देखते रह गये। सोमदेव ने अपनी बात की व्याख्या विस्तार में कर दी, 'यहाँ के भरोसे पर रामचन्द्र को शादी नहीं करनी चाहिये। जहाँ उसकी ज़िन्दगी का कीला गड़ा है, वह जगह जरा बीवी को दिखा दे, तब ही वह शादी करे। रामचन्द्र तो इस बात के लिये राजी हो गया है।'

अब शबनम ने कहा, 'मैंने उनसे कहा है कि पहले अपनी माँ को यहाँ बुला कर मुझे माँ के घर का 'विसा' दिलवा दो तब मैं यहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ जाने के पासपोर्ट के मुतअल्लिक विचार करूँगी और वह मान गये हैं।'

इस तजवीज़ से रहीमन के मन में आशा बँध गयी कि शबनम की शादी वहाँ पर नहीं होगी। एक हिन्दू देहातिन भला कैसे एक गैर-मजहब की लड़की को अपने चौका चूल्हा में घुसने देगी। अतः वह चुप रही।

: ८ :

देश की हवा बदलने लगी। राज्य-विधान-सभाओं के नये निर्वाचन हुए। बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, बंगाल, और तमिलनाडु के राज्यों में। तमिलनाडु और बंगाल के अलावा अन्य सब राज्यों में जनता पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ। इन्हीं राज्यों में लोकसभा के निर्वाचनों में भी जनता पार्टी को अभूतपूर्व सफलता मिली थी।

राज्य की विधानसभा में खड़े अपने दल के सदस्यों की सहायता के लिये डाक्टर असलम मुरादाबाद गया था। उनकी पत्नी रहीमन उसके साथ थी। संसद सदस्यों के क्वार्टरों में शबनम अकेली नहीं रह सकती थी। इसलिये वह अपनी बहन शीरीं के पास आ गयी।

इन्हीं दिनों में रामचन्द्र अपने गाँव होशियारपुर में गया और अपनी माँ तथा भाई बहनों को लेकर दिल्ली आ गया।

सुखनी के चार बच्चे थे। रामचन्द्र सबसे बड़ा था। उसने होशियारपुर में हायर सैकेण्डरी पास की थी। जब उसके पिता का देहान्त हुआ तो वह अपने गाँव का पटवारी था।

स्कूल में पढ़ते हुए रामचन्द्र ने एक दोस्त सोहन के साथ इकठ्ठे हायर-सैकेण्डरी की परीक्षा पास की थी। दोनों होशियारपुर में पढ़ते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयं सेवक बने हुए थे।

जब रामचन्द्र के पिता कृष्णचन्द्र गुलाटी का देहान्त हुआ तो उसके घर की आर्थिक अवस्था ऐसी हो गयी कि घर के सबसे बड़े लड़के को कहीं काम करना आवश्यक हो गया। अतः रामचन्द्र दिल्ली नौकरी ढूंढने चला तो सोहन भी उसके साथ चल पड़ा। दोनों एक महीना तक दिल्ली की सड़कों की गश्त लगाते-लगाते थक गये थे कि एक दिन सोहन ने बताया, 'मुझे नौकरी तो मिलती है मगर एक बड़े अफ़सर के घर पर काम-काज के लिये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या काम बताया है ?'

'घर की सफाई करना, कपड़े धोने और फिर किचन में रसोईये की सहायता करना।'

'और वेतन क्या मिलेगा ?,

'एक सौ रुपये, साथ में खाना। और कोठी की ऊपर की छत पर रहने को कोठरी।'

'तो ?'

'मैं मंजूर कर आया हूँ और कल काम पर चला जाऊँगा।'

इस पर रामचन्द्र परेशानी अनुभव करने लगा। 'डोमेस्टिक सर्वेंट' का काम रामचन्द्र को अटपटा लग रहा था। सोहन ने बताया, 'मैं अपने पिता से पचास रुपये लेकर दिल्ली आया था और अब वह धन समाप्त हो रहा है। साथ ही मैंने देखा है कि जब नौकरी ही करनी है तो जो भी काम मिल जाये वह कर लेना चाहिये। इस काम में से एक सौ रुपये प्रतिमास घर भेज सकूँगा।'

कुछ कमा कर भेजने की जल्दी रामचन्द्र को सोहन से भी अधिक थी। इस कारण उसने कह दिया, 'कहीं मुझे भी लगवा दो।'

प्रयत्न करने पर ऐसी नौकरी रामचन्द्र को भी मिल गई। वकील सोमदेव को घर के काम के लिये नौकर चाहिये था।

यह बात थी सन् १९७४ की। भारत में इमर्जेंसी लगने से एक वर्ष पहले की। दोनों मित्र बीच-बीच में मिलते रहते थे और अपने मालिकों की प्रशंसा-निन्दा किया करते थे।

इमर्जेंसी लगी तो सोहनलाल को पता चला कि उसका मालिक देश में एक बहुत बड़े शक्तिशाली अफसर के सैक्रेटरी की नौकरी में है। इससे वह सैक्रेटरी साहब से मेलजोल बढ़ाने लगा। इमर्जेंसी में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगा और सोहनलाल संघ के साथियों को जेल में सुविधाएँ दिलवाने में जहाँ तक बस चला, यत्न करने लगा। सैक्रेटरी भी किसी जमाने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाता रहा था। इस कारण जब पता चला कि सोहन भी स्वयंसेवक है तो वह उसकी बात को मानने और यथासम्भव उसकी सहायता करने लगा।

यह रहस्य था जिस कारण सोमदेव और फिर राधाकृष्ण इमर्जेंसी में छूट सके थे। परन्तु हरियाणा युवा कांग्रेस के सदस्य मधुसूदन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिपोर्ट पर राधाकृष्ण और सोमदेव पुन: पकड़ लिये गये थे।

इस बार जब सोमदेव को पकड़ने की आज्ञा आयी तो सैक्रेटरी कुछ नहीं कर सका। प्रधानमन्त्री की ओर से जब लोकसभा भंग करने की तथा नये निर्वाचनों की घोषणा हुई तो सक्रटरी समझ गया कि अब तख्ता उलट जायेगा। वह भी चुनाव को इन्दिरा गांधी की भूल समझता था यद्यपि उसके अधिकारी होम-मैम्बर साहब का कहना था, ऐसा नहीं होगा। हमारा भविष्य का प्लान यह है कि लोकसभा में नये रक्त का संचार किया जाये। यह चुनावों से ही हो सकता है।

'देखो मदन मोहन।' मन्त्री महोदय ने आगे कहा, 'स्ट्रेटेजी (योजना) यह है कि कांग्रेस दल के पचास प्रतिशत सदस्य युवा कांग्रेस के हों। यह बिना नये चुनाव कराये सम्भव नहीं। और सब तरफ से यही रिपोर्ट मिल रही है कि इससे अच्छा मौका चुनावों का कांग्रेस दल के लिए और नहीं हो सकता।

'मेरी सम्मति है कि इमर्जेंसी तो लगी रहे। थोड़ी समाचार-पत्रों को ढील दे दी जाये और कहीं-कहीं ऐसे नेता छोड़ दिये जायें जो निर्वाचन के विचार से जरूरी हैं, तो काम बन जायेगा।'

लोकसभा के नये चुनावों की घोषणा के उपरान्त एक सफदरजंग से होम-मैम्बर को टेलीफोन आया। उस टेलीफोन को सुन कर होम-मैम्बर ने अपने सचिव को बुलाया और कहा, 'एक घंटे में मेरे सामने सब पकड़े हुए नेताओं की सूची आ जानी चाहिये।'

'उनमें से कुछ को छोड़ने की आज्ञायें तो हो चुकी हैं?'

'हाँ, उनके लिये हिदायत धवन साहब की आयी थी। वह चुनावों की घोषणा से भी पहले था। अब आदेश है कि चोटी के नेताओं को छोड़ दिया जाये परन्तु कार्यकर्त्ताओं को अभी बन्द रखा जाये। बिना कार्यकर्त्ताओं के नेतागण किसी एक मीटिंग का भी प्रबन्ध नहीं कर सकेंगे।'

यह निश्चय लिया गया था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति को अभी नहीं छोड़ा जाये। यह भय था कि ये लोग यदि स्वतन्त्र हो गये तो जनता से नेताओं का सम्पर्क बन जायेगा।

इस प्रकार छूटने वालों में सोमदेव ऐडवोकेट का नाम सबसे पहले सामने आया। राधाकृष्ण की फाइल में था कि वह 'सत्य समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र' बाँटता हुआ पकड़ा गया था। अतः उसे छोड़ने की आज्ञा नहीं हो सकी। इस पर भी राधाकृष्ण छूटा निर्वाचन से दो दिन पूर्व। छूटकर जब वह पृथ्वी राज रोड वाली कोठी पर पहुँचा तो शीरीं कोठी पर थी। शीरीं का पिता और उसके भाई मुरादाबाद में निर्वाचन लड़ रहे थे।

निर्वाचनों के उपरान्त राधाकृष्ण तो हस्पताल में अपनी टर्म पूरी करने मुरादाबाद चला गया और डाक्टर असलम लोकसभा की सभाओं में भाग लेने के लिये दिल्ली रहने लगा।

इन दिनों में शीरीं की बहन शबनम का रामचन्द्र से कोठी की सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते आमना-सामना होने लगा। पहले एक-दूसरे का मुख देखना, फिर मुख-देख मुस्कराना और तदनन्तर एक-दूसरे को नमस्कार करना आरम्भ हो गया।

एक दिन शबनम ने एक लिफ़ाफ़ा रामचन्द्र को देते हुए कहा, 'यह आपके लिये कोई दे गया है।'

लिफाफे पर सुलेख में 'रामचन्द्र गुलाटी' लिखा था। रामचन्द्र ने लिफाफा लेते हुए पूछ लिया, 'मगर आपको यह कहाँ से मिल गया है?'

'कोई नीचे खड़ा दे गया है।'

रामचन्द्र ने अपने कमरे में जाकर लिफाफा खोल पत्र पढ़ा और खिलखिलाकर हँस पड़ा। यह विवाह का निमन्त्रण था।

रामचन्द्र ने इस पत्र का उत्तर लिखा और लिफाफे में बन्द कर जेब में रख लिया। उसने अपनी आर्थिक अवस्था, अपनी माता, अपने भाई और बहनों का अपने पर बोझा सब लिख दिया।

मगर शबनम ने जब खतो-किताबत का सिलसिला जारी रखा तो पत्र-व्यवहार से ही निश्चय हुआ कि रामचन्द्र अपनी माँ से पूछ ले।

उसकी माँ सुखनी का पत्र आया कि जब तक वह लड़की को देख नहीं लेती तब तक इजाजत नहीं दे सकती।

सोमदेव और लक्ष्मी को तो पहले ही सन्देह हो चुका था कि शबनम की रामचन्द्र से साँठ-गाँठ हो रही है। अतः इस विषय में जांच-पड़ताल करने के लिये उसी दिन सोमदेव ने अपने कार्यालय में बैठे हुए रामचन्द्र से पूछ लिया, 'शबनम को जानते हो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जी। डाक्टर साहब की लड़की।'

'तुम उससे विवाह करना चाहते हो ?'

'जी नहीं। वह मुझसे विवाह करना चाहती है। मैं जानता हूँ कि वह एक धनी मुसलमान और बा-रसूख नागरिक की लड़की है। वैसे पढ़ी हुई तो उतनी ही है जितना मैं पढ़ा हूँ। मगर मेरी आर्थिक दशा उससे बहुत नीची है। मैंने उसे सब स्थिति बता दी थी। इस पर भी जब उसने बहुत आग्रह किया तो मैंने उसको यह लिखा है कि मुझे माँ से राय करनी है।'

'तो माँ को पत्र लिखा है ?'

'जी। उसका उत्तर आज आ गया है।'

'और उसने क्या लिखा है ?'

रामचन्द्र ने जेब से पत्र निकालकर दिखा दिया।

सोमदेव को यह समझ आया कि रामचन्द्र की माँ ने बहुत ही समझदारी की बात की है। मगर बात तो शबनम की थी। इस कारण वकील साहब ने पूछा, 'तो यह पत्र लड़की को दिखाया है ?"

'जी अभी नहीं ? आज किसी समय उसे दिखा दूंगा।'

'वह बुरी तरह तुम्हारे सम्मोहन में फँसी हुई प्रतीत होती है ?'

'वकील साहब ! वह लड़की विवाहने योग्य तो है परन्तु यह सब कुछ भाग्याधीन होता है। मैं अपनी और डाक्टर साहब की सामाजिक स्थिति में अन्तर देख रहा हूँ। इस कारण मैं अपनी ओर से किसी प्रकार से भी उसे आकर्षित करने का यत्न नहीं कर रहा।'

'अच्छी बात है। यह पत्र उस तक भेजो और फिर देखो कि क्या प्रतिक्रिया होती है।'

इसका परिणाम यह हुआ कि शबनम रामचन्द्र की माता के दिल्ली आने की प्रतीक्षा करने लगी।

इस बीच में डाक्टर असलम साउथ ऐवेन्यू में एक क्वार्टर में चला गया था। परन्तु अब वकील साहब के पुस्तकालय में दोनों में भेंट सबके सम्मुख होने लगी। शबनम के बार-बार आग्रह करने का ही परिणाम था कि रामचन्द्र होशियारपुर से दस मील के अन्तर पर अपने गाँव में जाकर अपने पूर्ण परिवार को ले आया।

लक्ष्मी ने इस नये परिवार के लिए कोठी का एक फ्लैट खाली करवा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमदेव, रामचन्द्र और शबनम के मामले से अपने और अपने परिवार के अन्य सदस्यों को तटस्थ रखना चाहता था। इस कारण उसने लक्ष्मी द्वारा शबनम को कहलवा दिया, 'देखो शबनम ! रामचन्द्र की माता जी आई हैं। इस कारण तुम भी अपनी माता जी को आने दो, तब ही बात होनी चाहिये।'

शबनम का कहना था, 'मगर मौसी ! शादी तो मुझे करनी है। मेरी माँ की शादी हो चुकी है ?'

'यह ठीक है। मगर जानती हो कि रामचन्द्र की माँ ने अपने पुत्र को क्या लिखा था ? उसने लिखा था कि अगर राम ने उसकी पतोहू को लाना है तो उसकी स्वीकृति के बिना नहीं हो सकेगा। इसी तरह मैं कहती हूँ कि अगर राम की माँ ने तुम्हारी माँ को समधिन बनाना है तो यह दोनों औरतों की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकता ? साथ ही इसका यह भी मतलब है कि वह तुम्हें अपने साथ गांव में ले जाकर रखना चाहेगी।'

'पर मैं उन्हें नई दिल्ली में कहीं लाकर रखना चाहूँगी ?'

लक्ष्मी हँस पड़ी और हँसते हुए बोली, 'मतलब यह कि वह तुम्हें अपनी पतोहू नहीं बना रही बल्कि तुम उसे अपनी सास बना रही हो ?'

'मैं यही समझकर कोशिश कर रही हूँ ?'

'तब ठीक है बनाओ। मेरा आशीर्वाद तुम दोनों के लिये है।'

शबनम और सुखनी में भेंट कोठी के ड्राइंगरूम में ही हुई। रामचन्द्र ने माँ को शबनम के समीप बैठा कर कहा, 'लो माँ ! तुम दोनों अब एक-दूसरे को देख-दिखा लो। जो कुछ तुम दोनों फैसला करोगी, मुझे स्वीकार होगा।'

इतना कह वह दोनों को वहाँ परस्पर बातचीत करने के लिये छोड़ अपने काम पर, वकील साहब के कार्यालय में चला गया।

लक्ष्मी जान-बूझकर इस प्रथम भेंट में सामने नहीं आयी। सुखनी और शबनम अकेली ही थीं। बात रामचन्द्र की माँ ने ही आरम्भ कर दी। उसने पूछा, 'तो तुम हो ?'

'जी।'

'क्या नाम है ?'

'शबनम।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो तुम मुसलमान हो ?'

'नहीं अम्मी ! मैं एक मुसलमान की पोती हूँ। जहाँ तक मैं समझती हूँ, मेरे वालिद और अम्मी मुसलमान नहीं हैं।'

'और वे क्या हैं ?"

'इन्सान हैं। उनका कोई मजहब नहीं ?'

इस शब्दावली को समझने में सुखनी को समय लगा। वह शबनम के कथन पर विचार करने लगी।

शबनम उसके मुख पर बदलते भावों को देख अपने कहे पर विचार करती रही। सुखनी ने बात समझी और कहा, 'मैं यह समझी हूँ कि तुम अभी एक अनपढ़ लड़की हो क्योंकि तुम दुनियादारी नहीं जानतीं। हम ज्यों-ज्यों दुनियादारी को समझते जाते हैं, हम एक अनपढ़ से पढ़े-लिखे बनते जाते हैं।

'देखो, मैं बताती हूँ। मैं जब बच्ची थी तो परमात्मा की बाबत नहीं जानती थी। अब मेरे धर्म ने मुझे सिखाया है कि परमात्मा को कैसे और कहाँ मिला जा सकता है। इससे मैं अब पहले से अपने को शिक्षित औरत मानती हूँ। सब लोग इसे हिन्दू धर्म कहते हैं।

'मेरे कहने का मतलब यह है कि मैं अब एक इन्सान से अधिक बन गयी हूँ। मैं हिन्दू हो गयी हूँ।'

'परन्तु माता जी ! खुदा को तो मैं भी मानती हूँ, मगर मैं इसका इस्लाम से ताल्लुक नहीं समझती। मेरा मतलब है कि अगर परमात्मा को जानना पढ़ाई है तो यह पढ़ाई मैंने की है ?'

'तो तुमने यह क्यों कहा कि तुम इन्सान हो। इन्सान तो एक बच्चा भी होता है। मैं तो अपने को एक इन्सान से कुछ अधिक समझती हूँ।'

शबनम के लिये बात करने का यह एक नया ढंग था। इसलिये वह इस स्त्री की बात पर विचार करने लगी। उसे चुप देख सुखनी ने कहा, 'तुम समझी नहीं। देखो, मैं बताती हूँ।

'मनुष्य पैदा होता है तो वह एक चौराहे पर खड़ा होता है। तब उसे उंगली पकड़ कर उसके माता-पिता तथा अन्य बड़े लोग एक राह पर ले चलते हैं। कभी वह राह ठीक होती है कभी गलत। इस पर भी वह बच्चा जिस राह पर भी चलता है, वह उस चौराहे से आगे को चला आता है, चौराहा पीछे रह जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैंने यही पूछा था कि तुम्हारे वालदैन ने तुम्हें इस्लाम की राह पर चलाया है क्या ? तुम्हारे नाम से यही समझ में आया था। मगर तुम तो कहती हो कि अभी तक चौराहे पर खड़ी हो।'

'नहीं माता जी ! मेरा यह मतलब नहीं है। मैं भी आगे तो बड़ी हूँ। अभी पाँच छः महीने की बच्ची नहीं हूँ। मगर मेरा रास्ता न हिन्दू है न मुसलमान है। मेरे रास्ते को पढ़े-लिखे लोग इन्सान का रास्ता कहते हैं।'

'तो अब मैं समझी हूँ कि तुमने अक्ल का रास्ता पकड़ा हुआ है ?'

'हाँ माता जी ! आप ठीक समझी हैं।'

'मगर यह इन्सान के बच्चों से कुछ आगे बढ़ने का रास्ता है। तुम, अगर ठीक कहती हो तो अब इन्सान नहीं हो, उससे कुछ ज्यादा हो। इस पर भी यह नहीं कह सकतीं कि ठीक दिशा में ही जा रही हो या नहीं।'

शबनम को लक्ष्मी आदि से मेल-जोल में आते तीन महीने हो रहे थे और तीन महीनों में वह हिन्दी भाषा के कई शब्द सीख गयी थी। यद्यपि वह स्वयं अपनी बातचीत में उनका प्रयोग नहीं करती थी, परन्तु वह दूसरे की बात समझ सकती थी।

इस कारण वह समझ गयी कि सामने बैठी स्त्री एक अनपढ़ देहातिन नहीं है। वह बात निरर्थक नहीं कर रही। इससे वह बोली, 'माता जी ! अब आप ठीक समझ गयी हैं। मेरे माता-पिता इस रास्ते को जिस पर वे और मैं चल रही हूँ, इन्सानियत का रास्ता समझते थे। मगर मैं समझती हूँ कि मैंने एक बच्चे से बहुत दूर तक का रास्ता तय कर लिया है। अभी तो आपके फरज़ंद से मैंने शादी की तजवीज़ की है। यह एक तीन-चार महीने का बच्चा नहीं कर सकता।'

'हाँ, समझ गयी हूँ। इस पर भी अभी एक बात और समझनी बाकी है। वह यह कि एक बच्चा जब भूखा होता है तो रो कर माँ को बुलाता है और दूध माँगता है।

'मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम्हारी ख्वाहिश बच्चे के भूख लगने पर दूध की ख्वाहिश के समान है या उससे कुछ ज्यादा है ? इन्सान को एक भूख लगती है जब वह पन्द्रह सोलह साल की उम्र का होता है। उस भूख से व्याकुल भी कभी कोई शादी की माँग करने लगता है। मेरा प्रश्न यह है कि क्या यह शादी की तजवीज उसी भूख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नतीजा तो नहीं ?'

इस विषय पर शबनम बहुत विचार कर चुकी थी। वैसे उसने यौन-सम्बन्धी साहित्य भी पढ़ा था और उस भूख को वह अपने में अनुभव करती थी। परन्तु पिछले दो मास से इस विषय पर विचार करती हुई वह यह समझी थी कि उस भूख के अतिरिक्त भी कुछ है जिससे वह इस विवाह के लिये प्रेरणा अनुभव कर रही थी। अतः उसने कहा, 'माता जी ! यह तो आपको भी विदित होना चाहिये कि वह भूख जिसका आपने जिकर किया है, कैसी होती है और मैं अपने को उससे बरी नहीं कह सकती। भूख तो है मगर उस भूख से मैं जने-खने की थाली में मुख नहीं डाल सकती। मैंने अपनी भूख को मिटाने के लिये एक थाली विशेष चुनी है और उसी में मुख डालने की इजाजत माँग रही हूँ।'

'मगर वह एक गरीब की थाली है, जिसमें अनाज बहुत बढ़िया और शायद पर्याप्त भी नहीं। मैं समझती हूँ कि तुम्हें अपनी माँ के साथ हमारे गाँव में आना चाहिये। पहले उस खुरली को देख लो जिसका भोग वहाँ प्राप्त है। तब उचित निर्णय लेना। मैं समझती हूँ कि तुम घर का प्राणी बनाने के लायक हो। मगर इतना परिचय काफी नहीं। इस कारण तुम भी देख लो।

'तुम मेरी बड़ी लड़की रजनी से मिलो। उसके विवाह का मैं प्रबन्ध कर रही हूँ। वह अब सोलह वर्ष की हो गयी है। उससे बात करोगी तो तुम्हें हमारे घर के एक अन्य प्राणी का अनुभव होगा। दूसरे बच्चे तो अभी छोटे हैं, कह नहीं सकती कि उनमें तुम्हारी रुचि होगी अथवा नहीं। परन्तु रजनी से तो मिल ही लो।

'तुम्हारी माता जी कहाँ है ?'

'वह अब्बाजान के साथ मुरादाबाद एक काम से गई हैं। अभी पाँच-छः दिन के बाद आयेंगी। मैं यहाँ अपनी बड़ी बहन के पास रहती हूँ। वह कोठी के मालकिन की पतोहू हैं।'

'ठीक है, उनसे भी मिलूंगी। खास तौर पर मैं वकील साहब का धन्यवाद करना चाहती हूँ। उन्होंने मेरे परिवार पर बहुत कृपा की है।'

: ६ :

लक्ष्मी और सुखनी में बातचीत एक घंटा से ऊपर तक हुई और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे रामचन्द्र के परिवार का पूर्ण विवरण पता चल गया ।

अपने ज्ञान से ही वह अपने पति और बाबा को बता रही थी । रात के भोजन के उपरान्त जब रामचन्द्र माँ के पास पहुँच गया और प्रेम बहुत प्रात: उठ सकने के लिये अपने कमरे में सोने चली गयी थी, तब सोमदेव और लक्ष्मी में बातचीत हुई । उस समय रघुनाथ सहाय को भी बुला लिया गया ।

लक्ष्मी ने अपने पति और श्वसुर को बताया, 'मैंने राम की माँ से एकान्त में बातचीत की है । वह इस विवाह के विषय में कुछ अधिक उत्सुक प्रतीत नहीं होती । परन्तु वह यह समझती है कि लड़की बहुत ही समझदार है और बात करने में चतुर है ।

'उसने यह भी बताया है कि वह चतुर और नेक में अन्तर जानती है । एक व्यक्ति चतुर होता हुआ भी नेक नहीं भी हो सकता । इस कारण चतुराई के साथ यदि सद्व्यवहार न हो तो वह चतुराई भयंकर रूप धारण कर सकती है ।'

'उसने विवाह के विषय में क्या कहा है ?'

'उसने लड़की को अपनी माँ के साथ गाँव चल कर उनकी अवस्था देखने का निमंत्रण दे दिया है । वैसे वह बताती थी कि राम के लिये गाँव के दो रिश्ते आये हैं । उसने अभी कुछ निश्चय नहीं किया । वह शबनम के माता-पिता के लौटने तक यहाँ रहेगी और इस काल में वह शबनम के विषय में और अधिक जानने तथा समझने का यत्न करेगी ।'

रघुनाथ सहाय ने कहा, 'मेरा यह निश्चित मत है कि यह विवाह नहीं होना चाहिये ।'

'ऐसा क्यों ?' सोमदेव का प्रश्न था ।

'राम की माँ पतोहू को गाँव में रखना चाहेगी । यह शबनम को पसन्द नहीं होगा । इस कारण यदि विवाह हो गया तो शबनम को इसका पश्चात्ताप लगने लगेगा और यह सम्बन्ध टूटने में कारण हो जायेगा । इसीलिये तो राम की माँ ने यह प्रस्ताव रख दिया है कि लड़की और लड़की की माँ चल कर उसके गाँव वाले मकान को देख ले ।'

सोमदेव ने बताया, 'राम तो कहता है कि शबनम विवाहने योग्य लड़की है मगर सब विवाहने योग्यों के साथ न तो विवाह होता है न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है। दोनों की आर्थिक स्थिति में बहुत अन्तर है।

'उसने मेरे सामने यह स्वीकार किया है कि जब से शबनम के माता-पिता मुरादाबाद गये हैं और शबनम यहाँ आकर बहन के साथ रहने लगी है, उसे शबनम से मिलने का अवसर और भी अधिक मिलने लगा है। मगर दोनों का भाग्य समान पटरी पर चल रहा प्रतीत नहीं होता। इस कारण वह बलपूर्वक न तो इसे अपनी पटरी पर लाने का यत्न करेगा और न ही पटरी एक होने में वह बाधा उपस्थित करेगा। इस कारण वह इस पूर्ण मामले से तटस्थ रहना चाहता है।'

डाक्टर असलम और रहीमन निर्वाचन के दो दिन पूर्व मुरादाबाद से लौट आये। आते ही रहीमन और शबनम को लेकर अपने क्वार्टर में चले गये।

जाने से पूर्व उसने निर्वाचनों का समाचार सोमदेव को सुनाया। उसका कहना था, 'जीत तो जनता प्रत्याशी की होगी परन्तु उतने 'मार्जिन' से नहीं जितने से मैं स्वयं जीता हूँ। लोगों के जोशो-खरोश में कमी साफ दिखाई देती है।'

'यह स्वभाविक ही है। साधारण जनता एक भीड़ की भाँति ही व्यवहार रख सकती है और भीड़ का व्यवहार भेड़ों के गल्ले के समान होता है।

'भेड़ों को हाँकने वाला कोई होना चाहिये। और यह गांधीवादी तो स्वयं भेड़ें बने हुए हैं।'

डाक्टर असलम मुख देखता रह गया। वह वकील साहब के कथन का समझा नहीं। सोमदेव ने बताया, 'महात्मा गांधी जी के सब आन्दोलों का इतिहास बताता है कि वह स्वयं एक भेड़ की भाँति व्यवहार करते रहे।'

'गांधी जी इत्यादि भेड़ों का गडरिया कौन रहा है ?' डाक्टर साहब ने पूछा।

'नेहरू परिवार। इस परिवार ने सन् १९२० से गांधी जी पर ऐसा आतंक जमाया था कि यह इनके सामने झुकते रहे हैं।

'देखिये डाक्टर साहब ! मैं बताता हूँ। यह पण्डित मोती लाल जी ही थे जिन्होंने गांधी जी को अंग्रेजी सरकार से असहयोग के लिये तैयार किया था और असहयोग आन्दोलन को खिलाफत के साथ जोड़ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विवश किया था। १९२३ में गांधी जी सरकारी कौंसिलों में जाना नहीं चाहते थे। इस पर मोतीलाल जी ने पृथक् दल बना लिया और १९२४ में उन्होंने पुनः गांधी जी को अपने साथ लगा लिया।

'पण्डित जवाहर लाल रूसी समाजवाद के पोषक थे और गांधी जी ने १९२९ में उनको कांग्रेस का प्रधान बनाने में उनकी सहायता कर दी। १९३६ में गांधी जी ने कांग्रेस के प्रमुख नेताओं की राय के विरुद्ध जवाहरलाल को पुनः प्रधान बनाया और फिर १९४६ में तो प्रधानमंत्री पद पर इनको बैठा ही दिया।

'१९४७ से जो देश की दुर्गति हुई है वह पण्डित जवाहरलाल की दुर्नीति के कारण ही हुई है और उसे देश का प्रधानमंत्री बनाने में महात्मा जी का हाथ ही था।

'अब जवाहरलाल की लड़की भारत के तख्त पर बैठी तो इसको पवनार के संत का आशीर्वाद प्राप्त हो गया। पवनार के संत गांधी जी के परम शिष्य हैं।

'इस कारण डाक्टर साहब! आपका दल भी उसी दिशा में जा रहा है जिस दिशा में गांधी जी ने देश की राजनीति को धकेला था।

'भला एक बात बताइये। आपके दल वाले १९७५-७६ की आपात्-स्थिति को वैध मानते हैं अथवा अवैध?'

'हम तो इसे अवैध मानते हैं।'

'तो फिर इस आपात्-स्थिति को लागू करने वाले लोगों को अभी तक स्वतंत्रता से विचरने क्यों दिया जा रहा है?

''आपने कुछ कमीशन नियुक्त की हैं। यह उस अन्याय का प्रतिकार नहीं है, जो भारत की निरीह जनता पर कामाभिभूत, मूर्ख, स्वार्थी, पदलोलूप व्यक्तियों ने उन्नीस मास तक किया है। क्या यह उचित नहीं था कि इन कमिशनों के स्थान पर दस बीस व्यक्तियों को जो इस सब अन्याय के कर्त्ताधर्ता थे, मुकद्दमा चला दिया जाता?

'मेरा अभिप्राय है जैसे जर्मनी की हिटलरशाही के खिलाफ न्यूरम्बर्ग में मुकद्दमा चलाया गया था।'

डाक्टर असलम मुख देखता रह गया। सोमदेव ने बात बदल दी। उसने कहा, 'आप अपने क्वार्टर को जा रहे हैं और शबनम को साथ ले जा रहे हैं? मगर आपसे बात करने के लिये एक स्त्री शबनम के निमंत्रण पर यहां आयी हुई है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मुझे शबनम ने बताया है। मैं उससे बात अपने क्वार्टर में जा कर ही करूँगा।'

'ठीक है, उसे वहाँ आमंत्रित कर बातचीत कर लें। वह दिल्ली की गहमा-गहमी को देख घबरा रही प्रतीत होती है।'

'आप किसी समय रामचन्द्र को मुझसे मिलने के लिये मेरे क्वार्टर पर भेज दीजियेगा।'

उसी सायंकाल चाय के समय सुखनी से बात हो गयी। उस समय बाबा, वकील साहब, लक्ष्मी, शीरीं और प्रेम भी वहाँ उपस्थित थे। रामचन्द्र और उसकी माँ भी आ उपस्थित हुए थे।

बात सोमदेव ने ही आरम्भ की। उसने कहा, 'बहिन जी! शबनम के पिता मुझे कह गये हैं कि राम को उनके क्वार्टर पर आपके साथ भेज दिया जाये और वहाँ ही वह आपसे लड़की के विवाह के विषय में बात करेंगे।'

सुखनी ने रामचन्द्र से पूछ लिया, 'क्यों क्या विचार है?'

'वकील सहाब! आप आज्ञा दें तो मैं वहाँ जाऊँगा। मैं अपने आप वहाँ जाने की आवश्यकता अनुभव नहीं करता।'

इस पर सुखनी ने कह दिया 'मैं समझती हूँ कि राम का यह कहना उचित ही है। इसने मुझे अपना शबनम से परिचय का पूर्ण इतिहास बताया है और उस इतिहास के प्रकाश में मैं इसके व्यवहार को ठीक मानती हूँ।'

'परन्तु रामचन्द्र! आज्ञा देने वाला मैं कौन हूँ? मैंने तो केवल डाक्टर साहब की इच्छा प्रकट की है।'

सुखनी ने कहा, 'भाई साहब! मैं दो-तीन दिन तक इस विषय पर शबनम के पिता द्वारा कुछ बात होने की प्रतीक्षा करूँगी अन्यथा मैं अपने गाँव को लौट जाऊँगी।'

'ठीक है, बहन जी! मैं भी यही ठीक समझता हूँ।'

इस पर प्रेम बोल उठी, 'पिता जी! मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे आप पहले एक यतीम लड़की के पालन-पोषण का प्रबन्ध कर रहे हैं, एक अन्य के भी पालन का बोझा आपके सिर पर आ पड़ेगा।'

सोमदेव इस कथन का अर्थ समझने के लिये प्रेम के मुख पर देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम ने कहा, 'शबनम से मेरी बात हुई है। उसने कहा है कि वह पक्का निश्चय किये हुए है कि वह राम भैया से ही विवाह करेगी। यदि आवश्यकता हुई तो वह अपने वालदैन की अनुमति की प्रतीक्षा करेगी, अन्यथा राम भैया के द्वार पर जाकर धूनी रमा देगी।'

सब हँसने लगे। राम ने पूछ लिया, 'प्रम बहन ! यह धूनी रमाने की बात अपने मन से कह रही हैं अथवा यह उसने कही है ?'

'ये उसके शब्द हैं। उसने कहाँ से सीखे हैं, मैं नहीं जानती। आजकल वह मुन्शी प्रेमचन्द के उपन्यास बहुत पढ़ रही है। उनमें ही कहीं यह पढ़ा होगा।

'मैं तो यह कह रही थी कि जब वह आपकी कोठी के बाहर धूनी रमा बैठ जायेगी तो आप उसको ऐसे ही घर के भीतर आश्रय देंगे जैसे आपने मुझे दे रखा है। आखिर शीरीं की बहन है। बाहर सर्दी-गर्मी में उसे पढ़ रहने देंगे क्या ?'

'इस समय उसकी क्या आयु है ?' लक्ष्मी ने शीरीं की ओर देख पूछ लिया।

शीरीं ने कहा, 'मैंने बी० ए० पास किया था १६७४ में। तब मैं उन्नीस वर्ष की थी। अब बाईस की हूँ और सुना है कि शबनब मुझ से डेढ़ वर्ष छोटी है।'

'मतलब यह कि वह इस वक्त साढ़े बीस वर्ष की है और वह इक्कीस की होते ही राम के पीछे लग जायेगी।'

सब हँसने लगे। परन्तु सुखनी ने गम्भीर मुख बना कह दिया, 'उससे पहले ही मैं राम का विवाह कर दूंगी।'

'ठीक है करिये।' सोमदेव ने कहा।

'आज सोमवार है। मैं बृहस्पतिवार तक इन मियाँ साहब की प्रतीक्षा करूँगी। वह भी इसलिये कि मुझे लड़की में कुछ श्रेष्ठ गुणों का भास हुआ है। इस कारण उसे और राम को मैं अवसर देना चाहती हूँ। शेख इनके भाग्याधीन है।'

बुधवार सायंकाल राम वकील साहब से छुट्टी माँग माँ, भाई और बहनों को लेकर दिल्ली की सैर कराने वकील सहाब की मोटर गाड़ी में गया हुआ था कि डाक्टर असलम, रहीमन और शबनम आ पहुँचे। सोमदेव अपने एक मुवक्किल को उसके मुकद्दमे के विषय में कार्यालय में बैठा समझा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहीमन और शबनम तो सीधी घर के भीतर चली गयीं और डाक्टर, वकील साहब के दफ्तर में चला आया। वकील साहब ने ग्राहक से बात रोक कर डाक्टर से पूछ लिया, 'आप चाय लेंगे न ?'

'हाँ, मुझे आपसे बात भी करनी है ?'

'तो ऐसा करिये, आप भीतर चलिये। शीरीं और राधा की माँ बैठी हैं। मैं पन्द्रह-बीस मिनट में आता हूँ।'

डाक्टर ड्राइंगरूम में जा पहुँचा। वहाँ लक्ष्मी, प्रेम और रघुनाथ सहाय बैठे चाय ले रहे थे। रहीमन ने वहाँ पहुँचते ही लक्ष्मी से कहा, 'दो दिन से लड़की ने नाक में दम कर रखा है। वर्ना हम आज भी न आते।'

'पर अम्मी !' प्रेम ने मुस्कराते हुए कहा, 'हवा आपके नाक से बाहर निकलती ही समझ में आ रही है।'

'मेरा मतलब है कि कल से इसने खाना पीना छोड़ रखा है।'

प्रेम हँस पड़ी। शबनम प्रेम के पास बैठी थी। प्रेम ने शबनम के गले में बाँहें डाल कर कान में कुछ तो रहीमन ने कह दिया, 'देखो प्रेम ! इसे मत सिखाओ। यह पहले ही बहुत बिगड़ रही है।'

इस समय डाक्टर असलम आ गया। वह भी सब में बैठ गया। डाक्टर ने रघुनाथ सहाय से कहा, 'मैंने वकील साहब से कहा था कि राम को मेरे क्वार्टर पर भेज दें। उन्होंने उसे कहा मालूम नहीं होता।'

रघुनाथ सहाय ने कहा, 'यह रविवार की बात है। हम सबके सामने सोम ने राम को आपका सन्देश दे दिया था। मगर रामचन्द्र ने कहा था कि यदि वकील साहब मालिक के रूप में आज्ञा दें तो वह जायेगा अन्यथा अपनी इच्छा से वह आपके पास नहीं जायेगा।'

'क्यों ?'

'यह उसने नहीं बताया।'

'और वह है कहाँ ?'

'अपनी माँ और भाई-बहनों को लेकर दिल्ली की सैर कराने गया हुआ है। उसकी माँ कल गाँव को लौट जाने वाली है।'

डाक्टर असलम परेशानी महसूस करता हुआ उनका मुख देखता रह गया। रहीमन ने लक्ष्मी से पूछा, 'वे लौटकर कब तक आने वाले हैं ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह बताकर नहीं गया।'

'मुझे कुछ काम था और जल्दी जाना है। आज हमारे दल के सदस्यों की बैठक थी।'

रघुनाथ सहाय ने पूछा, 'कितने बजे बैठक है?'

'छः बजे।'

रघुनाथ सहाय ने घड़ी में देखा और कह दिया, 'आप चाय लेकर जा सकते हैं। शीरीं की माँ यहीं रहेगी। आप मीटिंग से फारग़ होकर यहाँ आ जाइयेगा। उम्मीद है कि तब तक वे लोग आ जाएँगे।'

अभी सोमदेव अपने कार्यालय के काम से अवकाश पा नहीं सका था कि डाक्टर चाय का एक प्याला ले चला गया।

सोमदेव को भीतर आने में आधा घण्टा लग गया था। तब तक शबनम अपना व्रत तोड़ चाय और बिस्कुट लेने लगी थी। सोमदेव आया तो रहीमन ने कहा, 'भाई साहब! आपने रामचन्द्र को भेजा नहीं और यह छोकड़ी उसके फिराक में भूख-हड़ताल कर बैठी थी।'

'मगर वह तो चाय ले रही है?'

'यह इसलिए कि हम इसकी बात मानकर यहाँ राम की माँ से बातचीत करने आये हैं।'

'मगर वह तो यहाँ है नहीं?'

'हाँ, बाबा ने बताया है। हम उनकी इन्तज़ार में यहाँ बैठे हैं?'

'यह ठीक है। वरना वह कल यहाँ से जाने का इरादा रखती है।'

'मगर बात इसके अब्बाजान ही करेंगे।'

'तो ठीक है। मैं समझता हूँ कि रात के नौ बजे तक उनके लौटने की आशा है।'

: १० :

सोमदेव इत्यादि ठीक नौ बजे भोजन के लिए उठ खड़ हुए। वे अभी ड्राइंगरूम से उठे ही थे और डाइनिंग रूम की ओर जा ही रहे थे कि डाक्टर असलम, पार्टी-मीटिंग से लौट आया। सुखनी, राम इत्यादि अभी भी नहीं आये थे। सोमदेव ने डाक्टर साहब की बाँह में बाँह डाल डाइनिंग हाल की तरफ ले जाते हुए कहा, 'रामचन्द्र अभी नहीं लौटा। इसलिए भोजन तो हो ही जाना चाहिए।'

'मुझे कल संसद में कुछ बोलने की तैयारी भी करनी है।'

'वह तो अब सुबह जागने के बाद ही करियेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब खाने की मेज पर बठ गये और भोजन करने लगे।

इस समय तक प्रेम और शबनम में पृथक् में बातचीत हो चुकी थीं। खाना लेते हुए उसने शबनम की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, 'शबनम के कहने के अनुसार डाक्टर साहब का शबनम की माता जी से एक समझौता हो चुका है।'

'क्या ?' रघुनाथ सहाय ने पूछ लिया।

'यही कि अम्मी शबनम की शादी बिना लड़की के बालिग हुए नहीं करेंगी। इसके बालिग होने तक यदि रामचन्द्र ने विवाह न किया तो ये दोनों शादी करने के लिए आज़ाद होंगे। शबनम की अम्मी अपना यह फैसला रामचन्द्र की माता को बताने आई हैं।'

सोमदेव ने कहा, 'यह तो इन्होंने ठीक ही किया है। रामचन्द्र की माताजी उसे अपने साथ गाँव ले जा ही इसीलिए रही हैं कि वह उसका विवाह वहाँ करके उसे वापस दिल्ली भेजें।'

डाक्टर साहब ने अब कहा, 'दोनों किसी दूसरे स्थान पर शादी करने के लिए आज़ाद होंगे। यह भी मेरे और शबनम की माँ में समझौते की एक शर्त है। सिर्फ हमारी तरफ से शबनम को उसकी मर्जी के बिना शादी न करने का वायदा है। यह हम राम की माँ और राम को बताने आये हैं।'

भोजन समाप्त हुआ। सब ड्राइंगरूम में आ बैठे। नियमानुसार कॉफी पी जा रही थी कि रामचन्द्र, माँ, भाई और बहनों के साथ आ गया।

आते ही राम ने कहा, 'मैंने विचार किया कि भाई बहनों को एक पिक्चर दिखा दूं। पिक्चर के उपरान्त एक होटल में इनको खाना खिलाकर ही ला सका हूँ। इसी कारण देरी हुई है।'

सुखनी ने बैठते ही कहा, 'मैं कल गाँव को लौट रही हूँ। मोहन की पढ़ाई में हरज हो रहा है। यहाँ मेरा आना तो असफल रहा है। राम ने गाँव में बताया था कि मैं अपने साथ बहू को लेकर ही लौटूंगी।'

'देखिए बहन जी!' डाक्टर असलम ने अपने स्वभावनुसार सत्य और स्पष्ट शब्दों में कह दिया, 'शबनम की अम्मी और मुझमें इस शादी के बारे में अभी भी इख्तिलाफ राय है। मैं लड़की की आपके लड़के से शादी के हक में हूँ और लड़की की माँ इस शादी के हक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। दो दिन की बातचीत के बाद हम में एक समझौता हुआ है। वह हम शबनम के सामने आपको बताने आये हैं।

'वह यह कि हम लड़की की शादी बिना उसकी मर्जी के नहीं करेंगे। लड़की शादी करने के लिए आजाद होगी, राम से शादी वह बालिग होने तक नहीं करेगी।

'बालिग होने पर अगर इसने राम से और राम ने इससे शादी की ख्वाहिश जाहिर की तो हम इसमें रुकावट नहीं डालेंगे।

'यह फैसला आपको बताने के लिए ही हम यहाँ बैठे आपकी इन्तजार कर रहे हैं।'

सुखनी ने बात सुनी और एक क्षण में ही अपना निश्चय बता दिया। उसने कहा, 'मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। आपकी बात से मुझे यह समझ में आया है कि राम अपना विवाह किसी दूसरे स्थान पर करने के लिए आजाद होगा।

'यह मैं इसलिए कह रही हूँ कि राम को मैं अपने साथ गाँव में ले जा रही हूँ और वहाँ इसे एक लड़की दिखाने का विचार है। अगर इसने उसे पसन्द कर लिया तो दो दिन में ही इसका विवाह हो सकेगा।'

शबनम की माँ इस बात पर प्रसन्न थी। डाक्टर न खुश था न नाराज़। उसने कह दिया, 'हमारे समझौते में यह बात भी है कि दोनों, लड़की और लड़के को आज़ादी होगी कि वे चाहें तो दूसरी जगह पर शादी कर सकेंगे।'

इस पर शबनम ने राम की ओर देखकर कहा, 'यह अब्बाजान और अम्मी में समझौते की एक शर्त है मगर मेरे और मुंशी जी में हुए समझौते में यह शर्त नहीं है। क्यों मुंशी जी! आप क्या चाहते हैं?'

'मैंने यह वचन दिया था कि माँ की मंजूरी पर मैं शबनम से शादी करूँगा।'

'मगर मैं समझती हूँ कि हमारी शादी में माताजी की मंजूरी है।' शबनम का कहना था।

सब सुखनी की ओर देखने लगे। सुखनी ने कहा, 'जो लड़की मैंने पसन्द की हुई है, वह मेरे विचार में शबनम से ज्यादा खूबसूरत है। मगर शबनम में मुझे कुछ गुण उस लड़की से अधिक दिखाई दिये हैं। इस कारण, भाई साहब! इस सम्बन्ध में मैं राम को विवश नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूँगी । यह उसकी अपनी मर्जी से ही होगा । वह शबनम की प्रतीक्षा भी कर सकता है और नहीं भी कर सकता ।'

'अम्मी !' शबनम ने अपनी माँ की ओर देखकर पूछ लिया, 'मैं मुंशी जी से एक मिनट के लिए अलहदा में बात कर लूँ ?'

रहीमन निश्चय नहीं कर सकी । वह अभी विचार ही कर रही थी कि डाक्टर असलम ने कह दिया, 'हाँ, इसी कमरे के उस कोने में खड़े-खड़े बात कर लो । मैं जल्दी लौट जाना चाहता हूँ ।'

शबनम ने माँ के कुछ भी कहने से पहले उठकर राम की ओर देखा । दोनों ड्राइंगरूम के दूर कोने में जा खड़े हो परस्पर बात करने लगे ।

चार-पाँच मिनट से अधिक बात नहीं हुई और दोनों प्रत्यक्ष रूप में सन्तुष्ट लौट सबके बीच आ बैठे ।

डाक्टर ने वकील साहब से कहा, 'अब मुझे इजाजत दीजिए । मैं आपसे एक दो दिन में मिलूँगा ।'

: ११ :

जब डाक्टर, उसकी पत्नी और शबनम चले गये तो रामचन्द्र ने माँ से कह दिया, 'माँ, अकेली गाँव में जा सकोगी क्या ?'

'जा क्यों नहीं सकूँगी ? मैं दो वर्ष की बच्ची नहीं हूँ । मगर तुम नहीं चल रहे क्या ?'

'मैंने शबनम को वचन दिया है कि मैं उसके बालिग होने तक प्रतीक्षा करूँगा । इस अवस्था में मेरा गाँव में जाकर दूसरी लड़की को देखने का अभी अवसर प्रतीत नहीं होता ।'

'ठीक है ।' राम की माँ ने कह दिया, 'मुझे बस-स्टैण्ड तक पहुँचा देना ।'

इस प्रकार बात निश्चय हो गई । अगले दिन सुखनी अपने बच्चों के साथ गाँव को लौट गयी और दिल्ली में सब कार्य यथापूर्व चलने लगा ।

अक्टूबर मास आ गया । एक दिन रात भोजन के समय वकील साहब ने बताया, 'रामचन्द्र बड़े मुंशी से भी अधिक समझदार और योग्य सहायक सिद्ध हो रहा है । मैंने उसकी उन्नति कर दी है ।'

'क्या उन्नति की है ?'

'उसका मासिक वेतन चार सौ रुपये कर दिया है । इसके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंशियाना, यहाँ कोठी में रहने को स्थान और भोजन पूर्ववत् है ही।'

'परन्तु पिताजी!' प्रेम ने कह दिया, 'शीघ्र ही उसका शबनम से विवाह होगा, तब वह यहाँ नहीं रह सकेगा।'

'परन्तु विवाह होगा क्या?' रघुनाथ सहाय ने पूछ लिया।

'तीन दिन हुए शबनम आई थी और कह रही थी कि उसकी बाईसवीं जन्म दिवस-बाईस अक्टूबर को होगा और वह अपने वालिद साहब से इज़ाज़त ले मुंशी जी के पास रहने आ जायेगी।'

'परन्तु', सोमदेव ने कहा, 'पच्चीस तारीख को तो रामचन्द्र छुट्टी पर अपने गाँव को जा रहा है। उसके भाई मोहन की शादी है।'

'वह क्या करता है?' लक्ष्मी ने पूछ लिया।

'मैंने राम से पता किया था। उसने बताया है कि वह अपने पिता के स्थान पर पटवारी नियुक्त हो गया है। जनता सरकार में संघ वालों का प्रभाव विशेष है और उसकी नियुक्ति अपने पिता के स्थान पर हो गई है।'

'तब तो और भी ठीक होगा। मुंशी जी मुंशियानी को साथ लेकर ही भाई की शादी पर जाएँगे।'

शीरीं के लड़का हो चुका था और वह इस समय बीस दिन का हो गया था। वह भी डाइनिंग टेबल पर बैठी बातचीत सुन रही थी। उसने कह दिया, 'मुझ अम्मी ने बताया है कि वह इस शादी के अभी भी खिलाफ है और कोशिश कर रही है कि शबनम अपना इरादा बदल ले। अम्मी भी उन्हीं हथियारों के प्रयोग की धमकी दे रही है, जिसका प्रयोग शबनम ने कभी किया था।'

'और तुम्हारे अब्बाजान क्या कर रहे हैं?' रघुनाथ सहाय ने पूछा।

'उन्होंने मुरादाबाद से डाक्टर साहब को तथा अपने लड़के अफ़जल को बुला भेजा है। मैं उनके कल तक यहाँ आने की उम्मीद कर रही हूँ।'

डाक्टर राधाकृष्ण की हस्पताल में टर्म समाप्त हो चुकी थी और वह डाक्टर असलम की कोठी में ही चिकित्सा-कार्य करने लगा था। यह राधाकृष्ण ने अपनी सास रहीमन के कहने पर ही किया था। वैसे डाक्टर असलम की प्राइवेट चिकित्सा बहुत अधिक थी और उसका लाभ भी राधाकृष्ण को हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीरीं अपने प्रसव की दुर्बलता को दूर करने के लिए पृथ्वी राज रोड, वाली कोठी पर ही ठहरी हुई थी। प्रेम ने बात का अन्त कर दिया। उसने कहा, 'बाबा! यह पेंच बहुत मजेदार चल रहा है। देखें, किसकी पतंग कटती है?'

'किस किसकी पतंग का पेंच है?' रघुनाथ सहाय का प्रश्न था।

'डाक्टर जिलानी साहब की और उनकी पत्नी रहीमन उर्फ ईमान की।'

इस पर सब हँसने लगे।

चौबीस तारीख को बहुत प्रात.काल डाक्टर असलम और उनकी पत्नी रहीमन पृथ्वीराज वाली कोठी पर आ पहुंचे। सोमदेव अपने स्टडी-रूम में लक्ष्मी के साथ चाय ले रहा था और घर के विषय में बातचीत कर रहा था। इस समय यह विचार हो रहा था कि लक्ष्मी शीरीं को साथ लेकर मुरादाबाद कब जाये। वह वहाँ कुछ दिन रहकर शीरीं की व्यवस्था स्थिर करना चाहती थी परन्तु सोमदेव इसे अनुचित हस्तक्षेप समझ रहा था। उसे भय था कि उसके भाई अफजल के दूषित एवं साम्प्रदायिक विचारों का शीरीं पर बुरा प्रभाव न पड़ जाये। उसका कहना था कि शीरीं के निमन्त्रण के बिना उसे वहाँ नहीं जाना चाहिए।

इस समय कोठी के द्वार पर लगी घण्टी बजी। उनका सेवक रामनिवास द्वार पर देखने गया। वकील साहब और इनकी पत्नी अपनी बातचीत में रुककर ड्राइंगरूम की ओर देखने लगे कि कौन इस समय हो सकता है?

उनको अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दो मिनट में ही राम-निवास ड्राइंगरूम की ओर से स्टडी रूम में आया। उसके साथ डाक्टर साहब और उनकी बेगम साहिबा थीं।

इस पर सोमदेव और लक्ष्मी दोनों उठकर ड्राइंगरूम में आ गये। डाक्टर साहब ने उठकर वकील साहब से हाथ मिलाया और लक्ष्मी ने हाथ जोड़ नमस्ते कहकर उन्हें अपने पास बैठाया। रहीमन गम्भीर मुख बनाये अपने सामने भूमि पर देख रही थी।

जब सोमदेव बैठ गया तो लक्ष्मी रहीमन के पास बैठ बोली, 'बहन जी, चुप बैठी हैं? कुछ हम से नाराज हैं?'

'हाँ,' एकाएक रहीमन ने कह दिया, 'आपसे हमारा ताल्लुक खुशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बाइस नहीं हुआ ।'

'क्यों, अब क्या हुआ है ? कुछ अजीज अफजल ने शिकायत की है ?'

'नहीं । उसने तो कुछ नहीं लिखा । यह शबनम की बात है । वह कल रात से घर से लापता है । डाक्टर साहब कह रहे हैं कि रामचन्द्र से पता करना चाहिए । शायद वह घर से भागकर यहाँ आई हो और आपने उसकी रामचन्द्र से शादी ऐसे ही मंजूर कर ली हो जैसे शीरीं और राधाकृष्ण ने मंजूर की है ।'

लक्ष्मी ने भी गम्भीर भाव में कहा, 'मगर वह यहाँ नहीं है । ठहरिये, मैं रामचन्द्र को बुलाती हूँ ।'

लक्ष्मी ने घण्टी बजाई । रामनिवास आया तो उसे कहा, 'रामचन्द्र को कहो कि तुरन्त आ जाये ।'

वकील साहब ने भी रहीमन की बात सुनी थी । उसका प्रश्न था, 'डाक्टर साहब, आप क्या समझते हैं ?'

'यही कि पहले यहाँ पता करना चाहिए और अगर यहाँ नहीं आयी तो जरूर यमुना में डूब मरी होगी । कल सुबह माँ-बेटी में बहुत तकरार हुआ था ।'

'क्यों बहन जी, क्या तकरार हुआ था ?'

'तकरार की बात नहीं बताऊँगी । इतना कहती हूँ कि तकरार के आवेग में मैंने उसे कहा था, दो तीन दिन ठहरो, अफजल और उसकी दादी यहाँ आ रहे हैं । तब सब परिवार के लोगों की बात सुन कर भी अगर वह यही चाहेगी तो मान जाऊँगी ।

'वह चुप रही । मैं समझी थी कि वह मान गयी है । दोपहर के समय वह इस कोठी में आया करती है और शाम के वक्त लौट जाया करती है । कल भी वह इधर आयी थी । मगर रात वहाँ नहीं लौटी ।

'रातभर मुझे नींद नहीं आयी । अलख सुबह मैंने इनको उठाया और हम दोनों यहाँ पता करने चले आये हैं ।'

इस समय रामचन्द्र वहाँ आ गया और सबको हाथ जोड़ नमस्ते कर सामने खड़ा हो गया ।

'राम !' वकील साहब ने कहा, 'ये लोग शबनम को ढूँढते हुए यहाँ आये हैं । जानते हो वह कहाँ है ?'

'तो वह घर पर नहीं है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रहीमन ने दिया, 'कल दस बजे वहाँ से चली आयी थी। हम समझे थे कि वह यहाँ आयी है। कल दिन भर और रात को भी उसकी इन्तजार की और अब पता करने आये हैं।'

इस पर डाक्टर असलम ने कहा, 'देखो राम! अगर वह यहाँ है तो उसे ले आओ। हम उसका निकाह अपने वायदे के मुताबिक तुमसे कर देंगे।'

'परन्तु डाक्टर साहब!' रामचन्द्र ने कहा, 'मैं अपने परमात्मा को स्मरण कर कहता हूँ कि मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है। मुझसे तो वह पिछले एक सप्ताह से नहीं मिली।'

सब एक-दूसरे का मुख देखते रह गये। डाक्टर ने एकाएक कह दिया, 'तब तो पुलिस में रिपोर्ट लिखानी चाहिये। मुझे डर है कि माँ की बातों से मायूस हो उसने खुदकशी न कर ली हो।'

अब वकील साहब ने कहा, 'मुझे यकीन है कि वह ऐसा नहीं कर सकती। उस जैसी समझदार दिमाग की लड़की खुदकशी नहीं, कुछ साजिश ही कर सकती है।'

'क्या साजिश हो सकती है?' डाक्टर असलम ने पूछ लिया।

'मुझे तो कुछ ऐसा समझ में आया है कि वह खाविन्द को पाने से पहले अपनी सास को पाने चली गयी है। वह जरूर रामचन्द्र के गाँव को गयी है। क्यों राम! उसे तुम्हारे गाँव का नाम इत्यादि पता है?'

'पता तो है?' रामचन्द्र ने कह दिया।

'मुझे विश्वास है', 'लक्ष्मी ने कहा, 'कि वह वहीं गयी है।'

'तब माँ अवश्य मुझे लिखेगी।' रामचन्द्र ने कहा।

'नहीं मुंशी साहब!' रहीमन ने कहा, 'मैं तो आज ही वहाँ जाकर हकीकत जानना चाहती हूँ।'

'हां, मैं इसकी ताईद करता हूँ।' सोमदेव ने कहा।

'मुझे कुछ यह अटपटा मालूम हो रहा है?' डाक्टर असलम ने कहा।

'नहीं भाई साहब!' लक्ष्मी ने कहा, 'देखिये, यहाँ से ही हम मोटर गाड़ी में राम की माँ के गाँव को चलते हैं और हकीकत पता करते हैं?'

'तो आप भी चलेंगी?' रहीमन ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्यों, कुछ हानि है हमारे जाने में ?

रहीमन अपने पति का मुख देखने लगी। बात वकील सोमदेव ने निश्चय कर दी। उसने कहा, 'आप राम के साथ अपनी मोटर में जा सकते हैं। लक्ष्मी अपनी गाड़ी में जाना चाहे तो जा सकती है।'

'पर क्यों ?' डाक्टर असलम ने पूछ लिया।

'इसीलिये कि बहन रहीमन लक्ष्मी को साथ ले जाना नहीं चाहतीं। लक्ष्मी, रामचन्द्र के भाई के विवाह पर शकुन देने के लिये जाने वाली है मगर कल पच्चीस तारीख को जायेगी। यदि वह चाहे तो एक दिन पहले भी जा सकती है, यही मेरा मतलब है।'

'क्यों माता जी !' रामचन्द्र ने पूछ लिया, 'मोहन के विवाह पर कब जायेंगी ?'

'मैं तो आज ही राम के विवाह पर जा रही हूँ, समझे हो राम ?'

'तो मैं आपकी गाड़ी में चलूँगा।'

'और हमें रास्ता कौन दिखायेगा ?' रहीमन ने पूछ लिया।

उत्तर रामचन्द्र ने दिया, 'आप हमारी गाड़ी के पाछे-पीछे चले आइयेगा।'

इस प्रकार बात तय हो गयी।

सब तैयार होने लगे। रघुनाथ सहाय को पता चला कि लक्ष्मी कहाँ, किस मतलब के लिये चली है तो वह भी साथ जाने के लिये तैयार हो गया।

सोम ने पूछा, 'बाबा ! तुम किसलिये कष्ट कर रहे हो ?'

रघुनाथ सहाय ने सोम को पृथक् कमरे में ले जाकर कहा, 'मैं तो इसलिये जा रहा हूँ कि कहीं किसी प्रकार की कानूनी पेचीदगी पैदा हुई तो कोई सुध लेने वाला वकील होना चाहिये।'

उसी दिन सायंकाल दोनों मोटर गाड़ियाँ आगे-पीछे सुखनी के द्वार पर जा पहुँचीं।

वहाँ मोहन के विवाह के उपलक्ष्य में मकान को सफेदी कराकर उसकी सफाई इत्यादि हो रही थी। विवाह का दिन छब्बीस अक्टूबर था और रामचन्द्र ने माँ को लिखा हुआ था कि वह पच्चीस सायंकाल तक आयेगा। उसने यह भी सूचना दे रखी थी कि शायद यहाँ की माता जी भी शकुन देने के लिये आयें। इस कारण इन सबको निश्चित समय से पूर्व आये देख सुखनी हँस पड़ी। मोहन ने ही भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर समाचार दिया था कि दिल्ली से राम दादा के साथ दो गाड़ियों में लोग आये हैं।

सुखनी की हँसी निकल गयी और उसने हँसते हुए अपने समीप बैठी शबनम से कह दिया, 'तुम्हारे पिता तुम्हें विवाह के अवसर पर मुबारिकबाद देने आये हैं।'

सुखनी, शबनम, रजनी जो वहाँ बैठी थीं, सब उठ कर द्वार की ओर भागीं। अभी ये लोग मोटर से उतर ही रहे थे कि घर के लोग इनका स्वागत करने द्वार पर आ खड़े हुए।

शबनम को सुखनी के पीछे खड़ा देख लक्ष्मी ने रहीमन को कहा, 'वह है आपकी लड़की।'

पूर्व इसके कि रहीमन कुछ कहे, शबनम माँ की कदम बोसी कर सामने खड़ी हुई तो डाक्टर असलम ने कह दिया, 'शबनम! मुझे तो बताकर आतीं।'

'अगर बता कर आती तो अब्बाजान, आप मेरा यह घर देखने कभी नहीं आते।'

'मगर तुम्हारा यह घर बन गया है क्या?'

'मौसी ने एक दिन कहा था कि सास मिलेगी तो सास का पुत्र भी मिलेगा। मगर सास के पुत्र के मिलने से सास नहीं भी मिल सकती। इसलिये दोनों पक्षियों को एक साथ ही पकड़ने के लिये यहाँ चली आयी हूँ।'

सब लोग भीतर चले आये। यद्यपि मकान में सफेदी कराकर साफ और उज्ज्वल कराया हुआ था, परन्तु वह दिल्ली की कोठियों की तुलना में कुछ भी नहीं था।

सब घर की बैठक में बैठे तो मोहन और रजनी सबके लिये चाय इत्यादि लेने रसोई घर में चले गये।

शबनम अपने वहाँ पहुँचने की कथा सुनाने लगी। उसने बताया, कल दस बजे के लगभग मैं क्वार्टर से चली थी और बस से नई दिल्ली स्टेशन सवा ग्यारह बजे पहुँच गयी। वहाँ फ्लाईंग मेल से सायंकाल जालन्धर आ गयी थी। रात जालन्धर के वेटिंगरूम में रही और सुबह चार बजे होशियारपुर की गाड़ी से यहाँ छः बजे पहुँच गयी थी।

'यहाँ माता जी पहले तो बहुत नाराज हुईं मगर धीरे-धीरे इनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीठी-मीठी बातें कर मैंने इनको राजी कर लिया है। अब माता जी ने यह कहा था कि मोहन भैया से एक दिन पीछे मेरा विवाह हो जायेगा। मोहन के भाई विवाह पर आने ही वाले हैं।

'वैसे मैं आशा कर रही थी कि दिल्ली से किसी किस्म की खबर आयेगी। मैं यह भी सोच रही थी कि कहीं पुलिस ही न आ जाये। मगर खुदा का शुक्र है कि आप लोग बिना पुलिस के ही आये हैं।'

लक्ष्मी ने रहीमन से पूछा, 'बताओ बहन ! क्या कहती हो ?'

रहीमन के कहने से पहले ही डाक्टर असलम बोल उठा, 'मैं यह मुनासिब समझता हूँ कि कल शबनम की शादी हो और परसों राम के भाई मोहन की। बड़े भाई की शादी पहले होनी चाहिये।'

रहीमन ने केवल यह कहा, 'अब मुझसे पूछने की क्या जरूरत है ? शबनम ने यह घर देख लिया है, यदि इसे पसन्द है तो ठीक है।'

लक्ष्मी ने कहा, 'मगर राम वकील साहब के साथ ही काम करेगा, यहाँ नहीं रह सकेगा।'

'तो शबनम दोनों जगह पर रहेगी। यहाँ माँ के पास भी और वहाँ मेरे पास भी।' रामचन्द्र का कहना था।

बाबा ने हँसते हुए कहा, 'रामू, तुमने तो गाड़ी रिवर्स-गीयर पर चला दी है। मेरा मतलब है कि हिन्दू समाज को विनष्ट होकर नवीन जन्म लेने की दिशा में जाने से रोक दिया है। तुमने सूर्य के गिर्द पृथिवी की गति की भाँति इसको चक्राकार गति में कर दिया है।'

लक्ष्मी ने हँसते हुए कह दिया, 'बाबा ! यह यात्रा का अन्त नहीं हो रहा, प्रत्युत यात्रा पुनः पूर्वाभिमुख हो गई है।'

□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की अनुपम रचना

असमंजस

पुरुष स्त्री दोनों में इकट्ठे रहने तथा जीवन के सुख-दुःख में भागीदार बनने एवं अपनी सन्तान को अपने से भी अधिक योग्य बनाने की भावना रहती है। ये पति-पत्नी के कर्त्तव्य माने जाते हैं।

परन्तु जब इस कर्त्तव्य भावना के स्रोत और इस भावना में भ्रमवश विरोध दिखाई दे तो असमंजस की सी स्थिति हो जाती है। इस पर भी असमंजस भ्रम दूर होने पर समाप्त हो जाता है।

अनुपम विषय पर अनुपम लेखक का अनुपम उपन्यास

असमंजस

मूल्य ६.००

Central Library
167970
081
167970
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143 167970

वर्ग संख्या............G.UR-Y आगत संख्या...................

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143 16797

वर्ग संख्या............G.UR-Y आगत संख्या........

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि स
30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहि
अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar